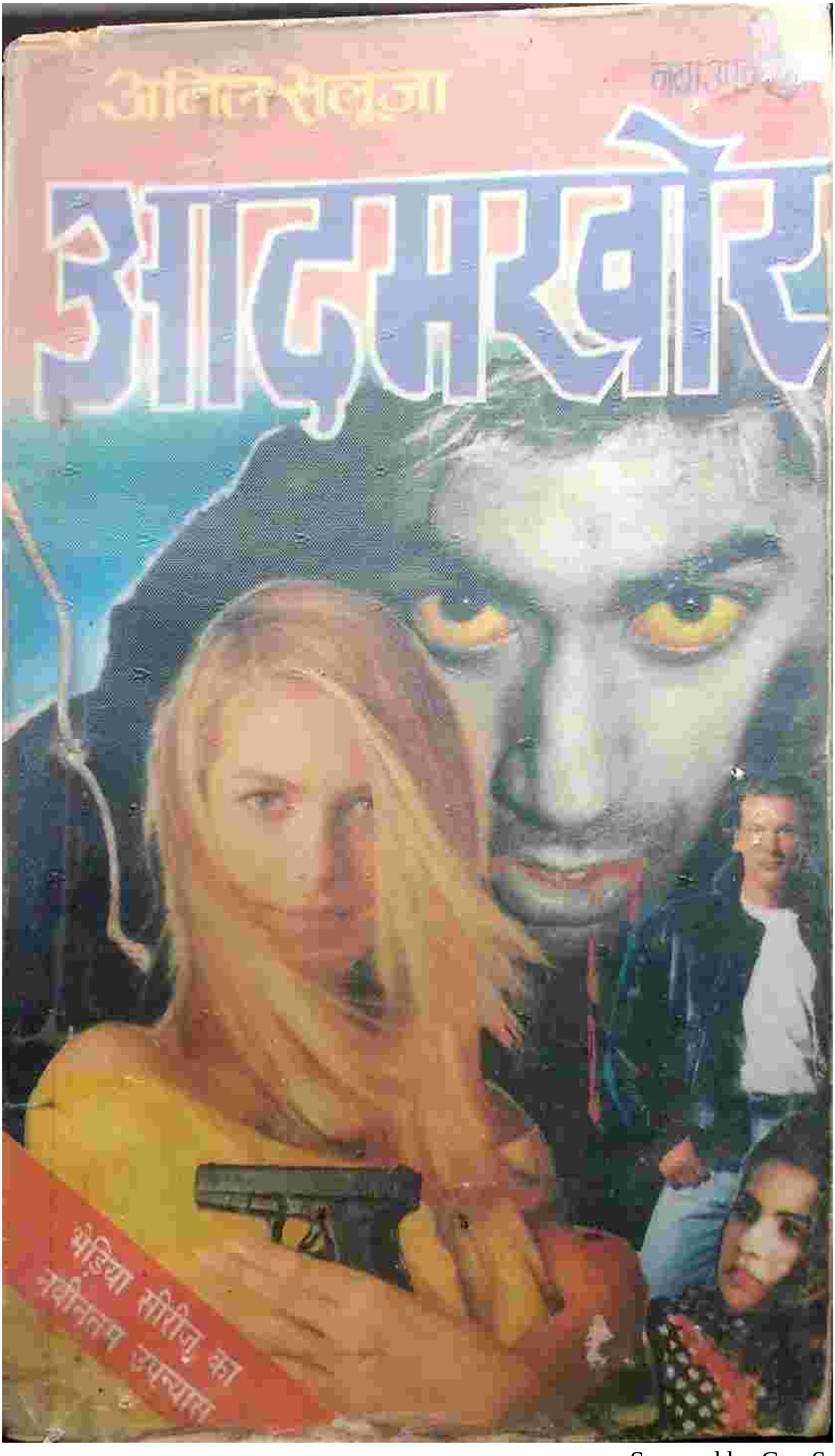

अनिल सलूजा
आदमखोर
भेड़िया सीरीज़ का
नवीनतम उपन्यास

Scanned by CamScanner

आदमखोर

"धांय... ।"

गोली सीधा सामने खड़े व्यक्ति के माथे के बिल्कुल बीचों-बीच घुसी और भेजा फाड़ती हुए पीछे से निकल गई।

एक तेज चीख मारते हुए वह व्यक्ति फर्श पर गिरा और छटपटाने लगा।

कालिया पठान ने रिवाल्वर की नाल में फूंक मारी और उसे जेब के हवाले करते हुए जहरीले नाग की मानिन्द फुंफकारा—

"मनहूस खबर लाने वालों से कालिया पठान को सख्त चिढ़ है... । हरामजादे ने तीसरी बार भी मनहूस खबर ही सुनाई...कब तक बर्दाश्त करता... ।"

वह पलटा और अपने दाईं तरफ खड़े जालिम सिंह की तरफ देखते हुए गुर्राया—

"ऐसा कब तक चलेगा जालिम सिंह ? इस एक महीने में ही तीन दफा हमारा माल लुट चुका है...काली सिंह और उस हरामजादे मकबूल हुसैन ने तीन दफा शिकस्त दी है हमें...कालिया पठान को लूटा उन हरामियों ने...हमारा करोड़ों का नुकसान कर डाला। और हम...हम उन दोनों में से किसी का एक धेले का भी नुकसान नहीं कर पाये...एक हल्की-सी चोट नहीं पहुंचा पाये हम उन्हें... । अगर ऐसा ही रहा तो कोई बड़ी बात नहीं कि किसी दिन हमें किसी मन्दिर, मस्जिद के सामने भिखारियों की लाइन में बैठकर एक पैसा दे दे बाबू कहना पड़े... ।" कालिया पठान ने दायें हाथ को फैला उसकी उंगलियों को मोड़कर भिखारियों वाले अंदाज में माथे से लगाया।

जालिम सिंह बोला कुछ नहीं...बस सिर को थोड़ा झुका लिया।

कालिया पठान दीवार के करीब रखी एक ऊंची पुश्त वाली

कुर्सी पर जा बैठा और जालिम सिंह को गहरी नजरों से देखते हुए बोला–

"कुछ कर जालिम सिंह...वर्ना मैं तो बर्बाद हो जाऊंगा... ।"

"कुछ समझ में नहीं आ रहा चीफ कि काली सिंह और मकबूल हुसैन को हमारे माल का पता कैसे चल जाता है...कैसे जान लेते हैं कि हमारा माल किस रास्ते से और किस वक्त आ रहा है और तो और उन्हें यहां तक पता चल जाता है कि माल क्या और कितना होता है... ।"

"तो क्या मैं समझाऊं तुझे हरामी की औलाद... ।" एकदम से भड़क उठा कालिया पठान।

"म-मैंने ऐसा तो नहीं कहा चीफ... ।"

बुरी तरह से हड़बड़ा उठा जालिम सिंह।

"हमारे ही गैंग का कोई कुत्ता हमसे गद्दारी कर रहा है...ढूंढ़ उसे कौन है वो... ।"

"ज-जी... ।"

"और साथ ही उन दोनों हरामजादों के बारे में सोच... ।"

"म-मैं सोचूंगा चीफ... ।"

"क्या सोचेगा...?" आंखें दिखाई कालिया पठान ने।

"यही कि उनसे अपना माल वापिस कैसे लिया जाये... ।"

"मय ब्याज के वापिस लेना है... ।"

"यस चीफ... ।"

"और सोचते ही रहना...करना कुछ नहीं...बेशक दो-चार साल लग जायें... ।"

"न...हीं चीफ... ।" हड़बड़ा गया जालिम सिंह–"मैं जल्द ही उन दोनों को खत्म करने की कोई तरकीब सोच निकालूंगा... ।"

"तेरी जल्दी भी दो महीने से कम कहां होगी... ।"

हड़बड़ा उठा जालिम सिंह–"म-मैं कोशिश करूंगा कि आज ही कोई ऐसी तरकीब सोच लूं जिस पर चलकर काली सिंह और मकबूल हुसैन को खत्म किया जा सके... ।"

"तो जाकर अभी से सोचना शुरू कर दे।"

"य-यस चीफ... ।"

"और इस लाश को भी उठवा...साली अभी से बदबू मारने लगी है... ।"

कालिया पठान दरवाजे के करीब पड़ी लाश की तरफ इशारा करते हुए बोला।

"यस चीफ...मैं अभी किसी को भेजता हूं...।"

कहकर जालिम सिंह कमरे से बाहर निकल गया।

कालिया पठान करीब पचास वर्ष का लाल चेहरे वाला सुर्ख आंखों वाला व्यक्ति था। उसके सिर के बाल आगे से अधिक गायब हो चुके थे...जो बाकी बाल बचे थे वे मेहन्दी से लाल हो रहे थे। नाक के नीचे हल्की मूंछें जो कि नीचे को झुकी हुई थी। सुरमई रंग की सलवार कमीज उसके लम्बे-चौड़े जिस्म पर खूब जंच रही थी।

पिछले बीस सालों से वह दिल्ली अण्डरवर्ल्ड का बेताज बादशाह बना हुआ था...उससे पहले वह काफी छोटे स्केल पर काम करता था...सिंगापुर से आये इलैक्ट्रानिक्स के सामान को वह एयरपोर्ट से ही उन यात्रियों से खरीद लेता था जिसके पास कस्टम ड्यूटी अदा करने के लिए पूरे पैसे नहीं होते थे। कालिया पठान उनसे सस्ते दामों में सामान लेकर बाजार में ऊंचे दामों पर बेच देता था।

फिर धीरे-धीरे उसने खुद सिंगापुर तथा थाईलैंड जाना शुरू कर दिया...। कस्टम ऑफिसरों से मिली भगत करके उसने खूब दौलत बटोरी।

और फिर और ज्यादा अमीर बनने की ललक ने उसे नारकाटिक्स के धंधे में डाल दिया...।

इस धंधे में पड़ते ही उसे पता चला कि इस धंधे में जितनी अधिक कमाई है...उससे कहीं...ज्यादा खतरा भी है उसके कई हमपेशा भाई उसके दुश्मन हो गये और वह समझ गया कि अगर इस धंधे में टिके रहना है तो लाशें बिछानी पड़ेंगी...वर्ना उसका कोई हमपेशा भाई ही उसकी गर्दन उतार देगा।

और इस प्रकार लाशों की सीढ़ियां चढ़ता हुआ वह ऊपर उठता गया और दिल्ली अण्डरवर्ल्ड का बादशाह बन बैठा। लेकिन पिछले एक साल से अण्डरवर्ल्ड के दो और खलीफा उसी सीढ़ी पर चढ़ने लगे थे जिसके आखिरी छोर पर वह स्वयं पहुंचा हुआ था।

शुरू-शुरू में कालिया पठान ने उनकी तरफ कोई खास तवज्जो नहीं दी...हालांकि जालिम सिंह उससे कहता भी रहा कि वह वक्त रहते उन दोनों को खत्म कर दे...वर्ना कल को वे उसके लिए मुसीबत पैदा कर सकते हैं...लेकिन कालिया पठान ने उसकी बात पर कान

नहीं धरे।

नतीजा यह निकला कि कुत्ते के पिल्ले नजर आने वाले वे दोनों भेड़िया बनकर उन पर गुर्राने लगे।

तब कालिया पठान की आंख खुली और उसने काली सिंह और मकबूल हुसैन को खत्म करने के आदेश दनदना दिये।

काली सिंह और मकबूल हुसैन के दो-तीन आदमी मरे तो वे समझ गये कि कालिया पठान की बर्दाश्त अब खत्म हो चुकी है।

और इस प्रकार उनमें बाकायदा एक जंग छिड़ गई।

काली सिंह और मकबूल हुसैन के अलग-अलग गैंग थे और कालिया पठान के रुतबे को भी वे बाखूबी समझते थे...सो उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि अगर जल्दी ही वे दोनों एक नहीं हुए तो कालिया पठान उन्हें नेस्तनाबूद कर देगा।

नतीजा उन दोनों के बीच वक्ती तौर पर समझौता हो गया।

उस समझौते के तहत यह फैसला किया गया कि जब तक कालिया पठान जिन्दा है वे दोनों आपस में नहीं उलझेंगे और न ही एक-दूसरे को कोई नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे।

जालिम सिंह ने उन दोनों का पता लगाने के लिए अपने प्यादे लगा रखे थे...कई बार उसे सूचना भी मिली थी कि काली सिंह या मकबूल हुसैन फलां जगह पर है...लेकिन जब वह अपनी फोर्स के साथ वहां पहुंचता तो पंछी उड़ चुका होता।

पता नहीं उन्हें उसके पहुंचने की खबर कैसे लग जाती और जालिम सिंह मुंह लटकाये खाली हाथ कालिया पठान की गालियां सुनने के लिए उसके सामने पहुंच जाता।

कालिया पठान तथा काली सिंह और मकबूल हुसैन की जंग अब काफी उग्र रूप धारण कर चुकी थी...तथा इस जंग में ज्यादा नुकसान कालिया पठान का ही हुआ था।

उसका ताजा तरीन नुकसान आज ही हुआ था...दुबई से आई तीन करोड़ की हेरोइन पर काली सिंह ने हाथ साफ कर लिया था...साथ में उसके चार आदमियों को भी मार डाला था और पांचवा जो कि अपनी जान बचाकर आया था उसे कालिया पठान ने गोली से उड़ा दिया...।

लगातार हो रहे इस नुकसान ने उसे काफी गुस्सैल और चिड़चिड़ा बना डाला था।

कालिया पठान के उस आदमी की लाश उठाई जा चुकी थी जिसे कि उसने अभी कुछ देर पहले खत्म किया था...फर्श भी साफ किया जा चुका था... । फर्श साफ हो जाने के उपरान्त कालिया पठान अपनी कुर्सी से उठा और कमरे में टहलने लगा...उसके चेहरे पर बेचैनी तथा सोच साफ नजर आ रही थी।

बेचैनी उसका तीन करोड़ का माल लुट जाने के कारण थी...तथा सोच यह थी कि काली सिंह और मकबूल हुसैन को कैसे खत्म किया जाये...ऐसा कौन-सा तीर चलाया जाये जो कि दोनों के सीनों को भेद सके।

आखिर जब उसे कुछ नहीं सूझा तो वह दाईं तरफ कोने में बनी मिनी बॉर की तरफ बढ़ गया वही एक काउंटर बना हुआ था जिस पर कि खाली गिलास उल्टे रखे हुए थे।

उसने स्कॉच की बोतल उठाते हुए एक गिलास सीधा करके पैग तैयार किया और उसे एक ही सांस में खाली करके नया पैग तैयार करने लगा।

तभी जालिम सिंह ने कमरे में प्रवेश किया।

कालिया पठान ने गर्दन उसकी तरफ घुमाई—"अब कौन-सी मनहूस खबर लेकर आया है...?" माथे पर बल डालते हुए गुर्राया वह।

"कैसी भी खबर नहीं लाया चीफ... ।" वह आत्म-विश्वास भरे स्वर में बोला।

"तो फिर...?" कहकर उसने पैग उठाकर होठों से लगा लिया।

जालिम सिंह आगे बढ़कर उसके करीब पहुंचा और बोला—

"मेरी नजर में एक ऐसा तीर आया है जो अगर आपके धनुष से छूट निकला तो फिर समझ लीजिए कि काली सिंह तथा मकबूल हुसैन के सीनों को कोई नहीं बचा पायेगा... ।"

कालिया पठान ने पैग आधा खाली करके होठों से हटाया और बोला—

"कौन-सा तीर है वो...?"

"चन्दगी राम चौटाला... ।"

"चन्दगी राम चौटाला... ।" बड़बड़ाया कालिया पठान—"यह कौन हुआ...?"

"हरियाणवी जाट है चन्दगी राम चौटाला...दिमाग का बेहद

धनी... ।"

"कैसी बात कर रहा है तू...भला जाट बुद्धि भी कहीं... ।"

"चन्दगी राम चौटाला को आप इससे अपवाद समझ सकते हैं चीफ...बड़ी-से-बड़ी विपत्ति को चुटकियों में सुलझाने का दिमाग रखता है... । बस एक कमी है उसमें... ।"

"क्या...?"

"किसी पर भी वह बहुत जल्दी विश्वास कर लेता है...और अपनी इसी कमी से वह कामयाब होने के बाजवूद भी कंगाल हो जाता है... ।"

"वो कैसे...?"

"आप तो अण्डरवर्ल्ड के इस उसूल को जानते ही हैं चीफ कि किसी पर विश्वास मत करो...खासतौर पर अगर किसी के साथ मिलकर काम कर रहे हो तो उस सूरत में काम होते ही फौरन अपना हिस्सा ले लो। चन्दगी राम चौटाला ऐसा नहीं है...अनेकों कामयाब चोरियां कर चुका है चन्दगी राम...लेकिन हर बार चोरी के अन्त में उसके अपनों ने ही उससे दगा की और लाख की चोरी में उसे चार पांच हजार रुपये देकर उसे भगा दिया... ।"

"यह क्यों नहीं कहता तू कि वह डरपोक है... ।"

"डरपोक तो वह हरगिज नहीं...अकेला वह तीन-चार को आसानी से सम्भाल ले...कई बार ऐसा कर भी चुका है वह लेकिन खून-खराबे से बिदकता है वह...खून-खराबा पसंद नहीं उसे...बस उसकी इसी कमजोरी का फायदा उठा लेते हैं लोग...आखिर तंग आकर उसने पिछले छः महीने से चोरी का धंधा ही छोड़ दिया...उसको ठगने के लिए...उसके दिमाग का इस्तेमाल करने के लिए कईयों ने कोशिश की...लेकिन चन्दगी राम ने तो जैसे ऐसा कोई भी काम न करने की कसम उठा रखी है... ।"

"फिर क्या करता है वो आजकल...?"

"पत्ते लगाता है...और उसी से अपनी गुजर बसर कर रहा है... ।"

"तू कैसे जानता है उसे...?"

कालिया पठान जालिम सिंह को गहरी निगाहों से देखते हुए बोला।

जालिम सिंह ने एक गहरी सांस छोड़ी और बोला–

"वह आप ही के करोल बाग वाले कैसीनो में जुआ खेलने जाता है...कल मैं वहां का दौरा करने गया था...तब वहां पहली बार मेरी नजर चन्दगी राम चौटाला पर पड़ी...मैंने वहां के इंचार्ज मलहोत्रा से उसके बारे में पूछा तो उसने मुझे यह सब जानकारी दी... ।"

"यानि वह मेरे कैसीनो में बेईमानी से लोगों को लूटता है...जबकि तू जानता है कि कालिया पठान का वहां के हर मैम्बर को वादा है कि किसी के साथ कोई बेईमानी नहीं होगी... ।"

"वह बेईमानी करते पकड़ा जाये तभी वह सजा का हकदार बनेगा न... ।"

"क्या मतलब...?"

"मलहोत्रा ने उसे पकड़ने की बहुत कोशिश की...तीन-तीन आदमी उसके सिर पर खड़े कर दिये...लेकिन फिर भी वह एक बार भी नहीं पकड़ा गया।

"ओह।"

"अगर चन्दगी राम चौटाला हमारा काम करने को राजी हो जाये तो मैं समझता हूं कि वह न केवल काली सिंह और जालिम सिंह को ढूंढ निकालेगा बल्कि उनके उन तमाम अड्डों के बारे में भी मालूमात हासिल कर लेगा जिन्हें ढूंढ कर उन्हें गहरी चोट पहुंचाई जा सकेगी... ।"

"अब तू यह कहेगा है कि मैं उसके पास जाकर गिड़गिड़ाऊं कि मुझसे कुछ नहीं बन पा रहा...इसलिए वह मेरी मदद करे...उसके पैर पकड़ लूं और तब तक न छोड़ू जब तक कि वह हां न कर दे... ।"

हड़बड़ाया जालिम सिंह।

"म-मैंने ऐसा तो नहीं कहा चीफ... ।"

"उस चन्दगी राम चौटाला की औकात मेरे एक मामूली से प्यादे से अधिक नहीं जालिम सिंह...इसलिए यह बात दिल से निकाल दे कि मैं उसके सामने जाकर उसे अपना काम करने के लिए मनाऊंगा... ।"

"अ-आप उसकी चिन्ता मत कीजिए...चीफ...उससे मैं बात करूंगा उसे आपके सामने तभी लाऊंगा जब वह हां कर देगा... ।"

कालिया पठान के चेहरे पर कुछ इत्मिनान उभरा—"ठीक है...जा बात कर उससे... ।"

जालिम सिंह ने सिर हिलाया...।

"और अगर वह धौंस दिखाये तो बेशक उसे वहीं गोली मार देना...क्योंकि आंख दिखाने वाले कुत्ते मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं...।"

जालिम सिंह ने पुनः सिर हिलाया—"मैं अभी कैसीनो में जाता हूं...इस वक्त वह वहीं होगा...।"

"वहां क्या करेगा जाकर...?" उसके घर पर उससे बात कर...।"

"उससे बात करने का भी तो कोई बहाना चाहिए चीफ...।" मुस्कुराया जालिम सिंह।

"क्या करेगा तू...?"

"अहसान करूंगा उस पर...।"

कहकर उसने बताया तो कालिया के होठों पर मुस्कान उभर आई।

"यह क्यों नहीं कहता कि तेरे हाथ में पुनः खुजली हो रही है...जिस प्रकार कुत्ता भौंकना नहीं छोड़ सकता उसी तरह...।"

"म-मैं जाता हूं चीफ...।"

हड़बड़ाया-सा बोला जालिम सिंह और दरवाजे की तरफ मुड़ गया।

कालिया पठान ने एक दो पलों के लिए सोचने की मुद्रा बनाई...फिर हाथ में थमा पैग होठों से लगा लिया।

❑❑❑

❑❑❑

जालिम सिंह करोल बाग में उस मकान के बंद दरवाजे के सामने ठिठका जिस पर कि 'फॉर सेल' लिखा हुआ था।

मकान के दरवाजे पर ताला लटक रहा था तथा दरवाजे के आगे तथा आसपास का माहौल ऐसा था जैसे वहां वर्षों से सफाई नहीं की गई हो।

दरवाजे की चौखट पर एक बैलपुश लगा था।

जालिम सिंह ने हाथ आगे बढ़ाया...पुश को दो दफा लगातार बजाया...फिर तीसरी बार दो क्षण रुककर बजाया और हाथ नीचे कर लिया।

कालिया पठान के इस अड्डे की जानकारी केवल उन लोगों को थी जोकि यहां के मैम्बर थे...। बहुत मोटा जुआ चलता था

यहां...बड़े-बड़े रईस जोकि दो नम्बर के पैसों में बढ़ौत्तरी करने या उड़ाने के शौकीन थे...यहां अपना शौक पूरा करते थे।

कालिया पठान की तरफ से उनकी सुरक्षा की पूरी गारंटी दी गई थी। जिसकी वजह से यहां के मैम्बरों की संख्या में दिन-ब-दिन बढ़ौत्तरी होती जा रही थी।

उसी के साथ ही कालिया पठान की कमाई भी बढ़ रही थी। अकेले इसी अड्डे से ही कालिया पठान को दो से तीन लाख की हर रोज की आमदनी हो रही थी।

करीब आधे मिनट बाद मकान की दाईं सड़क से एक व्यक्ति निकला और जैसे ही उसकी नजर जालिम सिंह पर पड़ी...हड़बड़ाते हुए वह एकदम से सीधा हो गया।

"दरवाजा खोलो... ।" तभी गुर्राया जालिम सिंह।

वह व्यक्ति जो कि वहां बतौर गार्ड काम करता था तुरन्त दीवार के पीछे गायब हो गया।

शीघ्र ही वह दरवाजा पूरा का पूरा दाईं तरफ सरकता हुआ दीवार के भीतर सरकने लगा।

कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था कि वह दरवाजा भीतर को नहीं बल्कि साइड में खुलता है।

अभी दरवाजे का एक पल्ला ही दीवार के भीतर धंसा था कि जालिम सिंह भीतर प्रवेश कर गया।

सामने करीब पन्द्रह फीट लम्बी गली थी जिसके अन्त में काफी लम्बा-चौड़ा हॉल बना हुआ था।

जालिम सिंह गली पार करता हुआ हॉल में पहुंचा... ।

बाहर से मकान की खस्ता हालत देखकर कोई उसके भीतर की खूबसूरती का अनुमान भी नहीं लगा सकता था।

हॉल का फर्श सफेद पत्थर से चमचमा रहा था...करीब पन्द्रह टेबल लगी हुई थी हॉल में जिन पर कि ताश के पत्तों से हार-जीत हो रही थी... । बाईं तरफ अण्डर ओवर की गेम चल रही थी...उससे कुछ हटकर हार्स गेम चल रही थी जिसमें कि एक खिलौना घोड़ा राउण्ड में भागता था...राउण्ड में चारों तरफ नम्बर अंकित थे...दांव खेलने वाला अपने मन-पसन्द नम्बर पर दांव लगा देता... । अगर घोड़ा उस नम्बर पर आकर रुकता तो उसे एक के तीन मिल जाते। वर्ना खत्म।

हॉल की छत में कीमती फानूस लटक रहे थे जिनमें लगे बल्बों की मध्यम रोशनी वहां के माहौल को बहुत रंगीन बना रही थी। हाल में तीन वेटर जोकि लाल ड्रेस पहने हुए थे टेबलों के बीच घूम रहे थे...उनके हाथों में ट्रे थी जिनमें कि स्कॉच के पैग भरे हुए थे।

जिस किसी को भी जरूरत होती...वह पैग उठा लेता और उस पैग का भुगतान हाथ-के-हाथ ही कर देता।

कालिया पठान का ऐसा ही कानून था वहां।

जालिम सिंह ने चन्दगी राम चौटाला की तलाश में टेबलों पर निगाहें दौड़ाई...दूसरी गेमों के आगे खड़े लोगों पर निगाह मारी...लेकिन वह उसे कहीं नजर नहीं आया।

वह वहां से हटा और आगे बढ़कर दाईं तरफ गहरे रंग के शीशे के दरवाजे को धकेलकर भीतर प्रवेश कर गया।

वह कमरा वहां के इंचार्ज का ऑफिस था।

बहुत खूबसूरती से सजा था वह आफिस...। आफिस की लम्बी टेबल के पीछे करीब चालीस साल का खूंखार चेहरे वाला व्यक्ति बैठा था जोकि जालिम सिंह को देखते ही खड़ा हो गया था।

जालिम सिंह आगे बढ़ा और एक अन्य कुर्सी पर बैठ गया...।

"आज वह चन्दगी राम चौटाला नहीं आया मलहोत्रा...?" उसने पूछा।

मलहोत्रा वापिस अपनी कुर्सी पर बैठा और बोला–

"आज उसका कोई भरोसा नहीं कि वह कब आये...।"

"क्यों...?" माथे पर बल पड़ गये जालिम सिंह के...।

"कल वह पचास हजार रुपये जीतकर गया था...उन रुपयों से पहले वह जश्न मनायेगा...पच्चीस-तीस हजार उड़ाने के पश्चात् ही वह इधर का रुख करेगा...।"

"फिर तो यह भी हो सकता है कि वह आज आये ही नहीं...।"

"क्या कहा जा सकता है सिंह साहब...अगर वह किसी खूबसूरत लड़की के पहलू से लग गया तो फिर यह भी हो सकता है वह सारी रात उसी के पहलू में गुजार दे...।"

"रहता कहां है वह...?"

"पश्चिम विहार में उसका अपना मकान है...।"

"पता बोल...।"

मलहोत्रा ने उसे पता बताया।

जालिम सिंह खड़ा हो गया—

"मैं उसके फ्लैट पर जा रहा हूं...अगर मेरे पीछे वह आ जाये तो फौरन मोबाईल फोन पर मुझे खबर कर देना... ।"-

"बेहतर... ।"

खड़ा होकर मलहोत्रा अदब से बोला।

जालिम सिंह मुड़ा और आफिस से बाहर निकल गया।

सोचकर तो वह यही आया था कि वह चन्दगी राम चौटाला के सामने बैठकर जुआ खेलेगा...जुआ खेलने में उसका कोई सानी नहीं था...हालांकि अब वह ऐसे काम नहीं करता था...लेकिन फिर भी उसे विश्वास था कि जैसे पत्ते वह लगा सकता है...वैसे और कोई भी नहीं लगा सकता... । उसने यही सोचा था कि वह चन्दगी राम चौटाला को हराकर उसे उसकी रकम वापिस करके उस पर अहसान जतायेगा...फिर उसे अपने साथ काम करने को कहेगा...लेकिन उसके न मिलने से उसकी योजना वहीं पिट गई।

अब उसने चन्दगी राम चौटाला से सीधे मिलकर वह बात करने का फैसला कर लिया था।

उस मकान से बाहर निकलकर वह कुछ दूर तो पैदल चला...फिर सड़क किनारे खड़ी उस टोयेटा की तरफ बढ़ गया जिसमें कि वह यहां तक पहुंचा था।

कुछ ही देर में वह अपनी टोयेटा में बैठा रोहिणी की तरफ उड़ा जा रहा था।

□□□

□□□

"टुन्न...टुन्न।"

कॉलबैल बज उठी।

नीना ने आइने के सामने बैठे-बैठे ही अपने खूबसूरत जिस्म के अंग-अंग को नजरें गड़ाकर देखा...फिर करीब पड़ी नाइटी उठाकर उसे पहनती हुई ड्रेसिंग स्टूल से खड़ी हो गई।

उसने चप्पल पहनी और दरवाजे के बाहर निकलकर आंगन पार करती हुई मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ने लगी।

नीना करीब सत्ताइस वर्ष की बेहद आकर्षक और खूबसूरत युवती थी... । कहने को तो एक फर्म में टाइपिस्ट थी...लेकिन उसकी कमाई का असली जरिया उसका पेशा था... । अपने खूबसूरत जिस्म

की बदौलत वह हर रोज पांच सौ से लेकर पांच हजार तक लेती थी...। कोई ज्यादा ग्राहक भी नहीं बना रखे थे उसने...जो गिने-चुने थे...बस उन्हीं को ही खुश करती थी।

"कौन है...?"

दरवाजे के पीछे आकर जरा ऊंचे स्वर में बोली।

"किवाड़ खोल...।" बाहर से ठेठ हरियाणवी स्वर में कोई बोला।

नीना के होठों पर मुस्कान उभर आई साथ ही उसकी आंखों में एक तेज चमक आ गई।

चन्दगी राम चौटाला की आवाज पहचान ली थी उसने...वह उसकी जिस्मानी ताकत से खूब परिचित थी...। उसके पास जितने भी ग्राहक आते थे...उनमें केवल चन्दगी राम ही ऐसा था जोकि उसे पूर्ण रूप से तृप्त करने की क्षमता रखता था...वर्ना अन्य तो उसे बस सुलगाकर वापिस लौट जाते थे।

नीना ने दरवाजा खोला...।

सामने चन्दगी राम चौटाला खड़ा था।

उम्र करीब तीस बत्तीस वर्ष...छोटे-छोटे घुंघराले बाल...लम्बा चौड़ा जिस्म...चौड़ा माथा...पायजामा कुर्ता पहने चन्दगी राम चौटाला किसी गांव का देहाती नजर आ रहा था...। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह एक चालाक चोर रह चुका है और वर्तमान में पत्ते लगाकर नांवा पीट रहा है।

चन्दगी राम चौटाला को देख नीना मुस्कुराई।

बदले में चन्दगी राम चौटाला ने दांत फाड़े।

"बड़े दिनों बाद नजर आये हो...कहां छुप गये थे...?"

शोख अदा से बोली नीना।

"भीतर कोई बैठा है के...?" जवाब देने के स्थान पर बोला चन्दगी राम चौटाला।

"नहीं तो...।"

"तो फेर भीतर चाल के बात कर...आड़े ही डट (खड़ी हो) के बात करेगी के...?"

हंसी नीना और एक तरफ हो गई।

चन्दगी राम चौटाला उसके साथ रगड़ खाते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

नीना पुनः हंसी...उसने दरवाजा बंद करके कुण्डा लगाया और चन्दगी राम चौटाला के पीछे-पीछे चलती उस कमरे में प्रवेश कर गई जिसमें अभी कुछ देर पहले वह कपड़े उतार ड्रैसिंग टेबल के सामने बैठी अपने जिस्म की खूबसूरती को निहार रही थी।

कमरे में बाईं तरफ दीवार से लगा डबलबैड पड़ा था जिस पर कि कोरफोम के गद्दों के ऊपर सफेद रंग की सिल्क की चादर बिछी हुई थी...। एक साइड में खड़े करीने से सफेद रंग के दो-तीन सिरहाने रखे हुए थे।

यही तो दुकान थी नीना की...सो दुकान चलाने के लिए उसने उसे खूब अच्छी तरह से सजा रखा था।

चन्दगी राम चौटाला आगे बढ़कर बैड के ऊपर बैठा और पैरों में पहने जूते उतारकर पैरों को आपस में टकराकर झाड़ा और बैड पर पालथी मार ली।

नीना मुस्कुराती हुई बैड के करीब रखी अलमारी की तरफ बढ़ी...उसे खोला और उसमें से स्कॉच की बोतल निकालकर बैड के ऊपर ही रख दिया।

तत्पश्चात् वह कमरे से बाहर निकलकर बाईं तरफ बनी किचन की तरफ बढ़ गई। वहां से उसने शीशे के दो गिलास उठाये और वापिस कमरे में आ गई।

उसने गिलास भी बैड पर रखे और जैसे ही उसके करीब बैठने को हुई...।

"किवाड़ तो भिड़ा दै।" चन्दगी राम चौटाला बोला—"न्यूं ही लत्ते तार के (कपड़े उतार कर) जीब हम आपस मां लड़ांगे तो ऊपर तै कोई आ गया तो...।"

हंस पड़ी नीना...वह उठी और दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाकर वापिस पलटी।

"अब ठीक है...?"

"हां...इब ठीक सै।"

कहकर चन्दगी राम ने अपनी जेब से दो हजार रुपये निकाले और उसे स्कॉच की बोतल के करीब रखते हुए बोला—

"दो हजार सैं...डेढ़ थारा...अर पांच सौ दारू का...।"

नीना ने नोट उठाये—"नोट कहीं भागे जा रहे थे क्या चौटाला साहब जो आपने पहले ही...।"

"पहला देन मां ही फैदा से...नईं तो तैं के मुंह तै निकड़ेगा पहंला पैसा दो फेर तने हाथ लगाऊं...पर इब ता तेरे कैन तो पैलां ही हाथ लगा सकूं हूं... ।"

"अब तो नीना आधी रात तक तुम्हारी गुलाम हो गई चौटाला साहब हाथ क्या कुछ भी लगा सकते हो... ।"

चन्दगी राम चौटाला ने दांत फाड़े और बोला–

"लत्ते तार अपने... ।"

कहते हुए वह स्वयं भी अपने कुर्ते के बटन खोलने लगा।

नीना ने एक पल भी नहीं लगाया...वह खड़ी हो गई और नाइटी की डोरी खोल दी।

अगले ही पल नाइटी उसके बदन को चूमती हुई उसके पैरों में आ गिरी। उसी के साथ उसका कयामत ढा देने वाला जिस्म चन्दगी राम चौटाला की आंखों को चुंधियाने लगा।

उसका दिल कर रहा था कि वह अभी उस पर झपट पड़े और उसे तोड़ मरोड़ कर रख दे।

लेकिन उसने ऐसा नहीं किया...अपने आप पर काबू पाये रखा उसने...। बड़े इत्मिनान से उसने अपने कपड़े उतारे और बेड पर बैठकर टांगें फैला लीं।

"आजा...मेरे ते पीठ लगा के बैठ जा... ।"

बिना किसी प्रकार का नखरा दिखाये नीना उसकी टांगों के बीच आ बैठी और उसके सीने से अपनी पीठ लगा ली।

चन्दगी राम चौटाला ने उसकी बगलों के नीचे से बांहें निकालीं और उसके भारी तथा तनी हुई छातियों को सहलाने लगा।

उसके तजुर्बेकार हाथों ने शीघ्र ही नीना के जिस्म में गर्मी पैदा करनी शुरू कर दी...वह उससे और भी ज्यादा सट गई।

"इब पैग बना... ।" तभी पीछे से चन्दगी राम चौटाला उसकी गर्दन पर गर्म हवा छोड़ता हुए बोला।

नीना थोड़ा आगे को झुकी...स्कॉच की बोतल उठाकर उसने दो पैग तैयार किये...बोतल को बंद करके बैड पर रखा और दोनों पैग उठाकर एक पैग अपनी गर्दन के पीछे किया...।

चन्दगी राम चौटाला ने उसकी एक छाती को छोड़ा...हाथ बगल के नीचे सें निकालकर पैग पकड़ा और उसे होठों से लगा लिया।

नीना भी पैग को हलक में उड़ेलने लगीं।

दो-दो पैग हलक में उड़ेलने के पश्चात् चन्दगी राम चौटाला ने स्कॉच की बोतल उठाकर बैड के नीचे फर्श पर रख दी। साथ ही दोनों गिलास भी रख दिये।

नीना समझ गई कि घुड़सवार ने किले में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया है...। सो वह उसके आगे से हटी और बैड पर पीठ के बल लेट गई।

चन्दगी राम चौटाला उसकी फैली टांगों के मध्य आकर घुटनों के बल बैठ गया।

और फिर घुड़सवार ने ऐसी ऐड़ लगाई कि घोड़ा भागता हुआ सीधा किले के दरवाजे के पल्लों को धकेलता हुआ किले में प्रवेश कर गया।

नीना के होठों से सिसकारी फूट निकली...आनन्द से उसकी आंखें बंद हो गईं।

और फिर कमरे में आह। उह...हाय मैं मर गई...भींच डालो...मसल डालो की आवाजें आने लगीं...साथ ही शहनाइयों की आवाजें गूंजने लगीं।

❑❑❑

❑❑❑

आकाश में विचरती उस शैतान आत्मा के होठों पर अचानक मुस्कान नाच उठी जिसे धर्मराज ने भेड़िया के नाम से नवाजा था।

मीलों दूर उसे बंद कमरे में संसर्ग करते चन्दगी राम नजर आया।

और फिर उसी पल-वह शैतान आत्मा रोहिणी की तरफ बढ़ने लगी।

एक पल भी नहीं लगा उसे कि उस मकान के ऊपर आकाश में स्थिर नजर आने लगी वह शैतान आत्मा।

और फिर उसका पारदर्शी शरीर तेजी से नीचे आने लगा।

अगले ही पल वह नीना के मकान के आंगन में खड़ी थी।

उसने गर्दन-पीछे घुमाकर एक बार मकान के मुख्य दरवाजे की तरफ देखा...। दरवाजे की सिटकनी चढ़ी देख उसने सन्तुष्टी से गर्दन हिलाई और उस दरवाजे की तरफ बढ़ी जिसमें कि चन्दगी राम चौटाला नीना को अपनी मर्दानगी के जलवे दिखा रहा था।

दरवाजे के समीप आकर उसने गर्दन आगे की।

आत्माओं के लिए दरवाजे तथा दीवारों की रुकावटें मायने नहीं रखती।

अगले ही पल उसका पारदर्शी धड़ बाहर था तथा गर्दन बंद दरवाजे को पार कर भीतर झांक रही थी।

भीतर चन्दगी राम चौटाला पूरी रफ्तार से अपने काम में जुटा हुआ था...नीना भी नीचे से अपने कूल्हे उचका-उचका कर उसका साथ दे रही थी...। दोनों के जिस्म पसीने से लथपथ हो रहे थे...दोनों बुरी तरह से हांफ रहे थे...लेकिन फिर भी हार मानने को कोई तैयार नहीं हो रहा था।

भेड़िया ने गर्दन वापिस बाहर खींची...एक बार पुनः गर्दन दायें-बायें पीछे घुमाई...फिर उसने अपना दायां पैर आगे बढ़ा दिया।

उसका पैर दरवाजे को पार करता भीतर प्रविष्ट हुआ साथ ही उसका जिस्म भी आधे के करीब दरवाजे में समा गया।

फिर उसका दूसरा पैर उठा और पूरा-का-पूरा कमरे में आ गया।

सामने चन्दगी राम चौटाला भरपूर मेहनत से हल जोत रहा था।

भेड़िया आगे बढ़ा और बैड पर चढ़कर चन्दगी राम चौटाला के पीछे आकर उसके पैरों के करीब आ खड़ा हुआ...।

और फिर वह चन्दगी राम चौटाला के ऊपर बिल्कुल उसी एक्शन में झुकने लगा जिस एक्शन में कि चन्दगी राम चौटाला था।

धीरे-धीरे वह शैतान आत्मा उसके जिस्म में प्रवेश करने लगी।

जैसे ही भेड़िया पूरा-का-पूरा उसमें प्रविष्ट हुआ...चन्दगी राम चौटाला के जिस्म को एक हल्का-सा झटका लगा...और फिर—

धर्मराज का श्राप सामने आने लगा...उसका कद पल प्रति पल बढ़ने लगा। उसके साथ ही उसकी रफ्तार में भी तेजी आने लगी।

नीना बड़े को पाकर पहले कुछ आनन्दित हुई—मगर जब हालत और भी ज्यादा बढ़ने लगे तो उसकी आंखों में पहले तो हैरानी उभरी...फिर उसके चेहरे पर वेदना उभरने लगी।

और फिर वेदना चीखों में बदल गई।

लेकिन चन्दगी राम चौटाला ने तुरन्त उसके मुंह पर हाथ रख दिया...।

नीना की चीखें उसके हलक में घुट गई...।

चन्दगी राम चौटाला को अपने ऊपर से हटाने के लिए उसने

अपनी तरफ से पूरा जोर लगा दिया...लेकिन उसकी हर कोशिश नाकाम साबित हो रही थी।

चन्दगी राम चौटाला ने अपनी टांगों से उसे इस कदर जकड़ लिया था कि वह अपने स्थान से हिल तक नहीं पा रही थी।

पीड़ा के कारण नीना का चेहरा सफेद पड़ने लगा।

उसकी आंखें फटने लगी।

लेकिन चन्दगी राम चौटाला की गति में कोई कमी नहीं आई।

और फिर—

सहसा ही नीना को अपने भीतर गन्दगी का फव्वारा फूटता महसूस हुआ...ऐसा लगा जैसे किसी गंदे पानी के पाइप का ढक्कन खुल गया हो।

नीना के जिस्म को एक तेज झटका लगा।

बस यह आखिरी झटका था उसका...उसके पश्चात् वह हिल नहीं पाई।

वह मर चुकी थी।

चन्दगी राम चौटाला कुछ देर तक नीना की लाश पर पड़ा हांफता रहा...फिर वह उसके ऊपर से उठा और गहरी नजरों से नीना की लाश को देखने लगा।

धर्मराज का श्राप अब सामान्य रूप में आने लगा था।

"इब तेरा कै करूं...।" वह लाश को देखते हुए बड़बड़ाया—"जेकर तेरे को न्यूं ही (यूंही) छोड़ के चला गया तो दुनिया ने बेरा पाट जागा (पता लग जायेगा) कि मैं फेर दिल्ली मां आया सूं...अर वा हरामजादी रीमा राठौर फेर मन्ने खत्म करन खातर हिया आ जागी (जायेगी) फेर के करूं से मैं...?"

वह सोचों में डूब गया।

कुछ पल सोचते रहने के बाद उपरान्त उसने चुटकी बजाई—

"हां...यूं ठीक रहेगा...इस तरियो किसी ने मेरे आन का बेरा नईं पाटेगा...।"

उसने तुरन्त कपड़े पहने...पैरों में जूते पहने और कमरे में इधर-उधर देखने लगा जैसे कुछ ढूंढ रहा हो।

कुछ देर ढूंढने के पश्चात् वह कमरे से बाहर निकला और किचन की तरफ बढ़ गया।

जब वहां भी उसे अपनी मन वांछित वस्तु नसीब नहीं हुई तो

वह दूसरे कमरे में जा घुसा...फिर स्टोर में उसे अपनी मन वांछित तो नहीं लेकिन काम चलाऊ चीज अवश्य मिल गई थी।

वह कुल्हाड़ी थी जिसका फल ज्यादा तेज तो न था...फिर भी ठीक था।

कुल्हाड़ी का दस्ता अपेक्षाकृत काफी छोटा था।

दस्ता पकड़े वह स्टोर से निकला और पुनः उस कमरे में घुस गया जिसमें कि नीना की लाश पड़ी थी।

वह कुल्हाड़ी लिये बैड के करीब पहुंचा और नीना के पेट के नीचे के उस भाग को घूरने लगा जिसे उसने तहस-नहस कर दिया था।

और फिर शुरू हुआ उस दरिन्दे की दरिन्दगी का दौर।

चन्दगी राम चौटाला ने पहले नीना की बाईं टांग के बिल्कुल ऊपरी सिरे पर कुल्हाड़ी का तेज वार किया।

पहले ही वार में कुल्हारी आधे से ज्यादा उसकी जांघ में जा धंसी...।

उसने अपना दायां पैर उठाकर उसकी जांघ पर रखा और कुल्हाड़ी को ऐसे बाहर निकाला जैसे वह लकड़ी में फंसी हो।

कुल्हाड़ी निकालकर उसने पुनः उसी स्थान पर कुल्हाड़ी चलाई।

तीसरे वार पर नीना की वह पूरी-की-पूरी टांग उसके जिस्म से अलग हो गई।

चन्दगी राम चौटाला ने उसकी टांग को उठाकर उसके सीने पर रखा तथा दूसरी टांग को काटने में जुट गया।

दूसरी टांग को भी उसने पहली टांग के बराबर में नीना के सीने पर रख दिया।

और फिर कुछ देर बाद उसने नीना के शरीर को नाभि के नीचे से फाड़ना शुरू किया।

करीब आधे घण्टे बाद नीना की दोनों बाहें...उसका सिर दोनों टांगें...नाभि के नीचे का भाग तथा धड़ फर्श पर एक ढेर की सूरत में पड़े थे।

डबलबैड की चादर खून से लथपथ तो थी ही, साथ ही उस पर मांस के छोटे-बड़े लोथड़े चिपके हुए थे।

तत्पश्चात् वह बाहर आंगन में आया और आंगन में बाईं तरफ देखा जहां पर कि फूलों की छोटी-सी क्यारी बनी हुई थी।

वह वापिस स्टोर में घुसा और उसमें से फावड़ा उठा लाया।

और फिर करीब एक घण्टे पश्चात् उसने क्यारी में अच्छा खासा गड्ढा बना डाला।

बुरी तरह से हांफते हुए उसने फावड़े को क्यारी के करीब रखा और आस्तीन से अपना चेहरा पौंछते हुए वापिस कमरे में पहुंचा... ।

सिर्फ एक घण्टा ही वह कमरे से बाहर रहा था...वहां एक घण्टे में हजारों लाखों चीटियों ने नीना की लाश पर हमला कर डाला था। उसके हर कटे अंग के साथ हजारों-लाखों चीटियों के झुण्ड-के-झुण्ड चिपके हुए थे।

बैड की चादर पर भी बेशुमार चीटियां नजर आ रही थी।

चन्दगी राम चौटाला ने उन चीटियों की परवाह नहीं की...झुककर वह कटे अंगों को ढेर के करीब पहुंचा...झुका और नीना की दोनों टांगों को ऐसे उठाया जैसे लकड़ी के दो लट्ठों को उठा रहा हो।

दोनों हाथों में एक-एक टांग उठाये वह बाहर आया और क्यारी के करीब पहुंचकर उसने टांगें खड्डे में फैंक दी... ।

तत्पश्चात् उसने उसका धड़ उठाया...फिर उसकी बाहें और अन्त में सिर उठाकर भी खड्ड में फैंक दिया।

कमरे में अब केवल नीना की नाभी के नीचे का हिस्सा पड़ा था।

बाकी के सारे अंग उसने खड्डे में डाल दिये थे।

कमरे में आकर उसने कमरे में भरपूर निगाह डाली कि कोई ऐसी चीज रह तो नहीं गई जिसके जरिये पुलिस उस तक पहुंच जाये।

आश्वस्त होकर उसने बेड पर बिछी चादर उठाई और उसे इकट्ठा करके बाहर आकर उसे भी खड्डे में फैंक दिया।

तत्पश्चात् उसने मिट्टी से खड्डा भर दिया।

खड्डा अच्छी तरह से भरने के पश्चात् वह वापिस कमरे में गया और नाभि के नीचे के हिस्से को कुल्हाड़ी के द्वारा छोटे-छोटे टुकड़ों में तब्दील करने लगा।

पन्द्रह मिनट में ही उसनें उसके इतने छोटे-छोटे टुकड़े कर डाले जैसे कसाई ग्राहक को बकरे के मीट के टुकड़े करके देता है।

तत्पश्चात् उसने नीना की नाइटी उठाई...उसे फर्श पर बिठाया और सारे टुकड़े उसमें डाल दिये।

फिर कुल्हाड़ी तथा फावड़े को किचन में ले जाकर अच्छी तरह से धोया...फिर साबुन से अपने हाथ रगड़-रगड़ कर धोये...अपने कपड़ों पर नजर डाली।

पूरी तरह से सन्तुष्ट होकर उसने फावड़ा तथा कुल्हाड़ी वापिस स्टोर में रखे और कमरे में आकर नीना की नाइटी की बनी पोटली उठाकर बाहर आ गया।

मकान से बाहर निकलकर उसने दरवाजा बंद किया और फिर एक तरफ पैदल बढ़ने लगा।

करीब तीस-चालीस कदम चलने के उपरान्त उसने पोटली में से एक टुकड़ा निकाला और उसे गली की साइड में बनी नाली में फैंक दिया...।

दस-बीस कदम चलकर उसने दूसरा टुकड़ा फैंका।

इसी प्रकार थोड़ी-थोड़ी दूरी पर टुकड़े फैंकता वह सड़क की तरफ बढ़ रहा था। उसे भरोसा था कि सुबह होने तक गलियों के आवरा कुत्ते उन टुकड़ों को खा चुके होंगे।

सड़क पर पहुंचते-पहुंचते उसने पूरी पोटली खाली कर दी...फिर खाली नाइटी को उसने रोहिणी के बाहर बह रहे गंदे नाले में फैंक दिया।

"इब ठीक सै....।" वह सड़क पर चलते हुए मुस्कुराया—"इब मन्ने कोई न पकड़ सकेगा...अर (और) ना ही किसी ने मेरे आन का बेरा पाटेगा...।"

कुछ दूर पैदल चलकर उसने एक थ्री व्हीलर रोका और उसमें सवार हो गया।

कुछ ही पलों में वह अपने घर की तरफ उड़ा चला जा रहा था।

कैसीनो में जाने का इरादा आज के लिए उसने टाल दिया था।

धरती वासियों में से किसी को भी पता नहीं चल पाया कि वह शैतान आत्मा पुनः एक शरीर में प्रवेश कर चुकी है।

□□□
□□□

पश्चिम विहार के-छः ब्लाक की तीसरी गली में सबसे अन्तिम फ्लैट चंदगी राम चौटाला का था। उसके फ्लैट के बाद करीब पांच फीट की एक गली थी तथा गली के बाद काफी बड़ा पार्क बना हुआ

था।

कहने को तो वह पार्क ही था...मगर वहां न तो बच्चों के खेलने के लिए झूले वगैरह थे...न ही फूल...पेड़-पौधे वगैरह...। जगह-जगह गड्ढे बने हुए थे तथा यहां-वहां कंटीली झाड़ियां बनी हुई थी। लोगों ने तो अब वहां से बाकायदा गुजरने का रास्ता बना लिया था...।

पार्क के बीचों-बीच बन चुकी पगडंडी पर अपनी पुरानी राजदूत मोटर साइकल पर बैठा चंदगी राम अपने फ्लैट की तरफ बढ़ रहा था।

पार्क पार कर वह पार्क के गेट से निकलकर अपने फ्लैट के आगे आकर रुका। उसने मोटर साइकिल स्टैण्ड पर लगाई और आगे बढ़कर दरवाजे के सामने आकर रुक गया। जेब से चाबी निकालकर उसने ताला खोला और कुण्डा खोलकर दरवाजे को पूरा खोल दिया।

तत्पश्चात् वह मोटर साइकिल के करीब पहुंचा और उसे धकेलते हुए फ्लैट के भीतर ले जाकर स्टैण्ड पर लगा दी।

ठीक तभी पीछे से किसी ने दरवाजा खटखटाया...।

चंदगी राम चौटाला ने गर्दन पीछे घुमाई...।

सामने जालिम सिंह खड़ा था...उसके पीछे बाहर सड़क पर उसकी टोयेटा खड़ी थी।

चंदगी राम चौटाला दरवाजे की तरफ मुड़ा...आगे बढ़ा और प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखते हुए उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"के है...(क्या है) ?"

"चंदगी राम चौटाला हो न तुम...?" जालिम सिंह बोला।

"सूं...तैं कौन सै (तू कौन है)...?"

"मेरा नाम जालिम सिंह है...।"

"फेर (फिर)...?"

"भीतर आने को नहीं कहोगे...?"

चंदगी राम चौटाला पहले तो हिचकिचाया...फिर एक तरफ हो गया।

जालिम सिंह भीतर प्रवेश कर गया।

एक कमरे के उस फ्लैट में वही एक कमरा था जिसमें कि मोटर साइकिल खड़ी थी...। कमरे में बाईं तरफ एक फोल्डिंग पलंग बिछा हुआ था जिस पर कि बिस्तर लगा था। फोल्डिंग के करीब

दो कुर्सियां...कुर्सियों के आगे एक साधारण-सा छोटा मेज रखा था...। मेज पर ओल्ड बैरल ब्राण्ड की बोतल तथा उसके करीब एक खाली गिलास रखा था। मोटर साइकिल के आगे उसी साइड में किचन बनी हुई थी तथा आगे एक छोटा-सा कमरा।

चंदगी राम के बिना पूछे ही ज़ालिम सिंह एक कुर्सी पर बैठ गया।

चंदगी राम ने दरवाजा बंद किया और आकर फोल्डिंग पर बैठ गया।

"यह ओल्ड बैरल...।" जालिम सिंह ने बोतल की तरफ इशारा किया।

"तुम्हारे खातिर न है...।"

हंस पड़ा जालिम सिंह...।

"इब तो तैं भीतर भी घुस आया...इब बोल...कौन हो तुम...किस खातिर मेरे पास आया सै...?"

जालिम सिंह ने जेब से ट्रिपल फाइव का पैकेट निकालकर होठों में दबाई और पैकेट उसकी तरफ बढ़ा दिया।

चंदगी राम चौटाला ने जेब से बीड़ी का बण्डल निकाल लिया।

"म्हारी (हमारी) बीड़ी थारी सिगरेट से घनी सुथरी सै...।"

कहते हुए उसने बण्डल हाथों में रगड़ा...फिर एक बीड़ी निकालकर होठों में दबाकर बण्डल टेबल पर रखा और माचिस निकालकर बीड़ी सुलगा ली।

जालिम सिंह ने सिगरेट सुलागाकर एक लम्बा कश लगाया और चंदगी राम को गौर से देखते हुए बोला—

"कालिया पठान का नाम तो सुना होगा तुमने...?"

एकदम से उछल पड़ा चंदगी राम चौटाला...।

"वह जो काली दुनिया का राजा सै...तै उसी कालिया पठान की बात कर रिया सै...?"

"हां...मैं उसी कालिया पठान का दाहिना हाथ...उसका खासमखास...उसका सैक्रेट्री...सब-कुछ हूं...।"

चंदगी राम चौटाला उसको घूरते हुए बोला—

"मन्ने तो कालिया पठान का कुछ नहीं बिगाड़ा...फिर...।"

"चीफ को तुम्हारे से काम है...।"

पुनः चौंका चंदगी राम चौटाला—

"मेरे तै (से)...?" उसने हैरानी से अपने सीने पर हाथ रखा।

"हां...तुमसे...?"

सहसा ही चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यपूर्ण मुस्कान नाच उठी—आंखों में एक अजीब-सी चमक उभर आई।

"के काम सै थारे चीफ को...पर पहलां तू यह बता...तैं मेरे को कैसे जाने सै...?"

जालिम सिंह के होठों पर मुस्कान नाच उठी...।

"तुम्हारी सारी हिस्ट्री जानकर ही मैं तुम्हारे पास आया हूं...पहले तुम चोर थे...कई कामयाब चोरियां की...लेकिन फायदा तुम्हारे साथी उठाते रहे...आखिर तंग आकर तुम पत्तेबाजी में लग गये और तुम्हें जानकर हैरानी होगी कि जिस ठिकाने पर तुम ताश खेलने जाते हो...वह ठिकाना चीफ का है...।"

"ओह...।" चौंका चंदगी राम चौटाला।

"वहां के हर मैम्बर के बारे में हम पूरी जानकारी प्राप्त करके ही उस को अपना परमानेंट मैम्बर बनाते हैं...वर्ना दो-चार रोज बाद या तो उसकी लाश किसी चौराहे पर पड़ी नजर आती है...या फिर उसे मैम्बरशिप से अलग कर दिया जाता है...।"

"तुम तो घने खतरनाक हो...।"

हैरानी से आंखें फैलाई चंदगी राम चौटाला ने।

हंसा जालिम सिंह।

"कानून की नजरों से छुपकर धंधा करना पड़ता है...इसलिए पूरा ध्यान तो रखना ही पड़ता है...क्या पता कोई पुलिसिया...कोई मुखबिर भेद लेने के लिए हमारें कैसीनो का मैम्बर बन जाये...।"

"ठीक कहे सै तैं (तू ठीक कह रहा है)।"

"इसलिए हमें हर मैम्बर की पूरी जानकारी रखनी पड़ती है...।"

"इब जरा वा काम भी बता दै जिस खातर तै मेरे पास आया सै...?"

जालिम सिंह का चेहरा गम्भीर हो गया।

"हमें तुम्हारी जानकारी प्राप्त करने के दौरान यह भी मालूम हुआ कि तुम दिमाग के बहुत धनी हो...किसी भी समस्या का समाधान चुटकियों में निकाल सकते हो...।"

"तो...?" चंदगी राम चौटाला ने भौंहें उछालीं।

"काली सिंह का नाम सुना है... ?"

"सुना सै...वा भी तुम्हारे चीफ की तरह काले धंधे करै सै... ।"

"फिर तो मकबूल हुसैन का नाम भी सुना होगा... ?"

"सुना सै...काली दुनिया के समुन्द्र में रहू सूं... ध्यान तो रखना पड़े सै न... !"

"काली सिंह और मकबूल हुसैन ने चीफ का बहुत बड़ा नुकसान किया है...पिछले एक महीने में उन्होंने हमें करोड़ों की चपत लगाई... । अपनी बेशुमार ताकत के बावजद भी हम उन्हें ढूंढ पाने में नाकाम रहे...और तो और हम उनका कोई नुकसान तक नहीं कर पाये...जब भी हमें उनके किसी ठिकाने की खबर लगती है तो हम वहां फौरन कूच कर देते हैं...लेकिन हैरानी की बात यह है कि वे हमारे वहां पहुंचने से पहले ही अपना ठिकाना बदल लेते हैं... ।"

"तो... ?"

"तुम उन्हें हमारी खातिर ढूंढो... ।"

"ताकि थम उन्हें खत्म कर सको... ।"

"बिल्कुल... ।"

"जालिम सिंह... ।" चंदगी राम चौटाला की आवाज सहसा सख्त हो उठी—"अगर तुमने मेरी जानकारी ली सै तो तुम्हें यूं भी मालूम होगा के मैं खून-खराबे ते परहेज रखूं सूं... ।"

"तुम्हें कौन कह रहा है कि तुम उन्हें खत्म करो...तुम्हें तो बस उन्हें ढूंढ़ना है... ।"

"फेर भी...उन दोनों का खून तो मेरे सर पड़ैगा न...न भाई...मैं यूं पाप ना कमा सकूं सूं...कोई सुथरा काम बोल...वा करन की मैं सोच सकूं हूं... ।"

"देखो चंदगी राम चौटाला... ।" जालिम सिंह उसे समझाने वाले अंदाज में बोला—"जुर्म की दुनिया का एक असूल है...यहां हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है...जालिम सिंह और मकबूल हुसैन व्हेल बनने के सपने देख रहे हैं और राजगद्दी हासिल करने के लिए तो नामालूम कितने बेगुनाहों का खून बहाना पड़ता है जबकि वे दोनों तो हमारे कुसूरवार हैं... ।"

"फेर भी...जब थम उन्हें नहीं ढूंढ सके...मैं कैसे ढूंढ सकूं सूं...तुम्हारे पास तो घनी ताकत सैं...बेशुमार, तरीके सैं... ।"

"लेकिन हमारे पास तुम्हारे जैसा दिमाग नहीं...तुम उनको

ढूंढने की कोई-न-कोई तरकीब निकाल सकते हो।

"पर फेर भी मैं यूं खून-खराबे वाला काम नईं करूंगा... ।"

सख्ती से बोला—चंदगी राम चौटाला।

सहसा ही जालिम सिंह का चेहरा कठोर हो उठा।

"इतना जान लो चंदगी राम चौटाला...कालिया पठान को न सुनने की आदत नहीं...मैं तो फिर भी तुम्हें मना रहा हूं...मिन्नतें कर रहा हूं...लेकिन कालिया पठान दूसरी बार मिन्नत नहीं करते...सीधे सीने में गोली उतार देते हैं।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच उठी। यही तो चाहता था कि जालिम सिंह के मन में यह बात अच्छी तरह से बैठ जाये कि वह खून-खराबे से परहेज रखता है। अब उस बेचारे को क्या मालूम कि अब वो चंदगी राम चौटाला नहीं रहा—भेड़िया बन चुका है वह... ।

वो भेड़िया...जिसे बहता हुआ खून पसंद है...दौलत के लिए जो किसी भी हद तक गिर सकता है।

खड़ा हो गया वह।

उसे खड़ा होते देख जालिम सिंह हड़बड़ाया—"क्या बात है? खड़े क्यों हो गये तुम...?"

"खड़ा हो जा...इब मैं जो भी बात करूंगा...तुम्हारे चीफ कालिया पठान से करूंगा... ।"

"क्या कहेगा तू उनसे...?"

"वा मैं उसे ही बताऊंगा... ।"

"देखो चंदगी राम चौटाला...अगर तुम उनके सामने कुछ उल्टा सीधा बोलने की सोच रहे हो तो उसे अभी दिल से निकाल दो...कहीं ऐसा न हो कि... ।"

"तै इब तक बैठा सै...खड़ा नईं हुआ तै... ।" गुर्रा उठा चंदगी राम चौटाला।

जालिम सिंह गहरी सांस छोड़ते हुए खड़ा हो गया उसकी लठ्मार भाषा से वह भीतर-ही-भीतर चिढ़ गया था—उसका दिल कह रहा था कि वह अभी रिवाल्वर निकाले और उसके सीने में गोली उतार दे।

बड़ी मुश्किल से उसने अपने आप पर काबू पाया और खड़ा हो गया।

"मैं जरा लत्ते (कपड़े) बदल आऊं आपने... ।" कहकर पिछले कमरे में चला गया।

❑❑❑

❑❑❑

"जै राम जी की... ।"

कमरे में प्रविष्ट होते हुए चंदगी राम चौटाला ने अपने माथे पर हाथ का पृष्ठ भाग मारा... ।

कालिया पठान ने हैरानी से पहले उसे देखा फिर जालिम सिंह की तरफ देखा जोकि चंदगी राम चौटाला के पीछे-पीछे कमरे में प्रविष्ट हुआ था।

"यह किस गंवार को ले आया तू...?" वह थोड़ा खीझे स्वर में बोला।

"यही तो है चंदगी राम चौटाला... ।"

जालिम सिंह उसके पीछे से निकलकर कालिया पठान के सामने आकर बड़े अदब से बोला।

कालिया पठान के चेहरे पर पुनः हैरानी उभरी... ।

"तो तू यह कहता है कि यह निपट गंवार काली सिंह और मकबूल हुसैन को ढूंढ निकालेगा... ।"

"यस चीफ... ।"

"दिमाग खराब हो गया है तेरा...शक्ल देखी है इसकी...पागल भी इससे ज्यादा समझदार नजर आयेंगे... ।"

"रै कालिया पठान... ।" चंदगी राम चौटाला एकदम से भड़क उठा—"राजा होवेगा तै अपने घरां मां (घर में)...अपने घर बुला कै तन्ने मेरी बेज्जती करन का कोई हक नई सै... ।"

सुनकर कालिया पठान का चेहरा सुलग उठा।

दो टके का गंवार कालिया पठान को आंखें दिखाए... । फुंफकार उठा वह—"तेरी इतनी हिम्मत हरामजादे... ।"

"हरामजादा न बोल मन्ने...हां...तैं चौथे बाप की औलाद बोल सके सै...तीन बाप बदल चुका सूं...इब चौथे बाप की औलाद सूं... ।"

"क्या मतलब...?"

"तैं नई समझेगा...अर जो तू म्हारे पर रौब डाल रिया सै...वह आपने इस चमचे पै डाल...मैं थारा गुलाम नई सूं। जेकर तै अपनी

रियासत का राजा सै तो मैं भी आपने दिल का राजा सूं... ।"

कालिया पठान और भी भड़क उठा...एक पल भी नहीं लगाया उसने कि जेब से रिवाल्वर निकालकर उस पर तान दी।

"कालिया पठान के सामने आज तक किसी ने ऊंचे स्वर में बात करने की हिम्मत नहीं की हरामजादे...और तूने मेरे सामने मेरे ही घर में मुझे आंख दिखाई... ।"

"ऐसा ही एक खिलौना म्हारी जेब में भी सै... ।" हंसकर बोला चंदगी राम चौटाला—"मन्नें इसका रौब न दिखा...रही बात आंख दिखाने की तौ पैलां (पहले) तैनें मेरी बेज्जती की थी...फेर मैं पीछे कैसे रह सकूं सूं... ।"

"हरामजादे...लगता है तेरी मौत मेरे ही हाथों होनी लिखी थी... ।" दांत किटकिटाये कालिया पठान ने।

जोरों से हंस पड़ा चंदगी राम चौटाला... ।

"तो फेर चला दे गोली...पर गोली चलाने से पैंला (पहले) यह सोच लै के जे कर मन्ने गोली लगेगी तो तू भी नई बचेगा...तू क्या...तेरा यू चमचा...तेरा घर...तेरे सारे प्यादे...कोई भी न बचेगा... ।"

हड़बड़ाया कालिया पठान...उसने हैरानी से जालिम सिंह की तरफ देखा... ।

"क्या भौंक रहा है यह हरामी... ।"

"फेर हरामी...मैंने कया न (कहा न) चौथे बाप की औलाद बोल मन्ने।"

"बकवास बंद कर अपनी... ।"

हौले से हंसकर चुप हो गया चंदगी राम चौटाला।

"बोल जालिम सिंह...यह क्या कह रहा है...?" कालिया पठान गुर्राया।

जालिम सिंह खुद हैरान था।

"मैं खुद कुछ नहीं समझ रहा चीफ... ।" वह बोला—"मुझे तो लगता है कि यह कोई ठस्सा मार रहा है... ।"

हंस पड़ा चंदगी राम चौटाला... । उसने गर्दन जालिम सिंह की तरफ घुमाई।

"तुझे याद सै न जालिम सिंह कि मैं तेरे साथ चलने से पहले स्टोर में गया था... ।"

"तू कपड़े चेंज करने गया था वहां... ।"

चंदगी राम चौटाला ने झुककर अपने कुर्ते का निचला सिरा पकड़ा और कुर्ते को ऊपर उठा दिया।

अगले ही पल कालिया पठान की आंखें फैल गईं—जबकि जालिम सिंह के होठों से सिसकारी फूट पड़ी। दोनों फटी-फटी आंखों से चंदगी राम चौटाला के सीने पर बंधी एक काली मोटी पट्टी को देख रहे थे... ।

"य-यह क्या है...?"

"कमाल सै... ।" चंदगी राम कुर्ते को छोड़ते हुए हंसा—"इतने बड़े आदमी हो फिर भी थम न जान सके सै...चालो मां ही बता देंऊ...इस पट्टी में... ।" उसने अपने सीने पर उंगली रखी—"बारूद भरा सै...इतना बारूद भरा सै के थम दोनों...थारा यू यार...सब-कुछ खत्म हो सके सै... ।"

दोनों के चेहरे निचुड़ गये।

"फेर भी जेकर थमने एतबार न हो...तो गोली चला के देख लो...थमने बेरा यार जागा... ।"

कालिया पठान ने जालिम सिंह की तरफ कहर भरी निगाहों से देखा।

जालिम सिंह को काटो तो खून नहीं... । चंदगी राम चौटाला ऐसी हरकत कर बैठेगा...यह तो वह सपने में भी नहीं सोच सकता था।

"क्या बात हो गई रे कालिया पठान...पिस्सू पड़ गए क्या।" हंसकर बोला चंदगी राम चौटाला।

कालिया पठान के मुंह से बोल नहीं फूटा।

चंदगी राम चौटाला ने कदम आगे बढ़ाये और कालिया पठान के सामने आकर अपना दायां हाथ आगे फैलाया—"इब आपना यू खिलौना मन्ने दे दे कालिया पठान... ।"

कालिया पठान के होठों पर भयानक मुस्कान नाच उठी।

"तू क्या समझता है...तू मुझे मार डालेगा... ।"

"मन्ने ऐसा तो नई कया (कहा) मन्ने तो बस थारी पिस्तौल चाहिए... ।"

कालिया पठान ने बेचैनी से कुर्सी पर पहलू बदला... ।

कितना मजबूर कर डाला था चंदगी राम चौटाला ने उसे... ।

जिस कालिया पठान से पूरा अण्डरवर्ल्ड थर-थर कांपता था...जिसके एक इशारे पर लाशों के ढेर लग जाते थे...वहीं कालिया पठान आज एक मामूली जाट के आगे मजबूर हुआ खड़ा था।

मरता क्या न करता...उसने रिवाल्वर चंदगी राम चौटाला के हाथ में रख दी।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान नाच उठी। उसने रिवाल्वर अपनी उंगलियों में नचाई और कालिया पठान की आंखों में झांकते हुए बोला–

"हमारी सीख को अपने पल्ले बांध लै कालिया पठान...सकल (शक्ल) ने देख कै सामने वाले के बारे मैं कुछ नई कैना (कहना) चाहिए...। दूसरी सीख यू सै कि ऐसे...।" उसने जालिम सिंह की तरफ इशारा किया–"वफादारां कै भीतर तू महफूज न रह सकै सै...।"

"क्या मतलब...?" चौंका कालिया पठान...।

"थारा यू चमचा मन्ने थारे सामने सीधा ही ले आया...अरै कम-से-कम इन्ने मेरी तलासी तो लेनी चाहिए थी...ऐसे तो हर कोई...ऐरा गैरा थम तक पहुंच सकै सै...।"

कहकर उसने रिवाल्वर कालिया पठान की गोद में फैंक दी।

उसकी इस हरकत पर कालिया पठान चौंका...।

"मैं थारे को मारन खातर नईं आया...मैं जानू सूं के मेरी सकल ऐसी सै कि कोई भी मन्ने देख के गंवार ही कहेगा...ईस खातर मैं ई पिरोगराम बना कै आया...ताकि थारे को पता लाग सके मैं कि मैं थोड़ा नईं घना दम खम रखूं सूं...।"

कहकर उसने कुर्ता पुनः ऊपर उठाया और सीने पर बंधी पट्टी खोल दी तथा उसे कालिया पठान के सामने लटकाते हुए बोला–

"ई पट्टी मां सिरफ रेत सै...अर मेरी जेब मां भी कोई पिस्तौल नईं...।"

कालिया पठान के चेहरे पर हैरानी के साथ-साथ प्रशंसा के भाव उभरे जो कि कदाचित् चंदगी राम चौटाला के लिए ही थे।

"और मेरी बात गांठ बांध लो थम...जेकर ईसे ही थारे बाड़ी गारड सैं तो समझ लो थम बड़ी जल्दी ऊपर पहुंच जाओगे...राजा के सामने पहुंचन खातर हजारां तलाशियों से गुजरना पड़े सै...पर थारा यह चमचा मन्ने सीधे थारे पास ले आया...कल ने यू किसी

और ने ले आयेगा...और फेर...।"

"सुन रहा है जालिम सिंह...।" फुंफकारा कालिया पठान—"क्या कह रहा है यह...तू मेरी मौत का कारण बन सकता है...।"

जालिम सिंह के होठों से बोल नहीं फूटा...उसका सिर झुक गया...। यह अलग बात थी कि वह अन्दर-ही-अन्दर चंदगी राम चौटाला को मन-मन वजनी गालियां निकाल रहा था।

"कुछ सीख ले इससे...कहीं ऐसा न हो कि मुझे मजबूर होकर तेरी जगह किसी दूसरे जालिम सिंह को देनी पड़े...।"

"स-सारी चीफ...म-मैं आगे से ख्याल रखूंगा...।" सहमे स्वर में बोला जालिम सिंह।

"फायदे में रहेगा...।"

जालिम सिंह का सिर और भी झुक गया।

कालिया पठान ने जालिम सिंह पर से निगाहें हटाई और चंदगी राम चौटाला की तरफ देखकर मुस्कुराया।

"हमें तुम्हारी यह अदा पसंद आई...चंदगी राम चौटाला।" वह बोला।

चंदगी राम चौटाला भी मुस्कुराया—

"ईब तो थमने बेरा पाट गया होयेगा (अब तो आपको पता चल गया होगा) कि चंदगी राम चौटाला घनी कुत्ती चीज सै...।"

हंसा कालिया पठान—"बैठो...।" उसने अपने दाई तरफ रखी दो कुर्सियों की तरफ इशारा किया।

चंदगी राम चौटाला आगे बढ़कर एक कुर्सी पर बैठ गया।

"तू भी बैठ जालिम सिंह...।" हल्के गुस्से में बोला कालिया पठान।

हल्की-सी हड़बड़ाहट के साथ जालिम सिंह...चंदगी राम चौटाला के बराबर वाली कुर्सी पर जा बैठा।

कालिया पठान ने निगाहें चंदगी राम चौटाला के चेहरे पर केन्द्रित कीं और गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—"जालिम सिंह ने तुम्हें बता दिया होगा कि हम तुमसे क्या चाहते हैं...।"

चंदगी राम चौटाला ने पहलू बदला...बिना किसी संकोच के जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला...एक बीड़ी निकालकर सुलगाई और सुट्टा लगाकर मुंह से कसैला धुआं उगलते हुए बोला—

"हां...इसने मुझे बता दिया सै...।"

"फिर क्या जवाब है तुम्हारा...?"

चंदगी राम चौटाला ने बीड़ी का सुट्टा लगाया।

"मन्ने और कोई एतराज नईं...पर मन्ने खून-खराबे से घना डर लागे सै...मैं तो यह कहूं सूं कि जेकर थम म्हारे से काम कराना चाहो तो फेर हमार कहने पर चालो...।"

"क्या कहना चाहते हो तुम...?"

"देखो कालिया पठान साब...काली सिंग अर (और) मकबूल हुसैन ने थारा माल लूटा...थम उन दोनों का माल लूटो...थम तो फेर भी और आठ-दस झटके बर्दाश्त कर जाओ...पर वह तो अभी उठ रिये सैं जेकर उनको एक तकड़ा झटका लाग जाए तो फिर वा जिन्दगी भर न उठ सकै सै...।"

कालिया पठान ने जालिम सिंह की तरफ उलझे अंदाज में देखा—

"क्या कह रहा है यह...?" वह बोला।

"इसके कहने का मतलब है कि अगर हम उन्हें आर्थिक रूप से खत्म कर दें तो वे खुद ही खत्म हो जायेंगे...।"

मुस्कुरा पड़ा कालिया पठान...उसने निगाहें पुनः चंदगी राम चौटाला की तरफ घुमाईं—

"कह तो तुम ऐसे रहे हो जैसे मेरे हां करते ही तुम जान जाओगे कि उनके अड्डे कहां-कहां पर हैं...।"

"वह बाद की बात सै...पहले तो थम हां करो...फिर आगे की बात होयेगी...।"

कालिया पठान ने कुछ क्षण सोचने की मुद्रा बनाई...फिर बोला—

"ठीक है...तुम खून-खराबे से परहेज रखना...वो काम हम कर लेंगे...अब बोलो क्या करोगे तुम...?"

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया...बीड़ी का सुट्टा लगाया और बोला—

"जालिम सिंग ने मन्ने यू बताया सै कि वह दोनों थारा घना नुकसान कर चुके सैं...।"

"करोड़ों का नुकसान हो चुका है हमारा...अभी बीती शाम को वे हरामजादे हमारी तीन करोड़ की हेरोइन लूट कर ले गये...साथ ही हमारे तीन आदमी भी मार डाले उन्होंने...।"

कहते हुए कालिया पठान ने दांत किटकिटाये।

"जालिम सिंह ने मन्ने सब कुछ बता दिया सै। इस ते मैं यह समझूं सूं के थारे ही गैंग का कोई हरामी गद्दारी कर रिया सै... ।"

"वो तो हम भी समझते हैं...लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद भी हम उस हरामजादे को पकड़ नहीं पाये... ।"

चंदगी राम चौटाला ने बीड़ी का सुट्टा लगाया और मुंह से धुआं छोड़ते हुए बीड़ी के टोटे को नीचे फेंक कर उसे जूते से मसल दिया।

"थारा वह गद्दार मैं पकड़ सकूं सूं... ।"

"कैसे... ?"

"साथ ही मैं काली सिंग या मकबूल हुसैन के किसी एक के अड्डे के बारे मां पता करके कै उसे लूट सकूं सूं।"

बोला कुछ नहीं कालिया पठान...बस प्रश्नभरी निगाहों से उसे देखने लगा।

उसे चुप देख चंदगी राम चौटाला ने अपनी बात आगे बढ़ाई—

"इब थम बताओ मन्ने इस काम के कितने पैसे मिलेंगे... ?"

"तुम बोलो...क्या लोगे ?"

चंदगी राम चौटाला ने कुछ सोचा फिर बोला।

"सात लाख... ।"

"सात लाख... ।" हैरानी से आंखें फैलाईं कालिया पठान ने।

"दो लाख गद्दार को पकड़न कै...अर पांच लाख उनमें से एक का अड्डा लूटने कै... ।"

कालिया पठान ने उसे घूरकर देखा... ।

"तुम अपनी औकात से बढ़कर नहीं मांग रहे... ?"

"उंहू... ।" बिना बुरा मनाये चंदगी राम चौटाला ने गर्दन दायें-बायें हिलाई—"मैं अपनी औकात में रह कै ही मांग रिया सूं... ।"

"सात लाख की रकम कोई छोटी नहीं होती चौटाला... ।"

"मैं जानूं सूं...पांच-पांच सौ कै चौदहां सौ नोट होने सैं सात लाख मां...सौ-सौ के कै सात हजार नोट होवै सैं...अर पचास-पचास कै... ।"

"मैंने तुमसे गिनती करने के लिए नहीं कहा... ।" बुरा-सा मुंह बनाते हुए कालिया पठान ने उसकी बात काटी।

"मैं तो थमने यह बताने की कोसिस कर रिया सूं के मन्ने

सात लाख देके थम आपना करोड़ों का फैदा (फायदा) करोगे...आड्डे (अड्डे) ते...मिलने वाली रकम करोड़ों की भी हो सकै सै...लाखों की भी...अर गद्दार पकड़े जाने से थमने आगे का फैदा भी होयेगा... होयेगा के नईं...?"

"वो तो होगा...। फिर भी तुम ज्यादा रकम मांग रहे हो...।"

"तो फिर इक सौदा और कर लो...।"

"कैसा सौदा...?"

"गद्दार को पकड़न कै एक लाख...अर अड्डे में से मिली रकम का आधा हिस्सा...बेसक वहां का माल दो लाख का हो या फिर पांच करोड़ का...थम मन्ने आधे माल कै बराबर की कीमत दे देना...।"

कालिया पठान ने जालिम सिंह की तरफ देखा...फिर पुनः चंदगी राम चौटाला की तरफ देखते हुए बोला–

"ठीक है...तुम्हें सात लाख मिल जायेंगे...।"

"दो लाख एडवांस...।"

कालिया पठान ने घूरकर उसे देखा।

चंदगी राम चौटाला पर उसके घूरने का कोई असर नहीं हुआ। बल्कि वह धूर्ततापूर्वक मुस्कुरा पड़ा।

"तुम्हारा एडवांस मांगना यह दर्शाता है चौटाला कि तुम्हें हम पर विश्वास नहीं है...।"

"माफी चाहूं सूं कालिया पठान साब...आज तक मन्ने मेरे अपनो नै ही मन्ने धोखा दिया सै...तभी तो मैं इस कंगाली के दौर ते गुजर रिया सूं...अर मेरे साझीदार मेरे दिमाग का फैदा उठा कै लखपति बन गये सै...।"

"इसका मतलब तुम हमें भी उन जैसा समझ रहे हो...।"

"दूध का जला छाज को भी फूंक-फूंक कै पिये जनाब...।" अर मैं थम से पूरा एडवांस तो नईं मांग रिया सै...दो लाख ही मांग रिया सूं...।"

"और अगर तुम ही हमारे दो लाख लेकर गायब हो गये तो...?"

कालिया पठान ने उसी का वार उस पर किया।

हंस पड़ा चंदगी राम चौटाला और कालिया पठान के आगे बांह लम्बी करके बांह को ऊपर-नीचे करते हुए बोला–

"यह बात कालिया पठान कह रिया सै...कि एक आदमी उसकी रकम ले के भाग सकै सै...जेकर ऐसा हो गया तो फिर कालिया पठान का रूतबा के रया (रहा)।"

"तुम ठीक कह रहे हो चौटाला... ।" उसकी बात का समर्थन किया कालिया पठान ने—"कालिया पठान का माल हजम करने की ताकत कोई नहीं रख सकता...तुम्हें दो लाख एडवांस मिल जायेंगे... ।"

"तो दो न...सुभ (शुभ) काम में देरी नईं होनी चाईये सै... ।"

चंदगी राम चौटाला ने पुनः हाथ फैला दिया।

कालिया पठान ने जालिम सिंह की तरफ देखा।

एकदम से सीधा हो गया जालिम सिंह... ।

"इसके हाथ में दो लाख रख दो जालिम सिंह... ।"

तुरन्त जालिम सिंह खड़ा हुआ और पिछले कमरे की तरफ बढ़ गया।

शीघ्र ही वह वापिस लौटा तो उसके हाथ में पांच-पांच सौ की चार गड्डियां थीं।

चंदगी राम चौटाला ने अपना हाथ पुनः फैलाया... ।

जालिम सिंह ने उसके फैले हाथ पर चारों गड्डियां रखीं और वापिस अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

"अब बोलो क्या करोगे तुम...?"

कालिया पठान उसे गहरी नजरों से देखते हुए बोला।

चंदगी राम चौटाला ने रुपये अपने कुर्ते की जेबों में रखे और बोला—"पहले तो मैं थारे गद्दार ने पकड़ूंगा... ।"

"कैसे पकड़ोगे...?"

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया और फिर उसे बताने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

कालिया पठान ने अपने सामने खड़े उन पन्द्रह आदमियों पर निगाह घुमाई जोकि उसके गैंग में बड़े ओहदों पर नियुक्त थे।

सभी-के-सभी उसके विश्वसनीय थे।

"कल शाम जो कुछ हुआ...उसका तुम लोगों को पता चल चुका होगा... ।" कालिया पठान गम्भीरता से बोला—'पूरे तीन करोड़ का माल लूटा है हमारा उन हरामजादों ने। उससे पहले भी हमारा

करोड़ों का नुकसान कर चुके हैं वे... । और यह काम हमारे ही गैंग के किसी गद्दार का है...वह हरामजादा हमसे रुपया लेकर काली सिंह और मकबूल हुसैन के तलवे चाट रहा है।

मैंने तुम लोगों को यहां इसलिए बुलाया है कि तुम लोग अपने अण्डर काम कर रहे लोगों पर निगाह पैनी कर दो...मुझे किसी भी सूरत में वह हरामजादा चाहिए जो हमारा खाकर उनके गुण गा रहा है... ।"

वह रुका...एक लम्बी सांस छोड़ी...फिर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—

"काली सिंह तथा मकबूल हुसैन की तरफ से हमें दो लगातार चोटें पहुंची हैं...उससे हमारी मार्किट पर बहुत बुरा असर पड़ा है...मार्किट में माल खत्म हो चुका है...और उसकी डिमाण्ड बढ़ रही है...ऐसे में अगर हमारे एजेण्टों ने किसी और तरफ का रुख कर लिया तो हमारी तो लुटिया ही डूब जायेगी।

मार्किट में सन्तुलन बनाये रखने के लिए मैंने इस बार दस करोड़ की प्योर अनकर हेरोइन पाकिस्तान से मंगवाई है जो कि चार दिन बाद यहां पहुंच जायेगी... । तुम सभी मार्किट में यह सूचना भेज दो कि चार दिन बाद माल आ रहा है...ताकि एजेण्टों को कुछ राहत मिल सके... ।

रही बात काली सिंह और मकबूल हुसैन की तो इस बार डिलीवरी लेने कालु, रंगा और राजू जायेंगे...ताकि अगर उन दोनों में से किसी हरामजादे तक खबर पहुंच भी गई...और वे हमारा माल लूटने आ भी पहुंचे तो मेरे तीनों शेर उनका डटकर मुकाबला कर सकते हैं... ।"

उसके सामने खड़े लोगों में से खूंखार नजर आने वाले...ऊंचे लम्बे डील-डौल के तीन आदमी आगे बढ़े और कालिया पठान के आगे आ खड़े हुए

यह तीनों कालु, रंगा तथा राजू थे।

कालिया पठान ने तीनों पर निगाह डाली और बोला—

हेरोइन की डिलीवरी कब और कहां लेनी है...यह मैं तुम्हें कल बता दूंगा...तुम तीनों तैयार रहना...काली सिंह और मकबूल हुसैन में से अगर कोई भी हमारा माल लूटने की कोशिश भी करे तो भून के रख देना उन हरामजादो को... ।"

तीनों ने सिर हिला दिये।

पिछले कमरे में एक कुर्सी पर बैठे चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कुराहट फैल गई...उसकी नजरें उस शीशे में से बाहरी कमरे में मौजूद हर शख्स को गौर से देख रही थीं...।

वह शीशा ऐसा था कि उसके एक तरफ से तो दूसरी तरफ देखा जा सकता था...लेकिन दूसरी तरफ से देखने वाले को भीतर का दृश्य दिखाई नहीं दे सकता था।

और फिर उसने जैसे ही सभी को वापिस मुड़ते देखा...वह तुरन्त अपने स्थान से खड़ा हो गया।

□□□

□□□

"ट्रिन...ट्रिन...।"

फोन की घण्टी घनघना उठी।

काली सिंह ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही हाथ आगे बढ़ाकर सामने टेबल पर रखे फोन का रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो...।" वह माउथपीस में बोला...।

"बॉस...भण्डारी आपसे मिलना चाहता है...।" दूसरी तरफ से आदर भरी आवाज आई।

भण्डारी का नाम सुनते ही काली सिंह एकदम से सीधा होकर बैठ गया।

"क्या कहता है...?"

"कह रहा है बड़ी धांसू खबर है...।"

"ठीक है...उसे डिफैंस कालोनी वाली कोठी पर पहुंचने को बोल दे। मैं वहीं पहुंच रहा हूं।"

"यस बॉस...।"

काली सिंह ने रिसीवर वापिस क्रेडिल पर रखा और तुरन्त खड़ा हो गया।

काली सिंह करीब पैंतालीस साल का ऊंचे लम्बे डील-डौल वाला काला कलूटा शख्स था। उसके बाल काफी थे जिन्हें उसने औरतों की तरह पीछे रबड़ बैण्ड के साथ बांध रखा था।

एक तो रंग काला ऊपर से उसकी पोशाक भी काली थी चमड़े की काली जाकेट तथा उसी की चुस्त पैंट नीचे पैरों में गर्म शूज–। बस एक कमी यह थी...वह थी हण्टर की...। अगर उसके हाथ

में हण्टर होता तथा उसके बाल छोटे होते तो वह किसी सर्कस का रिंग मास्टर नजर आता।

वह दरवाजे की तरफ बढ़ा...। और जैसे ही वह दरवाजे से बाहर निकला...दरवाजे के दायें-बायें खड़े दो स्टेनगन धारी तुरन्त उसके साथ-साथ चलने लगे।

ये काली सिंह के अंगरक्षक थे।

पूरी तरह से चाक-चौबंद...किसी भी पल फायरिंग करने को तत्पर।

अपने दोनों बाडीगार्डों से घिरा काली सिंह बड़ी शान से चलता हुआ उस शानदार कोठी से बाहर निकला तो तुरन्त एक मर्सीडीज कम्पाउण्ड के आगे ड्राइव-वे पर आ खड़ी हुई।

मर्सीडीज के आगे एक काले रंग की एम्बैसेडर खड़ी थी जिसमें कि चार स्टेनगनधारी बैठे थे।

वे भी काली सिंह के बाडीगार्ड थे।

मर्सीडीज के ड्राइवर ने तुरन्त कार का पिछला दरवाजा खोला और सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

शान से गर्दन अकड़ाये काली सिंह कार में प्रवेश कर गया...जबकि दूसरे गार्ड ने दूसरी तरफ का दरवाजा खोला और काली सिंह के बराबर में बैठते हुए दरवाजा बंद कर दिया।

अब काली सिंह दोनों बाडीगार्डों के बीच बैठा हुआ था।

उनके बैठते ही ड्राइवर ने ड्राइविंग डोर खोला और स्टीयरिंग के पीछे बैठकर दरवाजा बंद किया...।

अगले ही पल मर्सीडीज का इंजन जाग उठा।

"डिफैंस कालोनी चलना है...।"

तभी काली सिंह ड्राइवर से बोला।

ड्राइवर ने तुरन्त डैश पर रखा वाकी-टाकी उठाया और उसे ऑन करके बोला, "डिफैंस कालोनी वाली कोठी में...।"

उसकी बात पूरी होते ही आगे खड़ी काली एम्बैसेडर के पहियों में हरकत आ गई।

पीछे-पीछे मर्सीडीज भी फाटक की तरफ बढ़ने लगी।

जैसे ही मर्सीडीज ने फाटक पार किया...फाटक के साइड में खड़ी एक अन्य काली एम्बैसेडर उसके पीछे-पीछे चलने लगी।

इसमें भी काली सिंह के बाडीगार्ड थे।

जब से काली सिंह ने मकबूल हुसैन के साथ मिलकर कालिया पठान के विरुद्ध जंग छेड़ी थी—तभी से उसने अपनी सुरक्षा के इतने तगड़े प्रबन्ध कर दिये थे। कालिया पठान की ताकत से वह भली-भांति वाकिफ था... वह यह भी जानता था कि कालिया पठान के सामने उसकी या मकबूल हुसैन की औकात एक मरियल कुत्ते से ज्यादा नहीं...।

लेकिन ज्यादा ऊंचा उड़ने की लालसा... अण्डरवर्ल्ड का बादशाह बनने के लालच ने तथा अधिक अमीर बनने की चाह ने उसे कालिया पठान के साथ जंग लड़ने पर मजबूर कर दिया था।

वह यह भी जानता था कि जो लालच उसे है... वही लालच मकबूल हुसैन को भी है...। और उसे मालूम था कि अगर वे दोनों मिलकर अगर किसी तरह कालिया पठान को खत्म भी कर देते हैं... तो भी जंग खत्म नहीं होगी... तब उन दोनों में बादशाहत हासिल करने के लिए जंग छिड़ जायेगी।

लेकिन वे सब बाद की बाते हैं... फिलहाल तो उसका और मकबूल हुसैन का समझौता हो रहा है कि कालिया पठान के खत्म होने तक दोनों में से कोई भी एक-दूसरे को कोई भी नुकसान पहुंचाने की कोशिश भी नहीं करेगा... बल्कि अगर जरूरत पड़ी तो वे एक-दूसरे की मदद करेंगे। बाकी वे कालिया पठान से अपने-अपने ढंग से लड़ेंगे।

और फिर काली सिंह ने कालिया पठान के किले में पहली सेंध लगाई...। उसे यह नहीं मालूम था कि मकबूल हुसैन अपनी तरफ से क्या कर रहा है... हां उसे यह जरूर पता लग जाता था कि वह क्या कर चुका है। जैसे कल शाम को कालिया पठान का जो तीन करोड़ का माल लूटा था... उसका उसे लूट के बीस मिनट बाद ही पता चल गया कि मकबूल हुसैन ने वह हाथ मारा है।

खैर... सेंध के रूप में उसने कालिया पठान के बहुत ही विश्वस्त आदमी... उसके गैंग के ऊंचे ओहदेदार को तोड़ा और उसे अपने लिए काम करने को राजी कर लिया।

भण्डारी उसके लिए कालिया पठान की मुखबिरी करने लगा... तथा बदले में काली सिंह से उसे भरपूर मेहनताना मिलता... इतना कि कालिया पठान से उसे महीने भर में भी उतनी रकम नहीं मिलती थी जितनी उसे काली सिंह को एक इम्फारमेशन देने से मिल जाती थी।

भण्डारी को अपना आदमी बनाने के बावजूद भी काली सिंह ने सतर्कता का दामन नहीं छोड़ा...उसने भण्डारी को अपने असली ठिकाने के बारे में कभी भी मालूम नहीं होने दिया।

क्या पता कल को कालिया पठान भण्डारी के बारे में जान जाये...ऐसे में वह फौरन उसके ठिकाने के बारे में जान लेगा और फिर उसकी क्या हालत होगी...यह समझता था वह।

इसीलिए उसने पूरी गोपनीयता बनाये रखी थी।

तीनों कारें कतार से चलती हुई डिफेंस कालोनी की तरफ बढ़ रही थीं।

करीब पैंतीस मिनट के बाद कारें डिफेंस कालोनी के सी-ब्लाक की तीन सौ दो नम्बर कोठी के करीब पहुंचीं तो कोठी का गेट फौरन खुल गया।

गेट खोलने वाले दो गार्ड थे।

गेट खुलते ही दायें-बायें खड़े हो गये।

कारें उनके बीच में से निकलती हुई ड्राइव-वे पर चलती हुई कम्पाउण्ड के सामने आकर खड़ी हो गई।

कारों के रुकते ही अगली तथा पिछली कारों के दोनों साइडों के दरवाजे खुले और उनमें से काली पोशाक पहने काली सिंह के बाडीगार्ड निकलकर तेजी से मर्सीडीज की तरफ लपके।

अगले ही पल उन्होंने मर्सीडीज को चारों तरफ से घेर लिया।

उनकी पीठ मर्सीडीज की तरफ थी तथा आंखें विपरीत दिशाओं में दुश्मन को ढूंढने का प्रयास कर रही थीं।

तत्पश्चात् मर्सीडीज का दाईं तरफ का दरवाजा खुला तथा उसमें से पहले काली सिंह के बाडीगार्ड ने बाहर कदम रखा...फिर उसके पीछे-पीछे काली सिंह बाहर आ गया।

दूसरा गार्ड परली तरफ का दरवाजा खोलकर उसके बाहर निकलते ही उसके बराबर आ खड़ा हुआ था।

तभी कम्पाउण्ड का दरवाजा खुला और उसमें से गुण्डे का-सा दिखने वाला एक व्यक्ति बाहर निकला...।

"भण्डारी आया है बॉस...।" गुण्डा सिर को झुकाते हुए बोला।

काली सिंह ने सिर को हल्का-सा झटका दिया और कम्पाउण्ड की तरफ बढ़ा।

उसके दोनों स्पेशल बाडीगार्ड उसके साथ-साथ चल रहे थे।

□□□
□□□

"कहो भण्डारी...क्या खबर लाये हो...?"

काली सिंह...भण्डारी को गहरी नजरों से देखते हुए बोला।

इस वक्त वह एक ऊंची पुश्त वाली कुर्सी पर फैलकर बैठा हुआ था...उसके दोनों गार्ड उसके दायें-बायें खड़े थे।

भण्डारी उसके सामने गुलामों की तरफ सिर झुकाये खड़ा था।

उसकी बात सुनकर भण्डारी ने सिर उठाया और काली सिंह को देखते हुए बोला–

"कालिया पठान और माल मंगवा रहा है सिंह साहब...।"

"कितना...?"

"दस करोड़ का...।"

"दस करोड़...।" काली सिंह के मुंह से थर्राया स्वर निकला–साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"जी हां...पूरे दस करोड़ का...।" भण्डारी ने दोनों हाथों की उंगलियां फैलाकर उसके सामने कीं।

बड़ी मुश्किल से काली सिंह ने अपने हाव-भावों पर काबू पाया और बोला–

"लेकिन अभी कल ही तो मकबूल हुसैन ने उसकी तीन करोड़ की हेरोइन लूटी थी। फिर इतनी जल्दी...।"

"तभी तो जल्दी मंगवा रहा है...।"

"क्या मतलब...?"

"आपके और हुसैन के द्वारा किये गये कालिया पठान के नुकसान के कारण उसकी मार्किट खराब होने लगी है...उसे यह डर सताने लगा है कि कहीं मार्किट में चल रहा उसका राज खत्म न हो जाये...क्योंकि अगर मार्किट में माल नहीं पहुंचा तो उसके एजेण्ट वगैरह दूसरी तरफ कोशिश करनी शुरू कर देंगे...।"

"क्या–क्या कालिया पठान उन ड्रोप पैडलरों को मार न डालेगा जो दूसरी तरफ देखेंगे...।"

"कैसे मारेगा वह उन्हें...क्या वजह बतायेगा वह उन्हें खत्म करने की...क्या यह चाहेगा कि उसका माल लुटा जा रहा है इसलिए वे भी भूखे रहें...डोप पेडलर तो यही कहेंगे न कि वह माल दे तो बेचें...सो उन्हें खत्म करने की उसके पास कोई वजह नहीं होगी।"

काली सिंह ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया फिर बोला–
"माल क्या है...?"
"हेरोइन...पूरे दस किलो...एकदम प्योर...अनकट...।"
"कब आ रही है...?"
"चार दिन बाद...।"
"कहां...?"
"डिलीवरी का स्थान अभी निश्चित नहीं हुआ...उसके बारे में वह कल बतायेगा...।"
काली सिंह का चेहरा उतर गया...।
"फिर क्या बात बनी...?" यह तो वही बात हुई कि गाय ने बछड़ा तो दे दिया...लेकिन वह दूध कब देगी...इसका पता नहीं...।"
"मैंने तो यह खबर आपको अभी इसलिए दी है ताकि आप दस करोड़ पाने के लिए तैयारी शुरू कर दें...मैं कोशिश करूंगा कि कल मुझे डिलीवरी के स्थान का पता चल जाये...अगर नहीं चल पाया तो फिर इसके लिए आपको कोशिश करनी पड़ेगी...।"
"हम क्या कोशिश करेंगे...?" काली सिंह ने उसे घूरकर देखा।
"डिलीवरी के लिए कालिया पठान ने तीन व्यक्तियों की ड्यूटी लगाई है...अगर मैंने पता लगा लिया तो ठीक–नहीं तो आप उन तीनों पर निगाह रखियेगा...या फिर उनमें से किसी एक को काबू में करके उससे पूछताछ कर लीजिएगा...।"
"इस तरह तो कालिया पठान सावधान हो जायेगा...।"
"तो फिर आप उन पर निगाह रखियेगा...वैसे मुझे पूरा विश्वास है कि इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी...मैं कल शाम तक आपको उस जगह का पता बता दूंगा...।"
काली सिंह ने सिर हिलाया...।
"अब मैं जाऊं सिंह साहब...?"
भण्डारी अपने हाथ में खुजली करते हुए अर्थ भरी मुस्कान के साथ बोला।
काली सिंह भी मुस्कुरा पड़ा...भण्डारी सिंह के बात करने के अर्थ को वह समझ गया था...सो वह बोला–
"जा–बाहर गेट पर तुझे तेरा इनाम मिल जायेगा...।"

भण्डारी ने उसे इस तरह सलाम किया जैसे बख्शीश मिलने पर कोई वेटर सलाम करता है...फिर वह उसे मीलों लम्बी दुआयें देता हुआ मुड़ा और बाहर निकल गया।

वह गेट पर पहुंचा तो उसे दाईं तरफ वाले गार्ड के हाथ में एक ब्रीफकेस नजर आया।

"यह मेरा है...?" वह गार्ड के करीब रुकते हुए बोला।

"हां...यह तुम्हारा है...।"

गार्ड मुस्कुरा कर ब्रीफकेस उसे देते हुए बोला।

भण्डारी ने ब्रीफकेस लेकर उसे हाथों में तोलकर भीतर रखे इनाम का अंदाजा लगाया और गेट से निकल गया।

गेट के बाईं तरफ उसकी मारूति खड़ी थी। वह उसकी तरफ बढ़ा।

उसने मारूति की ड्राइविंग डोर खोला...ब्रीफकेस को सीट पर फेंका और खुद स्टीयरिंग के पीछे बैठकर दरवाजा बंद कर दिया।

कुछ ही देर में मारूति सड़क पर दौड़ती नजर आने लगी।

डिफेंस कालोनी से निकलकर वह मारूति रोड पर पहुंची और नेहरू स्टेडियम के सामने बने फ्लाई ओवर पर चढ़ने लगी।

फ्लाई ओवर पार कर मारूति अभी थोड़ा-सा ही आगे बढ़ी थी कि तभी सहसा ही उसकी खोपड़ी के पृष्ठ भाग से कोई सख्त वस्तु आ लगी...।

बुरी तरह से चौंका भण्डारी...साथ ही उसके चेहरे की रंगत स्याह पड़ गई। वह इस बुरी तरह से थर्राया कि मारूति का स्टीयरिंग डोल गया।

मारूति जोरों से लहराई...।

"गाड़ी को काबू में कर...मेरा मरने का कतई इरादा नईं इबी...।"

फुंफकार उभरी।

भण्डारी के गले की घण्टी जोरों से उछली...।

"क-कौन हो तुम...?" खुद पर काबू पाने की कोशिश करने की भरसक कोशिश करते हुए बोला वह।

"चंदगी राम चौटाला...।"

"म-मुझसे क्या चाहते हो...? मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं...।"

"पर मैं तो तन्ने जानू सूं... ।" पीछे से आवाज आई।

"त-तुम चाहते क्या हो...?"

"गाड़ी न रोक... ।"

"ल-लेकिन... ।"

"जो कहा सै वो ही कर....नई तो मैं गोली चला देऊंगा... ।"

पीछे से आने वाली आवाज सहसा गुर्राहट में तब्दील हो गई।

मजबूरन भण्डारी को कार को सड़क किनारे रोकना पड़ा।

"इमें (इसमें) क्या सै...?" तभी पीछे से चंदगी राम ने सीट पर पड़े ब्रीफकेस की तरफ इशारा किया।

"रु-रुपये हैं... ।"

"खोल इसने... ।"

भण्डारी ने स्टीयरिंग पर से हाथ हटाये और थोड़ा-सा टेढ़ा होकर ब्रीफकेस को सीट पर रखे...रखे ही खोल दिया।

अगले ही पल चंदगी राम चौटाला के होठों पर क्रूर मुस्कान नाच उठी। ब्रीफकेस में एक लाख से कम रुपया हरगिज नहीं था।

तेजी से उसने कुछ सोचा...और अगले ही पल उसकी रिवाल्वर का दस्ता सीधा उसकी खोपड़ी पर पड़ा।

भण्डारी का सिर जोरों से घूमा...फिर उसका माथा स्टीयरिंग पर जा लगा।

वह बेहोश हो चुका था।

चंदगी राम चौटाला ने बायां हाथ लम्बा करके ब्रीफकेस बंद किया...उसे हैण्डल से पकड़कर उठाया और कार से बाहर आ गया।

कार का दरवाजा बंद करके उसने कार की तरफ पीठ की और वापिस फ्लाई ओवर की तरफ बढ़ने लगा।

फ्लाई ओवर के शुरू होने से पहले ही उसने एक टैक्सी रुकवाई और उसमें सवार हो गया।

अगले ही पल वह पश्चिम विहार की तरफ उड़ा जा रहा था।

दो लाख उसे रात को बतौर एडवांस मिले थे...लाख यह... ।

दस घण्टे के भीतर-भीतर उसने तीन लाख कमा लिये थे। लेकिन वह इन तीन लाख से सन्तुष्ट होने वाला नहीं था...उसकी नजर तो कालिया पठान की बादशाहत पर थी।

अपना यह जन्म वह राजाओं, महाराजाओं की तरह बिताना चाहता था...अधिक-से-अधिक देर जिन्दा रहना चाहता था... ।

तभी तो उसने नीना के एक-एक अंग को इतनी बेरहमी से काटा था...उसके नष्ट किये हिस्से को उसने छोटे-छोटे टुकड़े करके दूर-दूर तक बिखरा दिया था ताकि किसी को भी उसकी मौत का पता न चल सके और कोई यह न जान पाये कि भेड़िया ने एक नये शरीर पर कब्जा कर लिया है। इस प्रकार वह ज्यादा-से-ज्यादा लम्बा जीवन इस धरती पर गुजार सकता था।

अपने फ्लैट में पहुंचकर उसने ब्रीफकेस को उन दो लाख रुपयों के साथ रखा जोकि उसे कालिया पठान से मिले थे...फिर वह बाहर आ गया...फ्लैट को ताला लगाया और वहां से निकल पड़ा।

कुछ ही दूर में वह एक टैक्सी में बैठा कालिया पठान के अड्डे की तरफ उड़ा जा रहा था।

❑❑❑
❑❑❑

करीब चालीस मिनट बाद भण्डारी को होश आया।

आंखें खोलते ही उसकी नजरें सबसे पहले उस स्थान पर पडी...जहां पर कि ब्रीफकेस रखा था।

ब्रीफकेस अपने स्थान पर नहीं था।

हड़बड़ाकर उसने पिछली सीट पर नजर मारी...फिर निराशा भरी गहरी सांस छोड़कर रह गया।

उसे समझते देर नहीं लगी कि उस पर वार करने वाला कोई लुटेरा था। जोकि पहले से ही उसकी कार में छिपा हुआ था।

"कौन था वह...?"

"काली सिंह का आदमी...?"

"नहीं...नहीं...काली सिंह का आदमी भला उससे रुपया क्यों छीनने लगा...।"

फिर कौन था वह...?

कुछ भी समझ में नहीं आया उसे...। आखिर हारकर वह इसी निश्चय पर पहुंचा कि वह कोई लुटेरा ही था।

उसने अपने सिर पर उस स्थान पर हाथ लगाया जहां पर अभी भी दर्द की लहरें उठ रही थीं। फिर गहरी सांस छोड़ते हुए कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

❑❑❑
❑❑❑

नोटों से भरा ब्रीफकेस लेकर चंदगी राम चौटाला अपने फ्लैट पर पहुंचा तो बुरी तरह से चौंक पड़ा वह।

उसके फ्लैट का ताला खुला हुआ था।

चेहरा एकदम से कठोर हो गया उसका...शरीर तन गया...आंखों में दरिन्दगी के भाव उभर आये।

तुरन्त उसने अपने कदम आगे बढ़ाये...। उसका फ्लैट बिल्कुल कोने पर था—वहीं से दाईं तरफ उसके फ्लैट की दीवार के साथ-साथ गली जा रही थी।

चंदगी राम चौटाला उस गली में प्रविष्ट हुआ और कुछ कदम चलने के पश्चात् पुनः दाईं तरफ मुड़ गया।

अब वह अपने फ्लैट के पीछे वाली तंग गली में था। गली में यहां-वहां पानी खड़ा नजर आ रहा था तथा गंदगी बिखरी पड़ी थी।

उसके फ्लैट के पीछे खुलने वाले दरवाजे के सामने आकर वह ठिठका और जेब से चाबी निकाल कर एक हाथ से ताले को पकड़ा तथा दूसरे हाथ में थमी चाबी को ताले के छेद में डाल दिया।

आहिस्ता से उसने चाबी को दाईं तरफ घुमाया।

'क्लिक' की हल्की सी आवाज के साथ ताला खुल गया।

बिना कोई आवाज पैदा किये उसे ताले को कुण्डे से निकाला और पूरी सावधानी से कुण्डा सरका दिया।

धीरे-से उसने दरवाजे को भीतर की तरफ धकेला और दरवाजे को उतना ही खोला कि वह आराम से भीतर प्रवेश कर सके।

वह भीतर प्रविष्ट हुआ और स्टोर में आ गया।

दरवाजे को बंद किये बिना ही उसने अगले कमरे की तरफ देखा।

सामने उसकी पुरानी राजदूत खड़ी नजर आई उसे...। उसके अलावा और कुछ नहीं था।

सामने मुख्य दरवाजा बंद था तथा उसकी सिटकनी चढ़ी हुई थी।

उसकी आंखों में फैले दरिन्दगी के भाव और भी गहरे हो गए। एक पल भी नहीं लगा कि रिवाल्वर उसके हाथ में चमकने लगी।

बिना कोई आवाज पैदा किये...बिल्ली की तरह वह आगे बढ़ा। उसके कमरे में जो कोई भी था...वह दाईं तरफ उसके फोल्डिंग

पर बैठा हुआ होना चाहिए था...या फिर कुर्सी पर बैठा हुआ होना चाहिये था।

स्टोर और कमरे के बीच की बिना दरवाजे की चौखट के करीब वह एक पल के लिए ठिठका...फिर बिजली की-सी फुर्ती दिखाते हुए उसने लम्बी छलांग लगाई और राजदूत मोटर साइकल के ऊपर से होता हुआ कमरे के बीचो-बीच आ खड़ा हुआ। उसकी रिवाल्वर का रुख तो छलांग लगाते ही उधर हो ही गया था।

गनीमत थी कि उसने ट्रेगर नहीं दबाया था।

पैर फर्श पर रखने के साथ ही उसका तना हुआ जिस्म ढीला पड़ गया—चेहरे पर छाई कठोरता, गायब हो गई और आंखों में फैली दरिन्दगी ने कहीं मुंह छुपा लिया।

सामने उसके फोल्डिंग पलंग पर बला की खूबसूरत औरत आंखों में खौफ लिये उसकी तरफ देख रही थी...उसका चेहरा इस तरह खुला हुआ था मानो वह चीखना चाह रही हो, लेकिन खौफ के मारे उसके चीख न निकल पाई हो।

वह चांदनी थी...!

चंदगी राम चौटाला के नीचे बिछ चुकी उसकी दीवानी थी चांदनी।

चांदनी की उम्र हालांकि तीस को पार कर चुकी थी...मगर उसकी फिगर देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह तेईस-चौबीस से ज्यादा है। उसकी तनी हुई छातियां...भरे हुए गाल...चौड़े कूल्हे किसी के भी कलेजे पर बिजलियां गिरा देने के लिए काफी थी।

महीने में तीन दिन चांदनी ने चंदगी राम चौटाला के नाम लिख रखे थे।

हालांकि वह शादी शुदा औरत थी। जिस वक्त उसकी शादी हुई थी, तब वह बहुत शरीफ थी। अपने पति के अलावा किसी अन्य मर्द की तरफ देखना भी वह पाप समझती थी।

अपने पति की तरफ से भी उसे वो सब कुछ मिल रहा था जिसकी चाहत हर पत्नी की होती है।

लेकिन अपने पति की तरफ से भरपूर संतुष्टि मिलने के बावजूद भी उसे वो नहीं मिला जो वह चाहती थी।

वह चाहत थी मां बनने की चाहत।

दो वर्ष बीत गए...लेकिन वह मां नहीं बन पाई। दो से तीन

बीत गए...आखिर चांदनी यही समझी कि उसका पति उसे खुश करने के काबिल तो है...मगर वह उसे मां नहीं बना सकता।

अपने पति के प्रति यह भाव आते ही उसके मन में पर पुरुष की कामना जाग उठी...उसने मन में यह निश्चय किया कि किसी जवान और बाल-बच्चेदार पुरुष से सम्बन्ध बनाकर वह मां बनने का सौभाग्य प्राप्त कर लेगी और फिर पुनः अपने पति के प्रति वफादार हो जायेगी।

छः महीने लग गए चांदनी को यह हिम्मत बनाते हुए और आखिर उसने एक व्यक्ति से सम्बन्ध बना लिए। वह व्यक्ति उसका पड़ौसी था।

चार महीने तक वह उसके सम्पर्क में रही...और फिर उसने उसे छोड़कर दूसरे से सम्पर्क साध लिया।

बच्चा तो उसे प्राप्त नहीं हो पाया...मगर वह पर पुरुषों की दलाल में ऐसी धंसी की धंसती ही चली गई।

अब उसे बच्चे की चाह नहीं रह गई थी...अब तो उसे नये-से-नये पुरुषों से सम्बन्ध बनाना अच्छा लग रहा था।

इसी तरह एक दिन उसका सामना चंदगी राम चौटाला से हो गया।

चांदनी चंदगी राम चौटाला के नीचे क्या आई...वह अन्य सभी पुरुषों को ही भूल गई।

चंदगी राम चौटाला से उसे इतना कुछ मिला जितना वह अपने पति से भी प्राप्त नहीं कर पाई थी।

चांदनी उस पर ऐसी लट्टू हुई कि उसने अपने अन्य सभी आशिकों की तरफ से आंख मूंद ली और उसे ही समर्पित हो गई।

दो महीने तक तो दोनों ने खूब ऐश लूटी...फिर एक दिन चंदगी राम चौटाला ने उसे समझाया कि इस तरह रोजाना मिलने से उन दोनों की इज्जत खराब हो सकती है...साथ ही जल्द ही उनमें आपस में अरुचि भी पैदा हो जाएगी...सो उसने चांदनी के आगे यह प्रोपोजल रखा कि वे दोनों महीने में तीन बार आपस में मिलेंगे।

पहले तो चांदनी ने साफ न कर दी...चंदगी राम चौटाला के काफी समझाने के पश्चात् वह हां के लिए तैयार हुई...।

और इस प्रकार दोनों हर दस दिन बाद एक-दूसरे से मिलने लगे। बाकी के नौ दिन चांदनी उससे मिलने के इंतजार में छटपटाती

रहती थी।

"ओह! तो तुम हो।" चंदगी राम चौटाला गहरी सांस छोड़ते हुए बोला...साथ ही रिवाल्वर वापिस जेब में रख ली।

चंदगी राम चौटाला की आवाज सुनकर चांदनी पहले तो हड़बड़ाई...फिर दो-तीन गहरी-गहरी सांसें छोड़कर स्वयं पर काबू पाया।

"तुमने तो मुझे डरा ही दिया था... ।" वह कृत्रिम रोष प्रकट करते हुए बोली—"अगर गोली चली जाती तो... ?"

"यूं ही चल चांदी... ।" मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला—"थम (तुम) से पहले गोली धूप कै मन्ने लगती। पर थम्म (मगर तुम) इस वक्त कीसे (कैसे) आ गई आड़े (यहां)... ?"

चांदनी ने आंखें तरेर कर उसे देखा—"जानते हो आज क्या तारीख है... ?"

"क्या ?"

"इक्कीस...जबकि तुमने कल यानि बीस तारीख को आना था... ।"

"ओह!"

"पता है कल से बिस्तर पर करवटें बदल रही हूं...जल बिन मछली की तरह छटपटा रही हूं...और तुम यहां मजे से ऐश कर रहे हो... ।"

चांदनी का स्वर नाराजगी से भरा हुआ था... । अब उस बेचारी को क्या मालूम कि वह उसे खुश करने वाला चंदगी राम चौटाला नहीं रहा... भेड़िये की आत्मा प्रवेश कर चुकी है उसमें। जिस खुशी को वह अब तक प्राप्त करती रही थी...अब वह खुशी मौत का रूप ले चुकी है... ।

अब उस खुशी को प्राप्त करने का एक ही मतलब था...मौत।

"ओहो... ।" चंदगी राम चौटाला के मुंह से निकला—"थारी कसम (तुम्हारी कसम) मेरी छम्मक छल्लो...मन्ने ध्यान ही नहीं रहा था...वर्ना ईसा कीसे (ऐसा कैसे) हो सके था कि मैं थारे पास न आता... ।"

"ध्यान क्यों नहीं रहा था... ?" मुंह फुलाया चांदनी ने।

चंदगी राम चौटाला आगे बढ़ा और आकर चांदनी के करीब बैठ गया...उसने चांदनी को अपनी बांहों में भर लिया और उसकी

आंखों में झांकते हुए बोला—

"तुम विश्वास नईं (नहीं) करोगी... ?"

"तुम बताओ तो सही... ।" चांदनी उसके जिस्म की गर्मी को अपने भीतर समेटने की कोशिश करते हुए बोली।

"मैं एक बहुत बड़े काम में उलझ गया सूं... ।"

"क्या वो काम इतना बड़ा है कि तुम मुझे ही भूल गए... ?"

"ऐसी बात नईं (नहीं) मेरी रानी... थारे प्यार में डूबने से बड़ा कोई काम नईं मेरे पास... ।"

"तो फिर... ।"

"कहा न ध्यान नहीं रहा... जेकर (अगर) मन्ने याद आता तो मैं सारे काम छोड़ के थारे पास सिर के बल दौड़ा चला आता... ।"

"बातें बनाना तो कोई तुम से सीखे... ।" मुस्कुरा पड़ी चांदनी।

चंदगी राम चौटला भी मुस्कुराया और उसने चांदनी के गिरेहबान में हाथ डालकर उसकी छातियों को दबोच लिया।

चांदनी की आंखों में उन्माद भरने लगा।

उसने चंदगी राम चौटाला का हाथ अपने गिरेहबान से निकाल और पलंग पर लेट गई।

"कब की छटपटा रही हूं... ।" वह चंदगी राम चौटाला को अपने ऊपर गिराते हुए बोली—"आग लगी हुई है मेरे अंदर... और यह आग सिर्फ और सिर्फ तुम ही बुझा सकते हो... ।"

धर्मराज के श्राप ने सिर उठाना शुरू कर दिया... चंदगी राम चौटाला का दिल कर रहा था कि वह अभी उस पर टूट पड़े। लेकिन अपने होशो-हवास पर काबू पाये रखा उसने... ।

वह चांदनी के ऊपर से उठा और उसकी छातियों पर हाथ फेरते हुए बोला—

"बस एक रात और तड़प लो मेरी रानी... फिर मैं तेरी जिन्दगी की सारी तड़प मिटा दूंगा... ।"

"क्या कहा... ?" चांदनी बैठ गई। उसके स्वर में नाराजगी साफ झलक रही थी।

"समझने की कोसिस (कोशिश) करो मेरी जान... जेकर (अगर) मैं ईबी (अभी) फौरन कहीं नईं पहुंचा तो मन्ने भारी नुकसान पहुंच सकै सै... ।"

"किसी और को वायदा कर रखा है क्या... ?"

"कीसी (कैसी) बात करो हो तुम... थारे सिवा मैं किसी और के बारे में सोच सकूं सूं...?"

"तो फिर... ।"

"मैंने कहा न कि मैंने फौरन कहीं पहुंचना सै... ।"

"क्या काम मुझसे मिलने से भी ज्यादा जरूरी है...?"

"तुम समझने की कोसिस क्यों नहीं करती... के थमने (तुम्हें) अच्छा लगेगा कि मेरा घना सारा नुकसान हो...पूरे पंद्रह लाख का... ।"

चांदनी गहरी सांस छोड़ कर रही गई।

"बस एक ही रात की तो बात सै... फिर उसके बाद मेरी थारे साथ लगातार तीन रात पक्की... ।"

तीन रात की बात सुनकर चांदनी का चेहरा कुछ हद तक खिला।

"ठीक है... मैं कल रात तक इंतजार कर लूंगी... लेकिन अगर तुम कल भी नहीं आये तो... ।"

"मैं कल जरूर आऊंगा...अर (और) कल रात को ही मैं थारे को इतना घना खुश कर दूंगा कि तुम खुशी के मारे मर ही जाओगी... ।"

"अगर दम तुम्हारी बांहों में निकले तो मैं स्वयं को बहुत बड़ी खुशकिस्मत समझूंगी... ।"

अदा से मुस्कुराई चांदनी... ।

"वाह रे धर्मराज... ।" चंदगी राम चौटाला मन-ही-मन हंसा—"इसकी मौत भी थमने मेरे जरिये ही लिख रखी थी क्या... मन्ने तो इसका ध्यान ही नईं था...फिर भी यू आ गई। तैं (तू) भी घना चालू सै—मन्ने श्राप भी दे दिया...और लोगों को मारने का नया तरीका भी ढूंढ लिया।"

❑❑❑

❑❑❑

"चीफ ने तुम्हें याद किया है भण्डारी...?"

भण्डारी के अपने कमरे में प्रवेश के करीब एक मिनट बाद जालिम सिंह कमरे में प्रवेश करते हुए बोला।

भण्डारी का कलेजा जोरों से धड़क उठा...दिल में शंका उठने लगी कि कहीं कालिया पठान को उसके बारे में मालूम तो नहीं हो

गया।

चोर को हमेशा हर वक्त पकड़े जाने का डर सताता रहता है...अब यही डर भण्डारी के कलेजे को भी धड़का रहा था।

"कोई खास वजह है क्या...?" भण्डारी कुर्सी से उठते हुए बोला।

"दस करोड़ की हेरोइन की डिलीवरी के लिए उन्होंने तुम्हें भी चुन लिया है...इसलिए तुम्हें समझाना चाहते हैं कि क्या करना है...।"

"ओह...।"

भण्डारी के मुंह से निकला...साथ ही उसके चेहरे पर राहत उभर आई।

जालिम सिंह के साथ वह कमरे से बाहर निकला और उधर बढ़ने लगा जिधर कि कालिया पठान का स्पेशल कमरा था।

जैसे ही वह कमरे में प्रविष्ट हुआ...एकाएक ही उसकी पीठ से रिवाल्वर की नाल आ लगी।

चिहुंक उठा भण्डारी...उसकी रंगत एकदम से स्याह पड़ गई।

उसने सामने बैठे कालिया पठान की तरफ देखा जोकि स्कॉच का पैग पेट में पहुंचा रहा था।

"हिलना नहीं भण्डारी...।" पीछे से जालिम सिंह की गुर्राहट उभरी वर्ना मैं गोली चलाने में एक पल भी नहीं लगाऊंगा...।"

भण्डारी की फीकी पड़ी रंगत और भी उड़ गई।

"य-यह सब क्या है चीफ...म-मैंने ऐसा क्या कर डाला जो मेरे पर रिवाल्वर तानी गई है...।"

भर्राये लहजे में बोला भण्डारी।

कालिया पठान ने बड़े इत्मीनान से पैग खाली करके टेबल पर रखा और आस्तीन से होंठों को पोंछते हुए खड़ा हो गया।

ठहरी हुई चाल से वह उसकी तरफ बढ़ा और उसके सामने आ खड़ा हुआ...।

"किसका मुखबिर है तू...?" वह फुंफकारा...।

भण्डारी का कलेजा उछलकर उसके हलक में आ अटका...आंखों में मौत के साये गर्दिश करने लगे।

"य-यह आप क्या कह रहे हैं चीफ...आपको कोई गलत फहमी...।"

"तड़ाक...।"

कालिया पठान का झन्नाटेदार थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा।

चीखता हुआ भण्डारी अपने बाईं तरफ गिर पड़ा।

"बांध दो इसे कुर्सी के साथ।" कहर भरे स्वर में गुर्राया कालिया पठान...।

जालिम सिंह ने तुरन्त भण्डारी को बालों से पकड़कर सीधा खड़ा किया और फिर एक कुर्सी पर बिठा दिया।

कुछ ही पलों में भण्डारी कुर्सी के साथ बुरी तरह से बंधा हुआ नजर आ रहा था...उसके हाथ कुर्सी के हत्थों के साथ बंधे थे तथा पैर कुर्सी के अगले पायों के साथ बंधे थे।

"अ-आप मेरी वफादारी पर शक कर रहे हैं चीफ...।" पसीनों-पसीनों हो रहा था भण्डारी—"म-मैंने आपके साथ कोई नमकहरामी नहीं की और न ही मैं किसी का मुखबिर हूं...।"

कालिया पठान की आंखों में कहर नाच उठा...चेहरा सुर्ख हो उठा। झपटकर उसने उसके बालों को अपनी मुट्ठी में जकड़ा और उन्हें झिंझोड़ते हुए दहाड़ा—

"क्या तू ही डिफैंस कालोनी नहीं गया था...?"

सुनकर भण्डारी का कलेजा बैठने लगा।

"अ-आप को किसी ने बरगला डाला है चीफ मैं तो प-पटेल नगर गया था...।"

"फिर तो तैं यह भी कहेगा कि तैं मन्ने भी नहीं जाने सै...।"

तभी भण्डारी के पीछे से आवाज उभरी।

आवाज सुनकर ही भण्डारी की मां मर गई...आंखें धुआं-धुआं होने लगी।

"खेल खत्म...।" मन-ही-मन बड़बड़ाया वह।

उसने पीछे गर्दन घुमाई...चंदगी राम चौटाला पिछले कमरे से निकलकर उसकी तरफ बढ़ रहा था।

"म-मैं तुम्हें नहीं जानता...।" भण्डारी भर्राये लहजे में बोला।

"बड़ा बेसर्म सै याड़ी...।" चंदगी राम चौटाला उसके सामने आते हुए मुस्कुराया—"मैंने थारे सिर पै वार किया—यहां...।" उसने उसके सिर पर उस स्थान पर चपत मारी जहां पर कि उसने रिवाल्वर की चोट की थी।

कराह उठा भण्डारी...।

"क्या हुआ...टीस होवै सै।" हंसा चंदगी राम चौटाला।

कुछ नहीं बोला भण्डारी...बस होठों पर जुबान फेरकर रह गया।

"मैंने तेरे को लूटा भी...थारा वह ब्रीफकेस मैं ही ले गया था जो तू आपने दूसरे बाप ते इनाम मैं ले के कोठी से बाहर निकड़ा था... ।"

"म-मैं तुम्हें नहीं जानता...मैं तो यह भी नहीं समझ रहा कि तुम किस ब्रीफकेस की बात कर रहे हो... ।"

"तड़ाक्... ।"

तभी कालिया पठान का थप्पड़ पुनः उसके गाल पर पड़ा।

चीख उबल पड़ी भण्डारी के मुंह से... ।

"तू ऐसे कुछ नहीं बताने वाला हरामजादे... ।" फुंफकारा कालिया पठान—"बातों के भूत लातों से नहीं मानते...जालिम सिंह... ।" वह दहाड़ा।

तुरन्त जालिम सिंह आगे बढ़ा और भण्डारी के सामने आ खड़ा हुआ।

उसने जेब में हाथ डाला और चाकू निकाल लिया और जैसे ही उसने चाकू के बटन को दबाया—

'खट' की हल्की आवाज के साथ चाकू का फल भण्डारी की आंखों को चुंधियाने लगा। उसका कलेजा थर-थर कांपने लगा।

"अपने नाम के अनुरूप बड़ा बेरहम हूं मैं भण्डारी... ।" जालिम सिंह गुर्राया—"रहम करना तो मुझे आता ही नहीं।"

कहने के साथ ही उसका चाकू वाला हाथ तेजी से चला... ।

उसी पल भण्डारी का कान कटकर एक तरफ जा गिरा।

चीख उबल पड़ी भण्डारी के मुंह से...खून का फव्वारा फूट पड़ा वहां से और उसका कंधा खून से रंगता चला गया।

"इसी तरह तेरे जिस्म का एक-एक अंग कटेगा भण्डारी... ।" गुर्राया कालिया पठान—"और फिर तमाम अंगों को आवारा कुत्तों में बांट दिया जायेगा... ।"

"न-हीं चीफ...म-मुझे माफ कर दो...म-मैं लालच में अंधा हो गया था...अ-आप से गद्दारी करने की भूल कर बैठा मैं... ।"

"किसका मुखबिर है तू... ।" फुंफकारा कालिया पठान।

"क-काली सिंह का।"

"और मकबूल हुसैन का भी... ।"

"न-हीं...म-मैं सिर्फ काली सिंह के लिए काम करता था। म-मुझे माफ कर दो चीफ मैं भटक गया था... ।"

"माफी शब्द कालिया पठान की डिक्शनरी में नहीं हरामजादे... ।" दहाड़ा कालिया पठान—"खत्म कर दे इसे जालिम सिंह... ।"

"अ-र-र-र-यू के कर रियै सै कालिया पठान जी... ।" क्यूं कर खत्म कर रियै सै इसको... ।"

तभी एकदम से बोल पड़ा चंदगी राम चौटाला।

कालिया पठान ने घूरकर उसे देखा—

"तू हमारे कानूनों से वाकिफ नहीं है चौटाला...यह हरामजादा हमारा गुनहगार है। इसने हमसे गद्दारी की है... ।"

"पर यह तो थम से माफी मांग रिया सै... ।"

"माफी शब्द हमारे शब्द कोश में नहीं चौटाला... । इसकी सजा मौत है सिर्फ मौत... ।"

"थ-थम समझते क्यूं नईं...यह रास्ता भटक गया था...इब यू माफी मांग रिया सै...अर थारी वफादारी का दम भर रिया सै... ।"

कहकर उसने भण्डारी की तरफ देखा—

"बोल रै भण्डारी...आगे से काली सिंह का साथ देगा तूं... ।"

"म-मैं तो उसकी तरफ मुंह करके थूकूंगा भी नहीं... ।"

"कालिया पठान साहब का वफादार बन कै रहेगा... ?"

"ह-हां... ।" तुरन्त गर्दन ऊपर-नीचे की भण्डारी ने... ।" म-मैं चीफ के प्रति अपनी वफादारी निभाते हुए जान भी लड़ा दूंगा... ।"

"जिस कुत्ते को एक बार पराई हड्डी का चस्का लग जाये...वह मौका मिलते ही अपने मालिक को काटने में देर नहीं करेगा... ।"

गुर्राया कालिया पठान।

चंदगी राम चौटाला का चेहरा गम्भीर हो गया...उसने भण्डारी की तरफ देखा और गम्भीरतापूर्वक बोला—

"देखा भण्डारी...कालिया पठान साब तेरे पर एतबार नईं कर रये...तू ऐसा कर...आपने बाप की कसम खा...हो सकै से फिर कालिया पठान साब तेरै पै एतबार कर लैं... ।"

"म-मैं अपने मरे हुए बाप की कसम खाता हूं चीफ...मैं हमेशा आपका वफादार रहूंगा... ।"

इससे पहले कि कालिया पठान कुछ बोला...चंदगी राम चौटाला बोल पड़ा।

"तो फिर आपनी वफादारी का सबूत दे...।"

"क-कैसा सबूत...?" हड़बड़ाया भण्डारी।

"तू कालिया पठान साब को काली सिंह के बारे में सब-कुछ बता दे...।"

बुरी तरह से चौंक पड़ा कालिया पठान उसकी बात सुनकर...। पलक झपकते ही वह समझ गया कि चंदगी राम चौटाला क्या खेल खेल रहा है।

"क-क्या बताऊं...?" हड़बड़ाया-सा बोला भण्डारी।

"वह सब कुछ जो तू जाने सै...काली सिंग का अड्डा...उसके आदमी...।"

"मैं कुछ नहीं जानता...।"

चंदगी राम चौटाला की आंखों में कहर भर आया...।

"मन्ने तो लगे सै कि तुझे आपनी जान से प्यारी काली सिंह की वफादारी सै...।"

"न-हीं...म-मैं सच कह रहा हूं...मैं सचमुच काली सिंह के बारे में कुछ नहीं जानता कि वह कहां रहता है...।"

"फिर झूठ...।"

"न-हीं यह सच है...।" कांपा भण्डारी।

"के यू सच नई के तैं डिफेंस कालोनी मां उससे मिलन गया था...।"

"यह...यह सच है...।"

"तो फिर...।"

"ल-लेकिन वो उसका अड्डा नहीं...।"

"फेर तू उसे मिले कैसे सै...?"

"मुझसे मिलने का स्थान उसके द्वारा निर्धारित किया जाता है...इस स्थान पर भी उसी ने मुझे बुलाया था...।"

"ईब उसे सपना तो आन से रिया के तौं उन्ने मिलना चाहे सै...आखिर कोई तो रास्ता होवेगा उससे मिलन का...।"

"मैं पहले एक खास नम्बर मिलाता हूं...और काली सिंह से मिलने का मकसद बताता हूं...पन्द्रह मिनट बाद मैं फिर उसी नम्बर को रिंग करता हूं...तब अगर काली सिंह मुझसे मिलना चाहता होगा

तो मुझे मिलने की जगह बता दी जाती है और मेरे उक्त स्थान पर पहुंचने के बाद ही काली सिंह वहां पहुंचता है।"

"जे कर उसका तेरे से मिलन का मूड न हौवे तो...?"

"तो मुझे इन्कार कर दिया जाता है।"

"के नम्बर सै वह जो तू मिलावै सै...।"

भण्डारी ने नम्बर बता दिया।

"इब उसके कोई खास अड्डे के बारे मां बोल...?"

"म-मैं उसके किसी ठीये के बारे में नहीं जानता...।"

"इतनी जल्दी न कर...सोच कै जवाब दे...। काली सिंग ने तेरे चीफ का घना नुकसान किया सै...तैं भी उसकै ऐसे आड्डे कै बारे में सोच जिसपै हमला कार कै कालिया पठान साब अपना कुछ तो हक पूरा कर सकैं...।"

"हां...एक अड्डा है मेरी नजर में...।"

कुछ सोचकर बोला भण्डारी।

चंदगी राम चौटाला की आंखें चमक उठीं।

"कहां सै...?" तुरन्त बोला वह।

"रोहतक रोड पर बड़ी रैड लाइट के कुछ आगे दाईं तरफ एक काफी बड़ा शोरूम के ऊपर कैस्ट्राल ऑयल एण्ड ग्रीस का बहुत बड़ा न्यून बोर्ड लगा है...वह काली सिंह का खास ठीया है...।"

"वा सौ रूम (वह शोरूम)...?"

"हां वही...।"

"क्या हौवे सै वहां...?"

"एक चौथाई दिल्ली को हेरोइन की सप्लाई वहीं से होती है...।"

"फिर तो वहां करोड़ां की हेरोइन होवैगी...?"

"हां...। डेढ़ दो करोड़ की तो होगी ही...।"

"और बोल...।"

"बस...और कुछ नहीं जानता मैं...।"

"फिर सोच लै...हो सकै सै के थारी वफादारी पर खुश हो कै कालिया पठान साब तन्ने कोई ईनाम भी दे देवैं।"

भण्डारी ने सोचने की मुद्रा बनाई—फिर इन्कार में सिर हिलाते हुए बोला—

"बस...इतना ही जानता था मैं...।"

"पक्का...?"

"पक्का।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान फैल गई...उसने कालिया पठान की तरफ देख और बोला—"देखा कालिया पठान साब...जिन्दगी का लालच दे के मैंने इससे कितनी करामाती जानकारी ले ली...इब आप चावें तो इन्ने बेसक मार दैं...म्हारे चौथे बाप का कुछ नईं जाने वालां...।"

"न-हीं...।" चीख उठा भण्डारी—"य-यह धोखा है...अ-आपने मेरी जान बख्शने का वादा किया है...चीफ...।"

"वादा मैंने नहीं चौटाला ने किया था तुमसे हरामजादे...रही बात वफादारी की तो जो शख्स अपने मालिक का वफादार नहीं होता...उसे जीने का कोई हक नहीं होता...।"

फुंफकार उठा कालिया पठान।

"न-हीं...।"

"धन्यवाद कर चौटाला का जिसने तेरी जिन्दगी के कुछ लम्हें बढ़ा दिये...वर्ना अब तक तो तेरी लाश किसी चौराहे पर फिंक भी चुकी होती...।"

"न-नहीं चीफ...म-मुझे माफ कर दो...।"

बुरी तरह से गिड़गिड़ा उठा भण्डारी।

लेकिन कालिया पठान पर उसकी गिड़गिड़ाहट का कोई असर नहीं हुआ।

"जालिम सिंह...।" फुंफकारा वह—"खत्म कर दे इस गद्दार को...।"

अगले ही पल जालिम सिंह ने रिवाल्वर निकाली और भण्डारी पर तान कर ट्रिगर दबा दिया।

"धांय...।"

गोली सीधी भण्डारी के माथे के बीचो-बीच जा धंसी।

जोरों से तड़पा भण्डारी और कुर्सी समेत पीछे को उलट गया।

वह मर चुका था।

□□□

□□□

"तू तो बड़ी कुर्ती चीज निकला यार...। सचमुच चौथे बाप की औलाद है तू...।"

हंसा चंदगी राम चौटाला... ।

"कहां था अब तक...?"

"यहां ही...दिल्ली मां... ।"

बोला चंदगी राम चौटाला...जबकि मन-ही-मन कह रहा था कि रात को ही एक नये शरीर में प्रविष्ट हुआ है।

"फिर मुझे नजर क्यों नहीं आया...?" मुस्कुराकर बोला कालिया पठान।

"आप मने ऊंचे आदमी सो...मैं ठहरा एक गंवार...जाहिल...इसे कैसे नजर आता थमने... ।"

"हवा मार रहा है...?"

"क्या मैं हवा मार रिया सूं...?"

"नहीं...तू ठीक कह रहा है...इस वक्त मैं सचमुच काफी ऊंचे मुकाम पर हूं... ।"

"फिर भी आप कै रिये हो के मैं... ।"

"छोड़ इसे...यह बता कि भण्डारी के बारे में तुझे कैसे पता चला? कि वह ही गद्दार है... ।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान गहरी हो गई। उसने जेब से बीड़ी का बण्डल निकालकर एक बीड़ी बाहर खींची...उसे होठों से लगाया और माचिस से सुलगाकर एक लम्बा सुट्टा लगाकर मुंह से कसैला धुआं उगल दिया।

"जब आप आपने आदमियों से बात कर रिये थे तो मैं पाछे वाले कमरे में था... ।

"मुझे मालूम है...तुमने ही तो स्कीम बनाई थी यह...मैं यह पूछ रहा हूं कि तुझे भण्डारी पर ही शक क्यों हुआ...बाकी चौदह और भी तो थे। उन पर शक नहीं किया तुमने... ।"

"शक तो मन्ने तीन पैं हुआ था, पर भण्डारी कुछ घना ही उतावला हो रिया था यहां से जान को...जीब आपने दस करोड़ के माल कै आने की खबर सुनाई...तभी उसके चेहरे पै उतावला-पन आ गया था...बस मन्ने यूं फैसला कार लिया के पहलां मैं उसी के पाछे लगूंगा...फिर दूसरे दो नै देखूंगा... ।"

"और तुम पहली कोशिश में कामयाब हो गये... ।"

हंसकर बोला कालिया पठान।

चंदगी राम चौटाला भी हंसा... ।

"एक बात और बता... ।"

"क्या...?"

"तू तो कहता था कि तुझे खून-खराबे से नफरत है...फिर तूने भण्डारी को मारने के लिए क्यों कह दिया...?"

चंदगी राम चौटाला ने बीड़ी का सुट्टा लगाया और गम्भीर स्वर में बोला—

"मैं उसको कतई भी मारने के हक में नईं था...पर उसकी मौत निश्चित हो गई थी...इसलिए मुझे उसे मारने को कहना ही पड़्या.... ।"

"क्या मतलब...?"

"जेकर आप उसे छोड़ देते तो वह सीधा काली सिंग के पास जांदा...उसको सारी बात बताता अर फिर आपनी सरण (शरण) में लेन की गुजारिस (गुजारिश) करता...जे कर वह न भी बताता...तो भी काली सिंग के बेरा पाट जाना (पता लग जाना) था। अण्डर वर्ल्ड के असूलों के अनुसार काली सिंग उसको सिवाय मौत के और कुछ न देता...अर वह रोहतक रोड वाले अड्डे के माल को वहां से उठवा लेंदा...ईस मां म्हारा पांच लाख का नुकसान हो जाता...होता के नईं...?"

"जरूर होता... ।"

"बस ईसी बजा ते मन्ने भण्डारी ने मारन का कहना पड़्या।"

"ऐसे तो आप मन्ने पांच लाख देने ते रये...दो लाख का काम में कर चुका सूं... ।"

"लेकिन अभी मकबूल हुसैन भी तो रहता है... ।"

"उसके बारे में सौदा फेर दुबारा होवैगा।"

कालिया पठान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और मुस्कुरा कर बोला—

"ओ०के०... । अब बताओ काली सिंह के रोहतक रोड वाले ठिकाने को कैसे लूटोगे तुम...?"

चंदगी राम चौटाला ने बताया...फिर बोला—"कल रात को ही उस आड्डे को लूटूंगा मैं... ।"

"वैरी गुड... ।" तारीफी अंदाज में बोला कालिया पठान...फिर बोला—"अब काली सिंह का क्या करना है... ।"

"वह थारा काम सै...उसके साथ के करना है...वह थम

सोचो...मन्ने तो अपने काम से मतलब सै।"

"फिर भी कुछ सलाह तो दे सकता है तू...?"

"कैसी सलाह...?"

"काली सिंह ने मेरा नुकसान तो किया ही है...साथ ही मेरे कई आदमी मार डाले...जबकि मैं अभी तक उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाया...।"

"यानि थम चाहो कि मैं काली सिंग के पंद्रह बीस आदमी मारूं...।"

"मैं सलाह मांग रहा हूं...।"

"मुफत में...?" अर्थ भरी मुस्कान के साथ बोला चंदगी राम चौटाला।

कालिया पठान ने बेचैनी से पहलू बदला और उसे घूरते हुए बोला–

"क्या चाहते हो तुम...?"

"थम ही बताओ...थम के दे सकते हो...?"

"पचास हजार...।"

"ठीक सै...मन्ने मंजूर सै...। लेकिन पंद्रह हजार में सिर्फ सलाह ही देऊंगा।"

"तुम सलाह ही दो...।"

चंदगी राम चौटाला उसे बताने लगा कि किस तरह से वह काली सिंह को नुकसान पहुंचा सकता है।

❑❑❑

❑❑❑

कालिया पठान के सामने जो शख्स खड़ा था उसका नाम जैकी था...।

कद काठी में जैकी भण्डारी के लगभग बराबर का था...बस फर्क यही था कि जैकी का रंग भण्डारी से काफी गोरा था...बालों की रंगत सुनहरी तथा भूरी आंखों में झांकता कमीना पन।

भण्डारी का रोल अदा करने के लिए कालिया पठान ने उसे ही चुना था। जैकी काफी तेज तर्रार और निडर किस्म का आदमी था।

"हुक्म कीजिये चीफ...।" कालिया पठान के सामने पेश होते ही जैकी सिर को हल्का सा फुसफुसाते हुए बोला।

"जैकी... ।" गहरी सांस छोड़ते हुए बोला कालिया पठान—"तुझे काली सिंह से मिलना होगा।"

बुरी तरह से उछल पड़ा जैकी और हैरानी से उसे देखने लगा—

"य...यह आप क्या कह रहे हैं चीफ... ?"

"तुझे काली सिंह के पास जाना होगा और मौका मिलते ही उसे खत्म करना होगा।" कालिया पठान का स्वर थोड़ा सख्त था।

"ल...लेकिन मैं अकेला... ।"

"तू मौका देखना... । अगर मौका न मिले तो जो मैं कह रहा हूं वही करना।"

"क...या... ?" थूक निगली जैकी ने—"क्या करना होगा मुझे... ?"

कालिया पठान उसे बताने लगा।

पूरी बात सुन कर जैकी पहले तो हैरान हुआ... फिर होंठों पर मुस्कान लाते हुए बोला—

"आपका हुक्म सिर आंखों पर चीफ... वफादारी दिखाने का जो मौका आप मुझे दे रहे हैं... उसे मैं पूरी वफादारी से निभाऊंगा।"

"कल तुझे काली सिंह के पास जाना है।"

जैकी ने सिर हिलाया... फिर बोला—"लेकिन चीफ... मैं उस तक पहुंचूंगा कैसे... ?"

प्रत्युत्तर में कालिया पठान ने उसे काली सिंह तक पहुंचने का रास्ता बताया। फिर बोला—

"अब जा और तैयारी पर जुट जा।"

जैकी ने उसके आगे सिर को झुकाया और वापिस मुड़कर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उस वक्त कालिया पठान उसका चेहरा देख लेता तो वह अवश्य ही चौंक उठता।

एक कमीनी तथा रहस्य भरी मुस्कान नाच रही थी जैकी के होंठों पर।

❑❑❑

❑❑❑

"हुसैन साहब से बोलो मैं आया हूं।"

जैकी गेट पर खड़े दरबान से बोला।

इस वक्त वह पटेल नगर में एक दोमंजिला कोठी के गेट पर

खड़े दरबान से बात कर रहा था। सफेद पत्थर से निर्मित वह कोठी मकबूल हुसैन की थी...इस कोठी का पता मकबूल हुसैन के चंद खास-खास ओहदेदारों को ही पता था...या फिर जैकी वो जो कि भण्डारी की तरह कालिया पठान के गैंग में रहकर मकबूल हुसैन के लिए जासूसी करता था।

दरबान जो कि दरबान कम गुण्डा अधिक नजर आता था जैकी को अच्छी तरह से जानता था...। सो उसने जेब से वाकी टाकी निकाला और उसे आन करके मुंह के पास ले जाते हुए बोला–

"जैकी आया है...।"

"क्या कहता है...?"

वाकी टाकी में से सरसराती आवाज आई।

"हुजूर से मिलना चाहता है...।"

कुछ पल की खामोशी के बाद पुनः आवाज उभरी–"ठीक है...भेज दो उसे।"

दरबान ने वाकी टाकी आफ करके जेब में रखा और जैकी की तरफ देखते हुए मुस्कुरा कर बोला–

"जाओ।"

"जैकी उसके करीब से निकलते हुए गेट में प्रवेश कर गया।

ड्राईव वे पार करते हुए वह कम्पाउंड में पहुंचा ही था कि तभी दायें बायें से दो व्यक्ति निकले और उसके आजू-बाजू चलने लगे।

दोनों के हाथ उनकी जेबों में थे।

जैकी जानता था कि उनकी जेबों में रिवाल्वर है...। आखिर वह एक मुखबिर था...बेशक वह इस वक्त मकबूल हुसैन का वफादार बना हुआ था...लेकिन फिर भी था तो कालिया पठान का ही आदमी...ऐसे में सावधानी बरतनी जरूरी थी उनके लिए। दोनों के बीच में चलता हुआ वह कोठी में प्रविष्ट हुआ और करीब बीस फीट के गलियारे को पार करते हुए एक बड़े हाल में आ गया।

हाल में करीब दस गार्ड खड़े थे...पांच दाईं तरफ वाली दीवार के साथ पीठ लगाये खड़े थे...पांच बाईं तरफ वाली दीवार से लग कर खड़े थे। सभी के हाथों में स्टेन गने थी।

सामने एक ऊंची पुश्त वाली सिंहासन नुमा कुर्सी पर मकबूल हुसैन बैठा था...उसके दायें बायें दो गार्ड थे वे भी स्टेनगनों से लैस थे।

मकबूल हुसैन करीब पचास वर्ष का मोटी तोंद वाला बिना मूछों वाला तथा लम्बी दाढ़ी वाला व्यक्ति था...उसके सिरे के बाल आगे से आधे से ज्यादा गायब थे...रंगत गेहूंआ थी उसकी।

जैकी आगे बढ़कर उससे करीब चार कदम पहले ठहरा और कमर तक झुक कर बिल्कुल ऐसे आदाब किया जैसे वह किसी शहनशाह के सामने खड़ा हो।

"बोल जैकी...क्या खबर लाया है...?" मकबूल हुसैन के होठ हिले।

जैकी सीधा हुआ और आवाज में अदब लाते हुए बोला—

"कालिया पठान काली सिंह को मारने जा रहा है हुसैन साहब...।"

मकबूल हुसैन चौंका—"यह क्या कह रहा है तू...? तुझे कैसे पता चला कि कालिया पठान काली सिंह को मारने जा रहा है।"

"उसे खत्म करने का आदेश उसने मुझे ही दिया है।"

"ओह...।" मकबूल हुसैन के मुंह से निकला—"फिर तो उसने तुझे काली सिंह का पता भी बताया होगा ?"

"उसने पता तो नहीं बताया...हां यह बताया है कि मैं उससे मिल कैसे सकता हूं।"

"कैसे मिल सकता है तू उससे...?"

जैकी ने बताया। फिर आगे बोला...।

"कालिया पठान का आदेश सुन मैं सीधा आपके पास आ गया हूं...अब आप बतायें।"

"क्या बताऊं...?"

"काली सिंह आपका दोस्त है...अगर मैंने उसे खत्म किया तो आप मुझ पर बिगड़ सकते हैं।"

मकबूल हुसैन ने सिर हिलाया और बोला—

"ठीक कह रहा है तू...लेकिन एक बात समझ में नहीं आ रही...।"

बोला कुछ नहीं जैकी...बस प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखने लगा।

"पिछले एक साल में कालिया पठान हम दोनों का कोई ठिकाना नहीं ढूंढ पाया...फिर एकाएक ही उसे काली सिंह के बारे में पता कैसे चल गया...।"

"भण्डारी ने बताया होगा... ।"

"हो सकता है... फिर तू ध्यान रखना... कहीं वह किसी और की मदद तो नहीं ले रहा... अगर ले रहा है तो उसका पता लगाकर मुझे फौरन खबर कर।"

"जी... बेहतर... ।"

"अब तू काली सिंह से मिल... और जो कुछ कालिया पठान ने तुझसे कहा है वही कर।"

"ल... लेकिन इससे तो उसके काफी आदमी मारे जाएंगे।"

मकबूल हुसैन ने उसे घूर कर देखा—"काली सिंह के गैंग में तेरा वो यार है ?"

"न... हीं... ।"

"तो फिर तेरे बाप का क्या जाता है... और फिर हमारी उसके साथ दोस्ती सिर्फ कालिया पठान की मौत तक है... और मैं चाहता हूं कि कालिया पठान की मौत के बाद उसमें इतनी ताकत न रहे कि वह मेरे ऊपर हावी होने की सोच भी सके।"

जैकी ने सिर हिलाया—"मैं समझ गया आपकी बात... मैं वैसा ही करूंगा जैसा आपने कहा है।"

"अब जा और अपने चीफ के हुक्म पर अमल कर।"

जैकी ने उसे सलाम किया और वापिस मुड़ गया।

❑❑❑

❑❑❑

जैकी एक पब्लिक बूथ में प्रविष्ट हुआ... उसने रिसीवर हुक से उतारा... डायल टोन चैक की फिर वह नम्बर डायल करने लगा जो कि कालिया पठान ने उसे बताये थे और रिसीवर कान से लगाकर दूसरी तरफ से फोन आये जाने का इंतजार करने लगा।

"हैल्लो... ।" तभी दूसरी तरफ से एक भारी आवाज जैकी के कान से टकराई।

जैकी ने तुरंत एक रुपये का सिक्का कायन बाक्स में डाला और बोला—

"मैं जैकी बोल रहा हूं... मुझे काली सिंह से मिलना है।"

"कौन जैकी... ?"

"मैं कालिया पठान का आदमी हूं और... ।"

"सारी रांग नम्बर... ।"

"दूसरी तरफ से कहा गया और फोन कट गया।"

जैकी ने गहरी सांस छोड़ी और पुनः वही नम्बर डायल करने लगा।

"हैलो... ।" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह तेजी से बोला—"फोन मत रखना—भण्डारी मर चुका है... कालिया पठान ने उसे मार डाला है... भण्डारी की कोई बात मुझसे छुपी नहीं थी... जैसे भण्डारी के बारे में मैं जानता हूं कि वह आपका आदमी था... उसी तरह वह भी मेरे बारे में जानता था कि मैं मकबूल हुसैन के लिए काम करता हूं।"

दूसरी तरफ से कुछ देर चुप्पी छाई रही... फिर आवाज उभरी।

"सिंह साहब से क्यों मिलना चाहते हो... ?"

"भण्डारी के एक काम के लिए... ।"

"क्या काम... ?"

जैकी ने बताया।

"तुम यह इन्फारमेशन मकबूल हुसैन को दे सकते थे... हमें क्यों दे रहे हो... ?"

"आप समझने की कोशिश कीजिये... कौन नहीं चाहता कि उसके दोनों हाथों में लड्डू हों।

"यानि भण्डारी की जगह लेना चाहते हो तुम... ?"

"आप यही समझ लीजिये... ।"

"दस मिनट बाद फोन करना।" दूसरी तरफ से आवाज आई और फोन कट गया।

दस मिनट बाद जैकी ने पुनः फोन किया।

"हैलो... जैकी बोल रहा हूं।"

"हौज खास पहुंच जाओ... डी ब्लाक एक सौ दस नम्बर फ्लैट में तुम्हें सिंह साहब मिल जाएंगे।"

"थैंक्यू... ।"

कहकर जैकी ने फोन हुक पर टांगा और बूथ से बाहर निकल आया।

शीघ्र ही वह एक टैक्सी में बैठा हौज खास की तरफ उड़ा जा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

काली सिंह ने गहरी निगाहों से जैकी को ऊपर से नीचे तक देखा और फिर आगे बढ़कर अपनी उस कुर्सी पर बैठ गया जिस पर बैठने का अधिकार केवल उसी को था।

उसके दोनों बाडीगार्ड स्टेनगन ताने हुए पूरी तरह से चौकस उसके दायें बायें खड़े हो गए।

"तो जैकी है तेरा नाम... ?" काली सिंह कुर्सी की पुश्त से टेक लगा आगे पीछे झूलते हुए उसे घूरते हुए बोला।

"जी हां... ।"

"भण्डारी कैसे मरा... ?" झूलना जारी रहा उसका... ।

"यह मैं नहीं जानता सिंह साहब... लेकिन मैंने अपनी आंखों से उसकी लाश देखी है। हां इतना पता जरूर चला मुझे कि कालिया पठान को पता चल गया था कि वह आपका मुखबिर है... ।"

"उसे कैसे पता चला यह सब... ?"

"यह भी नहीं जान सका मैं... और सच पूछिये तो मैंने जानने की कोशिश भी नहीं की।"

"हूं... ।" हुंकार निकली काली सिंह के होठों से–"तो तू मकबूल हुसैन का मुखबिर है।"

"बिल्कुल... ।"

"मेरे पास क्यों आया है ?"

"भण्डारी की जगह लेने।"

"क्या मतलब... ?"

"वही जो आप सुन रहे हैं... ।" मुस्कुराया जैकी–"भण्डारी की मौत के पश्चात आपको उस जैसे ही एक विश्वस्त आदमी की जरूरत है... और इसके लिए मैंने खुद को आपके सामने पेश किया है।"

"तब तो तू कोई काम की खबर भी लाया होगा... ।"

"बिल्कुल लाया हूं।"

"काली सिंह की आगे पीछे झूलती कुर्सी एक दम से स्थिर हो गई।

"क्या खबर लाया है ?"

"कालिया पठान की दस करोड़ की हेरोईन आज रात दिल्ली पहुंच रही है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा काली सिंह—"आ... ज... ।"

"जी हां... ।"

"लेकिन भण्डारी तो कह रहा था कि माल चार दिन बाद आयेगा... ।"

"हां कहा था लेकिन भण्डारी की मौत के पश्चात उसने हमें बुलाकर कहा कि माल आज रात ही आयेगा।"

"क्या... ?"

"रात साढे बारह बजे... ।" बोला जैकी।

"कहां... ?"

"माल पाकिस्तान से अमृतसर पहुंच गया है... वहां से माल सड़क के रास्ते हरियाणा के रास्ते से दिल्ली बार्डर के करीब हरियाणा की सीमा में ही किशनपुरा गांव में प्रवेश करने वाली सड़क पर माल की डिलीवरी होगी।"

"कितने आदमी पहुंचेंगे माल की डिलीवरी लेने के लिए ?"

"दस बारह से कम हरगिज नहीं होंगे... ।"

काली सिंह ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और बोला—

"ठीक है...अब तू जा...अगर तेरी खबर सही रही तो तुझे भरपूर इनाम दिया जाएगा।"

"खबर सही है सिंह साहब... ।"

"तो फिर तेरा ईनाम भी पक्का है।"

जैकी ने सिर झुकाया और वापिस मुड़ गया।

❑❑❑

❑❑❑

शाम के छः बजे के करीब चंदगी राम चौटाला पश्चिम विहार के अपने फ्लैट से निकला और पैदल चलता हुआ मेन रोड पर आ गया।

मदर डेयरी के करीब पब्लिक बूथ का पता था उसे... पहले भी वह वहां से कई बार फोन कर चुका था।

बूथ में प्रवेश कर उसने दरवाजा बंद किया और वो नम्बर डायल करने लगा जो भण्डारी ने बताया था।

"हैलो... ।" तभी दूसरी तरफ से भारी आवाज आई।

"जै राम जी की... मैं चंदगी राम चौटाला बोलूं सूं... ।"

"कौन चौटाला... ?" दूसरी तरफ से चौंकती आवाज आई।

"तुम नई जानों हो मन्ने...पर मैं काली सिंग को खूब जानूं सूं... ।"

"सारी... रांग नम्बर... ।"

"फोन ने मत राखियो...नई तो घना घाटे में रयेगा काली सिंग... ।"

"क्या मतलब...?"

"यह मैं काली सिंग ने बताऊंगा... ।"

"मैंने कहा न कि यहां कोई काली सिंह नहीं रहता... ।"

"फिर तो काली सिंह को राम ही बचा सकै सै... ।"

"क...या...क्या बोला तुमने...?"

"तुमको किसी जैकी ने फोन किया था न...?"

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

"उसने यह भी कहा होगा के वह मकबूल हुसैन का मुखबिर सै... ।"

"कौन हो तुम...?"

"चंदगी राम चौटाला...इब यू न कहना कि मैं के चाहूं सूं...यह मैं काली सिंग ने ही बताऊंगा...इब थारी मर्जी सै कि थम हां करो या न करो।"

दूसरी तरफ पुनः सन्नाटा छा गया।

चंदगी राम चौटाला रिसीवर कान से लगाये दूसरी तरफ से बोले जाने का इंतजार करने लगा।

करीब आधे मिनट बाद पुनः आवाज उभरी।

"दस मिनट बाद फोन करना... ।"

"ठीक सै... ।"

बोला चंदगी राम चौटाला और रिसीवर हुक पर लटका कर बूथ से बाहर आ गया... ।

इस वक्त उसके होठों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच रही थी...जिसका मतलब सिर्फ वह ही बता सकता था।

दस मिनट पास करने के लिए उसने एक बीड़ी सुलगा ली और उसके सुट्टे लगाने लगा।

दो बीड़ियां पी कर उसने पुनः बूथ का रुख किया और बूथ में प्रवेश कर नम्बर डायल करने लगा।

"हैलो...मैं हूं चंदगी राम चौटाला... ।" दूसरी तरफ से

आवाज आते ही वह बोला।

"तुम हौज खास पहुंच जाओ...सिंह साहब तुम्हें वहीं मिलेंगे।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"हौज खास में कहां... ।"

दूसरी तरफ से वही पता बताया गया जहां पर कि जैकी पहुंचा था।

"ठीक सै...मैं वहां जा रिया सूं... ।"

कह कर चंदगी राम चौटाला ने रिसीवर हुक पर लटकाया और बूथ से बाहर आ गया।

❑❑❑
❑❑❑

काली सिंह ने चंदगी राम चौटाला को ऊपर से नीचे तक हैरानी से देखा। चेहरे मोहरे...या कपड़ों से वह कहीं से भी नजर नहीं आ रहा था कि वह पहुंचा हुआ उस्ताद है।

उज्जड़...गंवार...जाहिल नजर आ रहा था वह...पैरों में न ढंग के जूते थे...न सिर के बाल ठीक से संवारे हुए थे।

"कौन हो तुम... ?" चंदगी राम चौटाला के चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए हल्की सी गुर्राहट के साथ बोला काली सिंह।

"फोन पर अपना नाम कहा तो था मैंने...चंदगी राम चौटाला।"

मुस्कुराकर बोला वह।

"मुझे मालूम है तुम्हारा नाम... ।" बुरा सा मुंह बनाया काली सिंह ने—"मैं यह पूछ रहा हूं कि तुम्हें कैसे पता चला कि जैकी मुझसे मिला था।"

चंदगी राम चौटाला की मुस्कान और भी तेज हो गई।

"मन्ने तो यह भी मालूम सै के जैकी ने थम से यह कहा था कि वह मकबूल हुसैन का आदमी सै...क्या था न... ?"

माथे पर बल पड़ गये काली सिंह के।

"मैं तो यह भी जानू सू कि थारा आदमी भण्डारी कैसे मरा... । और भी घना कुछ जानू सै... ।"

"क्या जानते हो ... ?"

"वह सब कुछ जो थम जानना चाहो सो... ।" अब जो जानना चाहे नई जरूरी भी सै।"

चौंका काली सिंह और घूर कर उसे देखने लगा। लेकिन चंदगी राम चौटाला पूर्ववत: ही मुस्कुराता रहा।

"मुझे बताओ सब कुछ...?"

उसके मुंह से गुर्राहट उबली।

"न्यूं ही...(यूं ही) खड़े-खड़े बता दूं क्या...। अरे सिंग साब...बैठन ने कहिये...दारू मंगवाईए...फिर पूछिये कि मैं क्या कहना चाहूं सूं...अर इस बात की चिंता मन ते निकाड़ देवो मैं हवा मार रिया सूं...बड़े काम का आदमी साबित होऊंगा मैं थारे खातर।"

काली सिंह का चेहरा पल भर के लिए सख्त हुआ...फिर उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी।

"कुर्सी लाओ...।" वह थोड़ा ऊंचे स्वर में बोला।

तुरन्त एक कुर्सी काली सिंह के सामने लग गई।

काली सिंह के कहने से पहले ही चंदगी राम चौटाला कुर्सी पर बैठ गया...। उसने कुर्ते की जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला और बण्डल को हाथों में रगड़ते हुए बोला–

"इब दारू भी हो जाए। पर हो बढ़िया...विलैती...।"

"कहकर उसने बण्डल में से एक बीड़ी निकाल कर होठों में दबा ली।

शीघ्र ही उन दोनों के बीच एक टेबल लग गई तथा उस पर स्कॉच की बोतल तथा एक गिलास भी रख दिया गया।

तब तक चंदगी राम चौटाला बीड़ी के तीन चार सुट्टे लगा चुका था।

स्टूल पर एक गिलास देख वह मुस्कुरा पड़ा।

"मन्ने तो लगे है कि थम म्हारे स्टैण्डर्ड ने छोटा समझो से...: कोई बात नईं... बड़ी जल्दी थारे को बेरा पाट जाएगा के चंदगी राम चौटाला घनी पहुंची हुई चीज सै।"

कह कर उसने बीड़ी का सुट्टा लगाया और बीड़ी को फर्श पर फैंक कर अपने लिए एक पैग बनाया और उसे एक ही सांस में खाली कर खाली पैग टेबल पर रखा और काली सिंह की तरफ देखते हुए आस्तीन से होठ पोछते हुए बोला–

"जैकी ने आपको यह भी क्या होगा कि वह मकबूल हुसैन का आदमी सै...।"

"हां...कहा था।" गम्भीरता से बोला काली सिंह...।

"वह हुसैन का ही आदमी सै।"

"जब उसने अपने मुंह से इकरार किया है... तो फिर है। इसमें भेद की क्या बात हो गई।"

"भेद की बात यू सै सिंग साब–" चंदगी राम चौटाला थोड़ा आगे को झुक कर कुहनियां अपने घुटनों पर जमाते हुए बोला–"जैकी ने भी आपसे जो कहा...वह आपको नुकसान पहुंचान खातर कहा... यह चाल सै मकबूल हुसैन की... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा काली सिंह... चेहरे की रंगत एक दम से सुर्ख हो गई।

"त-तुम कहना क्या चाहते हो... ?" उसकी आवाज में गुर्राहट भर आई।

"मैं आपको सब कुछ बताऊं सूं... फिर थमने सब कुछ समझ मां आ जायेगा।"

कहा चन्दगी राम चौटाला ने और नया पैग तैयार करने लगा।

काली सिंह सतर्क निगाहों से उसके चेहरे को घूर रहा थ... उसके दायें खड़े उसके बाड़ी गार्ड पूरी तरह से चौंक गये।

चंदगी राम चौटाला ने बड़े इत्मिनान से पैग समाप्त किया। आस्तीन से अपने होठों को साफ किया और फिर काली सिंह के चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहने लगा–

"पहले तो मैं आपको थारे मुखबिर भण्डारी के बारे में बताऊंगा... ।"

काली सिह बोला कुछ नहीं बस उसकी तरफ देखता रहा।

"भण्डारी के मरने ते पैंला कालिया पठान ने उससे यह जान लिया कि आपसे कैसे मिला जा सकै... ।"

काली सिंह का कलेजा जोरों से धड़क उठा... चेहरे की रंगत एक दम से बदल गई।

काली सिंह ने व्याकुलता से होठों पर जीभ फेरी... ।

"क्या वह यहां पहुंच सकता है... ?"

"क्या कहा जा सकै सै...पर म्हारी तरफ से आप बेफिक्र रयो... म्हारे पाछे लग के नईं आ सकै।"

"तुम्हें कैसे पता कि उसने भण्डारी से वह नम्बर कबूलवा लिया है... ?"

"मैं आपके सामने बैठा सूं...यू सबूत के कम सै... ?"

"क्या मतलब... ?"

"मतलब यह कि भण्डारी ने म्हारे सामने कालिया पठान ने आप से मिलने का तरीका बनाया था।"

हैरानी उभर आई काली सिंह की आंखों में... ।

"त... तो क्या तुम कालिया पठान के आदमी हो... ?"

"चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान नाच उठी... ।"

"चंदगी राम चौटाला किसी का गुलाम नई सै... ।"

"तो फिर कौन हो तुम... ?"

"म्हारा और कालिया पठान का एक एग्रीमैन्ट हुआ था... जो पूरा हो गया... इब वह आपने रास्ते—मैं आपने रास्ते... ।"

"क्या एग्रीमैंट हुआ था ... ?"

"छोड़ो इन्ने... थम आपने मतलब की बात सुनो... ।"

काली सिंह ने होठ भींच लिये... भीतर ही भीतर उसका कलेजा सुलग रहा था... चंदगी राम चौटाला की लठ मार भाषा तथा उसके अक्खड़ पन के कारण उसका दिल कह रहा था कि वह अभी उसे गोली मार दे।

यह तो वह ही जानता था कि वह किस तरह से खुद को रोके हुए था।

चंदगी राम चौटाला ने एक गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"भण्डारी ते आप मिलन की जानकारी लै के वह उसको तुम्हारे आड्डों कै बारे में पूछन लग गया... उसी दौरान उसने मन्ने बार (बाहर) भेज दिया... फिर कुछ देर बात मन्ने बाहर वाले कमरे में गोली चालन की आवाज आई... भण्डारी को मार डालया उसने... फिर उसने जैकी को बुलाया... उसने उससे क्या कहा... यह आम समझ ही सको सौ।"

काली सिंह सोचने लगा... लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

"क्या कहा उसने... ?" आखिर पूछ ही लिया उसने।

"कमाल सै... आप इतनी सी बात न समझ सकै—"चंदगी राम चौटाला ने हैरानी दर्शाई... कालिया पठान के कमरे से निकलने के बाद वह सीधा आपके पास आया... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा काली सिंह... उछला क्या वह तो कुर्सी छोड़ कर खड़ा हो गया। आंखों में एक अजीब सी उत्तेजना उभर आई।

"तुम यह कहना चाहते हो कि कालिया पठान ने उसे यहां भेजा है।"

मुस्कुरा पड़ा चंदगी राम चौटाला... ।

"ठीक समझे आप... ।"

"यानि मुझे नुकसान पहुंचाने के लिए कालिया पठान ने यह चाल चली है।" फुंफकार उठा काली सिंह।

"कालिया पठान ने तो सिरफ आप को नुकसान पहुंचान की चाल चली सै...पर मकबूल हुसैन ने तो आप को खत्म करन का इरादा कर लिया सै।"

बुरी तरह से चौंका काली सिंह...साथ ही उसने तेजी से कुछ सोचा और गुर्राया—

"खड़े हो जाओ।"

चंदगी राम चौटाला हड़बड़ा कर खड़ा हो गया।

उसी पल पीछे से दो आदमियों ने आकर उसे कवर कर लिया।

"आंखों पर पट्टी बांध दो इसकी...और मेरी गाड़ी में ले चलो... ।"

पल भर में ही चंदगी राम चौटाला समझ गया कि काली सिंह वहां पर एकाएक ही अपने लिए खतरा महसूस करने लगा है...इसलिए वह तुरंत इस जगह को छोड़कर किसी महफूज जगह पर जाकर उससे आगे की बात पूछेगा।

मन ही मन मुस्कुरा पड़ा वह... । और जब उसकी आंखों पर पट्टी बांधी गई तो उसने कोई हील हुज्जत नहीं की... । चुपचाप शराफत से उसने पट्टी बंधवा ली।

तत्पश्चात एक आदमी ने उसे बगल से थामा और अपने साथ चलने के लिए कहा।

कुछ ही देर में वह कार की मखमली सीट पर बैठा था।

तभी उसे अपने दायें बायें किसी के बैठने का आभास हुआ...और फिर उसे एक हल्का सा झटका लगा... ।

कार आगे बढ़ने लगी थी।

"अब बताओ... ।" तभी उसके दाईं तरफ से काली सिंह की आवाज आई—"मकबूल हुसैन मुझे कैसे खत्म करना चाहता है।"

चंदगी राम चौटाला ने अपनी आंखों पर बंधी पट्टी पर हाथ लगाया तो तुरंत काली सिंह की गुर्राहट उभरी... ।

"पट्टी खोलने की कोशिश मत करना... ।"

"मगर... ।"

"चिंता मत करो...कुछ नहीं कहा जाएगा तुम्हें...अगर तुम्हारी जानकारी कारआमद निकली तो तुम्हें भरपूर ईनाम देने के साथ-साथ तुम्हारी पीठ भी ठोकी जाएगी।"

गहरी सांस छोड़ते हुए चंदगी राम चौटाला ने अपना हाथ नीचे गिराया और कहने लगा—

"जैकी जब कालिया पठान के अड्डे से निकड़ा तो मैं उसके पाछे लाग गया...बह वहां से सीधा आपके यहां नईं आया...वा पैंला मकबूल हुसैन के पास गया था।"

"क्या कहा उसने मकबूल हुसैन को... ?"

"इब यह तो मैं नईं जान सका...पर आप अंदाजा लगा सको सौ कि उन्ने हुसैन से क्या कहा होगा... ।"

"तुम्हारा अंदाजा क्या कहता है... ?"

"अंदाजा क्या...मैं तो पूरे यकीन के साथ कहूं कि उन्ने हुसैन को थारे बारे में कहा होगा।"

"फिर तुमने यह कैसे कह दिया कि वह मुझे मारना चाहता है।"

"थम भी बड़े भौले हो सिंग साब... ।" मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला।

"क्या मतलब... ?"

"क्या जैकी ने थम से कहा के वह हुसैन से मिल के आ रिया सै।"

"नहीं... ।"

"क्या उसने थम को हुसैन की कोई सलाह दी... ।"

"नहीं... ।"

"वह हुसैन से मिल कै आया...और उन्ने थारे को आके कहा कि वह भण्डारी की जंगा लेना चावे सै। उसने यूं नईं कहा कि वह हुसैन से बात करकै आया सै...के इसी ने मालूम न पड़ै सै के हुसैन थारा भला नई चावे से।"

सुनकर चौंका काली सिंह...उसकी आंखों में...चेहरे पर क्या भाव आ रहे थे...यह चंदगी राम चौटाला नहीं देख पाया।

"मन्ने यह तो नईं मालूम के मकबूल हुसैन ने जैकी से क्या

कहा... पर मन्ने इत्ता यकीन जरूर सै कि मकबूल हुसैन की नीयत थारी तरफ से खोटी सै।"

"और कुछ कहना है तुम्हें... ?"

"इब तो घना कुछ लेना सै... ।"

"बोलो... ।"

"आंख बंधी सै... ऐसे कहा भी नईं जागा।" कहकर मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला।

लम्बी सांस छोड़कर रह गया काली सिंह। वह समझ गया कि चंदगी राम चौटाला आंखों पर से बंधी पट्टी खुलवाना चाहता है... लेकिन वह अभी उसकी तरफ से कोई रिस्क नहीं उठाना चाहता था।

"बस थोड़ी देर और इंतजार करना पड़ेगा तुम्हें... ।" वह गम्भीरता से बोला।

चंदगी राम चौटाला ने होठ बंद किये और सीट की पुश्त से टेक लगा दी।

□□□

□□□

चंदगी राम चौटाला की आंखों पर बंधी पट्टी खुली तो उसने खुद को काफी बड़े तथा शानदार ढंग से सजे कमरे में पाया।

कमरे में वाल टू वाल सुर्ख रंग का कालीन बिछा था... । कमरे के बीचों बीच बेशकीमती सोफा सैट था... जिसे बीच सोफे के रंग से मैच करती मोटे शीशे की टेबल रखी थी। टेबल पर स्कॉच की बोतल... साथ में दो खाली गिलास तथा तले हुए काजू की प्लेट थी... । साथ ही एक खाली ऐशट्रे पड़ी थी।

दीवारों पर मंहगी पेंटिंग लगी थी... दाईं तरफ कोने में बी०पी०एल० का कलर टी०वी० स्टील की ट्राली पर रखा था।

कमरे में निगाहें घुमा कर उसने अपने बाईं तरफ खड़े काली सिंह की तरफ देखा।

"बैठो... ।" मुस्कुरा कर बोला काली सिंह... ।

चंदगी राम चौटाला ने कदम सोफे की तरफ बढ़ाये और एक सोफे में धंस गया।

काली सिंह उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया। उसने अपने हाथ से पहले चंदगी राम चौटाला का पैग तैयार किया... फिर अपना

पैग।

तत्पश्चात उसने पैग उठाया और सोफे की पुश्त से टेक लगाते हुए बोला–

"मैं केवल इसी जगह पर पीता हूं...इसीलिए मैं वहां पर तुम्हारा साथ नहीं दे पाया।"

बोला कुछ नहीं चंदगी राम चौटाला... बस मुस्कुराया और पैग उठाकर मुंह से लगा लिया।

काली सिंह ने भी पैग होंठों से लगा लिया।

जितनी देर में उसने पैग आधा खाली किया... उतनी देर में चंदगी राम चौटाला अपना पैग समाप्त कर खाली गिलास टेबल पर रख चुका था।

काली सिंह ने पैग होंठों से हटाया और आगे होकर उसे टेबल पर रखते हुए बोला–

"हां...अब बताओ...और क्या कुछ कहना चाहते हो तुम...?"

"आस्तीन से होंठों को पौंछ कर चदंगी राम चौटाला ने उसकी तरफ देखा–

"जैकी ने तुम को यह भी बताया होगा कि दस करोड़ की डिलीवरी कहां...अर किस बकत (वक्त) होवैगी ?"

"हां बताया था... ।"

"क्या... ?"

"रात साढ़े बारह बजे दिल्ली बार्डर के करीब हरियाणा के एक गांव के भीतर जाती सड़क पर दस करोड़ की हेरोईन की डिलीवरी लेंगे कालिया पठान के आदमी... ।" उसने एक गहरी सांस छोड़ी–"लेकिन तुम्हारी बातें जान कर अब लगता है कि कालिया पठान ने कोई माल नहीं मंगवाया... बल्कि उसने मेरे आदमियों को मारने के लिए चाल चली है।"

"रै थारे बच्चे जीयें...बिल्कुल ठीक कहा थमने।"

चंदगी राम चौटाला ने दांत दिखाये।

"इसका मतलब इसके आदमी मेरे आदमियों के पहुंचने से पहले ही वहां छुपे होंगे...और जैसे ही मेरे आदमी वहां पहुंचेंगे...उसके आदमी उनकी लाशें बिछा देंगे।"

"हां... ।"

होठ भींच लिये काली सिंह ने... चेहरा कठोर हो गया। आंखों में अंगारे दहकने लगे।

"लेकिन अब होगा इसका उलटा... ।" उसके होठों से फुंफकार निकली—"हरामजादे का एक भी कुत्ता जिंदा नहीं बचेगा।"

"थम मकबूल हुसैन को भूल रिये सो।"

"क्या मतलब... ।"

"यूं तो थमने बेरा पाट ही गया सै (यह तो आपको पता चल ही गया है) कि मकबूल हुसैन भी थारी ताकत को कम करन की सोच रिया सै...इब जैकी के साथ मिल कै उन्ने के चाल चाली...इसका बेरा मन्ने नई...के पता कालिया पठान थारा कोई आड्डा लूटना चाहे से...अर जैकी ने यह बात मकबूल हुसैन को बता दी हौवे... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा काली सिंह... ।

"क्या ऐसा हो सकता है?"

"क्या नई हो सकै...इब देखो...मान लेयो मकबूल हुसैन थारा कोई आड्डा लूट लै...इंगे (इधर) कालिया पठान थारे आदमियों को मार डालै...तो थम तो बस यही सोच लोगे न कि यह काम भी कालिया पठान का सै... ।"

"नैचुरली... ।"

"जबकि थारा आड्डा मकबूल नै लूटया होवैगा...मतलब वह थारे को नुकसान पहुंचा के भी थारी नजर में थारा दोस्त बना रयेगा।"

काली सिंह हैरान... ।

"ल...लेकिन उसे मेरे किसी अड्डे का पता कैसे चल सकता है ?" वह बोला।

"क्यों...के भण्डारी ते कालिया पठान नईं जान सकै सै... ।"

"लेकिन भण्डारी को तो मेरे किसी भी अड्डे के बारे में मालूम नहीं... ।"

"क्या पता बेरा हो उन्ने अर मरन से पहले उन्ने कालिया पठान नै बता दिया हो...कालिया पठान नै जैकी को बताया हो...अर जैकी ने मकबूल हुसैन को बता दिया हो।"

"य...यानि तुम यह कहना चाहते हो कि मेरे उस अड्डे पर पहले कालिया पठान हमला करेगा...फिर कालिया पठान पर मकबूल हुसैन हमला करके उससे सारा माल छीन लेगा।"

"हां... अर थम कालिया पठान के आदमियां की लासां (लाशों) को देख कै यू समझोगे कि थारे आदमियां ने कालिया पठान का डट कै मुकाबला किया... पर थारे आड्डे को नई बचा सकै।"

"किस अड्डे पर हमला करेगा वह।"

"इसका मन्ने बेरा नई... ।"

"तुम पता तो लगा सकते हो ... ?"

"न... ।" चंदगी राम चौटाला ने सिर दायें बायें हिलाया—"पता तो न लगा सकूं थारे आड्डे को भी नई बचा सकूं पर थारे माल ने जरूर बचा सकूं... ।"

हैरानी उभरी काली सिंह के चेहरे पर—"वो कैसे... ?"

"कालिया पठान अर मेरा कान्ट्रेक्ट खत्म हो गया सै—पर फेर भी मैं उसके धोरे जा सकूं सूं... मैं उसकै आदमियां के पाछे लग जाऊंगा... थारे आड्डे ने लूटन के वास्ते वह जालिम सिंग ने भेजेगा... बस मैं जालिम सिंग के पाछे लग जाऊंगा... अर जब वह थारे आड्डे पै हमला बोलेगा तो मैं पाछे ते उसपैं हमला बोल देऊंगा... मगर उससे पैंला मैं मकबूल हुसैन के हमले का इंतजार करूंगा... कहीं ईसा न हो कि वह पाछे से मन्ने ही खत्म कर दे।"

काली सिंह ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—

"और मुफ्त में तुम काम करोगे नहीं... ।"

"मैं तो दुकान सूं सिंग साब... मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला—"कालिया पठान खुद चाल के मेरे धीरे आया था... अर थारे पास तो दुकान चाल कै आई सै... इब यू थारी मर्जी सै थम दुकान का फैदा ठाओ (फायदा उठाओ) या न ठाओ।"

"क्या लोगे... ?"

चंदगी राम चौटाला ने दोनों हाथों की उंगलियां उसके सामने फैलाईं—"दस लाख... ।" वह बोला।

"चाहे तुम मेरे अड्डे का एक लाख रुपये का माल बचाओ... ।"

"क्या थारे किसी आड्डे में लाख का माल पड़या सै... अरै इत्ते बडै गैंगस्टर के आड्डे में सिर्फ लाख का माल... कोई सुनेगा तो हसेंगा... करोड़ों तै कम का माल कै होगा।"

"फिर भी तुम बहुत ज्यादा मांग रहे हो।"

"तो फेर एक सौदा और कर लो।"

"क्या... ?" भौंहे उचकाई काली सिंह ने।

"मैं थारा जित्ता भी माल बचाऊं...उसकै दसवें हिस्से की रकम मन्ने दे देना...जेकर लाख का माल बचाऊं तो मन्ने दस हजार दे देना...अर करोड़ का माल बचाऊं तो दस लाख दे देना।"

"ठीक है... ।" कुछ सोच कर बोला काली सिंह–"मुझे तुम्हारा यह सौदा मंजूर है।"

"ठीक सै...मन्ने भी मंजूर सै।" कह कर उसने पैग तैयार किया और उसे उठाते हुए बोला–"मेरे पास हथियार के नाम पै चाकू भी नईं...जबकि इस काम के लिये स्टेनगन की जरूरत से।"

"तुम्हें स्टेनगन मिल जाएगी।"

मुस्कुरा पड़ा चंदगी राम चौटाला और पैग होठों की तरफ बढ़ा दिया।

❑❑❑

❑❑❑

"मुझे तो यह हरामी किस्म का आदमी नजर आता है बॉस... ।"

चंदगी राम चौटाला की आंखों पर पट्टी बांध कर उसे काली सिंह के एक-एक आदमी के साथ रवाना कर दिया गया था। उसके जाने के पश्चात काली सिंह के खासमखास...उसके सेक्रेट्री...या मन्त्री या दाहिने हाथ जंगावर ने काली सिंह के कान में फूंक मारी।

काली सिंह मुस्कुराया...उसने अपने लिए एक पैग तैयार किया...उसे उठाया और सोफे की पुश्त से टेक लगाते हुए जंगावर के चेहरे पर नजरें गड़ाते हुए बोला–

"तू ठीक सोच रहा है जंगावर... यह जाट मुझे महाहरामी नजर आ रहा है... ।"

"कहीं यह मकबूल हुसैन या कालिया पठान का आदमी तो नहीं... ?"

"नहीं... ।" इन्कार में सिर हिलाया काली सिंह ने–"अगर यह उनका आदमी होता तो मुझे यू सचेत न करता... ।"

"तो फिर... ?"

"मुझे यह कोई पहुंची हुई चीज लगती है...पर हरामी यह तो जान गया है कि मैं और मकबूल हुसैन कालिया पठान को खत्म

करना चाहते हैं...और यह उसी लड़ाई का फायदा उठाना चाहता है...वर्ना यहां आने की क्या तुक थी इसकी।"

"क्या फायदा उठायेगा यह?"

"अभी क्या कहा जा सकता है... ।" गहरी सांस छोड़ी काली सिंह ने... ।" फिलहाल तो हमें वक्त का इंतजार करना होगा।"

जंगावर होठों को बंद कर उसे देखने लगा।

काली सिंह ने पैग समाप्त किया और उसे टेबल पर रखते हुए जंगावर की तरफ देखते हुए बोला—"भण्डारी हमारे किस अड्डे के बारे में जानता था।"

"जंगावर ने पल भर के लिए सोचा...फिर बोला—"मेरी नजर में तो वह किसी अड्डे के बारे में नहीं जानता था—फिर भी हो सकता है वह किसी अड्डे के बारे में जान गया हो।"

"अपने हर ठिकाने पर चौकसी का हुक्म भेज दे।"

"यस बॉस।" तत्परता से बोला जंगावर।

"और पंद्रह आदमियों को तैयार होने को कह दे—रात साढ़े ग्यारह बजे से पहले ही हमारे आदमी उस स्थान के चारों तरफ छुप जाने चाहिये जहां पर कि दस करोड़ की कथित डिलीवरी के लिए जैकी ने कहा था।"

"ल...लेकिन बॉस चौटाला तो कह रहा था कि... ।"

"मैं जानता हूं कि वहां कोई डिलीवरी नहीं होगी...मुस्कुराया काली सिंह—"वहां होगा तो सिर्फ खून खराबा होगा...और खून बहेगा कालिया पठान के कुत्तों का—तभी तो साढ़े ग्यारह से पहले वहां सभी को छुप जाने के लिए तुझे कह रहा हूं।"

"मैं समझ गया बॉस।"

"तो फिर जा...और तैयारी शुरू कर दे।"

❑❑❑

❑❑❑

दिल्ली हरियाणा के बार्डर के करीब गांव किशनपुरा की सड़क पर एक के पीछे एक दो मैटाडोर वैन आकर रुकी।

उस वक्त रात के सवा ग्यारह बजे थे। चांद की रोशनी में वहां चारों तरफ का नजारा काफी कुछ स्पष्ट नजर आ रहा था। देखते ही देखते दोनों वैनों के दरवाजे खुले और उसमें से स्टेनगनों से लैस पंद्रह व्यक्ति बाहर निकले।

सभी के सभी शक्लों से ही खूंखार नजर आ रहे थे।

उनमें से एक जो वैन वहां पहुंची उसमें काली सिंह की फोर्स का कमाण्डर था उसने अगली वैन की बाड़ी पर हाथ मारा और बोला—"गाड़ियां यहां से कहीं दूर ले जाओ।"

तुरन्त दोनों वैने आगे बढ़ी और वहां खड़े गुण्डों के करीब से होती हुई आगे निकल गईं।

कमाण्डर जिसका नाम राजा था ने आस-पास के माहौल का निरीक्षण किया।

अपने साथियों के साथ वह मेन सड़क पर खड़ा था—वहीं से एक पतली सड़क गांव के भीतर जा रही थी।

गांव में जाती सड़क के दोनों तरफ बबूल के पेड़ लगे हुए थे तथा उनके पीछे लहलहाते खेत नजर आ रहे थे।

जिस सड़क पर वह खड़ा उसके एक तरफ छोटे-बड़े गड्ढे बने हुए थे तथा दूसरी तरफ दुकानें थीं जिनके कि दरवाजे बंद थे। एक दुकान के आगे ट्रक टैक्टर के टायर एक-दूसरे के ऊपर रखे हुए थे। करीब ही शीशम के एक वृक्ष पर एक कार का टायर लटक रहा था जो कि आने-जाने वाले वाहनों को बताने के लिए कि यहां से उनके वाहन ठीक हो सकते हैं।

मोटर मैकेनिक की दुकान थी वह।

राजा ने अपने आदमियों पर निगाह डाली और बोला—

"चारों तरफ फैल जाओ—और इतना याद रहे—कालिया पठान का एक भी कुत्ता बचकर न जाने पाये।"

तुरन्त छः आदमी बबूल के वृक्षों की तरफ बढ़ गए। चार को उसने सड़क से नीचे बने गड्ढों में घुसने का आदेश दे दिया चार को सड़क के इस तरफ दुकानों तथा खोखों की साइडों में भेज दिया तथा स्वयं टायरों के मीनार के पीछे जा छिपा।

उसके सड़क से हटते ही सड़क साफ हो गई। दूर से क्या नजदीक से देखकर भी कोई नहीं कह सकता था कि वहां किसी खून-खराबे का अंदेशा है।

ठीक साढ़े ग्यारह बजे वहां उसी स्थान पर तीन टाटा सूमो आकर रुकीं जहां पर कि पहले दो मेटाडोर वैन आकर रुकी थीं।

देखते-ही-देखते तीनों टाटा सूमो के साइडों के तथा पिछले दरवाजे खुले और उनमें से धड़ाधड़ आदमी निकलने लगे।

सभी-के-सभी स्टेनगनों से लैस थे।

संख्या पच्चीस।

उनके उतरते ही तीनों टाटा सूमो आगे बढ़ गईं। सड़क पर केवल उन गुण्डों का झुण्ड रह गया जो कि कालिया पठान के आदमी थे।

अभी उनका कमाण्डर उन्हें छुपने के लिए निर्देश देने जा ही रहा था कि तभी—

'तड़...तड़...तड़... ।'

चारों तरफ से एकदम से फायरिंग शुरू हो गई—उसी के साथ जुगुनुओं की अनेकों कतारें विभिन्न स्थानों से निकल कर उन गुण्डों की तरफ झपटीं।

और फिर—

इंसानी चीखें से वातावरण कांप उठा।

लाशों पर लाशें गिरने लगीं।

उन गुण्डों को सम्भलने का मौका तक नहीं दिया काली सिंह के गुण्डों ने।

देखते-ही-देखते सड़क खून से लाल हो उठी।

उस तिराहे पर यहां वहां लाशें-ही-लाशें बिखरी नजर आ रही थीं।

जब आखिरी गुण्डा गिरा—तभी जाकर फायरिंग बंद हुई।

कुछ देर पहले का सुहाना वातावरण एकदम से भयानक लगने लगा था। सड़क पर बिखरी लाशें ऐसे प्रतीत हो रहीं थी जैसे वहां सड़क न हो, बल्कि कोई कब्रिस्तान हो।

चार-पांच मिनट तक वहां खौफनाक सन्नाटा छाया रहा। अपने स्थानों पर छुपे गुण्डे अवश्य ही अब मकबूल हुसैन के गुण्डों के वहां पहुंचने का इंतजार कर रहे थे।

पांच मिनट तक जब वहां कोई नहीं पहुंचा तो राजा टायरों के मीनार के पीछे से निकला और सड़क की तरफ बढ़ा।

उसके हाथों में थमी स्टेनगन इस प्रकार तनी थी—मानो किसी भी पल आग उगलने को तैयार हो। उसकी सतर्क आंखें सड़क के दोनों तरफ देख रही थीं।

पूरी तरह से चौकन्ना वह सड़क के बीचो-बीच आ खड़ा हुआ। कालिया पठान के गुण्डों की लाशें उसके चारों तरफ बिखरी

हुई थीं।

"लगता है मकबूल हुसैन के आदमियों ने दूर से ही लाशों को देख लिया होगा–।" वह बड़बड़ाया–"और वे वापिस भाग गए होंगे–या फिर मकबूल हुसैन द्वारा हमला करने की खबर झूठी थी।"

और फिर उसने जोरों से आवाज लगाई–

"बाहर आ जाओ सभी।"

देखते-ही-देखते छुपे हुए स्थानों से निकल कर उसके साथी सड़क की तरफ बढ़ने लगे।

कुछ ही क्षणों में सभी लाशों के करीब खड़े अपनी जीत पर खुशी मना रहे थे।

"हरामजादा काली सिंह को धोखा दे रहा था।"

एक बड़बड़ाया।

"इसी तरह एक दिन उस हरामी पठान की लाश भी सड़क पर नजर आयेगी।"

दूसरा बोला।

तीसरा अभी अपनी जीत के शब्द कहने ही जा रहा था कि–

'तड़...तड़...तड़...।'

सड़क किनारे लगे एक खोखे के भीतर से गोलियों की बाढ़ छूट पड़ी।

पल भर में ही आठ गुण्डे नीचे गिर छटपटाने लगे। शेष ने अपनी स्टेनगनों के मुंह खोल दिये।

'तड़...तड़...तड़...।'

एक साथ सैकड़ों गोलियां खोखे के लकड़ी के बंद दरवाजे से जा टकराईं।

तभी दरवाजे के सुराख में से निकली नाल थोड़ा-सा तिरछी हुई और–

'तड़...तड़...तड़...।'

उस नाल में से शोलों की फुहार निकलनी तभी बंद हुई जब सड़क पर खड़ा आखिरी गुण्डा नीचे गिरा।

और फिर नाल वापिस खोखे में घुस गई।

तत्पश्चात् खोखे का दरवाजा ऊपर उठा और उसमें से जो शख्स बाहर कूदा।

वह चंदगी राम चौटाला था।

"रै एक दिन राजा रावण ने सोच्या, अम्बर में मैं पैड़ी लाऊंगा ऽऽ।
सारी दुनिया सुख भोगै मैं जल का दूध बनाऊं।
रै देखते-ही-देखते सीता ठाली बन मैंऽऽऽ।
रे भगवान तेरी माया का किसने पाटया पाशन मैंऽऽऽ।"

किसी रागिनी के उल्टे-सीधे बोल गुनगुनाता वह लाशों के करीब पहुंचा और लाशों को गौर से घूरने लगा।

तभी उसके होठों पर भयानक मुस्कान नाच उठी।

एक गुण्डा उठने की कोशिश कर रहा था।

"अरे तू ईबी जिन्दा सै—मरया नईं ईबी—।"

"म-मुझे मत मारो—प-पलीज मुझे बख्श दो।"

गुण्डा बुरी तरह से घिघियाया।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर फैली मुस्कान तेज हो गई।

"तन्ने जिन्दा छोड़ दिया—तो मेरा क्या होगा—मेरा तो भाण्डा फूट जा गा न। इब तो तेरा मरना घनो जरूरी हो गया सै।"

कहने के साथ ही उसने स्टेनगन की नाल का रुख उसकी तरफ किया और बिना किसी उत्तेजना का प्रदर्शन करते हुए ट्रिगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...।'

एक साथ दर्जनों गोलियां उसके सीने में जा समाईं।

गुण्डा एक बार जोरों से उछला—फिर स्थिर हो गया।

चंदगी राम चौटाला ने एक बार फिर सभी के मर जाने की तसल्ली की फिर कालिया पठान के गुण्डों की लाशों का मुआयना किया।

पूरी तरह तरह संतुष्ट होकर कि उनमें भी कोई नहीं बचा—उसने अपनी स्टेनगन नीचे फेंकी और एक अन्य स्टेनगन उठा ली। उसकी मैंगजीन चैक की—फिर मुस्कुराया और एक तरफ बढ़ गया।

"वाह रे भेड़िया।" वह कुछ दूर अपनी राजदूत मोटर साइकिल की तरफ बढ़ते हुए बड़बड़ाया—"तन्ने तो कमाल कर दिया।"

"हरामी एक-दूसरे ने खत्म करन खातर घात लगाये बैठे थे यह नईं जानते थे कि भेड़िया उन दोनों की घात में दस बजे ही आडे आ गया थो अर खोखे का ताला तोड़ कै भीतर बैठ गया था। हा-हा-हा।"

निश्चय ही उसकी हंसी में इतनी दरिन्दगी भरी थी कि अगर वहां सचमुच का भेड़िया होता तो वह उसकी हंसी से ही खौफजदा होकर मर जाता।

कुछ ही देर में वह सड़क के नीचे ढलान पर एक गड्ढे के करीब खड़ा था—गड्ढे पर घास-फूस बिखरा पड़ा था। झुककर उसने घास-फूस एक तरफ की तो नीचे उसे राजदूत मोटर साइकिल पड़ी नजर आई।

उसने मोटर साइकिल सीधी की—जेब से चाबी निकाल कर उसके इग्नीशन में डाली और उसे स्टार्ट करके गद्दी पर बैठ गया।

दो-चार झटके खाकर वह सड़क पर आया और मोटर साइकिल को गति दे दी।

रात एक बजे चंदगी राम चौटाला उत्तम नगर टर्मिनल के पीछे वाली सड़क पर एक मकान के बंद दरवाजे के आगे आकर रुका।

उसने अपनी राजदूत को दरवाजे के करीब खड़ा किया और हैंडल लॉक करके दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ।

एकबारगी उसने दायें-बायें नजर डाली और फिर जैसे ही वह दरवाजा नाक करने को हुआ...भीतर से सांकल गिराये जाने की आवाज हुई।

उसी के साथ ही दरवाजा खुल गया।

सामने चांदनी खड़ी थी...।

"बड़ी देर लगा दी आने में...।" वह एक तरफ हटते हुए बोली—"पहले तो बारह बजे आते थे तुम...।"

"मन्ने पता सै...मैं पूरा एक घण्टा लेट हो गया सूं...।" चंदगी राम भीतर प्रवेश करते हुए मुस्कुराया...।

"क्यों हुए लेट...?" दरवाजा वापिस बंद करते हुए पूछा चंदगी ने—"पता है पिछले एक घण्टे से दरवाजे के पीछे खड़ी तुम्हारा इंतजार कर रही हूं। तुम्हारी मोटर साइकिल की आवाज सुनी तब जाकर मेरी जान में जान आई।"

कहकर उसने वापिस मुड़कर अपना घेरा चंदगी राम चौटाला के गले में डाल दिया।

"तुम तो जानो हो मेरी जान...।" चंदगी राम चौटाला ने भी उसे अपनी बांहों में भर लिया—"कि मैं एक काम में फंसा हुआ था...ईब (अब) जाकर वह काम खत्म हुआ सै...।"

चांदनी उसके जिस्म की गर्मी या उससे और भी ज्यादा चिपक

गई।

"थारा घरवाला (तुम्हारा पति) सो रिया सै...?"

"ग्यारह बजे से खुर्राटे भर रहा है...पता है पूरी छः गोलियां डाली मैंने उसके दूध में...अब सुबह आठ बजे तक उसके कानों के पास चाहे नगाड़े बजते रहें वह नहीं उठने वाला।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर एक भयानक मुस्कान आकर लुप्त हो गई। उसने चांदनी को अपनी बांहों में उठाया और उठाये हुए भीतर की तरफ बढ़ने लगा।

दरवाजे में प्रवेश करते ही उसने कमरे में दाईं तरफ पलंग पर सो रहे एक अच्छी सेहत वाले तथा स्मार्ट दिखने वाले व्यक्ति पर निगाह डाली।

वह आदमी चांदनी का पति था।

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया और सामने वाली दीवार में लगे दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

चांदनी को उठाये हुए वह पिछले कमरे में आया।

पिछले कमरे में एक साधारण से डबलबैड पर रूई के गद्दे पर गहरे रंग की चादर बिछी हुई थी।

चंदगी राम चौटाला ने चांदनी को बैड पर आकर लिटाया तो चांदनी तुरन्त खड़ी होकर अपने कपड़े उतारने लगी। उसका सुर्ख हो रहा चेहरा...उसकी आंखों में भरा हुआ नशा तथा उसके कपड़े उतारने का उतावला-पन ही बता रहा था कि चंदगी राम चौटाला के नीचे बिछने को वह किस कदर उतावली हो रही है!

कुछ ही देर में वह पूरी तरह से निर्वस्त्र नजर आ रही थी।

"अरे...।" वह हैरानी से चंदगी राम चौटाला को देखते हुए बोली—"तुमने अभी कपड़े नहीं उतारे...। जल्दी उतारो...।

कहते हुए उसने स्वयं उसके कपड़ों को उतारने के लिए हाथ बढ़ाया।

"रहने दे...।" चंदगी राम चौटाला स्वयं अपनी कमीज उतारते हुए बोला—"मन्ने अपने कपड़े उतारने आवै सै...।"

मुस्कुराई चांदनी और बैड पर पीठ के बल लेटकर उत्तेजना के वशीभूत हो स्वयं ही अपने अंगों को दबाने लगी।

उसके साथ ही उसके होठों से सिसकारियां फूट रही थीं। आंखों में भरा नशा और भी गहरा हो रहा था।

चंदगी राम चौटाला ने अपने कपड़े उतारे तो चांदनी की निगाहें एकटक उस स्थान पर जाकर चिपक गई जिसे प्राप्त करने के लिए वह इस कदर उतावली हो रही थी। जिसे पाने के लिए उसे दस दिन तक इंतजार करना पड़ता था। और इस बार तो दो दिन ऊपर हो गये थे।

तुरन्त वह उठी और चंदगी राम चौटाला का हाथ पकड़कर स्वयं पीछे गिरते हुए उसे अपने ऊपर गिरा लिया।

"अर...र...थोड़ा सब्र तो कर लो।" चंदगी राम चौटाला उसकी छातियों पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोला।

"पहले ही इतनी देर लगा दी और अब सब्र करने को कहते हो... ।" चांदनी उसके नीचे पड़े-पड़े ही स्वयं को एडजस्ट करते हुए बोली—"अब सब्र तो तभी आयेगा जब तुम मेरे भीतर भड़क रहे ज्वालामुखी को शांत करोगे।"

"फिक्र मत करो मेरी जान...इस बार तन्ने (तुम्हें) ऐसा सांत (शांत) करूंगा कि तू इसके बाद कभी नई उठ पायेगी।"

मन-ही-मन हंसा चंदगी राम चौटाला और घुटनों के बल उसकी टांगों के बीच बैठ गया।

चांदनी ने आने वाले वक्त ही पहले ही सिसकारियां छोड़नी शुरू कर दीं। उसकी आंखें बंद हो गई।

और फिर—

सहसा ही चांदनी को अपने भीतर एक दहकता ज्वालामुखी समाता महसूस हुआ।

जल्दी से उसने चंदगी राम चौटाला को अपने ऊपर गिरा लिया। आनन्द से उसके होठों से आह उबल पड़ी और फिर शैतान आत्मा का खेल शुरू हो गया।

धर्मराज का श्राप धीरे-धीरे शुरू हो गया।

शुरू-शुरू में तो चांदनी को आनन्द मिला...फिर उसकी आंखें में हैरानी उभरने लगी... । और फिर हैरानी दर्द में तब्दील हो गई... ।

कुछ देर पहले जहां वह उसके नीचे बिछने को मरी जा रही थी...वहीं अब वह उसके नीचे से निकलने की कोशिश करने लगी...दर्द के कारण उसकी आंखें पल प्रति पल चौड़ी होने लगीं...चेहरा पीला पड़ने लगा।

आखिर जब दर्द सीमा को लांघने लगा तो चांदनी के होठों

से एक तेज चीख उबल पड़ी।

मगर चंदगी राम चौटाला ने फौरन उसके मुंह पर हाथ रखकर उसकी चीख का वहीं गला घोंट दिया।

उसके साथ ही उसकी रफ्तार में तेजी आ गई।

चांदनी उसके नीचे पड़ी बुरी तरह से तड़प रही थी...वह उसके नीचे से निकलने का भरपूर प्रयास कर रही थी...मगर उस शैतान भेड़िये ने इस बुरी तरह से जकड़ रखा था कि उसकी हर कोशिश बेकार साबित हो रही थी।

चांदनी का चेहरा अब सफेद पड़ चुका था...उसकी आंखें फटने के कगार तक पहुंच चुकी थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई भीतर उसके फेफड़ों की हड्डियों को तोड़ रही है।

चीखना चाहती थी...लेकिन उस शैतान के मजबूत हाथ ने उसकी चीखों को रोक रखा था। सहसा ही चंदगी राम चौटाला उसके ऊपर गिर पड़ा और कुत्ते की तरह हांफने लगा।

चांदनी को अपने भीतर चंदगी का परनाला फूटता महसूस हुआ।

बस...यहीं तक महसूस कर पाई वह...उसके पश्चात उसकी तमाम पीड़ायें खत्म हो गई...तमाम दर्दों से मुक्ति मिल गई उसे...।

अब चंदगी राम चौटाला उस पर चाहे जितनी बार सम्बंध गांठता...उसे अब कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था।

मर चुकी थी वह।

चंदगी राम चौटाला कुछ देर तो उस पर पड़ा हांफता रहा...फिर एक गहरी सांस छोड़ते हुए उसके ऊपर से उठा और निगाहें चांदनी की जांघों में जमा दी।

खून से लथपथ हो चुकी थीं चांदनी की जांघें...मांस के छोटे वो लोथड़े बाहर लटक रहे थे।

चंदगी राम चौटाला ने धर्मराज के श्राप पर नजर डाली...खून से लथपथ हो चुका था वह।

मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला...उसने चांदनी के उतारे कपड़े से श्राप को साफ किया और कपड़े को चांदनी की लाश पर फैंक दिया।

श्राप अब सामान्य अवस्था में आने लगा था।

चंदगी राम चौटाला ने बड़े इत्मिनान से अपने कपड़े पहने और

फिर कमरे से बाहर निकलकर उस कमरे से होता हुआ जिसमें कि चांदनी का पति अपनी बेवफा पत्नी द्वारा दी गई नींद की गोलियों के कारण गहरी नींद सो रहा था बाहर निकल गया।

चांदनी के पति को देखने की जरूरत तक नहीं समझी चंदगी राम चौटाला ने।

मुख्य दरवाजे के पीछे आकर उसने सांकल गिराई और दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

उसने दरवाजा बंद किया और अपनी राजदूत की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह अपनी राजदूत पर बैठा सड़कों पर उड़ता नजर आ रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

करीब आधे घण्टे बाद चंदगी राम चौटाला एक टैक्सी में वापिस लौटा।

यह टैक्सी उसने पश्चिम बिहार से ही चुराई थी। राजदूत उसने अपने फ्लैट में खड़ी कर दी थी।

टैक्सी को ऐन चांदनी के मकान के दरवाजे के सामने खड़ा करके चंदगी राम चौटाला बाहर निकला और दरवाजे को धकेल कर भीतर प्रवेश कर गया।

वह उस कमरे में पहुंचा जिसमें कि चांदनी की लाश पड़ी थी।

कमरे में प्रवेश करते ही वह ठिठक गया। उस वक्त अगर वहां कोई सामान्य व्यक्ति होता तो अवश्य ही उसके होठों से हौलनाक चीख उबल पड़ती।

काले रंग की एक बिल्ली चांदनी की लाश की जांघों के बीच जीभ फेरती हुई खून चाट रही थी। बीच-बीच में वह मांस के टुकड़ों को भी खा रही थी।

अपने पीछे आहट की आवाज सुन कर बिल्ली ने गर्दन पीछे मोड़ी और अपनी भयानक आंखों से चंदगी राम चौटाला की तरफ देखने लगी। साथ ही अपनी जीभ बाहर निकाल कर अपनी मूछों पर फेरी।

"हुश...।" चंदगी राम चौटाला ने बिल्ली को भगाने के इरादे से बांह को उसे मारने वाले अंदाज से झटका दिया।

"म्याऊं?"

बिल्ली ने तुरंत खिड़की की तरफ छलांग लगाई और बाहर कूद गई।

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया और फिर आगे बढ़कर बैड पर बिछी चादर के कोनों को पकड़ कर चांदनी की लाश को चद्दर में ही बांध दिया।

चांदनी के कपड़े भी उसने गठरी में बांध दिये थे।

तत्पश्चात उसने गठरी उठाई और बाहर आ गया।

गठरी को दरवाजे के करीब रखकर उसने पहले टैक्सी का पिछला दरवाजा खोला—फिर गठरी को उठा कर उसे पिछली सीट पर फैंक दिया।

उसने दरवाजा बंद किया और फिर टैक्सी का दरवाजा भी बंद करके ड्राईविंग सीट पर आ बैठा।

कुछ ही देर में टैक्सी तूफानी गति से बाईपास की तरफ उड़ी जा रही थी।

रात का वक्त होने के कारण वह शीघ्र ही बाई पास पर पहुंच गया। वहां से उसने टैक्सी को बाईं तरफ मोड़ा और करनाल रोड पर आ गया। करीब दो किलो मीटर आगे चलने के पश्चात उसने टैक्सी को सड़क के किनारे रोका और टैक्सी में बैठे-बैठे ही बाईं तरफ देखा।

सड़क के किनारे-किनारे काफी दूरी तक गंदगी के ढेर लगे हुए थे सूअर यहां वहां गंदगी में अपना मुंह मार रहे थे।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर भयानक मुस्कान नाच उठी।

वह टैक्सी का दरवाजा खोल कर बाहर निकला और बोनट के आगे से होता हुआ पिछली सीट के बाईं तरफ वाले दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ।

उसने दरवाजा खोला और गठरी की गांठ को पकड़ कर गठरी को बाहर खींच लिया।

गठरी को उठा कर उसने अपनी कदम उधर बढ़ा दिये जिधर कि अपेक्षाकृत कुछ ज्यादा सूअर थे।

सूअरों के करीब पहुंचने की बावजूद भी सूअर उससे डरकर भागे नहीं बल्कि गंदगी में मुंह मारना छोड़ कर उसकी तरफ इस तरह देखने लगे जैसे वह उनके लिए खाने के लिए कुछ लाया हो।

चंदगी राम चौटाला ने गठरी को नीचे रखा और उसकी गांठ खोल कर चादर को खींच लिया।

चांदनी की लाश फिसल कर गंदगी पर जा गिरी।

लाश को देखकर सूअर थोड़ा सा बिदके जरूर लेकिन भागे नहीं।

"खा लो...हंसा चंदगी राम चौटाला हंसा—थारे वास्ते स्पेसल (स्पेशल) डिस(डिश) सै घना स्वाद आयेगा।"

और फिर चादर को इकट्ठा कर वह वापिस मुड़ गया।

टैक्सी के करीब आकर उसने चादर को अगली सीट पर फैंका—पिछला दरवाजा बंद किया और फिर ड्राइविंग सीट पर आ बैठा।

स्टीयरिंग के पीछे बैठे-बैठे ही उसने उधर देखा जहां उसने चांदनी की लाश फैंकी थी।

सूअर अब चांदनी की लाश को नोचना शुरू कर चुके थे।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर भयानक मुस्कान नाच उठी—। वह जानता था कि सूअर पहले चांदनी के लाश के उस स्थान पर हमला करेंगे जहां से कि वे आसानी से मांस को उधेड़ सकें।

"पुलिस लास (लाश) पाकर इतना तो जरूर जान लेगी कि किसी ने चांदनी के साथ बलात्कार किया सै—"वह बड़बड़ाया—"पर पुलिस ने यू (यह) पता नई लगेगा कि भेड़िया ने इससे बलात्कार किया सै—वह यही समझेगी कि वह जगह सूअरों ने खराब की सै।"

वज जहरीली हंसी हंसा और टैक्सी स्टार्ट करके उसे यू टर्न किया और वापिसी के लिए मुड़ गया।

बाई पास वाले गंदे नाले के करीब जाकर उसने टैक्सी रोकी और चादर उठा कर बाहर आ गया।

उसने चादर को नाले में फैंका और पुनः टैक्सी में आ बैठा।

अब उसका रुख पश्चिम विहार की तरफ था।

कुछ ही देर में वह उस स्थान पर था जहां से कि उसने टैक्सी चुराई थी।

टैक्सी को यथा स्थान खड़ी कर उसने इग्नीशन से चाबी निकाली जो कि वह अपने फ्लैट से लेकर गया था—और बाहर आकर अपने फ्लैट की तरफ बढ़ गया।

जिस वक्त वह अपने फोल्डिंग पलंग पर लेटा उस वक्त सुबह

के चार बज रहे थे।

अब उसका ध्यान पुनः कालिया पठान की तरफ था।

चांदनी को उसने एकदम से भुला दिया था जैसे उसका उससे कभी संबंध रहा ही न हो।

❑❑❑

❑❑❑

कालबैल की आवाज सुनते ही चंदगी राम चौटाला की आंख खुल गई।

फोल्डिंग पलंग पर लेटे-लेटे ही उसने अंगड़ाई ली... फिर नीचे उतर कर वह दरवाजे की तरफ बढ़ा।

दरवाजे की तरफ बढ़ते ही उसने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली—

सुबह के सात बजने वाले थे।

"रै कौन सै... ?"

वह दरवाजे के करीब आकर बोला।

"दरवाजा खोलो... मैं हूं... ।"

बाहर से जालिम सिंह की आवाज आई।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान नाच उठी। उसने हाथ ऊपर उठाकर सिटकनी गिराई और दरवाजा खोलते हुए स्वयं एक तरफ हो गया।

सामने जालिम सिंह खड़ा था। पीछे सड़क पर उसकी टोयटा खड़ी थी।

चंदगी राम चौटाला जानता था कि वह यहां क्यों आया है... लेकिन अपने मन के भावों को उसने चेहरे पर नहीं आने दिया।

"के सै ? (क्या है) ?" वह अंजान बनते हुए बोला।

जवाब देने की बजाये जालिम सिंह भीतर घुस आया और आगे बढ़कर एक कुर्सी पर बैठ गया।

चंदगी राम चौटाला ने अपने चेहरे पर असमंजसता के भाव पैदा किये और उसकी तरफ पलटा।

"खैरियत तो सै... ?" वह उसके करीब आ पलंग पर बैठते हुए अलसाये स्वर में बोला।

"चीफ तुम्हें बुला रहे हैं... ।" गम्भीर स्वर में बोला जालिम सिंह।

"क्यों ?" भौंहें उछाली चंदगी राम चौटाला ने।

"यह तुम्हें वे ही बताएंगे... ।"

"क्या तन्ने मालूम नईं सै... ?"

"है।"

"तो फेर तू ही बोल दे... ।"

"चीफ ने मुझे तुम्हें बताने को मना किया है... ।"

चंदगी राम चौटाला ने गहरी सांस छोड़ी... वह जानता था कि कालिया पठान उससे क्या बात करेगा? वह उठा और बाथरूम की तरफ बढ़ते हुए बोला–

"थम बैठो... मैं मुंह-हाथ धो लेऊं... ।"

कुछ नहीं बोला जालिम सिंह... बस सिर हिला दिया।

चंदगी राम चौटाला बाथरूम में घुसा और करीब पंद्रह मिनट बाद वह बाहर निकला।

फोल्डिंग पलंग पर बैठकर उसने जूती पहनी और खड़ा होते हुए बोला–

"चालो।"

जालिम सिंह भी खड़ा हो गया।

□□□

□□□

"तेरे पचास हजार डूब गए चौटाला... ।"

चंदगी राम चौटाला के कुर्सी पर बैठते ही कालिया पठान उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला।

"क्यों? क्यों डूब गये म्हारे पंचस हजार रुपये... ?"

हल्का-सा रोष जताया चंदगी राम चौटाला ने।

"तुम्हारी वह स्कीम पिट गई... जो हमने तुमसे पचास हजार में खरीदी थी... ।"

"कैसे ?"

"हमने काली सिंह के आदमियों को खत्म करने की स्कीम ली थी तुमसे... ।"

"फिर–क्या थारे आदमी काली सिंह के आदमियों ने मार नईं सके... ।"

"काली सिंह के पंद्रह आदमी तो मर गए... ।"

"तो फेर स्कीम कडे पिटी... ?"

"साथ में हमारे बीस आदमी भी मारे गए... ।"

बुरी तरह से चौंका चंदगी राम चौटाला। हां, यह बात अलग थी कि वह चौंकने की एक्टिंग कर रहा था...और मन-ही-मन ठहाके लगा रहा था।

"यह कैसे हो गया...?"

वह हैरानी प्रदर्शित करते हुए बोला।

"यह तुम बताओ कैसे हो गया यह सब...?"

"म-मैं...मैं भला के बताऊं...?"

"हमारे आदमी कैसे मरे—? किसने मारा हमारे आदमियों को?"

"यह मैं कीसे बता सकूं हूं—?"

"तुम ही बताओगे... ।" गुर्राया कालिया पठान... क्योंकि यह योजना तुम्हारी बनाई हुई थी...तुम्हारे मेरे तथा जालिम सिंह के अलावा और किसी को इस योजना की खबर नहीं थी... ।"

"थम...मेरे पै शक कर रिये सो...?"

आंखें फाड़ते हुए चंदगी राम चौटाला ने अपनी छाती पर हाथ रखा।

"तो तुम बताओ...और किस पर शक किया जा सकता है...?"

"देखिये कालिया पठान साब...मेरी स्कीम नई पिटी सै...थारे आदमियां ने काली सिंग के आदमियां को मार डाल्या...इब थारे आदमियां को किन्ने मारया...यह मैं कीसे बता सकूं हूं...वैसे क्या यह काम मकबूल हुसैन का नई हो सकै सै... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा कालिया पठान। चंदगी राम चौटाला के पीछे खड़ा जालिम सिंह भी उछल पड़ा।

"क्या ? क्या कहा तुमने...?" आंखें फाड़ते हुए बोला कालिया पठान।

"मैंने मकबूल हुसैन का नाम लिया सै... ।"

"पागल हो तुम...भला उसे कैसे पता चला इस स्कीम का...?"

"थम खुद ही सोचो...कीसे पता लगा होगा उन्ने... ।"

कहते हुए चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच [illegible]।

कालिया पठान ने निगाहें उठाकर उसके पीछे खड़े जालिम सिंह की तरफ देखा।

सिर से पांव तक कांप उठा जालिम सिंह।

"म-मैं तो कल शाम से आपके ही साथ था चीफ... ।" वह भर्राये स्वर में बोला।

"सुना।" कालिया पठान पुनः चंदगी राम चौटाला को घूरते हुए गुर्राया—"जालिम सिंह मेरे साथ था... यूं भी मैं एक बारगी अपने आप पर तो शक कर सकता हूं... लेकिन जालिम सिंह पर शक नहीं कर सकता... ।"

जालिम सिंह के चेहरे पर राहत उभरी।

"मैं जालिम सिंह का नाम नई ले रिया... ।"

पूर्ववतः मुस्कुराते हुए बोला चंदगी राम चौटाला।

"तो फिर ?"

"म्हारे अलावा जैकी भी तो जाने था इस स्कीम नै... हो सकै सै कि वह पैंला मकबूल हुसैन के धोरे गया हो... अर उन्ने सारी बात बता कै काली सिंग के धोरे गया हो... फिर पैंला थारे आदमियां ने काली सिंग के आदमियां को मारा सो... फिर मकबूल हुसैन के आदमियां ने थारे आदमियां को मार डाल्या सो... क्या ईसा नईं हो सकै से... ?"

बुरी तरह से उछल पड़ा कालिया पठान—साथ ही उसकी आंखों में अविश्वास के भाव उभर आये।

"नहीं... मैं नहीं मान सकता यह... ।"

"क्या ?"

"जैकी ऐसा नहीं कर सकता... वह मर जाएगा... पर मुझसे दगाबाजी नहीं कर सकता... ।"

"भण्डारी के बारे में भी थमने पैंला ऐसा सोच्या था... पर वह दगाबाज निकड़ा... ।"

कालिया पठान ने बेचैनी से कुर्सी पर पहलू बदला।

"जैकी भण्डारी नहीं है... ।"

वह बोला... लेकिन इस बार उसकी आवाज में वो विश्वास नहीं था जो पहले था।

'क्या पता लागे कौन क्या सै... ? थम जैकी से बात करके देखो... जीब किसी तीसरे को बैरा ही नईं तो फेर किसी ने थारे

आदमियों को मार कीसे दिया... ।"

कालिया पठान ने निगाहें ऊपर उठाई और जालिम सिंह को देखते हुए गुर्राया–

"जैकी को बुलाओ।"

जालिम सिंह ने सिर झुकाया और दरवाजे की तरफ मुड़ गया।

उसके बाहर जाते ही चंदगी राम चौटाला ने बीड़ी का बण्डल निकाल कर एक बीड़ी सुलगाई और सुट्टा लगाकर मुंह से धुएं का बादल उगलते हुए बोला–

"जेकर थमने जैकी ते ईबी बात करनी सै तैं फिर मैं बात करूं उससे... ?"

"तुम क्या बात करोगे... ?" पूछा कालिया पठान ने।

"थारे सामने ही पूछूंगा...अर यह बात ईबी गांठ बांध लेओ...जैकी मकबूल हुसैन का ही जासूस निकड़ेगा... ।"

कालिया पठान ने पल भर के लिए सोचा–फिर सिर हिलाया–

"ठीक है...तुम ही पूछना... ।"

"अर जेकर जैकी मकबूल हुसैन का जासूस निकड़या तो फिर थारे को म्हारे पंचस हजार देने पड़ेंगे... ।"

"तुम उससे बात तो करो... ।" थोड़ी खीझ भरे स्वर में बोला कालिया पठान।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान आकर लुप्त हो गई। उसने बीड़ी होठों में दबाई और कश लगाने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

जालिम सिंह के साथ जैकी ने कमरे में प्रवेश किया तो कालिया पठान ने उसके चेहरे को इस तरह देखा जैसे वह चेहरा देखकर ही उसके भीतर का हाल जान लेगा।

लेकिन अपनी इस कोशिश में वह कामयाब नहीं हुआ...जैकी बिल्कुल सामान्य था...जैसे कि पहले होता था।

उसका चेहरा देखकर वह इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि वह बेकसूर है। चंदगी राम चौटाला ने खामखां उस पर शक किया है।

"हुक्म कीजिये चीफ!" जैकी कालिया पठान के सामने सिर झुकाते हुए बोला।

कालिया पठान ने एक गहरी सांस छोड़ी और स्वर को सख्त

बनाते हुए बोला–

"कल काली सिंह के पास जाने से पहले तुम कहां गए थे... ?"

जैकी सीधा खड़ा हुआ और तत्परता से बोला–

"आपका आदेश मिलते ही मैंने काली सिंह को फोन किया... फिर दस मिनट बाद उसके बुलावे पर हौज खास गया था... ।"

"झूठ बोलते हो तुम... ।" गुर्राया कालिया पठान–"तुम उससे पहले मकबूल हुसैन के पास गए थे... ।"

जैकी के चेहरे का रंग एक पल के लिए उड़ा... फिर उसके चेहरे पर तमतमाहट उभर आई।

"अ-आप मुझ पर इल्जाम लगा रहे हैं चीफ... अगर आपको मुझ पर भरोसा नहीं रह गया तो निकालिये रिवाल्वर और मुझे गोली से उड़ा दीजिये... लेकिन प्लीज... मुझे गद्दार मत कहिये... ।"

कहते हुए स्वर भर्रा गया जैकी का।

उसका चेहरा... उसकी आवाज कालिया पठान को विश्वास दिला रही थी कि वह बेगुनाह है।

तभी चंदगी राम चौटाला जो कि उसकी तरफ पीठ किये बैठा था। कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

वह मुड़ा और जैकी के सामने आ खड़ा हुआ।

"मन्ने पैचाना (पहचाना)... ?" वह उसकी आंखों में झांकते हुए रहस्यमयपूर्ण मुस्कान के साथ बोला।

जैकी की आंखों में असमंजसता उभरी।

"नहीं।"

"इतनी जल्दी भूल गया तू मन्ने... ।"

"जब मैं तुम्हें जानता ही नहीं तो भूलने की बात ही कहां से आ गई... ?"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर क्रूर मुस्कान नाच उठी।

"मकबूल हुसैन का आदमी सूं मैं... ।"

बुरी तरह से चौंका जैकी।

"जिस तरियो तू मकबूल हुसैन का जासूस सै... उसी तरियो मैं कालिया पठान साब का जासूस सूं... ।"

जैकी के चेहरे की रंगत तेजी से बदली... आंखों में बेचैनी उभर आई।

"कल जब तू मकबूल हुसैन से मिला था... तब मैं वहां ही था... तन्ने मेरे सामनै उससे वो सब कहा था जो चीफ ने तन्ने काली सिंग को कैन खात्तर बोला था... ।"

"बकवास करते हो तुम... ।" गुर्रा उठा जैकी–"मेरी आंखें अभी कमजोर नहीं हुईं... न ही मेरी याददाश्त खत्म हुई है... मैं जिसे एक बार देख लेता हूं उसे जिन्दगी भर नहीं भूलता... ।"

"इसका मतलब मैं झूठ बोल रिया सूं... ?"

"बिल्कुल।"

"झूठ तो तू बोल रिया सै भड़वे... मैं ओडे ही था... ।"

"तुम वहां नहीं... ।"

एकदम से होठ भींच लिये जैकी ने... साथ ही उसकी आंखों में खौफ भरने लगा... चेहरा एकदम से फक्क् पड़ गया।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर भयानक मुस्कान नाच उठी।

"इसका मतलब तू वहां गया था... ।" वह बोला।

जैकी होठों पर जुबान फेरकर रह गया।

चंदगी राम चौटाला कालिया पठान की तरफ मुड़ा जो कि कहर भरी आंखों से जैकी को देख रहा था।

'इब तो थारे को बिस्वास हो गया होयेगा कालिया पठान साब... कि यू मकबूल हुसैन का आदमी सै। अर थारे आदमी कैसे मरे... यू भी थमने बेरा पाट गया होगा... ।"

कालिया पठान ने आगे बढ़कर चंदगी राम चौटाला के कंधे पर हाथ रखा–

"थैंक्यू चौटाला... तुमने मकबूल हुसैन के कुत्ते को भी पकड़ लिया... ।"

"वो भी फ्री में... ।" जालिम सिंह बोला।

"यू बोनस समझ लो थम... ईब इसका क्या करना है... वह थम जानो... मैं तो चालूं... नास्ता भी नईं किया ईबी मन्ने... ।"

इधर जैकी के जेहन में मकबूल हुसैन के वो शब्द गूंज उठे जो कि उसने उससे कहे थे कि कालिया पठान की कोई मदद तो नहीं कर रहा।

वह फौरन समझ गया कि वही है वो जो कालिया पठान का दिमाग बना हुआ है।

अपनी बातों के जाल में उलझा कर उसने उसकी असलियत

कालिया पठान के सामने जाहिर कर दी थी।

भांडा फूट चुका था उसका और भांडा फूटने का मतलब था...

'मौत... ।'

अब तो मौत से बचने का बस एक ही रास्ता था कि कालिया पठान के वार करने से पहले वह उसे खत्म कर दे।

अपने फैसले को अमल में लाने के लिए उसने एक पल भी नहीं लगाया कि रिवाल्वर निकाली और कालिया पठान पर तान दी।

"सॉरी चीफ... मौजूदा हालात में मेरी जिन्दगी तुम्हारी जिन्दगी से कहीं ज्यादा कीमती है... ।"

कहने के साथ ही उसने जैसे ही ट्रिगर दबाना चाहा—

"धांय।"

तभी जालिम सिंह ने फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए उस पर फायर कर दिया।

कालिया पठान को खत्म करने के चक्कर में जैकी जालिम सिंह को भूल ही बैठा था... बस यहीं मात खा गया वह।

गोली सीधा उसके दायें कान में घुसी और बायें कान को फाड़ती हुए निकल गई।

जैकी का जिस्म जोरों से उछला और धड़ाम् से नीचे गिरकर कुछ पलों के लिए छटपटाया और स्थिर हो गया।

उस वक्त तक चंदगी राम चौटाला दरवाजे की करीब पहुंच चुका था जब जालिम सिंह ने जैकी पर गोली चलाई थी।

उसने गर्दन पलटा कर पीछे देखा तो उसके होठों पर एक कमीनी मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

यह तो उसने पहले से ही सोच रखा था कि वह कालिया पठान के आदमियों की की गई हत्या का इल्जाम मकबूल हुसैन पर लगायेगा तथा जैकी को उसका जासूस बतायेगा। मगर उसे यह पता नहीं था कि जैकी सचमुच ही उसका जासूस निकलेगा... अगर उसे पता होता तो वह अकेले में उससे मकबूल हुसैन के बारे में अवश्य पूछता उसने तो केवल एक ठस्सा लगाया था और वह ठस्सा ठीक निशाने पर लग गया था।

वह वापिस मुड़ा और जैकी की लाश को घूरते हुए बोला—

"यू साला तो थमने भी मारन लाग्या था। कालिया पठान साब... ।"

कालिया पठान जो अभी तक कहर भरी निगाहों से लाश को देख रहा था ने गर्दन ऊपर उठाई और गहरी सांस छोड़ते हुए गम्भीर स्वर में बोला–

"थैंक्यू चंदगी राम चौटाला... तुमने हमारे दूसरे दुश्मन को भी ढूंढ निकाला... मानना पड़ेगा कि तुम जीनियस हो... ।"

"मैं तो हूं ही जीनियस... ।" हंसा चंदगी राम चौटाला–"पर थम से थोड़ा कम... ।"

मुस्कुरा पड़ा कालिया पठान, फिर बोला–

"अब क्या करोगे... ?"

"ईब तो पैंला नास्ता करूंगा... ।"

"वो यहीं कर लो... ।"

चंदगी राम चौटाला ने सिर हिलाया और बोला–

"नास्ते के पीसे (पैसे) पांच लाख में से नईं कटैंगे... ?"

हंस पड़ा कालिया पठान–"तुम्हें पांच लाख ही मिलेंगे... यूं समझ लो कि नाश्ता तुम्हें जैकी को पकड़वाने की खुशी में दिया जा रहा है... ।"

"ठीक सै।"

कालिया पठान ने जालिम सिंह की तरफ देखा।

"नाश्ते का प्रबन्ध करो जालिम सिंह... और इस हरामी की लाश को उठवाओ... ।"

"यस चीफ!" जालिम सिंह तत्परता से बोला।

"आओ चौटाला।"

कालिया पठान चंदगी राम चौटाला से बोला और पिछले कमरे की तरफ मुड़ गया।

चंदगी राम चौटाला तुरन्त उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला कालिया पठान की आलीशान कोठी से निकल कर एक टैक्सी में बैठा और करीब तीन किलोमीटर का सफर तय करने के उपरांत टैक्सी रुकवा कर उतर गया।

टैक्सी के वहां से जाने के उपरांत वह सड़क किनारे के उस पब्लिक बूथ की तरफ बढ़ा जिसे देखकर उसने टैक्सी रुकवाई थी।

वह बूथ में प्रविष्ट हुआ और काली सिंह का वह नम्बर डायल

करने लगा...जिसके जरिये वह कल काली सिंह से बोला था।

"हैलो।" तभी दूसरी तरफ से एक भारी आवाज आई।

"मैं सूं...चंदगी राम चौटाला...।"

"कहां से बोल रहे हो...?" तुरन्त दूसरी तरफ से पूछा गया।

चंदगी राम चौटाला ने बूथ के शीशे के दरवाजे से बाहर झांका और बोला—

"मोती नगर के चौक से बोल रिया सूं...।"

"तुम एक टैक्सी करके पटेल नगर थाने के सामने पहुंचो...वहां तुम्हें एक नीले रंग की मारुति वैन खड़ी मिलेगी...नम्बर है डी एल-सिक्स—टू सी-सैवन नाइन टू थ्री...।"

"ठीक सै...मैं पौंच (पहुंच) रिया सूं...।"

कहकर चंदगी राम चौटाला ने रिसीवर हुक पर लटकाया और बूथ से बाहर निकल गया।

इस वक्त उसके होठों पर रहस्यमयी मुस्कान थी।

पटेल नगर पहुंचने की बात सुनकर ही वह समझ गया कि काली सिंह अब सतर्क हो चुका है...चूंकि वह जान चुका है कि कालिया पठान उसका वह नम्बर जान चुका है...इसलिए अब हो सकता है कि वह उस नम्बर को बेच ही दे...और जिस तरह से उसने उसे पटेल नगर थाने के बाहर पहुंचने को कहा है...इससे वह यह भी समझ गया कि अब वह किसी को अपने किसी ठिकाने पर नहीं बुलायेगा।

एक टैक्सी करके चंदगी राम चौटाला पटेल नगर थाने के सामने पहुंचा। टैक्सी से उतर कर उसने अभी भाड़ा ही चुकाया था कि तभी नीले रंग की एक मारुति वैन टैक्सी के पीछे आ खड़ी हुई।

चंदगी राम चौटाला ने वैन का नम्बर पढ़ा और फिर वैन की तरफ बढ़ गया।

उसके वैन के करीब पहुंचते ही वैन का दरवाजा पीछे को खिसक गया।

चंदगी राम चौटाला ने भीतर झांका—पीछे की सीट पर दो व्यक्ति बैठे थे जिसमें से उसकी साइड वाला बाहर आ रहा था।

आगे सिर्फ एक ड्राइवर बैठा था।

"बैठो।" वह व्यक्ति बाहर आकर बोला।

चंदगी राम चौटाला पिछली सीट पर बैठ गया।

उसके बैठते ही बाहर निकला व्यक्ति भीतर आ गया और दरवाजा बंद कर दिया।

अब चंदगी राम चौटाला दोनों के बीच सैंडविच बना हुआ था।

तभी पहले से बैठे व्यक्ति ने जेब से काली पट्टी निकाली और चंदगी राम चौटाला के सामने करते हुए बोला—

"सिंह साहब ने कहा था कि तुम्हारी आंखों पर पट्टी बांध कर लाया जाए... ।"

बिना किसी हील-हुज्जत के चंदगी राम चौटाला ने आंखें बंद कर लीं।

तब तक वैन आगे बढ़ चुकी थी।

उस व्यक्ति ने पट्टी चंदगी राम चौटाला की आंखों पर बांध दी।

मन-ही-मन चंदगी राम चौटाला अपने आगे के कार्यक्रम पर विचार करने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

आंखों से पट्टी हटने पर चंदगी राम चौटाला ने खुद को उसी कमरे में काली सिंह के सामने खड़ा पाया जहां कल काली सिंह उसे अपने साथ कार में बिठाकर लाया था।

उसके बाईं तरफ वह व्यक्ति खड़ा था जो कि अब उसको लेकर आया था... पट्टी उसके हाथ में थी।

"बैठो।" तभी काली सिंह बोला।

चंदगी राम चौटाला आगे बढ़कर उसके सामने रखी कुर्सी पर बैठ गया।

उन दोनों के बीच में सैंटर टेबिल पर स्कॉच की बोतल के साथ दो शीशे के गिलास रखे हुए थे... दो ही गिलास मदिरा से भरे हुए थे।

बिना उससे कुछ कहे चंदगी राम चौटाला ने अपनी तरफ का गिलास उठाया और उसे मुंह से लगाकर हलक से नीचे उतारने लगा।

"कहां गये थे तुम... ?" तभी बोला काली सिंह—"जानते हो सुबह के तीन चक्कर तुम्हारे घर के लगा चुके हैं मेरे आदमी... ।"

चंदगी राम चौटाला ने बड़े इत्मीनान से पैग खाली किया... उसे टेबिल पर रखा और कुर्सी की पुश्त से टेक लगाते हुए आस्तीन से

अपने होठों को पौंछा और कहने लगा–

"कालिया पठान के यहां गया था... ।"

"क्यों ?" माथे पर बल पड़ गये काली सिंह के।

"बड़ी जल्दी भूल जाते हो थम सिंग साब... थमने याद नई रिया कि हम दोनों का सौदा हो रिया है... मन्ने थारे आड्डे ने लूटन वाले... ।"

"उसकी अब जरूरत नहीं पड़ेगी... ।" काली सिंह ने उसकी बात काटी।

बुरी तरह से चौंकने की एक्टिंग की चंदगी राम चौटाला ने।

"यह क्या कह रिये सौ थम... ?"

काली सिंह ने गहरी सांस छोड़ी–"तुम्हारा अंदाजा गलत निकला चंदगी राम चौटाला... तुमने कहा था कि मकबूल हुसैन हमारे किसी अड्डे को लूटेगा... लेकिन उसने हमें आर्थिक नुकसान की बजाये जानी नुकसान पहुंचाया। जैकी के बारे में तुमने जो बताया... वो तो सही बताया था... लेकिन यहां तुम गलत सोच गए... ।"

"वो कीसे... (वो कैसे)?"

तुमने यह भी सही बताया था कि कालिया पठान हमें भारी नुकसान पहुंचाना चाहता है... तभी तो तुम्हारे कहने पर हमारे आदमी किशनपुरा वाली रोड पर उसके आदमियों के पहुंचने से पहले पहुंच गए थे लेकिन हमारे आदमियों से पहले मकबूल के आदमी पहुंच गये थे... हमारे आदमियों ने कालिया पठान के आदमियों को मार डाला... और मकबूल हुसैन के आदमियों ने हमारे आदमियों को मार डाला... ।"

"मन्ने मालूम सै यह सब... कालिया पठान से मन्ने यह मालूम लाग गया सै... ।"

"तो क्या कालिया पठान ने तुम्हें बताया नहीं... ?"

काली सिंह ने उसे घूरा।

"हां।"

काली सिंह की आंखों में संदेह के दायरे उभर आये। चेहरे पर हल्की-सी क्रूरता उभर आई।

"कौन हो तुम... ?" गुर्राहट उबली उसके होंठों से।

उसके होंठों से गुर्राहट निकलने की देर थी कि चंदगी राम चौटाला के पीछे खड़े व्यक्ति सतर्क हो उठे। उनके हाथ उनकी जेबों

में रखी रिवाल्वरों के दस्तों पर सख्त हो उठे।

लेकिन क्या मजाल जो चंदगी राम चौटाला के चेहरे पर खौफ का अक्स भी उभरा हो।

"चंदगी राम चौटाला सूं मैं... ।" वह सामान्य अंदाज में बोला।

"कालिया पठान से तुम्हारा क्या एग्रीमेंट हुआ था... ?"

"क्या करोगे जान कै... ?"

"मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो चौटाला... मैं समझ चुका हूं कि कालिया पठान से तुम्हारा एग्रीमेंट मेरे ठिकाने को ढूंढकर उसे बताने का हुआ है... ।"

मुस्कान नाच उठी चंदगी राम चौटाला के होंठों पर।

"बड़े भोले सो थम सिंग साब... जेकर मन्ने थमने ढूंढना होता तो मेरे पाछे कालिया पठान के आदमी होते... अर ईब लग (और अब तक) वा थारे ईस आड्डे को उड़ा भी चुके होते... थारे साथ इब लग मैं भी लास (लाश) में बदल गया होता... ।"

"तो फिर एग्रीमेंट क्या हुआ था... ?"

गहरी सांस छोड़ी चंदगी राम चौटाला ने।

"बड़े जिद्दी सो थम... ।" वह बोला—"कालिया पठान से मेरा एग्रीमेंट जैकी को ढूंढन का हुआ था... ।"

"क्या मतलब ?" चौंका काली सिंह।

"थारे आदमी भण्डारी को तो उसने किसी तरियो पकड़ लिया... उसके बाद उसकै दिमाग में यू बात आई कि थारी तरियों मकबूल हुसैन का भी कोई आदमी उसकै गैंग में होवेगा... वह यह भी जानता था कि भण्डारी के पकड़े जान के बाद वा सतर्क हो जायेगा... अर फूंक-फूंक कै कदम राखेगा... अर उसकै काबू में नई आएगा... बस इसी कारण बने उसनै मेरी सेवायें ली... अर उसे ढूंढन का मेरे साथ एग्रीमेंट हो गया... ।"

"यानि तू सुबह उसी के बारे में बताने के लिए उसके पास गया था... ?"

"हां।"

"फिर क्या किया उसने जैकी का... ?"

"वहीं ही मार डाल्या उसनै उसै... ।"

काली सिंह ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और बोला—

"लेकिन कालिया पठान को जैकी के बारे में बताने से पहले

तूने मुझे उसके बारे में बता दिया था... क्या इससे यह साबित नहीं होता कि तुम विश्वास करने योग्य आदमी नहीं हो... ।"

"बिल्कुल भी साबित नहीं होवे... ।"

"वो कैसे ?"

"म्हारा एग्रीमैंट सिर्फ जैकी का पता लगान का था... हां जेकर मैंने मकबूल हुसैन को जैकी के बारे में बताया होता तो फिर मैं बेइमान होता... मैंने तो सिरफ थमने जैकी के बारे में बताया... वह भी इस खातर के मेरी दुकानदारी चलती रवै... जीबी (तभी) तो मैंनें थारे को ढूंढा... अर थमने मन्ने काम भी दे दिया... ।"

"लेकिन तुम्हें दिया काम परवान नहीं चढ़ सकेगा... ।" मुस्कुरा पड़ा काली सिंह।

उसके चेहरे के भावों के सामान्य होते ही चंदगी राम चौटाला के पीछे खड़े आदमियों के चेहरे का खिंचाव भी खत्म हो गया।

हल्के से चौंका चंदगी राम चौटाला।

"मैं कुछ समझा नई... थम कैना के चावो सै... ? (आप कहना क्या चाहते हैं)... ?"

काली सिंह ने बड़े इत्मीनान से पैग उठाया और कुर्सी की पुश्त से टेक लगाते हुए बोला—

"भण्डारी को हमारे किसी ऐसे अड्डे का पता मालूम नहीं था जिसे कि तुम लुटने से बचा सको... ।"

"ओह!" चंदगी राम चौटाला ने चेहरा ऐसे बनाया जैसे उसे बहुत अफसोस हुआ हो।

"फिर भी तुमने हमें वक्त रहते जैकी के बारे में आगाह कर दिया था... इसका तुम्हें ईनाम मिलेगा... ।"

गहरी सांस छोड़ी चंदगी राम चौटाला ने।

"क्या देवोगे थम... दस हजार... बीस हजार... यू तो दांता (दांतों) में दारू का फाहा लगान वाली बात हो गई—जबकि मन्ने तो पूरी बोतल की आस थी। मन्ने नई चहिये थारा यू ईनाम। हां, जेकर थम कहो तो मैं एक नया प्रोपोजल पेस करूं... ?"

"क्या ?"

"ईबी-ईबी मेरे दिमाग में आई सै यू बात... ।"

"तुम बोलो तो सही... अगर हमें तुम्हारा प्रोपोजल पसंद आया तो हम अवश्य उस पर अमल करेंगे... ।"

चंदगी राम चौटाला ने आगे को होकर स्कॉच की बोतल उठाई और अपना पैग तैयार करने लगा।

पैग भरकर उसने बोतल रखी और पैग उठा लिया।

तब तक काली सिंह ने एक ही सांस में पैग खाली किया और बोला—

"मकबूल हुसैन के दिल की बात तो थम जान ही चुके हो कि वह थमने खत्म करन खातिर मरा जा रिया सै... जबकि वह ऊपर से थारे साथ दोस्ती का दम भरे सै... ।"

"तो ?"

"थम उससे खत्म कर देवो... ।"

मुस्कान नाच उठी काली सिंह के होठों पर।

"हुसैन को खत्म करने का इरादा तो हमने उसी वक्त कर लिया था जब हमने अपने आदमियों की मौत की खबर सुनी थी और... यह बात दिल में बिठा लो कि कत्ल करने का लाशें बिछाने का हमारे आदमियों को काफी तजुर्बा है... इसमें हमें तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी... ।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान उभर आई।

"मैं जानूं था कि थम यही कहोगे... ।"

काली सिंह ने उसे घूरा।

"तो क्या तुम यह नहीं कहना चाहते थे... ?"

"कैना तो यू ही चाहूं सूं... ।"

"फिर ?"

चदंगी राम चौटाला के होठों पर फैली मुस्कान गहरी हो गई।

"यार लोग मन्ने बड़ी कुत्ती चीज यूं ही नई कहते... मैं दिल सै नई दिमाग से काम करूं सूं... ।"

"क्या कहना चाहते हो तुम... ?"

उलझन उभर आई थी काली सिंह के चेहरे पर।

"सिंग साब... दुस्मन को ईसे (ऐसे) मारो के थारी गोली भी न चालै अर दुस्मन खलास हो जावै... ।"

काली सिंह के चेहरे पर छाई उलझन भी तेज हो गई।

"ऐसा कैसे हो सकता है कि गोली चलाये बिना ही दुश्मन मर जाए... ।"

"यह मैं कर सकूं सूं... अर इसमैं थारा पता है कित्ता फायदा

होवैगा... ?"

"साफ-साफ समझाओ...तुम कहना क्या चाहते हो... ?"

चंदगी राम चौटाला ने गहरी सांस छोड़ते हुए कुर्सी की पुश्त से टेक लगाई और बोला–

"जरा सोचो सिंग साब... जेकर थमने मकबूल हुसैन पर हमला किया तो वह भी चुप नईं बैठेगा... जेकर थम उसके दस आदमियां ने मारोगे तो पांच थारे भी मरेंगे... ।"

"जंग में तो यह सब होगा ही... ।"

"ऊपर ते जेकर कालिया पठान ने थारे पै हमला बोल दिया तो थम तो गये काम से। थारी आपस की लड़ाई में वह फैदा उठा जायेगा... अर थम दोनों जो उसकी जगा लेन की सोच रये सो... उसपै तो पानी फिर जागा... फेर थम सात जनम भी काली सिंग से कालिया पठान नईं बन सकोगे... ।"

काली सिंह फटी-फटी आंखों से उसे देखने लगा। इतनी दूर तक तो उसने सोचा भी नहीं था। चंदगी राम चौटाला की बात उसे बिल्कुल सही लगी थी।

उसके चेहरे पर उभर रहे भावों को देखकर मुस्कुरा पड़ा चंदगी राम चौटाला।

"जबी (इसलिए) मैं कहूं सूं कि आपनी ताकत ने जितना हो सकै बचावो... अर दुस्मन की ताकत ने जितना हो सकै कम करो... ।"

"ल-लेकिन यह हो कैसे सकता है... ?"

चंदगी राम चौटाला ने निगाहें उनके चेहरे पर केन्द्रित की।

"थमने मकूबल हुसैन का पता तो मालूम होवैगा... ।"

"उसके दो-तीन अड्डों का पता मालूम है... वह खुद कहां रहता है... इसका पता मुझे फिलहाल मालूम नहीं। हां... पता लग सकता है... ।"

"जेकर मकबूल हुसैन का पता कालिया पठान को लाग जावै तो... ?"

"क्या मतलब ?" उछल पड़ा काली सिंह।

"थम बताओ... जेकर मकबूल हुसैन का पता कालिया पठान को ल जावै तो क्या होगा... ?"

"होगा क्या... वह फौरन उसे खत्म करने के लिए कूच कर

देगा... ।"

"अर मकबूल हुसैन भी कम नई होवैगा...दस कै बदले वह कालिया पठान के पांच तो मारेगा ही...यानि थारा दुस्मन मकबूल हुसैन भी खत्म हो जागा इससे अर कालिया पठान की ताकत भी कम हो जावैगी...अर थारी ताकत न्यूं की न्यूं (यूं की यूं)...ईब बतावो...इसमै। थारी कहीं गोली चालेगी...?"

काली सिंह की आंखों में आश्चर्य उभर आया। चेहरे से तथा कपड़ों से वह निपट गंवार...जाहिल तथा बेवकूफ नजर आने वाला इतना आला दिमाग रखने वाला होगा...कोई सोच भी नहीं सकता था।

कुछ देर तक वह उसे यूं ही आंखें फाड़े देखता रहा...फिर सहसा ही उसके होठों पर मुस्कान उभर आई।

"सचमुच तू बहुत कुत्ती चीज है... ।"

"चौथे बाप की औलाद सूं... ।" हंसा चंदगी राम चौटाला।

"क्या मतलब ?"

"थम नई समझोगे...बस यू समझ लेयो कि मैं तीन बाप बदल चुका सूं...अर ईब चौथे बाप का नाम रोसन (रोशन) कर रिया सूं... ।" हंसकर बोला वह।

काली सिंह के चेहरे पर उलझन उभर आई। उसने समझ नहीं आया कि वह कह क्या रहा है...तीन बाप कैसे बदल लिये उसने।

काश! कि उसे पता होता कि वह तो शैतान आत्मा है जिसे धर्मराज ने श्राप देकर मृत्यु लोक में धकेल दिया था...और उस चालाक आदमी ने उस श्राप को अपने लिए वरदान बना लिया था।

"खैर छोड़ो इसै... थम यह बतावो कि मकबूल हुसैन कै आड्डो की खबर कालिया पठान तक पहुंचान का मन्ने क्या मिलेगा... ?"

काली सिंह मुस्कुरा पड़ा—

"दोनों तरफ से कमाना चाहते हो...कालिया पठान से भी लोगे, और मुझसे भी मांग रहे हो... ।"

"पापी पेट का सवाल सै सिंग साब...अर यह तो बिजनेस सै... ।"

काली सिंह ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"ठीक है... ।" वह बोला—"हम तुम्हें उसके अड्डों के बारे में बता देते हैं...रही बात मकबूल हुसैन का पता बताने की

तो... उसका पता तुम्हें हम शाम को बता देंगे... ।''

''तो फिर मैं कल को कालिया पठान को मकबूल हुसैन के बारे में बता देऊंगा... ।''

काली सिंह ने सिर हिला दिया। और बोला–

''अगर तुम चाहो तो पिछले कमरे में आराम कर सकते हो... ।''

''थम मेरे घर का पता तो जानो सो... ।''

''तुम्हें बार-बार पट्टी बांध कर यहां लाना... ।''

''थम अपने किसी आदमी के हाथ उसका पता भेज देना... थारे को भी तकलीफ नई होवैगी... अर मैं भी पट्टी बंधवाने से बच जाऊंगा... ।''

''हां... यह ठीक रहेगा... ।'' सिर हिलाया काली सिंह ने।

''तो फिर मैं चालूं... ।''

कहते हुए खड़ा हो गया चंदगी राम चौटाला।

''शाम को तुम्हारा मेहनताना तुम्हारे घर पहुंच जाएगा... ।''

चंदगी राम चौटाला की आंखें चमक उठी।

और फिर उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी गई।

उसके वहां से जाने के पश्चात् काली सिंह के करीब खड़ा जंगावर उसके सामने आ खड़ा हुआ।

''यह चौटाला मुझे विश्वास के काबिल नहीं लगा रहा सिंह साहब... ।'' वह बोला।

मुस्कुरा पड़ा काली सिंह।

''तुम्हें तो सिर्फ संदेह है जंगावर... जबकि मुझे पूरा विश्वास है कि यह एक नम्बर का कमीना आदमी है... ।''

हैरानी उभर आई जंगावर के चेहरे पर।

''आप जानते हैं यह सब... फिर भी आपने उसे बख्श दिया... ।''

काली सिंह के होठों पर फैली मुस्कान और भी गहरी हो गई।

''सांप का रुख जब तक दुश्मन की तरफ हो तब तक उसे पुचकारते रहना चाहिये... जैसे ही उसका रुख अपनी तरफ होगा... फौरन उसके फन को लाठी से कुचल डालेंगे हम... ।''

''मुझे तो यह दो मुंह सांप लगता है... कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे खिलाफ भी कोई चाल चल जाए... और हमें पता तब लगे

जब जहर हमारी नसों में फैल जाए... ।"

"फिक्र मत करो... हम पूरी तरह से सतर्क रहेंगे... ।" कहकर काली सिंह ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"वैसे इतना तो मानना पड़ेगा कि इस जाट का दिमाग कम्प्यूटर की मानिन्द तेज चलता है... ।"

बोला कुछ नहीं जंगावर... बस उसे देखता रहा।

"खैर..." काली सिंह आगे बोला—"तुम जल्द-से-जल्द मकबूल हुसैन का पता लगाकर शाम को चौटाला के घर पहुंच जाना... ।"

"जी... बेहतर।"

काली सिंह थोड़ा आगे को झुका और टेबिल पर रखा अपना आधा भरा हुआ पैग उठा लिया।

□□□

□□□

शाम को छः बजे जंगावर पश्चिम विहार में चंदगी राम चौटाला के फ्लैट में पहुंचा। उसने उसे मकबूल हुसैन के तीन ठिकानों का पता बताया तथा यह भी बताया कि वह कहां मिलेगा ?

चंदगी राम चौटाला ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और बोला—

"मैं कल सवेरे ही कालिया पठान के धोरे चला जाऊंगा। फेर थम देखियो... थारा दुस्मन कैसे मरता है... ?"

"तुम आज ही क्यों नहीं चले जाते उसके पास... ?" बोला जंगावर।

चंदगी राम चौटाला के होंठों पर मुस्कान नाच उठी—"आज तो मैंने एक लुगाई के पास जाना सै... घना कड़क माल सै... ।" उसने अंगूठे और उंगली का दायरा बनाकर अपनी आंख की सीध में आगे पीछे किया—"सारी रात मैं उसके धोरे ही गुजारूंगा... ।"

गहरी सांस छोड़ते हुए मुस्कुराया जंगावर और खड़ा हो गया।

"मैं चलता हूं... ।"

चंदगी राम चौटाला ने सिर हिला दिया।

जंगावर मुड़ा और चंदगी राम चौटाला की पुरानी राजदूत के पहलू से होता हुआ बाहर निकल गया।

उसके बाहर निकलते ही चंदगी राम चौटाला के होंठों पर एक

कमीनी मुस्कान नाच उठी। आंखों में धूर्तता के भाव उभर आये।

उसने स्टूल पर रखी ओल्ड बैरल की बोतल उठा कर एक पैग बनाया और बड़े इत्मीनान से उसे खत्म करने के उपरांत फोल्डिंग पलंग से उतरा—जूते पहने और मोटर-साइकिल के करीब आकर उसे हैंडिल से पकड़ा और उसे स्टैंड से उतार कर पीछे धकेलते हुए फ्लैट से बाहर आ गया।

उसने मोटर साइकिल स्टैण्ड पर लगाई और पुनः फ्लैट में घुस गया।

थोड़ी देर बाद वह बाहर आया... दरवाजा बंद करके लाक किया और चाबी जेब के हवाले कर मोटर साइकिल की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही देर में वह कालिया पठान के अड्डे की तरफ उड़ा जा रहा था।

हां... इस बात का वह पूरा ख्याल रखे हुए था कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा।

स्टेनगन मोटर साइकिल के साइड में लगे बक्से में पड़ी थी जो कि उसने रात को फ्लैट में आते ही उसमें रख दी थी।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला कालिया पठान के पास पहुंचा तो उसने उसे अपना इंतजार करते पाया।

"बड़ी देर लगा दी आने में... मैं जालिम सिंह को तुम्हारे पास भेजने ही वाला था... ।"

कालिया पठान कुर्सी पर पसरते हुए बोला।

चंदगी राम चौटाला उसके करीब वाली कुर्सी पर बैठ गया।

जालिम सिंह कालिया पठान के पीठ पीछे हाथ बांधे खड़ा था।

"कहां थे?" कालिया पठान ने अपनी बात को आगे बढ़ाया।

"नया आर्डर लेन खातर भाग-दौड़...भाग-दौड़ कर रिया था... ।"

"क्या मतलब ?" हल्के से चौंका कालिया पठान।

"आज रात मन्ने काली सिंग के रोहतक रोड वाले आड्डे को लूटना सै...जिसके बदले में मुझे पांच लाख मिलेंगे... ।"

"वो तो हमारी तुम्हारी बात पहले ही हो चुकी है... ।"

"अर उसकै बाद म्हारा एग्रीमेंट खत्म...अर एग्रीमेंट के खत्म होते ही चंदगी राम चौटाला फिर ते खाली बैठ जाता अर खाली बैठना मन्ने मंजूर नई... इस खातर मैं नया काम तलास कर रिया था... ।"

"तलाश किया ?"

"हां।"

"क्या ?"

"थारे ही मतबल का सै... ।"

"बोलो।"

चंदगी राम चौटाला ने गहरी सांस छोड़ी... फिर मुस्कुराया और बोला—

"जेकर थमने मकबूल हुसैन का पता लाग जाए... अर उसकै तीन-चार ठिकाना का पता लाग जाए तो... ?"

बुरी तरह से उछल पड़ा कालिया पठान...उसके पीछे खड़े जालिम सिंह के चेहरे पर भी वही भाव उभरे जो कि कालिया पठान के चेहरे पर उभरे थे।

"त-तुम जानते हो मकबूल हुसैन का ठिकाना... ?"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर नाच रही मुस्कान और भी गहरी हो गई।

"थम यू बोलो कि मन्ने क्या मिलेगा... ?"

"तुम उसका पता बताओ मुझे... ।" गुर्राहट उबली कालिया पठान के होठों से।

"मुफत में?"

कालिया पठान ने उसकी तरफ कहर भरी निगाहों से देखा...लेकिन क्या मजाल जो चंदगी राम चौटाला के चेहरे पर खौफ का निशान भी उभरा हो।

उसके चेहरे पर दृढ़ता देख कालिया पठान मन मसोस कर रह गया।

"क्या चाहते हो ?" वह सख्त नापसंदगी भरे स्वर में बोला।

"घनी दौड़-धूप करनी पड़ी मन्ने... जब जा कै मन्ने मकबूल हुसैन के एक आदमी का बेरा पाटया... अर उससे मिन्नत समाजत कर कै... उसकै पैर पकड़ कै...अर उसको घना सारा लालच दे के मन्ने मकबूल हुसैन के आड्डों का उसकै ठिकानै का बेरा पाटया... ।"

"भाव मत बढ़ाओ चौटाला... साफ-साफ बताओ क्या चाहते

हो... ?"

"थम खुद ही अंदाजा लगा लो... उसकै तीन ठिकाने अर उसका हैडक्वार्टर... घना सारा माल मिलने कै साथ-साथ थारा दुस्मन भी खतम हो जायेगा... ।"

"दस लाख।"

हंसा चंदगी राम चौटाला।

"इससे आधा तो मन्ने आज रात ही मिल जागा... वह भी सिरफ काली सिंग का एक आड्डा लूटन का... जब के मकबूल हुसैन कै तीन आड्डे बताऊंगा मैं... पांच गुणा तीन पंद्रह अर पांच मकबूल हुसैन का पता बतान के... पंद्रह जमा पांच... बीस... ।"

कालिया पठान ने पहलू बदल कर गर्दन पीछे खड़े जालिम सिंह की तरफ उठाई। ठीक तभी चंदगी राम चौटाला ने अपनी बात आगे बढ़ाई—

"बीस लाख में मैं थमने सिरफ जानकारी ही देऊंगा... थारे साथ लूटन नहीं जाऊं... ।"

"क्यों ?" कालिया पठान वापिस उसे घूरते हुए बोला—"काली सिंग को लूटने के तो तुम्हें पांच लाख मिल रहे हैं... उस लिहाज से तुम्हें मकबूल हुसैन को भी लूटना होगा... तभी तुम बीस लाख के हकदार होंगे... ।"

"इत्ती बड़ी जानकारी दे रिया सूं थमने... जरा सोचो कालिया पठान साब... कित्ता नुकसान किया सै थारा मकबूल हुसैन ने... उस लिहाज से तो बीस लाख भी कम सैं... ।"

"मैं बारह दे सकता हूं... ।"

"बीस।"

"पंद्रह।"

"बीस।" चंदगी राम चौटाला ने पुनः बीस की रट लगाई।

कालिया पठान ने गहरी सांस छोड़ी—

"रहने दो फिर... मकबूल हुसैन का पता हम खुद ढूंढ लेंगे... ।"

हल्का-सा बौखलाया चंदगी राम चौटाला।

"ठीक सै कालिया पठान साब... पंद्रह ही सही... ।"

"अब आये हो लाइन पर... ।" मुस्कुराया कालिया पठान—"अब बोलो—"कहां है उसका ठिकाना... ?"

"मेरे पंद्रह लाख रुपये... ।"

"घबराओ नहीं... जब यहां से जाओगे तो पंद्रह नहीं बीस लाख लेकर जाओगे... पांच काली सिंह के अड्डे को लूटने के... ।"

"ल-लेकिन... ।"

"मेरी शराफत का नाजायज फायदा मत उठाओ चौटाला... पंद्रह लाख देकर मैं उल्टे तुमसे वापिस भी छीन सकता हूं... इसलिये विश्वास करना सीखो... ।"

"क्या करूं कालिया पठान साब... आज तक विश्वास ही तो करता आया सूं... अर हर बार आखिर में मार ही खानी पड़ी... खैर... ।" उसने गहरी सांस छोड़ी—"ईब जब थम कह ही रिये सो तो एक बार और बिस्वास करके देख लेवें... ।"

"फायदे में ही रहोगे... अब बताओ पते... ।"

चंदगी राम चौटाला ने उसे जंगावर से मालूम हुए पते बताये फिर आगे बोला—

"पते तो मैंने थमने बता दिये... पर आज उस पर हमला न करना... ।"

"क्यों ?" आंखें सिकुड़ीं कालिया पठान की।

"मकबूल हुसैन बाहर गया हुआ सै... जेकर थमने आज ही हमला कर दिया। तो फिर वह थारे हाथ नई आवेगा... इस तरह थम उसके आड्डों ने लूट तो लेवोगे... पर उसको खतम नई कर सकोगे... ।"

"ओह!"

"कब लौटेगा वह वापिस... ?"

तभी जालिम सिंह पहली बार बोला।

चंदगी राम चौटाला ने गर्दन उसकी तरफ उठाई और बोला—

"कल को आ जायेगा वह... ।" उसने पुनः कालिया पठान की तरफ देखा—"थम कल सांझ को या फेर रात को उसपै हमला करना... ।"

"ठीक है... ।" गहरी सांस छोड़ी कालिया पठान ने—"हम कल ही अपना काम करेंगे... अब तुम आज की बताओ... कब जाओगे रोहतक रोड पर काली सिंह के अड्डे पर... ?"

चंदगी राम चौटाला ने घड़ी में वक्त देखा... फिर पुनः कालिया पठान पर निगाह जमाते हुए बोला—

"ईबी तो आठ बजे सैं... मैं दस बजे ओडे (वहां) पहुंचूंगा... अर

बारह बजे व आड्डा लूट लिया जायेगा... थारे आदमी तैयार सैं न... ?"

"जितने तुमने कहे थे तैयार हैं... ।"

मुस्कुरा कर बोला कालिया पठान।

चंदगी राम चौटाला भी मुस्कुरा पड़ा—"ईब थोड़ी-सी दारू-वारू भी हो जाए... तो बढ़िया रयेगा... ।"

कालिया पठान ने अपने पीछे खड़े जालिम सिंह की तरफ गर्दन उठाई।

जालिम सिंह तुरन्त अपने स्थान से हटा और शराब का बंदोबस्त करने के लिए कमरे से बाहर निकल गया।

❑❑❑

❑❑❑

भण्डारी द्वारा बताये गए काली सिंह के रोहतक रोड वाले अड्डे से थोड़ा पहले ही चंदगी राम चौटाला टैक्सी से उतर कर सड़क पर आ गया।

उसने टैक्सी का भाड़ा चुकाया और फुटपाथ पर चढ़कर पैदल ही आगे बढ़ने लगे।

पैट्रोल पम्प के पहलू में ही एक बड़े शो-रूम के ऊपर कैस्ट्राल आयल एण्ड ग्रीस का काफी बड़ा न्यून बोर्ड छोटे-छोटे बल्बों से जगमगा रहा था।

चंदगी राम चौटाला शो-रूम के करीब पहुँचा... उसने शो-रूम के शीशे के दरवाजे पर लिखी इबारत पढ़ी।

24 घण्टे खुला रहता है।

बिना किसी हिचकिचाहट के उसने शीशे के दरवाजे को भीतर की तरफ धकेला और स्वयं भीतर दाखिल हो गया।

शो-रूम के दाईं तरफ एक लम्बा काउंटर लगा हुआ था जिस पर लगा सफेद सनमाइका इस कदर मैला नजर आ रहा था मानो उसी काउंटर के ऊपर कई पुर्जों को रखकर उनमें ग्रीस दी गई हो... वो भी एक दो बार नहीं, बल्कि [illegible] काउंटर को ऐसे प्रयोग किया जा रहा हो।

काउंटर के पीछे दो व्यक्ति कुर्सियों पर बैठे हाथों में ताश के पत्ते पकड़े हुए थे... उनके बीच में एक स्टूल पर भी कुछ ताश के पत्ते रखे हुए थे... जिन्हें देखने के लिए चंदगी राम चौटाला को अपनी गर्दन थोड़ी लम्बी करनी पड़ी थी।

शो-रूम की साइड की दोनों दीवारों तथा सामने वाली दीवार में

लकड़ी के खानों में ग्रीस तथा मोबाईल आयल के डिब्बे रखे हुए थे।

बस इसके अलावा उसे वहां ऐसा कुछ खास नजर नहीं आया जिसकी तरफ उसकी खास तवज्जो जाती।

ताश खेलते दोनों आदमियों ने संदेह भरी निगाहों से उसे देखा जैसे उन्हें उसमें से पुलिस की वर्दी की बू आ रही हो।

"क्या चाहिये ?" तभी उसके करीब वाला व्यक्ति पत्तों को काउंटर पर उल्टा रखते हुए खड़ा होते हुए बोला।

"एक किलो ग्रीस...अर एक लीटर टू टी आयल... ।"

चंदगी राम चौटाला निगाहें शो-रूम में दौड़ाते हुए बोला। उसकी निगाहें शो-रूम में किसी ऐसे स्थान को ढूंढ रही थी जहां पर कि काली सिंह का वह सामान रखा होने की गुंजाइश हो जिसे कि उसे लूटना था।

लेकिन ऐसी कोई जगह उसे नजर नहीं आई।

अभी वह देख ही रहा था कि तभी उससे बात करने वाले व्यक्ति ने प्लास्टिक के दो डिब्बे उसके सामने रख दिये।

"एक सौ साठ रुपये... ।"

चंदगी राम चौटाला ने जेब से दो सौ रुपये निकाले और काउंटर पर रख दिये।

काउंटर मैन ने दो सौ रुपये उठाये और उन्हें काउंटर की एक दराज में डालकर शेष चालीस रुपये निकाल कर उसे दे दिये।

चंदगी राम ने रुपये जेब में डाले और डिब्बे उठा लिये।

ठीक तभी सामने वाली दीवार में सजे डिब्बे भीतर की तरफ होने लगे तथा वहां एक दरवाजा प्रकट होने लगा।

चंदगी राम चौटाला ने उधर देखा।

एक लम्बे मुंह वाला व्यक्ति उस दरवाजे के बाहर निकला जो कि उसे देखकर पहले तो सकपकाया... फिर सामान्य हो काउंटर के पीछे बने रास्ते की तरफ बढ़ आया जो कि उन दोनों व्यक्तियों की तरफ आता था। चंदगी राम चौटाला के होठों पर एक कमीनी मुस्कान आकर लुप्त हो गई। उसे समझते देर नहीं लगी कि काली सिंह का गोल-माल पीछे है... जबकि पहले वह यही समझ रहा था कि वे दोनों व्यक्ति ही दो नम्बर वाले बिजनेस को सम्भालते हैं।

दरवाजे के पीछे बाहर निकले व्यक्ति के अलावा और कितने हैं... इसका पता उसे नहीं था... फिर भी उसने अंदाजा लगाया कि सुरक्षा के मद्देनजर चार-पांच और होने ही चाहियें।

डिब्बे उठाये वह मुड़ा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

शीशे का दरवाजा भीतर तथा बाहर दोनों तरफ से खुलता था... उसने पैर से दरवाजा बाहर की तरफ धकेला और बाहर निकल गया।

पीछे शोरूम में मौजूद तीनों व्यक्तियों को उस पर संदेह हुआ या नहीं... इससे उसका कोई मतलब नहीं था।

कुछ दूर पैदल चलने के उपरांत उसने पीछे देखा... फिर किसी को भी न पाकर उसने डिब्बे सड़क की ढलान में उगी झाड़ियों की तरफ उछाल दिये और वापिस मुड़कर कुछ कदम चल कर खड़ा हो उस शो-रूम को देखने लगा जिसमें से कि वह अभी कुछ देर पहले निकला था।

शो-रूम के बराबर में एक अन्य दुकान थी जिसका कि शटर बंद था... दुकान पर बोर्ड नहीं लगा हुआ था जिससे कि यह पता नहीं चला था कि वह किस चीज की दुकान है।

उसके बाद पैट्रोल पम्प था जिसमें उस वक्त दो गाड़ियां खड़ी हुई थीं। गाड़िया पैट्रोल भरवाने के लिए आई थीं।

नाइट ड्यूटी पर मौजूद पेट्रोल पम्प पर दो लड़के मौजूद थे जिनमें से एक पीछे शीशे के बने केबिन में बैठा किसी को फोन कर रहा था तथा दूसरा केबिन से बाहर निकल कर रीडिंग मशीन की तरफ बढ़ रहा था।

चंदगी राम चौटाला ने शो-रूम के आगे वाली दुकान पर नजर डाली तो वहां उसे खाली प्लाट नजर आया।

कुछ देर शो-रूम तथा उसके आस-पास का जायजा लेने के उपरांत चंदगी राम चौटाला ने एक खाली टैक्सी रुकवाई और उसमें बैठ गया।

❑❑❑
❑❑❑

"देख आये शो रूम... ?"

चंदगी राम चौटाला के कमरे में प्रवेश करते ही पूछा कालिया पठान ने।

"हां।" मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला और आगे बढ़कर उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।

"क्या-क्या देखा... ?"

चंदगी राम चौटाला ने बताया... फिर आगे बोला—

"थारे आदमी कडे सैं (कहां हैं) ?"

"जालिम सिंह।" कालिया पठान ने तुरन्त अपने पीछे खड़े जालिम सिंह की तरफ देखे बिना आवाज लगाई।

जालिम सिंह तुरन्त कुर्सी के पीछे से निकला और कमरे से बाहर निकल गया।

करीब पांच मिनट बाद वह वापिस लौटा तो उसके पीछे पांच आदमी थे।

चंदगी राम चौटाला ने सभी पर बारी-बारी से निगाह डाली... पांचों के पांचों चेहरों से ही खतरनाक नजर आने वाले शख्स थे।

वे कालिया पठान के सामने आकर खड़े हो गए... जबकि जालिम सिंह वापिस कालिया पठान के पीछे जा खड़ा हुआ।

"हथियार तो सैं न इनके पास... ?" पूछा चंदगी राम चौटाला ने।

कालिया पठान मुस्कुराया—"फिक्र मत करो चौटाला... जब यह तुम्हारे साथ जाएंगे तो सभी रिवाल्वरों से लैस होंगे... ।"

"एक रिवाल्वर मन्ने भी चाहिये... ।"

'तुम्हें भी मिल जायेगी... ।"

चंदगी राम चौटाला ने सिर हिलाया और बोला—

"थमने इन्ने (आपने इनको) समझा दिया सै न कि के करना सै... ?"

"नहीं... अभी तक इन्हें कुछ भी नहीं मालूम... ।"

"फिर तो मन्ने ही समझाना पड़ैगा... ।" गहरी सांस छोड़ी चंदगी राम चौटाला ने।

"इस आपरेशन की कमान तुम कर रहे हो... सो जाहिर है कि तुम ही समझाओगे... ।"

चंदगी राम चौटाला ने सहमति में सिर हिलाया और फिर उनकी तरफ देखते हुए बोला—"सुन रिये हो न थम... थारा कप्तान मैं सूं... जो कुछ भी मैं कहूंगा... वह थमने करना पडैगा... ।"

पांचों ने सहमति में सिर हिलाया।

और फिर चंदगी राम चौटाला उन्हें समझाने लगा।

"समझ गए ?" अन्त में वह बोला।

सभी ने सिर हिलाया।

"जेकर थारे में से किसी ने डर लग रिया हो तो वह ईबी कै दे... ।"

"डर तो हमें छूकर भी नहीं गया चौटाला साहब... ।" एक बोला।

"एक बात कान खोल कर सुन लेयो... कतल (कत्ल) थमने करने सै... बहते खून से मन्ने घना सारा डर लागे... यह काम थमने करना पड़ैगा... ।"

पांचों के होठों पर सामूहिक मुस्कान नाच उठी। जैसे वे उसका मजाक उड़ा रहे हों... ।"

"आप निश्चिंत रहिये... ।" पहले वाला ही बोला—"आप बस हमारा नेतृत्व कीजिये... बाकी काम हम खुद कर लेंगे... ।"

"फिर ठीक सै... ।"

कहकर खड़ा हो गया चंदगी राम चौटाला।

उसने कालिया पठान से विदा ली और पांचों के साथ कमरे से बाहर निकल गया।

कुछ ही देर में उन पांचों के लिये एक मारुति वैन सड़क पर भागती नजर आ रही थी... वैन के पीछे दूरी बनाये हुए चंदगी राम चौटाला अपनी राजदूत पर बैठा रोहतक रोड की तरफ उड़ा जा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

मारुति वैन पैट्रोल पम्प की मशीन के करीब खड़ी हुई।

वैन के रुकते ही दरवाजा खुला और उसमें से तीन आदमी बाहर निकले और शो-रूम की तरफ बढ़ गए।

ड्राइवर बना गुण्डा स्टेयरिंग के पीछे बैठा रहा, जबकि पांचवा वैन के बाहर आकर खड़ा हो गया।

तब तक शीशे के केबिन में बैठे दोनों लड़कों में से एक लड़का उठकर केबिन से बाहर आ चुका या तथा अब वह वैन की तरफ बढ़ रहा था।

"चार सौ रुपये का डाल दो... ।"

उसके करीब आते ही बाहर खड़ा पांचवा बोला।

लड़का मशीन की तरफ बढ़ गया, जबकि बाहर वाला केबिन की तरफ बढ़ने लगा।

बड़े इत्मीनान से वह केबिन में पहुंचा। केबिन में दो कुर्सियां लगी हुई थीं जिनमें से एक पर एक लड़का बैठा था तथा दूसरी खाली पड़ी थी।

वह खाली कुर्सी पर बैठ गया।

लड़के ने बिल बुक खोली और पैन उठाते हुए बोला—"कितना

दूं?"

जवाब में गुण्डे ने जेब से रिवाल्वर निकाली और उसकी तरफ तान दी।

रिवाल्वर देखकर लड़का पहले हड़बड़ाया... फिर उसका चेहरा एकदम से फक्क् पड़ गया... आंखों में मौत नाच उठी।

"घबरा नहीं... ।" मुस्कुराया गुण्डा—"हम पैट्रोल पम्प लूटने के लिए नहीं आये... न ही हमें तेरी जान चाहिये... ।"

लड़का कुछ नहीं बोला... बस फटी-फटी आंखों से रिवाल्वर को घूरता रहा।

गुण्डे ने हाथ बढ़ाकर टेबिल पर रखा फोन उठाया और उसे पूरी शक्ति से नीचे पटक दिया।

फर्श से टकराते ही रिसीवर कई पुर्जों में बिखर गया... क्रेडिल भी दो टुकड़ों में बट गया।

फोन फर्श पर क्या टकराया... लड़के का कलेजा उछल कर उसके हलक में आ अटका।

"हमें थोड़ी देर तेरे पास बैठना है... फिर हम चले जाएंगे... ।"

लड़के ने व्याकुलता से होठों पर ज़ुबान फेरी।

ठीक तभी दूसरा लड़का पैट्रोल डाल कर भीतर प्रविष्ट हुआ।

भीतर का माहौल देखकर उसकी हालत भी अपने साथी की तरह खस्ता होने लगी।

"नीचे बैठ जा... ।"

तभी गुण्डा गुर्राया।

लड़का तुरन्त फर्श पर पैरों के बल बैठ गया।

उन दोनों के चेहरों पर उड़ती हवाइयां देख गुण्डे के होठोंपर मुस्कान नाच उठी।

चंदगी राम चौटाला ने उसे यही काम सौंपा था कि वह दोनों लड़कों की निगरानी पर रहे कि वे कोई शोर न मचाने पाये और न ही पुलिस को फोन करने पाये।

उधर पैट्रोल भरते ही मारुति वैन वहां से हटी और शो-रूम की तरफ बढ़ने लगी।

□□□

□□□

मारुति वैन से जो तीन आदमी निकल कर शो-रूम की तरफ बढ़े

थे... वे शो-रूम और पैट्रोल पम्प के बीच वाली दुकान के बंद शटर के आगे खड़े हो चंदगी राम चौटाला का इंतजार करने लगे।

करीब दो मिनट चंदगी राम चौटाला की राजदूत वहां पहुंची... तब तक पैट्रोल पम्प पर कब्जा हो चुका था। उसने राजदूत वहीं शटर के करीब स्टैण्ड पर लगाई और उन तीनों की तरफ देखते हुए बोला—

"मेरी बात याद सै न थमने (तुम्हें)... एक भी साला जिन्दा बाहर नईं निकड़ना चाहिये... ।"

तीनों ने एक साथ सिर हिलाये।

"थम दोनों भीतर जाओ... ।" उसने दो की तरफ देखा—"भीतर जा कर थमने क्या करना सै वह थमने मालूम सै... ।"

दोनों ने सिर हिलाये।

"अर तों (तू) बाहर रयेगा... कोई भी बाहर निकड़े... उसने खतम कर देना... ।"

उसने तीसरे की तरफ देखा।

तीसरे ने भी सिर हिला दिया।

"ईब जाओ थम दोनों... ।"

दोनों ने अपनी जेबें थपथपाई शो-रूम के शीशे के दरवाजे की तरफ बढ़ गए।

शो-रूम की शीशे के दरवाजे को भीतर धकेलते हुए दोनों आगे पीछे भीतर प्रवेश कर गए।

काउंटर के पीछे वही दोनों व्यक्ति बैठे थे, जो कि पहले चंदगी राम चौटाला के वक्त बैठे थे।

वैसे ही ताश खेलते हुए।

आहट की आवाज सुनकर दोनों की गर्दनें दरवाजे की तरफ घूमीं।

चाहे पुलिस वाला हो या गुण्डा... दोनों के चेहरे पर ही कुछ ऐसे भाव-कुछ ऐसे लक्षण होते हैं कि उन्हें देखते ही पहचाना जा सकता है और जो हो ही ऐसे कामों में तो वह तो फटाक से पहचान ले।

काउंटर के पीछे बैठे गुण्डों ने भी उन्हें पहचान लिया कि वे उन्हीं की ही बिरादरी से सम्बन्ध रखते हैं... वो दोनों एकदम से चौकन्ने हो गए। उनके पत्ते बीच में रखे स्टूल पर उल्टे पड़े तथा हाथ जेब में पहुंच गए।

किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए वे पूरी तरह से तैयार हो चुके थे।

तब तक चंदगी राम चौटाला के वर्तमान गुलाम काउंटर पर उनके सामने पहुंच चुके थे।

"एक लीटर मोबाइल ऑयल... ।"

काउंटर को ठकठकाते हुए एक लापरवाही का प्रदर्शन करते हुए बोला।

दूसरा भी चेहरे को ऐसे बनाये हुए था जैसे कोई भी बात न हो।

काउंटर के पीछे खड़े हो चुके दोनों गुण्डों ने एक-दूसरे को देखा... फिर गेट की तरफ वाले ने होठ हिलाये।

"एक लीटर मोबाइल ऑयल... ।"

दूसरा काउंटर के अन्त तक गया... वहां से एक खाने में से एक लीटर का मोबाइल ऑयल का डिब्बा उठाया और वापिस आकर काउंटर पर रख दिया।

इस बीच उसका दायां हाथ निरंतर उसकी जेब में रहा। दूसरे का हाथ उसकी जेब में रखी रिवाल्वर के दस्ते पर जमा हुआ था।

"पैंसठ रुपये।" डिब्बा लाने वाला बोला।

चंदगी राम चौटाला के गुलाम ने शर्ट की जेब में से सौ का नोट निकाला और उसकी तरफ बढ़ा दिया।

उसने बाकी के पैंतीस रुपये लौटा दिये।

रुपये लेकर गुण्डे ने बड़े आराम से जेब में डाले... डिब्बा उठाया और वापिस मुड़ गया।

उसका साथी भी मुड़ गया।

उनके वापिस मुड़ते ही दोनों एकदम से लापरवाह हो गए। उन्होंने यही समझा कि चेहरों से नजर आने वाले उनके भाई-बंद असल में किसी भले घर के चश्मो-चिराग है।

बस यहीं धोखा खा गये वे।

चंदगी राम चौटाला के गुलाम सिर्फ दो कदम चले थे... उसके पश्चात् वे बिजली की-सी फुर्ती से वापिस पलटे।

पलटने के साथ ही उनकी रिवाल्वरें उनकी जेबें से निकल कर उनके हाथों में आ गई थीं।

और जब तक काली सिंह के गुण्डे कुछ समझ पाते—

'धांय... धांय... ।'

दोनों की रिवाल्वरें एक साथ गर्ज उठीं।

गोलियों रिवाल्वरों की नालों से निकली और सीधा उन दोनों के

सीनों में जा समाई।

दोनों उछलकर पहले काउंटर से टकराये... फिर एक-दूसरे से उलझते हुए बीच में रखे स्टूल समेत काउंटर के पीछे गायब हो गए।

दोनों गुण्डों ने तुरंत रिवाल्वरों की नालें सामने वाली दीवार की तरफ घुमा दीं... साथ ही उधर बढ़ने लगे।

ठीक तभी दरवाजा खुला।

"धांय।" दाईं तरफ वाले गुण्डे की रिवाल्वर खांस उठी।

दरवाजे में खड़ा वह लम्बूतरे चेहरे वाला वहीं औंधे मुंह गिर पड़ा जिसे चंदगी राम चौटाला ने देखा था।

ठीक तभी उनके पीछे आहट हुई।

दोनों बिजली की-सी गति से पीछे पलटे।

"रै... रै थम जाओ... मैं सूं... ।" एकदम से चीखा चंदगी राम चौटाला।

वह अभी-अभी भीतर प्रविष्ट हुआ था।

दोनों के कसे हुए बदन ढीले पड़ गए। साथ ही होठों पर कुटिल मुस्कान फैल गई।

"आगे ने चालो।"

चंदगी राम चौटाला संयत होते हुए बोला।

दोनों पुनः सामने वाली दीवार की तरफ मुड़े और दरवाजे की तरफ बढ़ने लगे।

पीछे-पीछे चंदगी राम चौटाला चलने लगा। उसकी रिवाल्वर भी उसके हाथ में आ चुकी थी।

चलते हुए दोनों गुण्डे दरवाजे में पड़ी लम्बूतरे चेहरे वाले की लाश के करीब जाकर ठिठक गए।

"तैं भीतर जाके देख.... ।"

पीछे से चंदगी राम चौटाला ने दाईं तरफ वाले के कंधे पर रिवाल्वर की नाल ठकठकाते हुए कहा।

वह गुण्डा आगे बढ़ा और दरवाजे में पड़ी लाश की पीठ पर पैर रखते हुए दरवाजे में प्रवेश कर गया।

'धांय!'

ठीक तभी उसके दाईं तरफ से एक शोला चमका और उसकी कनपटी में जा समाया।

वह वहीं ढेर हो गया।

चंदगी राम चौटाला का एक साथी कम हो गया।

बाहर खड़े दूसरे व्यक्ति के चेहरे का रंग एक पल के लिए बदला... फिर उसने गर्दन मोड़कर चंदगी राम चौटाला की तरफ इस तरह देखा जैसे पूछ रहा हो कि अब क्या किया जाए?

"आग लगा देयो सो-रूम ने... ।" चंदगी राम चौटाला ऊंचे स्वर में चीखा—"साले खुदई भीतर मां जल जांगे... ।"

साथ ही उसने आंख का इशारा किया उसे।

इशारा समझ कर गुण्डा तुरन्त आगे बढ़ा और दरवाजे के करीब बने लकड़ी के खानों से जाकर चिपक गया। चंदगी राम भी उसके साथ लगकर चिपक गया।

अब वह इस स्थिति में थे कि भीतर से झांकने पर शो-रूम बिल्कुल खाली नजर आता था... भीतर वालों को उन्हें देखने के लिये या तो खुद बाहर निकलना पड़ता... या गर्दन बाहर निकालनी पड़ती।

आग लगाने के बात चंदगी राम चौटाला ने जान-बूझकर ऊंचे स्वर में कही ताकि मौजूद व्यक्तियों में खलबली मच जाए।

उसका यह प्रयोग बिल्कुल सफल रहा।

भीतर चार व्यक्ति थे। जिनके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। चंदगी राम चौटाला द्वारा आग लगाये जाने की बात सुन ली थी उन्होंने। तभी से उनके कलेजे दहले हुए थे।

पहले जहां वे खुद को उस जगह पर पूरी तरह से सुरक्षित समझ रहे थे... अब वह जगह उन्हें चूहेदान नजर आ रही थी। जिसमें कि वे थे।

"य-यह तो आग लगाने जा रहे हैं... ।" एक व्यक्ति थर्राये स्वर में फुसफुसाया।

"अब क्या करें?" दूसरा घबराये लहजे में बोला—"अगर आग लग गई तो हम किसी भी सूरत में जिन्दा नहीं बचेंगे... ।"

"तुम बाहर झांको... आग लगाने के लिए उनमें से एक पैट्रोल लेने पैट्रोल पम्प पर जाएगा... देखो बाकी कितने आदमी हैं... ।" तीसरे वाले ने पहले वाले से कहा।

"म-मैं!" थर्रा उठा पहला।

"घबरा नहीं... बाहर केवल एक जगह के अलावा और किसी की आवाज नहीं आ रही... तू देख... वह अकेला ही है या उसके साथ कोई और भी है... ।" चौथा बोल पड़ा।

किसी तरह हिम्मत करते हुए पहले वाला उठा और दरवाजे के करीब जाकर ठिठक गया।

इस वक्त उसका कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

उसने गर्दन पीछे मोड़कर अपने साथियों की तरफ देखा। उसके साथियों ने इशारे से उसका हौसला बढ़ाया।

गहरी सांस छोड़कर उसने गर्दन सीधी की और रिवाल्वर को मजबूती से थामे गर्दन थोड़ी-सी आगे कर बाहर शो-रूम में झांका।

सामने शो-रूम का शीशे का गेट नजर आया उसे... काउंटर के पीछे उसके दोनों साथियों की लाशें एक-दूसरे के ऊपर गिरी नजर आई।

किसी जिंदा इंसान की दर्शन नहीं हुए उसे।

उसने अपने साथियों की तरफ देखा।

"कोई नहीं है।" इस बार उसकी आवाज में हौंसला था।

बाकी तीनों तेजी से उसके करीब आ पहुंचे।

उन्होंने भी बारी-बारी से बाहर देखा। कोई भी नजर नहीं आया।

"तुरन्त बाहर निकलो और काउंटर के पीछे छुप जाओ... ।" तीसरे वाला बोला—"जैसे ही वह भीतर आए गोलियों से भून डालो उसे।

लेकिन बाहर नहीं निकल पाये वो।

उससे पहले ही एक तरफ छुपे चंदगी राम चौटाला और उसका गुलाम बाहर निकले और भूत की तरह उनके सामने आ खड़े हुए।

दुश्मन को इस तरह भूत की भांति सामने आते देख चारों बुरी तरह से बौखला उठे।

बौखलाहट से उभरने नहीं दिया चंदगी राम चौटाला और उसके साथी ने।

'धांय... धांय... धांय... ।'

दोनों की रिवाल्वरें गर्ज उठी।

देखते-ही-देखते चारों एक-दूसरे के ऊपर ढेर हो गए।

उनकी मौत के पश्चात् गुण्डे ने हैरानी से चंदगी राम चौटाला को देखा।

"आप तो कहते थे कि आपको बहते हुए खून को देखकर डर लगता है... फिर आपने गोली कैसे चला दी... ।"

"तैने (तुम्हें) देख के हिम्मत आ गई... ।"

हौले-से हंसकर बोला चंदगी राम चौटाला।

मुस्कुरा पड़ा गुण्डा।

"अब भीतर चल... ।"

गुण्डा हल्के-से हड़बड़ाया और तुरन्त लाशों को फलांगता हुआ भीतर प्रवेश कर गया।

पीछे-पीछे चंदगी राम चौटाला था।

भीतर प्रवेश कर चंदगी राम चौटाला ने देखा कि वह केबिन शो-रूम की चौड़ाई जितना लम्बा तथा करीब चार फीट चौड़ा था। केबिन को एक तरह से गोदाम की सूरत दी गई थी... ग्रीस के टिन तथा डिब्बे एक तरफ जुड़े हुए थे... जबकि दूसरी तरफ नीचे जाती हुई सीढ़ियां नजर आ रही थीं।

चंदगी राम चौटाला सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

सीढ़ियों के मुहाने पर खड़ा होकर उसने नीचे झांका... फिर पूरी सावधानी से वह सीढ़ियां उतरने लगा।

पीछे-पीछे उसका पालतू गुण्डा भी था।

चंदगी राम चौटाला नीचे आया तो उसने शो-रूम की लम्बाई-चौड़ाई जितने हॉल में खुद को खड़े पाया।

बिल्कुल गोदाम की शक्ल दे रखी थी उस हॉल को। यहां-वहां डिब्बे तथा टिन पड़े थे।

चंदगी राम चौटाला का दिमाग चकरा गया। काली सिंह का दो नम्बर का माल कहां होगा... यह मालूम नहीं पड़ रहा था उसे ?

"माल कहां है?" तभी पीछे से गुण्डा बोला।

"आडे ही कहीं होगा (यहीं-कहीं होगा) ढूंढना पड़ैगा। तैं बाहर ते आपने याड़ी को बुला ला... ।"

गुण्डा वापिस सीढ़ियों की तरफ मुड़ गया और चंदगी राम चौटाला की निगाहें उस स्थान को ढूंढने लगी। जहां पर कि उसे हेरोइन मिल सकती थी।

घूमती हुई उसकी निगाहें शोरूम के गेट वाली साइड की दीवार के पिछल हिस्से पर आकर ठिठक गई।

दीवार का वह हिस्सा ऊपर वाले हिस्से की अपेक्षा काफी मैला था... जगह-जगह उंगलियों से ग्रीस तेल वगैरह पौंछे जाने के निशान लगे हुए थे... नीचे फर्श पर इधर-उधर कुछ औजार बिखरे पड़े थे तथा साथ में किसी गाड़ी के इंजन के पुर्जे पड़े थे।

चंदगी राम चौटाला को दीवार का वह विशेष हिस्सा जो कि गंदा

था... कुछ अटपटा लगा... उसे लगा कि उस हिस्से को जान-बूझकर गंदा किया गया है।

वह आगे बढ़ा और उस दीवार के करीब पहुंच गया।

नीचे बैठकर उसने रिवाल्वर के दस्ते से उस स्थान को ठकठकाया तो उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी... आंखों में हल्की-सी चमक उभर आई।

ठकठकाहट उसे खोखली सुनाई दी।

"हरामी ने सड़क के नीचे माल छुपा रखा सै... !" वह बड़बड़ाया और निगाहों को एक्स-रे की तरह प्रयोग करते हुए उस जगह के आसपास किसी ऐसे स्थान को खोजने लगा जहां से कि उस जगह को खोजा जा सके।

शीघ्र ही उसकी तेज निगाहों ने उस स्थान को खोज निकाला।

वह दीवार में ठुकी हुई छोटी-सी कील थी... जिसे लगाने का वहां कोई औचित्य नहीं था... मगर वह जंग लगी हुई थी।

चंदगी राम चौटाला ने उस कील को पकड़ कर अपनी तरफ खींचा... मगर कोई परिणाम सामने नहीं आया।

उसने कील पर अंगूठा रखकर उसे भीतर दबाया।

परिणाम फिर भी जीरो।

तत्पश्चात् उसने कील को पुनः पकड़ा और उसे पहले ऊपर की तरफ मोड़ा... फिर जब नीचे मोड़ा तो उसकी आंखों की चमक हजारों गुणा तेज हो गई।

हल्की-सी 'घर्र-र्र' की आवाज के साथ दीवार का वह हिस्सा एक तरफ हटता चला गया... और पीछे रिक्त स्थान पैदा होने लगा।

चंदगी राम चौटाला ने भीतर झांका।

करीब पांच फीट लम्बा तथा चार फीट चौड़ा वह स्थान सड़क के ऐन नीचे बना हुआ था।

उस गुप्त स्थान पर लकड़ी की दो पेटियां पड़ी हुई थीं।

ठीक तभी उसे अपने पीछे आहट सुनाई दी।

बिजली की-सी फुर्ती से वह सीढ़ियों की तरफ मुड़ा।

सीढ़ियों से उसके दो गुलाम उतर रहे थे कि वह जिसे उसने भेजा था... तथा दूसरा जो कि बाहर खड़ा था।

दोनों सीढ़ियां उतर कर चलते हुए उसके पास आये।

"पेटियों को बाहर निकाड़ो... !" वह बोला।

दोनों झुके और एक-एक पैटी उस गुप्त स्थान में से निकाल कर बाहर फर्श पर चंदगी राम चौटाला के आगे रख दी।

"खोलो इनको।"

दोनों ने पेटियों को खोला।

पेटियों के भीतर पॉलीथीन की थैलियों में पड़ा सफेद पाउडर देख चंदगी राम चौटाला का चेहरा दमक उठा।

"हैरोइन।"

खुशी से वह बड़बड़ाया।

उसके दोनों गुलामों के चेहरों पर भी खुशी के भाव थे। आखिर कालिया पठान की काली सिंह के खिलाफ यह पहली जीत थी।

अब से पहले हमेशा काली सिंह ने ही उसे चोट पहुंचाई थी।

"उठाओ इन्ने।"

वह बोला।

दोनों ने तुरन्त पेटियां बंद की और उन्हें सिर पर उठा लिया।

सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आये और काउंटर के आगे से निकलते हुए शो-रूम से बाहर निकल गए।

"पेटियां यहां रख दो... ।" चंदगी राम चौटाला ने हुक्म दनदनाया और अपनी मोटर साइकिल की तरफ इशारा किया—

"अर अपने साथियां ने बुला लाओ... ।"

दोनों ने पेटियां मोटर साइकिल की गद्दी के ऊपर रख दी और पैट्रोल पम्प की तरफ बढ़ गए।

कुछ ही देर में मारुति वैन उसके करीब खड़ी थी। उस वक्त चंदगी राम चौटाला मोटर साइकिल के पीछे खड़ा हो उसके साइड बक्से के करीब खड़ा हो चुका था।

मारुति वैन की ड्राइविंग सीट पर बैठा गुण्डा दरवाजा खोलकर बाहर आया और आकर चौटाला के करीब मोटर साइकिल के इस पार खड़ा हो गया।

"आपने तो कमाल कर दिया चौटाला साहब... इतनी आसानी से काली सिंह के अड्डे पर आपने न केवल कब्जा कर लिया... बल्कि उस स्थान को भी ढूंढ निकाला जहां कि उसका माल छुपा हुआ था... ।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच उठी।

"ईबी तो चंदगी राम चौटाला थमने और भी कमाल दिखायेगा... ।"

"अच्छा!"

"थारे साथियां को आ लेन दो...फिर दिखाऊंगा तन्ने कमाल... ।"

तभी शेष तीनों भी पैदल चलते हुए वहां आ पहुंचे।

"सुना तुमने।" ड्राइवर बना गुण्डा बोला—"चौटाला साहब अभी और कमाल भी दिखायेंगे। लगता है किसी और अड्डे को लूटने जाने का आदेश देंगे... ।"

तीनों उसकी तरफ देखने लगे।

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया और चारों पर निगाह डालते हुए बोला—

"तुम भेड़िये ने जानो सो... ।"

चारों ने हैरानी से एक-दूसरे को देखा...फिर पुनः चंदगी राम चौटाला को देखने लगे।

"भेड़िया नाम के जानवर की बात कर रहे हैं आप... ?" एक बोला।

"नईं...मैं तो उस शैतान आत्मा की बात कर रिया सूं...जिसे अभी कुछ रोज पैंला (पहले) रीमा राठौर ने खतम किया था... ।"

चारों बुरी तरह से उछल पड़े।

"इस बेमौके पर मनहूस का जिक्र क्यों कर रहे हैं आप... ?" दूसरा बोला।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर फैली मुस्कान और भी गहरी हो गई।

"क्योंकि वह मनहूस मैं सूं... ।"

एक जबरदस्त झटका लगा चारों को और वे फटी-फटी निगाहों से उसे देखने लगे।

"य-यह क्या कह रहे हैं आप...आप और भेड़िया... ।"

"मैं भेड़िया हूं... अर ईब मेरा चंदगी राम चौटाला के जिस्म पै कब्जा सै... ।"

चारों के चेहरे धुआं-धुआं होने लगे—आंखों में हल्का सा खौफ उमड़ आया।

तभी चंदगी राम चौटाला ने मोटर साइकिल के साइड बक्स का ढक्कन उठाया और उसमें से स्टेनगन निकाल कर उन पर तान दी।

चारों के चेहरे फक्क् पड़ गए। उन्हें सपने में भी उम्मीद नहीं थी

कि उन्हीं का साथी उन पर स्टेनगन तान देगा और स्टेनगन उसके पास है... इसका तो उन्हें गुमान भी नहीं था।

"य-यह आप क्या कर रहे हैं चौटाला साहब... ।" ड्राइवर घिघियाया।

"थारे को ऊपर भेज रिया सूं... ।" भयानक हंसी के साथ बोला चंदगी राम चौटाला।

"ल-लेकिन हम तो आपके साथी हैं... और... ।"

"भेड़िया का कोई भी साथी न सै... जेकर कोई मैं तो गुलाम सै... रै भड़वों जो भेड़िया धर्मराज के समझाने से नईं समझ सकया... वह जमीन पै कैसे सुधरेगा... यह सारी हैरोइन मेरी सै... ।"

"अ-आप बेशक सारी हैरोइन ले लीजिये... लेकिन हमारी जान बख्श दीजिये... ।"

तीसरा घिघियाया।

चंदगी राम चौटाला ने जवाब नहीं दिया। जवाब दिया उसकी स्टेनगन ने।

'तड़... तड़... तड़... ।"

एक साथ दर्जनों गोलियां उसकी स्टेनगन की नाल से निकलीं और उन चारों के जिस्मों में जा समाईं।

चारों बुरी तरह से उछले और एक-दूसरे से टकरा कर वहीं गिर पड़े।

उस शैतान आत्मा ने जो कि धोखेबाज... मक्कार... नीच तथा अव्वल दर्जे की धूर्त थी ने अपने ही साथियों को खत्म कर दिया।

चंदगी राम चौटाला ने उन चारों की लाशों को देखा... हल्के-से ठहाका लगाया और स्टेनगन बक्से में डालकर दोनों पेटियां कैरियर पर बाधीं और गद्दी पर बैठ गया।

मोटर साइकिल स्टार्ट कर उसने स्टैण्ड से उतारी और आगे बढ़ाकर यू टर्न लेता हुआ वापिस मुड़ा और पैट्रोल पम्प पर आकर रोक दी।

राजदूत पर बैठे-बैठे ही उसने शीशे की केबिन की तरफ देखा।

दोनों लड़के सहमे-सहमे से उसकी तरफ ही देख रहे थे।

बड़े इत्मीनान से वह उतरा... राजदूत स्टैण्ड पर लगाई... बक्से में से स्टेनगन निकाली और केबिन की तरफ बढ़ने लगा।

उसे अपनी तरफ बढ़ते देख दोनों लड़कों के रहे-सहे होश भी गुल होने लगे... आंखों में मौत झांकने लगी।

उनमें इतनी हिमम्त नहीं बची थी कि वे कुर्सियों से खड़े भी हो सकते।

भेड़िया केबिन के दरवाजे पर पहुंचा... बिना कोई डायलॉग बोले बिना कोई कारण बताये उसने स्टेनगन का रुख उनकी तरफ किया और ट्रिगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...।'

गोलियां उनकी खोपड़ियों में जा घुसी और वे वहीं कुर्सियों पर ही उलट गए।

चंदगी राम चौटाला वापिस मुड़ा और मोटर साइकिल की तरफ बढ़ गया। जो खेल वह खेल रहा था... उसमें वह अपनी असलियत किसी पर भी जाहिर नहीं होने देना चाहता था।

वह जानता था, अगर कालिया पठान... काली सिंह में से किसी को जरा-सी भनक लग गई कि वह उनके साथ खेल खेल रहा है तो उसे एक नया शरीर पाने के लिए फिर से भटकना पड़ेगा। जबकि वह इस शरीर को ज्यादा-से-ज्यादा देर तक भोगने का इच्छुक था।

और इसी वजह से उसने पैट्रोल पम्प के दोनों लड़कों का काम तमाम किया था कि कहीं पूछताछ के दौरान दोनों में से कोई काली सिंह या कालिया पठान को उसके बारे में कुछ बता न सके।

अपनी राजदूत के करीब आकर उसने स्टेनगन को बक्से में डाला और स्टार्ट करके गद्दी पर बैठ गया।

कुछ ही देर में वह पूरी रफ्तार से अपने फ्लैट की तरफ उड़ा जा रहा था।

पंद्रह मिनट में ही वह अपने फ्लैट में जा पहुंचा। जल्दी-जल्दी उसने दोनों पेटियां उतार कर फ्लैट में पिछले कमरे में जो कि बतौर स्टोर के काम आ रहा था, रखी। फिर स्टेनगन को बक्से में से निकाल कर वहीं स्टोर में ही छुपाया और फिर बाहर आकर फ्लैट को ताला लगाकर कालिया पठान के अड्डे की तरफ उड़ चला।

□□□

□□□

हालांकि इस वक्त तक कालिया पठान सो चुका होता था...लेकिन चूंकि आज उसे चंदगी राम चौटाला के द्वारा भारी फायदा होने के साथ-साथ काली सिंह को पहला नुकसान पहुंचाने की खुश-खबरी मिलनी थी। इसलिए वह अभी तक जाग रहा था।

उसके साथ-साथ जालिम सिंह को जागना पड़ रहा था। कालिया पठान के हुक्म पर उसने कोठी के गेट पर मौजूद गार्डों को आदेश दे रखा था कि चंदगी राम चौटाला को रोका नहीं जाए... बल्कि उसे सीधे उसके पास आने दिया जाए।

डेढ़ बजे चंदगी राम चौटाला उस कमरे में प्रविष्ट हुआ जिसमें कि कालिया पठान एक सोफे पर पसरा हुआ स्कॉच के घूंट भर रहा था। उसके पीछे जालिम सिंह खड़ा था।

चंदगी राम चौटाला के चेहरे की चमक देखकर कालिया पठान के होठों पर मुस्कान नाच उठी।

प्रत्युत्तर में चंदगी राम चौटाला भी मुस्कुराया और आगे बढ़कर उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

हालांकि चंदगी राम चौटाला का चेहरा ही बता रहा था कि आपरेशन कामयाब रहा है... फिर भी कालिया पठान ने उससे पूछना बेहतर समझा।

"क्या रहा ?" उसने पूछा।

"चंदगी राम चौटाला अर कामयाबी का चोली-दामन का साथ सै कालिया पठान साब... ।"

"यानि कामयाबी!" कालिया पठान ने आंखें चमकाईं।

"पूरी कामायबी!"

"क्या मिला लूट में... ?"

"हैरोइन... दो पेटी भर कै... मेरे ख्याल में पांच किलो से कम हरगिज नई होगी... ।"

"यानि पांच करोड़ का फायदा... ।"

"हां... पर म्हारा एक साथी कम हो गया... ।" चंदगी राम चौटाला का स्वर ढीला पड़ गया।

जंग में ऐसी ऊंच-नीच तो चलती ही रहती है... फौज होती किसलिए है... मरने के लिए ही तो होती है... ।"

चंदगी राम चौटाला पुनः मुस्कुराने लगा।

"माल कहां है ?" इस बार कालिया पठान का स्वर बेसब्री से भरा हुआ था।

"बस... आता ही होवेगा... ।" चंदगी राम चौटाला अपनी कलाई घड़ी में वक्त देखते हुए बोला—"मैंने दोनों पेटियां निकड़वा कै रघु को पैट्रोल पम्प पै भेज दिया था गाड़ी लान खातिर... अर फेर अपनी राजदूत पै बैठ कै थारे यहां आ गया।

"तुम्हें उनके साथ आना चाहिये था... ।"

तभी पीछे से जालिम सिंह बोल पड़ा।

चंदगी राम चौटाला ने गर्दन उठाकर उसकी तरफ देखा... मुस्कुराया और पुनः कालिया पठान की तरफ देखते हुए बोला–

"इत्ती बड़ी खुशखबरी थमने सुनान खातर मैं किस कदर उतावला हो रिया था यह मैं ही जानूं था... । अर कालिया पठान ने समझने वाले अंदाज़ में सिर हिलाया और बोला–

"तुम ठीक कहते हो... ।"

चंदगी राम चौटाला ने दांत फाड़ दिये।

और फिर शुरू हुआ इंतजार।

पांच मिनट बीते... दस मिनट बीत गए... आधा घण्टा हो गया... लेकिन कमरे में किसी चिड़ी के बच्चे ने भी प्रवेश नहीं किया। बड़ी बेसब्री कालिया पठान के चेहरे पर स्पष्ट नजर आने लगी थी। उसकी आंखें बार-बार दरवाजे की तरफ उठ रही थीं।

लेकिन आना कहां था किसी ने। उसके पांचों शेर तो कब के ऊपर जा चुके थे।

चंदगी राम चौटाला ने भी अब ऐसा चेहरा बना लिया था... आखिर उसने जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला और उसे हाथों में रगड़ कर एक बीड़ी निकाली और सुलगा ली।

"अब तक तो आ जाना चाहिये था... ।" आखिर बोल पड़ा पठान।

"मैं भी कहूं कि ईब तक उसको आ जाना चाहिये था... ।"

चंदगी राम चौटाला ने उसके सुर में सुर मिलाया और सुट्टा लगाने लगा।

"क्यों नहीं आये वे... ?"

"क्यों नहीं आये वे... ?" चंदगी राम चौटाला ने पुनः उसकी बात दोहराई।

"यह मैं बताऊं तुम्हें... ?" आंखें तरेरीं कालिया पठान ने।

हड़बड़ाया चंदगी राम चौटाला और खड़ा हो गया।

"मैं पता लगा के आऊं किय के बात हो गई... ?"

"बैठो।" गुर्राहट उबली कालिया पठान के होठों से।

हड़बड़ाता हुआ चंदगी राम चौटाला वापिस सोफे पर बैठ गया।

"जालिम सिंह।"

तुरन्त जालिम सिंह कालिया पठान के सामने आ खड़ा हुआ।

"यस चीफ!"

"पता लगाकर आओ... ।" वह बोला–"क्यों नहीं पहुंचे वे अभी तक... ?"

जालिम सिंह ने सिर झुकाया और दरवाजे की तरफ मुड़ गया।

उसके बाहर निकलते ही कालिया पठान ने निगाहें चंदगी राम चौटाला के चेहरे पर स्थिर कीं और बोला–

"मुझे बताओ सब कुछ...क्या किया था तुमने... ?"

चंदगी राम चौटाला ने सभी को खत्म करने से पहले की पूरी दास्तान बिना किसी लाग लपेट के ज्यों कि त्यों सुना दी, फिर आगे बोला।

"अर उसकै बाद मैं थारे यहां आ गया... ।"

"मतलब पेटियां अभी बाहर ही पड़ी थीं... ।"

"हां।" चंदगी राम चौटाला बोला।

"तुम्हें पेटियां वैन में रखवा कर वहां से चलना चाहिये था।

चंदगी राम चौटाला कुछ नहीं बोला... बल्कि सिर इस तरह झुका लिया जैसे उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा हो।

□□□

□□□

पैंतालीस मिनट बाद जालिम सिंह वापिस आया तो उसके चेहरे पर बारह बजे हुए थे।

उसका चेहरा देखकर ही कालिया पठान समझ गया कि कुछ ऐसा हो गया है जो कि नहीं होना चाहिए था।

"क्या हुआ ?" उसने अपने सामने आते-आते पूछा कालिया पठान ने।

जालिम सिंह ने एक गहरी सांस छोड़ी और बोला–

"सभी मारे गए हैं... ।"

कालिया पठान के साथ-साथ चंदगी राम चौटाला भी बुरी तरह से उछला।

"य... यह क्या कह रियेसो थम... ?" वह ऐसे बोला जैसे उसकी बात पर विश्वास न हो रहा हो उसे।

जालिम सिंह ने उसकी तरफ गुस्से से देखा... फिर पुनः कालिया पठान की तरफ देखते हुए बोला–

"काली सिंह के शो-रूम के करीब ही किसी ने चारों को स्टेनगनों

से भून डाला... ।"

"ओह!"

"और तो और मरने वाले या वालों ने पैट्रोल पम्प के दोनों लड़कों को भी नहीं छोड़ा... ।"

"कुछ पता लगा कि हमारे शेरों पर गोलियां किसने चलाईं... ?"

"नहीं... मैं वहां पहुंचा तो पुलिस वहां पहुंची हुई थी... इधर-उधर से पूछताछ कर मैं यही जान पाया हूं... ।"

कालिया पठान ने कहर भरी निगाहों से चंदगी राम चौटाला की तरफ देखा... जिसने अपना मुंह ऐसे बना रखा था जैसे वो अभी रो पड़ेगा... जैसे पांच लाख डूब जाने से उसका कलेजा फटा जा रहा हो।

"कैसे मरे मेरे शेर... ?" कालिया पठान के होठों पर फुंफकार उबली।

"मैं क्या जानूं... ?" चंदगी राम चौटाला भर्राये गले से बोला।

"बकवास मत करो चौटाला... !" फुंफकार तेज हो गई—"सच-सच बताओ किसने मारा उन्हें... वर्ना तुम्हारी लाश के टुकड़े-टुकड़े करके यही दफना दिया जाएगा... ।"

चंदगी राम चौटाला ने अपने मुंह पर यह देखने के लिए हाथ फेरा कि धर्मराज के श्रापनुसार उसकी मौत से पहले उसके दांत लम्बे तो नहीं हो रहे।

दांतों को सामान्य देख उसे ढांढस बंधा कि अभी उसकी मौत दूर है।

"मैं तो उनको छोड़ कर आ गया था... हो सके सै कि मेरे पीछे काली सिंग के आदमी आ गए हों... अर उन्होंने उन्हें गोलियों से भून डाला हो... ।"

"चौटाला ठीक कहता लगता है चीफ... ।" तभी जालिम सिंह बोला—हमारे आदमियों को स्टेनगन की गोलियों से मारा गया था... जबकि चौटाला के पास स्टेनगन है ही नहीं... ।"

मन-ही-मन हंस पड़ा चंदगी राम चौटाला। जो बात वह कालिया पठान से करना चाहता था... वह जालिम सिंह ने उससे कह दी थी।

अंजाने में ही उसने उसके पक्ष में गवाही दे दी थी।

बात कालिया पठान को भी सही लगी... लेकिन उसकी आंखों में छाया कहर अभी भी कम नहीं हुआ था।

"फिर भी मेरे शेरों की मौत का जिम्मेदार मैं तुझे भी मानूंगा

चौटाला... ।" वह गुर्राया—"अगर तू वहां मौके पर होता तो हो सकता था तू सभी को बचाने का तरीका निकाल लेता... ।"

"यह भी हो सकै था कि उन्हीं के साथ-साथ मेरी लास भी बिछ जाती... ।" चंदगी राम चौटाला बोला—"यह तो राम जी की किरपा थी म्हारे पे जो हम बच गए... सायद (शायद) उन्होंने हमैं थारे से बीस लाख लेन खातर जिन्दा रखा... ।"

"बीस नहीं पंद्रह... ।"

"ल-लेकिन मैंने तो पूरी कामयाबी से माल लूटया था... ईब थारे आदमी ही उस माल की रक्सा (रक्षा) नई कर पाये तो इसमें (इसमें) म्हारा के दोस (दोष)... ।"

"पांच लाख लेने के तुम तभी हकदार बनते अगर तुम माल को महफूज मेरे पास लेकर आते... अब तुम सिर्फ पंद्रह लाख के हकदार हो... और वे भी अब तुम्हें नहीं मिलेंगे... जब हम मकबूल हुसैन का खात्मा कर देंगे और उसके तीनों अड्डों को कामयाबी से लूट लेंगे... ।"

"य-यू तो मेरे ते ज्यादती है कालिया पठान साब... ।" चंदगी राम चौटाला फंसे स्वर में बोला—"ईब जेकर थारे आदमी ही मकबूल हुसैन को पार नई पाये तो इसमें मेरा के कसूर होगा। थारे आदमी जेकर उसकै आड्डों से माल नई लूट पाये तो इसमें मेरा के दोस होगा... ?"

"चिन्ता मत करो... तुम पंद्रह लाख के हकदार तब भी होंगे... बशर्ते कि मकबूल हुसैन तुम्हारे बताये स्थान पर होना चाहिये... उन अड्डों पर माल भी होना चाहिये... जहां के पते तुमने बताये हैं... ।"

"वह आपने स्थान पै ही होगा... ।"

"फिर भी तुम्हें रुपया पूरी तसल्ली हो जाने के बाद ही मिलेगा... ।"

चंदगी राम चौटाला गहरी सांस छोड़कर रह गया। जैसे कालिया पठान के फैसले से वह संतुष्ट न हो।

यह अलग बात थी कि भीतर-ही-भीतर वह ठहाके लगा रहा था।

"भूतनी का..." वह मन-ही-मन बड़बड़ाया—"तैं मन्ने पंद्रह लाख देन से रो रिया है सै... अरै... मैं तो तेरा सब कुछ लूट लूंगा... तन्ने ही क्या काली सिंग को भी लूटूंगा... तब दिल्ली में सिरफ एक ही आदमी का राज होवेगा... म्हारा... चंदगी राम चौटाला का... हा-हा-हा... ।"

और फिर कुछ देर और इधर-उधर की बातें करने के उपरांत चंदगी

राम चौटाला कालिया पठान की कोठी से निकला... अपनी राजदूत पर बैठा और फाटक पार कर मेन गेट पर आ अपने फ्लैट की तरफ उड़ चला।

बाकी की बची रात उसने आराम करने का निश्चय किया हुआ था... यूं भी वह अभी काली सिंह से सम्पर्क नहीं करना चाहता था। कालिया पठान अण्डरवर्ल्ड का इतना बड़ा खलीफा यूं ही नहीं बन गया था। आखिर वह भी कुछ दिमाग रखता था। ऐसी सूरत में वह एकदम से उस पर विश्वास करने से तो रहा कि उसके आदमी तो मर गए और वह बच गया। अवश्य ही कालिया पठान यह सोच रहा होगा... बल्कि उसके दिल में बात बैठ चुकी होगी कि वह कोई चाल चल रहा है... और कालिया पठान अवश्य ही उसकी निगरानी करवायेगा।

बेशक वह निगरानी न भी करवाये... फिर भी चंदगी राम चौटाला ने सावधानी का दामन पकड़े रखने का ही निश्चय किया हुआ था। तभी तो वह सीधा अपने फ्लैट की तरफ जा रहा था।

□□□

□□□

सुबह आठ बजे काली सिंह को अपना अड्डा लुट जाने की खबर लगी तो उसके सिर पर जैसे पहाड़ आन गिरा और जंगावर ने उसे यह बताया कि उसके सात आदमियों के साथ-साथ कालिया पठान के पांच आदमी भी मरे हैं काली सिंह के जेहन में फौरन मकबूल हुसैन का नाम उभरा।

"अवश्य ही वह हरामजादा मकबूल हुसैन चोर का मोर बन गया है... मेरे अड्डे पर कालिया पठान के कुत्तों ने हमला किया और जब वे मेरे अड्डे को लूट चुके तो मकबूल हुसैन ने उन्हें खत्म कर दिया... ।"

काली सिंह मुट्ठियां भींचते हुए गुर्राया।

"चौटाला ठीक कह रहा था सिंह साहब... कालिया पठान हमारे किसी अड्डे को लूट सकता है... और देख लीजिये... उसने ऐसा कर दिया... बेशक वह इस लूट में कामयाब होकर फेल हो गया... फिर भी उसने लूटा तो... ।"

जालिम सिंह बोला।

"हां... लूट तो लिया उसने... मगर भण्डारी को पता कैसे चला उस अड्डे का... जबकि तू तो कहता था कि उसे... ।"

'ट्रिन... ट्रिन... ।'

फोन की घण्टी घनघना उठी।

काली सिंह ने बात बीच में छोड़ साइड टेबिल पर रखे फोन का रिसीवर उठा लिया।

"हैलो।"

"चौटाला आपसे मिलना चाहता है... ।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

काली सिंह ने दो पलों तक सोचने की मुद्रा बनाई, फिर बोला–

"उससे पूछ कि वह कहां से बोल रहा है... और किसी को भेजकर उसे मेरे पास भेज दे... ।"

"जी बेहतर... ।"

"और आंखों पर पट्टी बांध कर ही लाना उसकी... ।"

"जी!"

काली सिंह ने फोन क्रेडिल पर टिकाया और फिर गहरी सांस छोड़ते हुए खड़ा हो गया।

"चौटाला आ रहा है... मैं फ्रैश होने जा रहा हूं... अगर पहले आ जाए तो उसे तू हैंडिल करना... ।"

जंगावर ने सिर हिला दिया– ।

काली सिंह दरवाजे की तरफ बढ़ा और चलता हुआ बाहर निकल गया।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला के काली सिंह के पास पहुंचने तक काली सिह तैयार हो चुका था।

"जै राम जी की सिंग साब... ।"

वह माथे पर हाथ ले जाते हुए आगे बढ़ते हुए बोला।

काली सिंह ने कोई जवाब नहीं दिया... बस उसके आगे बढ़कर कुर्सी पर बैठने का इंतजार करने लगा।

चंदगी राम चौटाला उसके सामने रखी कुर्सी पर बैठा और जेब से बण्डल निकाल कर एक बीड़ी निकाल कर सुलगा ली।

"अपने आड्डे के लुट जाने का सोक (शोक) मनाया जा रहा सै... ?" वह उसके गम्भीर चेहरे को देखते हुए बोला।

काली सिंह ने चौंककर उसे देखा।

"तुम्हें कैसे पता चला... ?" उसके स्वर में हल्की-सी उत्तेजना

थी।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान नाच उठी। उसने बीड़ी का सुट्टा लगाया—

"मन्ने आपको पहले ही कया था कि आपने सारे आड्डे पै... ।"

"तुम यह बताओ कि तुम्हें पता कैसे चला... ?"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर नाच रही मुस्कान तीखी हो गई।

"थारा सारा माल मेरे पास सै... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा काली सिंह... उसके पीछे खड़ा जंगावर भी उछल पड़ा था।

"चंदगी राम चौटाला सै म्हारा नाम... (जब तक) काम की जड़ में न पहुंच जाऊं... पाछा (पीछा) नईं छोड़ता... ।"

काली सिंह अभी भी फटी-फटी निगाहों से उसे देख रहा था।

"जालिम सिंग... ।" चंदगी राम चौटाला आगे बोला—"कल सांझ को मन्ने तैयार होकर जाते हुए मिला तो मन्ने कुछ खटका होया... मैंने उसका पीछा किया... थारी दी हुई स्टेनगन मेरे पास थी ही... अर जीब (जब) मैंने उसे थारे आड्डे के सामनै रुकते देखा तो मैं भी थोड़ी दूर रुक गया... और फिर जालम सिंग आपने आदमियां के साथ थारे आड्डे में घुस गया... भीतर के होया... यह मन्ने मालूम नईं... पर जब वह बाहर निकड़ा तो उसके पीछे दो आदमी दो पेटियों को उठाये हुए थे। मैं समझ गया कि थारा या मकबूल हुसैन का आड्डा लुट गया... ।"

चंदगी राम चौटाला ने बीड़ी का सुट्टा मारा... लेकिन बीड़ी बुझ चुकी थी। उसने बीड़ी को नीचे फैंका और आगे बोला—

"फिर मैंने छिप कै स्टेनगन से उन पै हमला कर दिया। जालिम सिंग अपने एक आदमी के साथ जान बचा कै भाग निकड़ा... बाकियों को मैंने खतम कर दिया... अर फिर थारी दोनों पेटियां उठा कै आपने मोटर साइकिल पै लाद कै आपने फ्लैट में चला गया... ।"

"यानि इस वक्त पेटियां तुम्हारे फ्लैट में हैं... ।"

"हां।"

काली सिंह अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ... उसके साथ-साथ चंदगी राम चौटाला भी खड़ा हो गया।

काली सिंह सैंटर टेबिल के पहलू से निकल कर चंदगी राम चौटाला के करीब आया... फिर एकाएक ही उसने उसे अपनी बांहों में भर लिया।

'आज तुमने साबित कर दिया है चंदगी राम चौटाला कि तुम वाकई जीनियस हो। न केवल जीनियस हो... बल्कि वफादार भी हो... ।"

वह उसे स्वयं से अलग करते हुए बोला।

"मैं तो एक दुकान सूं सिंग साब... अर असली दुकानदार वही हौवे सै जो ग्राहक के प्रति ईमानदार हो... पैंला (पहले) कालिया पठान मेरा ग्राहक था... इब थम हो... अर दोनों ही तरफ मैंने पूरी ईमानदारी से काम किया... थारा माल मेरे फ्लैट में बतौर अमानत पड़ा सै... अर उसकी कीमत के दस परसैंट पै म्हारा हक सै... ।"

"बिल्कुल हक है तुम्हारा... ।" उसका कंधा थपथपाया काली सिंह ने।

"ईब थम आपना माल उठवा लेवो... अर मन्ने दस परसैंट पेमेंट कर देवो... फेर मैं कोई नया ग्राहक ढूंढता सूं... ।"

"नया ग्राहक ढूंढने की जरूरत नहीं... ।"

"सारी सिंग साब... चंदगी राम चौटाला ने किसी की गुलामी मंजूर नई... मैं थारा नौकर... ।"

"तुम्हें नौकरी करने को कौन कह रहा है... ?"

"तो फिर ?"

"तुमने कहा न कि तुम नया ग्राहक ढूंढोगे... ।"

"हां... कया तो (कहा तो)... ।"

"ग्राहक तुम्हारे सामने खड़ा है... ।"

"थम (आप)... !"

"हां मैं... पहले दुकान मेरे पास चलकर आई थी... अब मैं खुद चलकर दुकान में आया हूं... ।"

"क्या काम कराना चावो सो... ?"

"काम तुम्हें परसों बता दिया जाएगा... फिलहाल तुम्हें बतौर एडवांस कुछ रुपया दे दिया जाएगा... ।"

चंदगी राम चौटाला ने कंधे उचका दिये। यह बात अलग थी कि मन-ही-मन वह ठहाके लगा रहा था।

"ईब आप मेरी आंखा (आंखों) पै पट्टी बंधवा देवो... अर आपने किसी आदमी ने मेरे साथ भेज कर आपना माल मंगवा लेवो... ।"

मुस्कुराया काली सिंह।

"पट्टी बांधने की अब कोई जरूरत नहीं चौटाला... जिस ईमानदारी से तुमने हमारा माल बचाया है... उससे हमें तुम पर पूरा

विश्वास हो गया कि तुम मरते मर जाओगे... मगर हमसे दगा नहीं करोगे... ।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

□□□

□□□

मकबूल हुसैन ने स्काच का आखिरी पैग हलक से नीचे उतारा और आस्तीन से मुंह पौंछते हुए खड़ा हो गया।

खड़ा होते ही वह एक बारगी हल्का सा लड़खड़ाया और फिर सम्भल गया... । उसने हाल में इधर-उधर निगाहें नहीं घुमाई जबकि हाल में मौजूद उसके आदमी उसे झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे।

वह सीधा हाल के अन्त में दाईं तरफ वाले दरवाजे की तरफ बढ़ा जो कि बंद था।

बंद दरवाजे के सामने आकर वह ठिठका और उसे भीतर की तरफ धकेले कर स्वयं भी भीतर प्रवेश कर गया।

सामने बैड पर एक हसीन तरीन कयामत ढा देने वाली शोला बदन युवती बैठी हुई थी।

मकबूल हुसैन को देखकर युवती बैड से नीचे उतर आई—वह उसे देखते हुए मुस्कुराई एक जान निकाल देने वाली अंगड़ाई ली।

उसके अंगड़ाई लेते वक्त मकबूल हुसैन को उसकी छातियों के उभार और भी ज्यादा उठते नजर आये।

पिछले एक महीने से वह युवती उसकी भरपूर सेवा कर रही थी। आधी-आधी रात तक वह उसकी सेवा में जुटी रही थी।

इतनी सेवा करवाने के बावजूद भी मकबूल हुसैन की हर रात वह लड़की ऐसे लगती जैसे वह उससे पहली बार सेवा करवा रहा हो।

यह उस युवती का ही जादू था—वर्ना वह किसी भी लड़की को पंद्रह दिन तक रिटायर कर देता था।

लेकिन उस युवती ने तो जैसे हर रात के लिए एक नया आसन सोच रखा था। हर रात मकबूल हुसैन के सामने एक नई अदा से पेश आनी थी। और उसकी वह अदा मकबूल हुसैन के सीने में हलचल मचा देती थी।

मकबूल हुसैन ने युवती के उठे हुए उभारों को एक बार भरपूर निगाहों से देखा... फिर मुड़कर दरवाजा बंद किया और सिटकनी लगा

दी।

वह वापिस मुड़ा और आकर बैड पर अधलेटी अवस्था में बैठ गया।

उसने युवती की आंखों में झांका और मुस्कुराते हुए बोला—

"आज कोई ऐसी अदा दिखाना कि तेरी पिछली तमाम अदाओं को भूल जाऊं... ।"

युवती खिलखिलाई और बैड पर उसके बराबर बैठते हुए उसकी शर्ट के बटन खोलने लगी।

"इत्मिनान रखिये हजूर—"वह बोली—"अलिफ लैला की तरह मैं आपको हर रात एक नई कहानी सुनाऊंगी—ऐसी कि आप चाहकर भी मुझे अपने से जुदा नहीं कर पायेंगे।"

"ऐसा।" मुस्कुराया मकबूल हुसैन।

"हाथ कंगन को आरसी क्या—मैं अभी साबित कर दूंगी कि मेरी अदायें आपको दीवाना बना देंगी।"

कहते हुए उसने उसकी शर्ट का आखिरी बटन भी खोल दिया और फिर पैंट की बैल्ट की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया।

मकबूल हुसैन को हल्के-हल्के झटके लगने लगे—जिस्म में कहीं अंगड़ाईयां फूटने लगीं—वजूद सिर उठाने लगा—उसकी आंखों में भरा नशा और भी गहरा होने लगा।

कुछ ही देर में मकबूल हुसैन सिर से पांव तक बेलिबास बैड पर लेटा था।

युवती भूखी बिल्ली की तरह उस चूहे को देख रही थी जिसका कि उसने शिकार करना था।

तभी उसने हाथ आगे बढ़ाया और चूहे को दबोच लिया।

आनन्द से मकबूल हुसैन की आंखें बंद हो गईं। उसकी सांसों की रफ्तार में एक दम से थोड़ी तेजी आ गई।

युवती कुछ देर तक तो चूहे को हाथों से सहलाती रही—फिर उसने उसे छोड़ा और अपने कपड़े उतारने लगी।

कुछ ही देर में युवती भी उस अवस्था में आ गई जिसमें कि मकबूल हुसैन था।

युवती की तनी हुई छातियों किसी गाड़ी की तेज हैडलाईट्स की तरह मकबूल हुसैन की आंखों को चुंधियाने लगी।

और जैसे ही युवती उसके बराबर बैठी—मकबूल हुसैन उस पर

भूखे कुत्ते की तरह टूट पड़ा जैसे उसे हड्डी नजर आ गई हो।

उसने युवती को नीचे गिराया और स्वयं उस पर सवार होकर उसकी छातियों में मुंह मारने लगा।

"अर-अर हजूर यह क्या कर रहे है आप–?" युवती हड़बड़ाई–"जरा सब्र कीजिये–ऐसे तो आपका सारा मजा किरकिरा हो जाएगा।

मकबूल हुसैन के हाथ वहीं रुक गए–। उसकी सांसें तेज गति से चल रही थीं–आंखें उत्तेजना के कारण सुर्ख हो रही थीं।

तभी उसके होठों से राल का टपका निकला और युवती के पेट पर आ गिरा। मगर मकबूल हुसैन को जैसे होश ही नहीं था।

राल का इस तरह टपकना ही बता रहा था कि वह किस कदर उत्तेजित है।

युवती ने अपने पेट की राल साफ करने की जरा भी कोशिश नहीं की। वह जानती थी उसकी किसी ऐसी कोशिश पर मकबूल हुसैन बुरा मान सकता है।

और मकबूल हुसैन के बुरा मानने का मतलब था हर रोज मिलने वाली एक मोटी रकम से महरूम होना।

सो उसने ऐसा दर्शाया जैसे उसने उसकी टपकती हुई राल को देखा ही नहीं।

वह उठ बैठी और मकबूल हुसैन की छाती पर अपना हाथ फेरते हुए कातिल अदा से बोली–

"आप हर रोज मेहनत करते हैं हजूर–आज आप आराम कीजिये–।"

"क्या मतलब–?" मकबूल हुसैन ने उसे घूरा।

'आज आपकी कनीज मेहनत करेगी–।

कहते हुए युवती ने उसे नीचे गिराया और अपनी दाईं टांग उठाकर स्वयं उसके ऊपर आ चढ़ी।

मकबूल हुसैन मुस्कुरा पड़ा।

युवती ने उसका हाथ पकड़ कर अपनी छातियों पर रखा–"आप इनसे खेलिये–मैं अपने खिलौने से खेलती हूं।" मकबूल हुसैन ने उसकी छातियों को भींच लिया।

युवती के होठों से एक बारगी तेज सिसकारी निकली–फिर उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी।

उसने खिलौने को अपने हाथ से सीधा किया और फिर—

एकाएक जैसे बिल्ली चूहे पर झपटी और गड़प से उसे निगल गई।

आनन्द से आंखें बंद हो गई मकबूल हुसैन की और उसने युवती की छातियों को और भी जोरों से भींच लिया।

युवती अपने कूल्हे उछालने लगी—। उसी के साथ-साथ मकबूल हुसैन की सांसों में भी तेजी आने लगी।

उसने युवती की छातियों को अपनी तरफ खींचा और अपने ऊपर गिरा कर उसकी पीठ पर अपनी बाहों का घेरा बांध उसे जोरों से अपने साथ भींच लिया।

युवती उसके साथ चिपके हुए भरपूर मेहनत कर रही थी और अब मकबूल हुसैन के कूल्हे भी उछलने लगे थे।

शहनाईयों का मधुर संगीत गूंजने लगा। उसकी गर्म सांसों की आवाजें ऐसा आभास दे रही थीं जैसे दो जहरीले नाग आपस में उलझे हुए हों।

ढोलक की थाप पर थाप पड़ रही थी।

कुछ देर तक तो ऐसे ही शहनाईयां बजती रही—और जब ढोलक की आवाज ने नगाड़ों का रूप धारण किया तो मकबूल हुसैन की हालत उसकी बर्दाश्त से बाहर होने लगी।

तुरंत उसने पलटी खाई और युवती को नीचे गिरा कर स्वयं उस पर सवार हो गया।

अब वह उल्टे-सीधे स्ट्रोक लगा रहा था...लेकिन फिर भी हर बार बाल बाऊड्री के बाहर जा रही थी।

युवती की गति में तेजी आ गई थी।

चरम सीमा की तरफ बढ़ते हुए दोनों इंसान से पशु बन गए थे।

मकबूल हुसैन कुछ ज्यादा ही पशुता पर उतर आया था। सिसकियों की आवाजें में तेजी आने लगी थी।

और फिर ऊंचाईयों की तरफ उड़ते हुए मकबूल हुसैन को सहसा ही एक तेज झटका लगा और वह युवती पर गिर पड़ा।

प्यार का सागर बह निकला।

युवती ने उसे सख्ती से अपने साथ भींच लिया वैसे वह एक ही बारी में उसे पूरा का पूरा निचोड़ डालेगी।

चलता हुआ वह कमरे से बाहर निकला और हाल में आ गया

□□□
□□□

उस वक्त रात के करीब दो बजे थे जब मकबूल हुसैन की कोठी से कुछ दूर दो गाड़ियां आगे-पीछे सड़क से नीचे कच्चे पर उतर कर खड़ी हुई।

अगली गाड़ी में एक मैटाडोर वैन थी... तथा पिछली टोयटा कार थी।

एक तो अंधेरी रात... ऊपर से दोनों गाड़ियां वृक्षों के नीचे रुकी थीं... इस सूरत में बहुत गौर से देखने के उपरांत ही उनकी वहां उपस्थिति का आभास होता था।

गाड़ियों के रुकते ही पहले मैटाडोर के दरवाजे खुले और उनमें से स्टेनगनों से लैस व्यक्ति बाहर निकलने लगे।

कुल बारह आदमी थे मैटाडोर में जो कि बाहर आकर टोयटा के करीब आ खड़े हुए थे।

तत्पश्चात् कार के पिछले दोनों दरवाजे खुले और स्टेनगनों से लैस दोनों तरफ से एक-एक व्यक्ति बाहर निकला।

और फिर जो व्यक्ति बाहर निकला... वह था जालिम सिंह।

अंधेरे में आंखें फाड़ते हुए उसने अपने आदमियों पर निगाहें दौड़ाईं और मकबूल हुसैन की कोठी की तरफ बा[illegible] हुए बोला—

"उस कोठी में मकबूल हुसैन है... उसे हर हाल में खत्म करना है तुम्हें... चाहे इसके लिए आसपास की कोठियों को भी तबाह क्यों न करना पड़े... चाहे कितनी भी लाशें क्यों न बिछानी पड़ें... मगर वह कुत्ता जिन्दा नहीं बचना चाहिये... ।"

सभी ने दृढ़ता पूर्वक अपने सिर हिलाये।

"कोठी को चारों तरफ से घेर लो... दुश्मनों के बच भागने के तमाम रास्ते बंद कर दो और बमों से उड़ा दो कोठी को... ।"

उसकी बात खत्म होते ही दो व्यक्ति मैटाडोर में प्रविष्ट हुए और जब वे बाहर निकले तो उनके हाथों में एक-एक झोला लटक रहा था।

उन्होंने बाहर आकर झोले जमीन पर बड़ी एहतियात से रखे... और दो अन्य आदमियों को बुलाकर उनकी शर्ट-पैंट के भीतर डलवाईं और शर्ट के ऊपरी बटन खोलने को कहा... और फिर दोनों झोले खोलकर उन दोनों व्यक्तियों की शर्ट में बम निकाल कर डालने लगे।

जब दोनों के झोले आधे-आधे खाली हो गए तो वे सभी चार ग्रुपों

में बढ़कर मकबूल हुसैन की कोठी की तरफ बढ़ने लगे।

जालिम सिंह के आदेश पर उन्होंने इस बात का पूरा ख्याल रखा था कि किसी की निगाह उन पर न पड़ने पाये।

उन सभी के जाने के उपरांत जालिम सिंह वापिस अपनी टोयटा में बैठ गया।

❑❑❑

❑❑❑

'बड़ाम्... ।'

धमाका इतना जबरदस्त था कि सपनों की दुनिया में खोया हुआ मकबूल हुसैन उछल कर खड़ा हो गया।

उसके पहलू में सो रही लड़की की तो चीख ही निकल गई... आंखें फाड़े वह मकबूल हुसैन को देखने लगी जो खुद हक्का-बक्का नजर आ रहा था।

लड़की या मकबूल हुसैन को अपने निर्वस्त्र होने का अभी तक जरा भी अहसास नहीं हुआ था।

'बड़ा... म... ।'

तभी दूसरा धमाका हुआ।

ऐस लगा जैसे जबरदस्त भूचाल से कोठी कांप उठी हो।

लड़की पुनः चीखी और थर-थर कांपने लगी।

'खट... खट... खट... ।'

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई... साथ ही उत्तेजित स्वर उभरा—

"दरवाजा खोलिये हुजूर... ।"

मकबूल हुसैन तुरन्त बैड से उतरा।

तभी उसे अहसास हुआ कि वह बेलिबास है। तुरन्त उसने बैड की चादर खींची और अपने शरीर को ढकते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसने यह नहीं देखा कि चादर खिंचने से लड़की का जगमगाता बदन ऊपर से नीचे तक नजर आने लगा है।

लड़की को भी जैसे तभी आभास हुआ।

तब तक मकबूल हुसैन दरवाजे के करीब पहुंच चुका था, सो लड़की तुरन्त बैड से उतरी और बाथरूम की तरफ भागी।

उसके भागने से उसकी जांघों की थिरकन... उसके उरोजों के हिलौरे किसी के भी कलेजे पर बिजलियां गिरा सकते थे... बशर्ते कि उस वक्त अगर वहां कोई होता तो।

तेजी से वह बाथरूम में प्रविष्ट हुई और दरवाजा बंद कर लिया।

इस वक्त उसका चेहरा सफेद फक्क् पड़ा हुआ था... आंखों में मौत के साये गर्दिश कर रहे थे।

बमों के धमाकों से ही वह समझ गई थी कि कुछ-न-कुछ अनर्थ होकर ही रहेगा।

इधर मकबूल हुसैन ने सिटकनी गिरा कर दरवाजा खोला।

सामने हॉल में करीब दस आदमी खड़े थे... सभी के सभी स्टेनगनों से लैस थे।

"क्या हुआ ? बम किसने फैंके हमारी कोठी पर..."

"हुजूर लगता है कालिया पठान ने हमला कर दिया है... ।"

उसके सबसे करीब खड़ा व्यक्ति बोला।

कालिया पठान का नाम सुनकर एक बारगी तो मकबूल हुसैन के चेहरे की रंगत बदली... मगर तुरन्त ही उसने स्वयं पर काबू पाया और गुर्राते हुए बोला—

"कालिया पठान को इस जगह का पता कैसे... ?"

कोई कुछ नहीं बोला।

'बड़ा... म... ।'

तभी कोठी के पिछले लान में धमाका हुआ।

मकबूल हुसैन समेत सभी लड़खड़ा उठे।

"मुकाबला करो हरामजादों का... एक भी जिन्दा बचकर नहीं जाना चाहिये... ।"

वह दहाड़ा।

तुरन्त सभी वापिस पलट गए।

दरवाजे के बीच खड़ा मकबूल हुसैन जाते हुए अपने आदमियों की मरी हुई चाल देखकर ही भांप रहा था कि वक्त से पहले ही उन्होंने हार कबूल कर ली है। कालिया पठान के नाम का खौफ या बमों के धमाकों का खौफ उन पर हावी हो चुका था।

"ऐसी सूरत में तो यह कुछ भी नहीं कर पायेंगे... अब मुझे ही कुछ करना होगा... ।"

वह बड़बड़ाया और तेजी से वापिस मुड़कर फोन की तरफ लपका।

वह बैड पर बैठा काली सिंह का नम्बर डायल कर रहा था।

"हैलो।" दूसरी तरह से आवाज आते ही वह तेजी से माऊथपीस में बोला—"मैं मकबूल हुसैन बोल रहा हूं—काली सिंह को बुलाओ?"

कुछ ही क्षणों में काली सिंह की आवाज उसके कान के पर्दे से टकराई।

"कहो हुसैन... कैसे मिजाज हैं... ?"

"मेरे अड्डे पर कालिया पठान ने हमला कर दिया है... ।" वह तेजी से बोला।

"तो ?"

"मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है। हमारे बीच जो समझौता हुआ था... उसके मुताबिक हम दोनों में से किसी पर भी मुसीबत आने की सूरत में दूसरे को फौरन उसकी सहायता के लिए पहुंचना होगा... ।"

"हमारे बीच यह समझौता भी हुआ था कि हम एक-दूसरे पर हमला नहीं करेंगे... लेकिन तूने न केवल समझौता तोड़ा... बल्कि मेरे पंद्रह आदमी भी मार डाले... ।"

"य-यह क्या कह रहे हो तुम... ? मैंने तुम पर हमला किया... बकवास... बिल्कुल बकवास... ।"

हकबकाया मकबूल हुसैन।

"क्यों ? क्या जैकी तुम्हारा आदमी नहीं था... ?" गुर्राहट उभरी—"क्या उसने तुमसे आकर यह नहीं कहा था कि कालिया पठान मुझ पर हमला करना चाहता है... और जब मेरे आदमियों ने कालिया पठान के आदमियों को मारा तो पीछे से तेरे आदमियों ने मेरे आदमियों को मार डाला... ।"

"य-यह झूठ है... ।"

"यह सच है।"

"यह झूठ है... या सही है कि जैकी मेरा आदमी था मैंने... ।"

"सॉरी हुसैन... मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता... यूं भी मेरे हाथ अब एक ऐसी ताकत आ गई है कि कुछ ही दिनों में यह ताकत कालिया पठान को खत्म कर देगी... ऐसी सूरत में अगर मेरे हाथ-पैर चलाये बिना तुम मर जाते हो तो मुझे दुख नहीं, बल्कि खुशी होगी... गुड बाई... ।"

उसी के साथ दूसरी तरफ से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

गहरी निराश भरी सांस छोड़ते हुए मकबूल हुसैन ने फोन क्रेडिल पर रखा ही था कि फोन की घण्टी घनघना उठी।

'ट्रिन... ट्रिन... ।'

शायद काली सिंह का विचार बदल गया है। यही सोचा मकबूल

हुसैन ने और रिसीवर उठा लिया।

"हैलो।"

"मैं सलमान बोल रहा हूं हुजूर... ।"

नाम सुनकर कलेजा धड़क उठा मकबूल हुसैन का। सलमान उसके जहांगीर पुरी वाले अड्डे का इंचार्ज था।

"क्या बात है सलमान... ?" वह बोला।

"कालिया पठान के आदमियों ने हमारे अड्डे पर हमला कर दिया है... ।"

मकबूल हुसैन के पैरों तले से धरती खिसक गई। अपनी बड़ी होती सल्तनत का उसे अन्त होता नजर आने लगा।

वह यह जैसे भूल ही गया कि उस वक्त खुद उसकी अपनी जान खतरे में है।

"मुकाबला करो।" वह दहाड़ा—"एक भी सूअर की औलाद बचकर न जाने पाये... ।"

"ल-लेकिन हुजूर... वे तादाद में हमसे कहीं ज्यादा हैं... ।"

"तो तुम सभी मर जाओ... लेकिन जीते जी हमारे माल को उसे छूने भी मत दो। इतना याद रखना... अगर तुम लोगों के होते हुए वे मेरा माल लूट कर ले गए तो मैं खुद तुम्हारे सीने में गोली मार दूंगा... ।"

बात पूरी करते ही उसने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।

और फिर जिस्म पर लिपटी चादर उतार कर बैड पर फैंकी तथा जल्दी-जल्दी अपने कपड़े उठाकर पहनने लगा।

उस लड़की की उसे कोई सुध नहीं थी जो कि एक बजे तक उसके साथ लेटी उसकी बीवी का रोल अदा करती रही... और जो अब बाथरूम में छिपी हुई कांप रही थी।

इधर उसने अपनी शर्ट का आखिरी बटन बंद किया... उधर गोलियां चलने की शुरुआत हो गई।

'तड़... तड़... तड़... ।'

मकबूल हुसैन ने सिरहाने के नीचे से रिवाल्वर निकाली और तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ा।

मौजूदा हालात में अपने आदमियों का हौसला बढ़ाने का बस यही एक रास्ता था कि वह खुद भी उस जंग में कूद पड़े।

अभी उसने दो कदम ही आगे बढ़ाये थे कि तभी—

'ट्रिन... ट्रिन... ।'

फोन की घण्टी फिर घनघना उठी।

दरवाजे की तरफ बढ़ता उसका कदम वहीं थम गया। वह वापिस मुड़ा और फोन के करीब आकर रिसीवर उठा लिया।

'हैलो!"

"मैं तेजवीर बोल रहा हूं हुजूर...।"

दूसरी तरफ से घबराई आवाज आई।

तेजवीर उसके पश्चिम विहार वाले अड्डे का इंचार्ज था।

तेजवीर की घबराई आवाज सुनकर ही वह समझ गया था कि वहां भी कुछ ऐसा घट गया है जो जहांगीर पुरी में घटा है।

"बोल!" वह माउथपीस में बोला।

"कालिया पठान के आदमियों ने हमारे अड्डे पर हमला कर दिया है हुजूर...।"

मकबूल हुसैन की आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा।

इतनी मेहनत करके उसने दो साल में यह मुकाम पाया था...कालिया पठान को भी कई बार लूटा था...लेकिन आज...आज कालिया पठान की लुहार की चोट पड़ी थी उस पर।

हर बार सुनार की तरह वह ठुक-ठुक करता रहा था...लेकिन कालिया पठान के एक ही वार ने उसको नेस्तनाबूद करके रख दिया था।

"मुकाबला करो।"

वह माउथपीस में बस इतना ही बोला और रिसीवर रखकर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

तभी फिर से घण्टी बजी...लेकिन इस बार उसने फोन की तरफ गर्दन भी नहीं घुमाई। पहले के दोनों फोनों ने उसकी हिम्मत को आधा कर डाला था...अब बची-खुची हिम्मत को वह तीसरी कॉल सुनकर खत्म नहीं करना चाहता था।

दरवाजे से निकल कर वह हॉल में आया और बाईं तरफ मुड़ गया जिधर पोर्च में खुलने वाले दरवाजे के करीब ऊपर जाती सीढ़ियां बनी हुई थीं।

गलत नहीं सोचा था मकबूल हुसैन ने। उसके कोठी की छत पर पहुंचते ही उसके आदमियों के हौसलों में कई गुणा इजाफा हो गया था।

"शाबाश!" मकबूल हुसैन मुडेरों के पीछे पोजीशन लिये अपने

आदमियों का हौसला और ज्यादा बढ़ाते हुए चीखा–

"खत्म कर दो हरामजादों को... चीथड़ों में तब्दील कर दो उनको... ।"

उसके आदमी दोगुने जोश से गोली-बारी करने लगे।

'तड़... तड़... तड़... ।'

रात के सन्नाटे में गोलियों की आवाजें बमों के धमाकों से भी तेज महसूस हो रही थीं।

नीचे से भी गोलियां चलाई जा रही थीं।

अंधेरे में बिल्कुल ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे जुगुनुओं की कतारें ऊपर से नीचे तथा नीचे से ऊपर को आ-जा रही हों।

□□□

□□□

"ऐसे में तो यह हरामजादे मरेंगे नहीं... ।" कोठी की पिछली साइड में वृक्षों के पीछे पोजीशन लिए एक व्यक्ति अपने साथी से बोला–"गोलियां चलाते-चलाते दिन निकल आयेगा... फिर भी पता नहीं हम किसी को मार भी पायेंगे या नहीं... ।"

"तो फिर क्या करें... ?" उसका साथी बोला।

"बम फेंको... तभी कुछ होगा... ।"

बात दूसरे को जंची... सो उसने स्टेनगन जमीन पर रखी और अपने साथी की शर्ट के ऊपर खुले बटन में हाथ डाल कर भीतर से बम निकाला... दांतों से उसकी पिंन खींची और पूरी शक्ति से छत की ओर उछाल दिया।

बम जाकर सीधा मुडेर से टकराया।

'बड़ाम्... ।'

तेज धमाके के साथ मुडेर के साथ-साथ लैंटर का एक बड़ा हिस्सा भी ध्वस्त हो गया।

मुडेर के पीछे छिपे हुए तीन व्यक्तियों के जिस्म चीथड़ों में तब्दील हो मलवे के साथ हवा में उड़े और लॉन में बिखर गये।

बम का हमला कामयाब होते देख नीचे पोजीशन लिये व्यक्ति का हौसला कई गुणा बढ़ गया।

उसने दूसरा बम निकाला... दांतों से उसकी पिन खींची और दुगुने जोश के साथ छत की तरफ उछाला।

इस बार बम छत पर काफी आगे को गिरा।

❑❑❑
❑❑❑

'बड़ाम्... !'

छत के बीचो-बीच खड़े मकबूल हुसैन का जिस्म दो फीट परे जा गिरा।

गिरते ही वह तेजी से उठा और उधर देखा जिधर कि धमाका हुआ था।

बम उससे कुछ ही दूरी पर गिरा था। वहां पर उसे एक काफी बड़ा सुराख नजर आया।

मकबूल हुसैन की आंखों में मौत के साये गर्दिश करने लगे।

''काश! कि उसके पास भी बम होते तो इस वक्त जो स्थिति उसकी थी... दुश्मन की स्थिति वह इससे भी बदतर कर देता।

उसने तुरन्त परली तरफ कदम बढ़ाये। ताकि उधर से आने वाले बमों की मार से बच सके।

अभी वह कुछ ही कदम चला था कि उसे उसी तरफ से जिधर कि वह बढ़ रहा था... नीचे से एक काली गेंद उड़ती हुई छत की तरफ बढ़ती नजर आई।

मकबूल हुसैन की आंखों के आगे मौत नाचने लगी।

हड़बड़ा कर उसने तुरन्त उधर फायर झोंक मारा।

गोली सीधा बम से जा टकराई।

'बड़ा... म... !'

बम तेज रोशनी के साथ हवा में ही फट गया।

यह इत्तफाक ही था कि उसका निशाना लग गया... ऐसा इत्तफाक दोबारा हो... इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता था... लेकिन बम के हवा में ही फट जाने से उसका हौसला जरूर बढ़ गया था। उसे लगा कि वह बमों को हवा में ही फाड़ देने की ताकत रखता है।

तभी एक और गेंद उसे नीचे से उड़कर छत पर आती नजर आई।

मकबूल हुसैन ने पुनः रिवाल्वर सीधी की और ट्रिगर दबा दिया।

लेकिन बम नहीं फटा।

हड़बड़ा कर उसने दूसरा फायर किया।

वह भी कामयाब नहीं हो पाया।

नतीजा—

बम उससे कुछ ही दूर पर आकर गिरा।

'बड़ाम्... ।'

तेज धमाके के साथ हवा में लैंटर का मलवा हवा में उड़ा। उसी के साथ ही मकबूल हुसैन का जिस्म भी हवा में कुछ ऊंचाई तक उड़ा और धड़ाम् से नीचे गिरा।

गिरा तो दोबारा नहीं उठ पाया।

वह मर चुका था।

अपने बॉस को इस आसानी से मरते देख छत पर शेष बचे आदमियों के हौसले टूट गए। मकबूल हुसैन की तरह उन्हें अपनी मौत भी करीब आती नजर आने लगी।

मौत से बचने का अब उनके पास बस एक ही रास्ता था।

आत्म समर्पण।

"उनके पास बम हैं... ।" तभी एक व्यक्ति चीखा—"हम उनका मुकाबला नहीं कर सकते... खुद को उनके हवाले कर देने में ही हमारी भलाई है... ।"

कहने के साथ ही वह अपने स्थान से हटा और छत के बीच आ गया।

"मैं नीचे जा रहा हूं... अगर तुममें से कोई मेरे साथ आना चाहता है तो आ सकता है... ।"

वह पुनः चीखा और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

मुकाबला करने वालों के रहे-सहे हौसले भी टूट गए। सो वे भी उठे और पीछे-पीछे चलते हुए सीढ़ियां उतरने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

"गोली मत चलाना... हम आत्म-समर्पण करने को तैयार हैं... ।"

कोठी के फाटक के पीछे से तेज आवाज आई।

बम फैंकने जा रहे व्यक्ति ने आवाज सुनी तो उसका हाथ वहीं रुक गया। होठों पर विजयी मुस्कान नाच उठी।

"फायरिंग बंद करो... ।" वह अपने साथियों से चीखते हुए बोला।

तुरन्त उसकी साइड वाले आदमियों ने गोलियां चलानी बंद कर दीं।

"बाहर आ जाओ... ।" वही आदमी फाटक की तरफ मुंह करके

चीखा।

और फिर फाटक खुला तथा उसमें से एक-एक करके हाथ ऊपर उठाये मकबूल हुसैन के आदमी बाहर निकलने लगे।

सभी-के-सभी निहत्थे थे।

फाटक से निकल कर वे सड़क पर पहुंचे तो इधर-उधर पोजीशन लिये खड़े कालिया पठान के आदमियों ने उन्हें घेरे में ले लिया।

तत्पश्चात् बम फैंकने वाला व्यक्ति उनके करीब आया।

"मकबूल हुसैन कहां है... ?" वह एक व्यक्ति को घूरते हुए गुर्राया।

"मर गए हैं वे... ।" वह आदमी बोला—"ऊपर छत पर उनकी लाश पड़ी है... ।"

तुरन्त वह आदमी वहां से हटा और फाटक की तरफ बढ़ गया। जो शब्द उस व्यक्ति ने कहे थे... वह उनकी पूरी तसल्ली कर लेना चाहता था।

कोठी में प्रवेश कर वह छत पर पहुंचा... वहां मकबूल हुसैन की लाश देखी और विजय के नशे में पस्त हुआ वापिस बाहर आ गया।

"मकबूल हुसैन मर गया है... ।" वह खुशी भरे स्वर में चीखा।

"हुर्रे!" उसके साथियों ने विजयी नारा लगाया।

"इन्हें भी उसके पास भेज दो... ।"

पलक झपकते ही स्टेनगन गर्ज उठी।

देखते-ही-देखते उन सभी की लाशें बिछ गईं।

बेचारे... जिंदगी की चाह में हथियारों को त्यागा... लेकिन जिन्दगी फिर भी नहीं पा सके।

"लूट लो कोठी को... ।" बम वाले ने अगला हुक्म दनदनाया।

तुरन्त सभी व्यक्ति विजयनाद करते हुए फाटक की तरफ भाग पड़े। खुद बम वाला भी उनके पीछे-पीछे कोठी में दाखिल हो गया।

□□□

□□□

सैंटर टेबिल पर पांच-पांच सौ के नोटों की गड्डियों की दो कतारें खड़ी हुई थीं। जिसके एक तरफ चंदगी राम चौटाला बैठा था तथा दूसरी तरफ कालिया पठान सिंहासन नुमा कुर्सी पर बैठा था।

कुर्सी के पीछे जालिम सिंह बैठा था।

कालिया पठान के होठों पर विजयी मुस्कान थी। तथा निगाहें

चंदगी राम चौटाला के चेहरे पर।

"गिन लो...पूरे पंद्रह लाख हैं...।" कालिया पठान मुस्कुराते हुए बोला।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर फैली मुस्कान गहरी हो गई।

"खतम हो गया मकबूल हुसैन...?" वह बोला।

"हां।"

"अर उसके आड्डे...?"

"उन्हें भी लूट लिया गया है...।"

"कित्ता माल मिला?"

कालिया पठान गम्भीर हो उठा।

"हमारा तुम्हारा सौदा पंद्रह लाख में हुआ था...पंद्रह लाख तुम्हारे सामने पड़े हैं...यह जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं कि मुझे लूट में कितना माल मिला...?"

"मैं तो इस खातर पूछ रिया था कि थारा घाटा पूरा हआ सै के नईं...।"

"तुम्हें यह जानने की भी जरूरत नहीं...।"

चंदगी राम चौटाला ने कंधे उचका दिये।

कालिया पठान ने एक गहरी सांस छोड़ी और आगे बोला—

"मकबूल हुसैन का काम तो तमाम हो गया...अब रह गया काली सिंह...।"

चंदगी राम चौटाला कुछ नहीं बोला—बस पैग उठाया और होठों की तरफ बढ़ा लिया।

कालिया पठान ने गौर से उसके चेहरे को देखा—"काली सिंह का पता लगा सकते हो तुम...?"

"कोसिस (कोशिश) कर सकूं सूं...।"

"करो।"

"पर मन्ने के मिलेगा?"

"क्या चाहते हो?"

"थम बोलो...के दे सकते हो...?"

"पचास लाख!" कालिया पठान उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला।

"ठीक है।" चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया—"मन्ने मंजूर सै...।"

"पचास लाख में तुम्हें उसके तमाम अड्डे के बारे में भी जानना होगा... ।"

"न कालिया पठान साब...म्हारी बात सिरफ काली सिंह का पता लगान की हुई सै...अर फिर जेकर (अगर) काली सिंग मारा जाता सै तो उसके आड्या (अड्डों) का बेरा लगान की क्या मुस्किल रै जावैगी... ।"

कालिया पठान ने सिर हिलाया।

"ठीक है...तुम उसका पता लगाओ... ।"

चंदगी राम चौटाला ने सिर हिला दिया।

"कब तक लगा लोगे... ?"

"ईब इसके बारे में क्या कहा जा सकै सै...हो सकै सै आज ही बेरा पाट जाए...अर यह भी हो सकै के हफ्ता लाग जाए...फिर भी मैं कोसिस करूंगा कि जल्दी से थमने बता सकूं...पंचस लाख का मामला सै... ।"

मुस्कुरा पड़ा कालिया पठान।

"भण्डारी के घरां (घर) का बेरा तो होगा थमने... ।" कुछ सोचकर चंदगी राम चौटाला आगे बोला।

"क्यों...उसका पता क्यों जानना चाहते हो... ?"

"रै कालिया पठान साब...वह काली सिंग का आदमी था...हो सकै सै उसनै आपने दोस्तों ने यह भेद बताया सो...जेकर उसनै अपने यारां को यह कहा सै तो फिर काली सिंग के किसी आदमी कै बारे में भी बताया होगा... ।"

कालिया पठान हैरानी से उसे देखने लगा। मन-ही-मन वह उसके दिमाग की दाद दिये बिना नहीं रह पाया।

काली सिंग को ढूंढने का उसने जो रास्ता निकाला था...वह सचमुच कारगर हो सकता था।

अब उसे बेचारे को क्या मालूम था कि यह सब तो एक नाटक खेल रहा था चंदगी राम चौटाला...ताकि कालिया पठान यही समझे कि वह पचास लाख रुपयों के लिए इतनी मेहनत कर रहा है...जबकि वह तो काली सिह के अड्डे के बारे में पहले से ही जानता था।

"जालिम सिंह..." कालिया पठान गर्दन पीछे मोड़ कर ऊपर उठाते हुए बोला—"चौटाला को भण्डारी का एड्रैस दे दो... ।"

"यस चीफ!"

"अर मेरे यह पंद्रह लाख रुपये किसी बैग में डलवा देवो... इनको जेबों में तो डाल के ले नईं जा सकूं सूं... ।"

जालिम सिंह कमरे से बाहर निकल गया।

और कुछ देर बाद जब चंदगी राम चौटाला कालिया पठान की कोठी से बाहर निकला तो उसके कंधे पर एयरबैग लटका हुआ था जिसमें कि पंद्रह लाख रुपये थे।

उसके होठों पर एक धूर्त... मक्कारी से भरी मुस्कान थी।

"बस कालिया पठान...थोड़ा बकत (वक्त) और फिर दिल्ली अण्डरवर्ल्ड में सिरफ़ एक ही नाम होगा...अर वह नाम होगा चंदगी राम चौटाला का...तब न तू जिंदा होगा...अर न काली सिंग... ।"

वह हंसा और आगे बड़बड़ाया—

"बिल्लियां की लड़ाई में बंदर फैदा उठा गया...कहानी में तो दो बिल्लियां थी...अर ओडे (यहां) तीन बिल्लियां सैं...एक तो मर गई...बाकी बची दो...वह भी अब खतम हो जावेगी... ।"

वह हौले-से हंसा और फिर अपनी राजदूत की तरफ बढ़ गया।

बैग को उसने कंधे पर लटकाये हुए ही आगे कर लिया...और राजदूत पर बैठकर किक मारकर उसे स्टार्ट कर दिया।

कुछ ही क्षणों में वह कोठी के फाटक से निकल कर रोड पर उड़ता जाता नजर आ रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला का गुस्से में भरा चेहरा देखकर काली सिंह हल्के से चौंका।

"खैरियत तो है... ?" वह हल्के से मुस्कुरा कर बोला।

चंदगी राम चौटाला बोला कुछ नहीं... बस आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठ कर स्कॉच की बोतल उठाई और मुंह से लगा ली। तीन-चार बड़े घूंट भर कर उसने बोतल टेबिल पर रखी और आस्तीन से मुंह पौंछते हुए भुनभुनाया।

"क्या समझै सै खुद को...राजा होवेगा...आपने घरा में होवेगा...मैं उसका नौकर नहीं सूं... ।"

"बात क्या है... कुछ बताओगे भी... ।" काली सिंह उत्सुकता से बोला।

चंदगी राम चौटाला ने सुर्ख आंखों से उसकी तरफ देखा और

बोला—

"मैंने थारी खातर काम किया... थारा पांच करोड़ का माल बचाया। अर थमने भी मन्ने पूरे पंचस लाख दिये... ।"

"तो?"

"जेकर हम में से कोई बेईमानी करता तो दूसरे ने गुस्सा आना था के नईं... ।"

"बात क्या है... किसने बेईमान की तुमसे... ?"

"उसी कालिया पठान ने... साला खुद को अण्डरवर्ल्ड का बादशाह कहे सै... और दिल चिड़ी जित्ता भी नई... आता तो उसने घना बढ़िया लगै... अर जीब देना पड़ा तो मां मर गई... ।"

"कालिया पठान ने बेईमान की तुमसे... ।"

"हां उसी नै की।"

"क्या बेईमानी की ?"

"मकबूल हुसैन के आड्डे बताने का सौदा हममें बीस लाख में तय हुआ था... अर अब उसने मन्ने दस लाख दिये... भला यह कोई सौदा हुआ... दस लाख का फटका लगा दिया मन्ने... ।"

"यह तो सरासर बेईमानी हुई... ।"

"पर वह यह नई जानता कि चंदगी राम चौटाला के पैसे मारना बड़ा मुश्किल काम सै... चौटाला जीब लग (जब तक) प्यार करै सै जीब लग सामनै वाला उससे प्यार करै से... ।

"तुम ठीक कह रहे हो... प्यार का जवाब प्यार से देना चाहिये... और बेइमानी का जवाब बेइमानी से... ।"

काली सिंह ने उसे जैसे हवा दी... फिर कुछ सोचकर बोला—"तुम फिक्र मत करो... कालिया पठान ने तुम्हारे दस लाख मारे हैं... मैं तुम्हें बीस लाख दूंगा... ।"

चंदगी राम चौटाला ने घूरकर उसे देखा। लेकिन काली सिंह के चेहरे पर कोई भी भाव नहीं उभरा—वह पूर्ववतः अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—

"कालिया पठान का ठिकाना तो मैं जानता हूं... लेकिन उसने अपनी सुरक्षा के क्या इंतजाम कर रखे हैं... उनके बारे में मुझे नहीं मालूम... भण्डारी से मुझे ऊपरी सुरक्षा का पता तो चल गया था... लेकिन उसने अपने विशेष कक्ष में विशेष ढंग से हिफाजत के बंदोबस्त कर रखे हैं... अगर तुम मुझे उसके सुरक्षा प्रबंधों का तथा उसके

कमरे के मैकेनिज्म का पता लगा दो तो मैं तुम्हें तीस लाख दूंगा... ।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर गम्भीर मुस्कान फैल गई।

"सॉरी सिंग साब...यह काम न कर सकूं सूं मैं... ।"

"कर नहीं सकते या करना नहीं चाहते...?"

"करना ही नहीं चाहूं सूं... ।"

"क्यों ?"

"म्हारा उसूल सै यह कि जिसकै साथ सौदा कर लिया... उससे बेइमानी नईं करनी... ।"

"क्यों? क्या तुमने उसके आदमियों को मारकर मेरा माल नहीं बचाया था...?"

"बचाया था।"

"क्या वो बेईमानी थी...?"

"उहूं..." चंदगी राम चौटाला ने सिर दायें-बायें हिलाया—"वा बिजनेस था... कालिया पठान ने मन्ने आपने घरां बुला कै मुझसे सौदा किया था...इस तरह उसकै ठिकाने के बारे में किसी और ने बताने पर मैं बेइमान हो जाता... ।"

"लेकिन... ।"

"मेरी बात सुनिये सिंग साब। थारे आड्डे का भी मन्ने बेरा था...इस जगा (जगह) का बेरा सै मन्ने जेकर मैं किसी और ने इस जगा का पता बता देऊं तो थम मन्ने बेईमान नइ कहोगे के...?"

"जरूर कहूंगा... बशर्ते कि मैंने तुम्हारे साथ कोई दगा न की हो... ।" बोला काली सिंह—"और कालिया पठान ने तो तुमसे दगा की है... ।"

"उसकी दगा की उसको सजा जरूर मिलेगी... मैं उसकी ईसी हालत कर देऊंगा कि वो छाती पीट-पीट कै रोवैगा कि उसने मेरे साथ दगा की तो क्यों की। पर मैं आपने असूलों की बलि न चढ़ा सकूं सूं... ।"

"तुम कुछ नहीं बिगाड़ पाओगे उसका... तुम कर ही क्या सकते हो...?"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर कुटिल मुस्कान नाच उठी।

"थम ईबी मन्ने समझे नई हो... मैं चाहूं तो थमने... कालिया पठान की कुर्सी पै बिठा सकूं सूं... ।"

सुनकर काली सिंह का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"त-तुम ऐसा कर सकते हो...?"

"मैं ऐसा ही करूंगा... ।" जैसे जिद में आ गया चंदगी राम चौटाला—"बस यू समझ लो थम कि कालिया पठान की बादसाहत नै ईब कुछ ही रोज रह गए सैं... ।"

काली सिंह ने जोरों से थूक निगली।

"अगर...अगर तुमने ऐसा कर दिया तो मैं तुम्हें हीरों से लाद दूंगा... ।"

"पन्ने हीरे नईं नकदी चाहिये सिंग साब... थम बोलो... जेकर मैंने आपको कालिया पठान की जगा पै बिठा दिया तो थम मन्ने क्या देवोगे...?"

"एक करोड़!" छूटते ही बोला काली सिंह।

"आज क्या वार सै...?"

"मंगलवार।" काली सिंह के पहलू में खड़ा जंगावर बोल पड़ा।

"बस थम इतवार तक इंतजार करो...सोमवार ने थम अण्डरवर्ल्ड के बादसाह होवोगे... यू चंदगी राम चौटाला का वादा सै थमने... ।"

जिस दृढ़ता से उसने बात की थी...उससे काली सिंह को भी विश्वास होने लगा था कि वह जो कुछ कह रहा है वह कर लेगा।

उसका कलेजा और भी जोरों से धड़क उठा... चेहरा खुशी के मारे लाल हो उठा।

"पर थमने भी इस काम में हाथ-पैर चलाने पड़ेंगे... ।"

"तुम चिन्ता मत करो... तुम्हारा साथ देने को मैं अपनी पूरी ताकत झौंक दूंगा... ।"

"फिर ठीक सै।"

"लेकिन तुम करोगे क्या ? कोई स्कीम है क्या तुम्हारे दिमाग में...?"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर क्रूर मुस्कान नाच उठी।

"मैं उसने थारे ठिकाने कै बारे मैं बताऊंगा... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा काली सिंह।

"क्या बकते हो? दिमाग खराब तो नहीं हो गया तुम्हारा...?"

"म्हारा दिमाग बिल्कुल ठीक सै... अर... ।"

"बकवास बंद करो अपनी... ।"

"थम पैंला मेरी बात तो सुन लेयो सिंग साब... ।"

"मुझे नहीं सुननी तुम्हारी बकवास... ।"

"ओपफो...थम बात सुनते नई...अर हत्थे से उखड़ गए...थम मेरी स्कीम सुन लेयो...जेकर स्कीम पसंद न आये तो बेसक इनकार कर देना... ।"

"चौटाला ठीक कह रहा है सिंह साहब... ।" तभी जंगावर बोला—"सुन लेने में हर्ज ही क्या है... ?"

"ठीक है सुनाओ...क्या सुनाना चाहते हो तुम... ?"

अनमने ढंग से बोला काली सिंह।

चंदगी राम चौटाला ने गहरी सांस छोड़ी और फिर काली सिंह को अपनी स्कीम बताने लगा।

जैसे-जैसे वह स्कीम बताता जा रहा था...काली सिंह की आंखों में आश्चर्य भरता जा रहा था...उसका चेहरा इस तरह चमकने लगा था जैसे वह अभी-अभी ब्यूटी पार्लर से बाहर निकला हो।

"वाह!" चंदगी राम चौटाला के चुप होते ही वह खुशी से बोला—"क्या स्कीम बनाई है... ?"

"पसंद आई थमने... ?"

"बहुत!"

"ईब बताओ...थारा ठिकाना उसने बताऊं कि नई... ।"

"जरूर बताओ...बल्कि मैं तो कहता हूं कि अभी जाकर बताओ... ।"

"पैंला तो यह बात सुन के भड़क उठै थे थम... ।"

"तब मुझे मालूम नहीं था कि तुम्हारे दिमाग में इतनी शानदार स्कीम है... ।"

"चंदगी राम चौटाला हंसा।

"कब जाओगे कालिया पठान के पास... ?"

"थारे ठिकाने का पता बतान खातर... ?"

"हां।"

"परसों।"

"आज क्या नहीं।"

"ठण्डा करकै खावोगे तो ठीक रहैगा सिंग साब...नई तो मुंह जल जायेगा... ।"

काली सिंह ने कंधे उचका दिये—"जैसी तुम्हारी मर्जी... ।"

"थम बस ईबी से तैयारी सुरू कर देवो... ।"

"फिक्र मत करो... सब कुछ तुम्हारे कहेनुसार ही होगा... ।"

चंदगी राम चौटाला पुनः हंसा और जेब से बीड़ी का बण्डल निकाल कर एक बीड़ी निकाल ली और उसे सुलगा कर सुट्टा लगाने लगा।

मन-ही-मन वह ठहाके लगाता खुद को शाबासी दे रहा था।

"साबास भेड़िया... इसी तरियो काम करता रहियो... बड़ी जल्दी तू अण्डरवर्ल्ड का राजा बन जायेगा... अर किसी को बेरा भी नई पाटेगा (पता नहीं लगेगा) के भेड़िया धरती पर ऐस कर रिया सै... ।"

❑❑❑

❑❑❑

तीसरे रोज चंदगी राम चौटाला कालिया पठान के पास पहुंचा। इस वक्त उसके चेहरे पर ऐसी चमक थी जैसे वह ओलम्पिक से स्वर्ण पदक जीत कर सीधा उसके पास पहुंचा हो।

उसके दमकते चेहरे को देखकर कालिया पठान के होठों पर मुस्कान फैल गई—चेहरे पर एक अजीब-सी उत्तेजना उभर आई।

"लगता है पचास लाख की लाटरी जीत ली तुमने... ।" वह बोला।

चंदगी राम चौटाला उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठा और मुस्कुराते हुए बोला—

"पंचस लाख की लाटरी नई लगी म्हारी... बल्कि मन्ने मेहनत की सै उन रुपयों को कमान खातर... ।"

"यानि पता लग गया काली सिंह का... ?"

"हां, काली सिंग का ही नई... उसकै दो आडयां (अड्डों) का बेरा भी पाट गया... ।"

कलेजा धड़क उठा कालिया पठान का। उसके पीछे खड़े जालिम सिंह के चेहरे पर भी उत्तेजना उभर आई।

"कहां है ?" कालिया पठान बोला।

"काली सिंग का ठिकाना... ?"

"उसके वे दोनों अड्डे भी... ।"

चंदगी राम चौटाला पहले तो हिचकिचाया, फिर बोला—

"न्यूं तो (यूं तो) उसकै दोनां आडयां (अड्डों) का पता मन्ने आपको ने नई बताया चाहिये... क्यों कि म्हारा थारे साथ सिरफ काली सिंग के ठिकाने को बतान का सौदा हुआ था... पर ईब थारा म्हारा रिस्ता (रिश्ता) बदल गया सै... जो इज्जत हमने थारे ते मिली... जो प्यार

मिला... जो आपना पन मिला... उसनैं देखते हुए मैं तो थारा गुलाम हो गया। कल तक चंदगी राम चौटाला खुद आपनी सल्तनत का राजा था... खुद ने एक दुकान समझा करे था... पर थमने तो वह दुकान ही खरीद ली... ईब तो उस दुकान कै मालिक थम हो गए कालिया पठान साब... ।"

मुस्कुरा पड़ा कालिया पठान... साथ ही उसकी गर्दन भी अकड़ गई... सीना गज भर फूल गया।

चंदगी राम चौटाला ने उसके प्रति जो शब्द कहे थे उन्हें सुनकर वह हवाओं में उड़ने लगा था... उसने यही समझा कि ऊपर वाले ने बैठे-बिठाये ही एक आला दिमाग के मालिक को बतौर वरदान के उसे दे दिया है।

अब उस बेचारे को क्या मालूम कि उसके सामने एक ऐसी शैतान आत्मा बैठीं हुई है... जिसने धर्मराज की अदालत में भी अपनी शैतानियत से धर्मराज को बौखला डाला था।

कालिया पठान ने अपनी मुस्कान पर काबू पाया और बोला—

"अपने अण्डर काम करने वालों को मैंने हमेशा अपनी संतान समझा है... एक बाप का रोल अदा करता हूं... मैं अपने गैंग में... मगर मैंने तुम्हें अपनी संतान नहीं, बल्कि दोस्त का ओहदा दिया है... मेरे सामने बैठ कर जालिम सिंह तक शराब नहीं पी सकता... जबकि मैं तुम्हारे साथ जाम टकराता हूं। भला इससे बड़ी इज्जत क्या होगी तुम्हारे लिए... ।"

"मन्ने मालूम सै कालिया पठान साब कि थम मन्ने अपना दोस्त मानो हो... ।" उसने गहरी सांस छोड़ी और आगे बोला—

"थमने तो अपनी दोस्ती का सबूत दे दिया... ईब मन्ने भी सबूत देना चाहिये... वह पुनः रुका... सांस ली और बोला—"काली सिंह के दो आड्या का पता बतान का मैं थमसे कोई पीसा (पैसा) नईं लूंगा... अब उन आडयां का पता म्हारी दोस्ती के सदके।"

"मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।" मुस्कुराया कालिया पठान—"अब बोलो... कहां है काली सिंह का ठिकाना... और उसके दोनों अड्डे कहां हैं ?"

चंदगी राम चौटाला ने पते बताये और फिर आगे बोला... ।

"काली सिंह का ठिकाना आनन्द पर्वत वाला अड्डा सै... वहां थारे को वह मिल जायेगा... ।"

"बस इतना ही बहुत है... ।" गुर्राया कालिया पठान... । "आज हरामजादे को पता लगा जाएगा कि कालिया पठान को चोट पहुंचाने वाले को क्या सजा मिलती है। जालिम सिंह।"

तुरंत जालिम सिंह उसके पीछे से निकल कर पहलू में आ खड़ा हुआ।

"यस चीफ... ।"

"आज की रात काली सिंह की जिंदगी की आखिरी रात साबित होनी चाहिये... ।"

"ऐसा ही होगा चीफ... ।

"मक्बूल हुसैन की तरह उसके अड्डों पर भी एक ही वक्त में हमला होना चाहिये... ।"

"ओ०के०चीफ।"

कालिया पठान ने चंदगी राम चौटाला की तरफ देखा मुस्कुराया और बोला—

"तुम्हारा पचास लाख कल मिल जाएगा।"

मुस्कुराते हुए चंदगी राम चौटाला ने सिर हिला दिया।

उसकी मुस्कान में कितने शैतानों की भयानकता थी... अगर कालिया पठान को इसका जरा सा भी पता लग जाता तो वह वहीं खड़े पैर उसे गोली मार देता।

❑❑❑
❑❑❑

बुरारी वाले बाई पास चौक से एक सड़क बुरारी गांव की तरफ जाती है... उसके बिल्कुल सामने वाली सड़क किनारे कैम्प को जाती है जबकि दाईं तरफ वाली सड़क आई०एस०बी०टी० को जाती है।

किंग्सवे कैम्प को जाने वाली सड़क निरंकारी कालोनी से पहले बेरौनक है। रात के वक्त तो उस सड़क पर इक्का दुक्का वाहन ही नजर आते हैं... वर्ना अक्सर वह खाली ही रहती है।

उसी सड़क पर निरंकारी कालोनी से पहले एकमंजिला कोठी से कुछ दूर एक के पीछे एक दो गाड़िया आकर रुकी।

तुरंत दोनों गाड़ियों के दरवाजे खुले और उनमें से करीब सत्रह आदमी बाहर निकले।

सभी के सभी स्टेनगनों से लैस थे।

"वो अड्डा है काली सिंह का... ।" शेर खान नाम का वह क्रूर

चेहरे वाला व्यक्ति कोठी की तरफ इशारा करते हुए बोला जिसे कि जालिम सिंह ने उन सभी का कप्तान बनाया था।

सभी ने कोठी की तरफ देखा... फिर पुनः शेर खान की तरफ देखने लगे।

"कोठी के सामने वाले हिस्से की तरफ से पांच आदमी हमला करेंगे जबकि बाकी की तीनों साईडों की तरफ चार-चार आदमी मौजूद होंगे।"

वह एक पल के लिए रुका फिर आगे कहने लगा—

"मकबूल हुसैन वाले अड्डों की तरह यहां भी हमला करने से पहले अपने लिए सेफ पोजीशन ढूंढनी है तुम्हें... खुद को सेफ करके ही अटैक करना है।"

सभी ने सिर हिलाये।

"ध्यान रहे... एक भी हरामजादा जिंदा न बचने पाये... और न ही कोठी के भीतर एक रुपये की चीज बचने पाये... सभी को खत्म करने के उपरांत कोठी को लूटना है... वो भी ऐसे जैसे इस लूट के पश्चात तुम्हें कभी भी लूटने का मौका नहीं मिलेगा।"

सभी ने पुनः सहमति से सिर हिलाये।

और फिर शेरखान ने चार-चार व्यक्तियों के चार ग्रुप तैयार किये... तथा अन्त में स्वयं एक ग्रुप में शामिल होकर अन्य तीनों ग्रुपों पर निगाहें मारते हुए बोला—

"तुम तीनों साईडों में बिखर जाओ... हम सामने की तरफ से हमला करेंगे।"

तत्पश्चात तीनों ग्रुपों के एक-एक आदमी ने अगली मैटाडोर में से एक-एक थैला निकाला और अपने ग्रुपों में शामिल हो गए।

उन थैलों में बम थे।

तत्पश्चात शेरखान ने अपने ग्रुप के एक आदमी को इशारा किया।

तुरन्त वह आगे बढ़ा और उसने भी मैटाडोर में से एक थैला निकाल लिया।

और फिर सभी अपनी-अपनी साईडों की तरफ छुपते छुपाते बढ़ने लगे।

कोठी के सामने वाली साईड में आकर शेर खान ठिठका...।

उसके साथ-साथ चल रहे उसके चारों साथी भी ठिठक गए...। उस वक्त वे सभी कोठी के सामने सड़क के पार खड़े थे।

शेर खान ने कोठी के बंद फाटक की तरफ देखा... फिर गर्दन ऊंची कर भीतर झांकने की कोशिश की।

चारदीवारी के भीतर उसे घुप्प अंधेरा ही नजर आया।

"इधर उधर फैल जाओ... ।" वह धीरे से फुसफुसाया... ।" दुश्मन बेखबर है... आसानी से मर जाएगा।"

अभी उसने अपनी बात पूरी ही की थी कि तभी एकाएक ही कोठी की छत की तरफ से तेज रोशनी उन पर पड़ी... तेज सर्च लाईट जल उठी थी छत पर।

खुद को रोशनी में नहाते देख शेर खान और उसके साथ बुरी तरह से बौखला उठे। वे तो समझे थे कि दुश्मन आराम से सो रहा है। लेकिन दुश्मन तो जैसे उन्हीं के वहां पहुंचने की इंतजार कर रहा था। हड़बड़ाते हुए पावों को तेजी से कोठी की तरफ पीठ कर भागे... ।

ठीक तभी—

"तड़... तड़... तड़... ।"

छत की तरफ से गोलियों की बाढ़ छूट पड़ी।

एक साथ सैकड़ों की तादाद में गोलियां उनकी तरफ लपकी और उनके जिस्मों में जा धंसी... ।

पांचों बुरी तरह से चीखते हुए औंधे मुंह नीचे गिरे और छटपटाने लगे।

ठीक तभी कुछ गोलियां बमों के थैले में जा घुसीं।

"बड़ाम... बड़ाम... ।"

गगन भेदी विस्फोटों के साथ सभी बम फट पड़े।

पांचों के चीथड़ों का भी पता नहीं चला कि वे कहां-कहां जा कर गिरे हैं।

अगली साईड की तरह शेष तीनों साइडों की घेरा बंदी कर रहे कालिया पठान के व्यक्तियों की हालत भी वैसी ही हुई थी।

सत्रह व्यक्तियों को चीथड़ों में उड़ाने में काली सिंह के आदमियों को केवल दस मिनट का बक्त लगा था।

❑❑❑

❑❑❑

"वो आ रहे हैं... तैयार हो जाओ।"

अंधेरे में आवाज उभरी।

उसी के साथ ही छत पर हलचल हुई... फिर कुछ ही क्षणों में

छत पर ऐसा सन्नाटा फैल गया मानो वहां बरसों से किसी आदमी के पांव ही न पड़े हों।

छत की चारों साईडों की मुड़ेरों के पीछे छुपे काली सिंह के आदमी अपनी-अपनी साईड की तरफ बाहर देख रहे थे। मुंडेरों के बीचो-बीच एक-एक सर्च लाईट लगी हुई थी... बिल्कुल वैसे जैसे बुरारी रोड वाली कोठी पर लगी थीं।

तभी उन्हें अन्धेरे में बाहर हलचल होती नजर आई।

एकाएक ही सामने वाली साईड में सर्च लाईट के पीछे बैठे काली सिंह के आदमी ने सर्च लाईट के पीछे लटक रहा स्विच आन कर दिया।

"खट की हल्की सी आवाज के साथ सर्च लाईट जल उठी।

इधर सर्च लाईट जली...उधर मुंडेर के पीछे छुपे आदमियों ने स्टेनगनों के मुंह खोल दिये।

"रेट...ट...ट...ट... ।"

गोलियों की आवाजों से पूरा इलाका कांप उठा।

उसी के साथ ही अपने लिए एक सेफ पोजीशन ढूंढ रहे कालिया पठान के आदमियों की लाशें बिछ गईं। अगली साईड की तरह दायें-बायें वाली तथा पिछली साईड की तरफ छुपे आदमियों ने भी गोली बारी शुरू कर दी।

बेचारे कालिया पठान के आदमी... ।

गोली चलाने का मौका तक नहीं मिला उन्हें और वे लाशों में तब्दील हो गए।

इधर कालिया पठान के आखिरी आदमी की लाश गिरी... उधर एक-एक करके चारों साईडों की सर्च लाईटें ऑफ हो गई... और कुछ ही देर में काली सिंह के आदमियों ने सर्च लाईटें वहां से हटाई और नीचे आ गये।

आनन फानन उन्होंने सर्च लाईटें ड्राईव वे पर खड़ी एक कार में डाली और स्वयं भी उसमें सवार हो गए। कुछ ही देर में कार कोठी के फाटक से निकली और तोप के छूटे गोली की तरह वहां से भाग निकली।

❑❑❑

❑❑❑

आनन्द पर्वत स्थित चंदगी राम चौटाला की बताई कोठी से थोड़ा पहले जालिम सिंह ने ड्राइवर को गाड़ी रोकने का आदेश दिया।

टोयटा सड़क किनारे लगे एक वृक्ष के नीचे रुक गई।

उसके पीछे-पीछे चलती हुई मैटाडोर भी उसके पीछे रुक गई।

अपने दायें-बायें बैठे बाडी गार्डों के तथा ड्राइवर के निकलने के उपरांत जालिम सिंह बाहर आया। तब तक मैटाडोर में से भी उसके आदमी बाहर आ चुके थे।

जालिम सिंह ने उन सभी पर निगाह मारी और बोला—

'चीफ के रास्ते में दो बड़े पत्थर आ खड़े हुए थे जिनमें से एक को तुम लोगों ने अपनी बहादुरी से चूर-चूर कर दिया है—आज दूसरे पत्थर की बारी है...काली सिंह की मौत के पश्चात पूरी दिल्ली के अण्डरवर्ल्ड पर हमला हो जाएगा इसलिये आगे बढ़ो मेरे शेरों और टूट पड़ो काली सिंह के कुत्तों पर...याद रहे...जिस तरह मकबूल हुसैन की मौत की खबर तुम मुझे सुनाने आये थे...उसी तरह काली सिंह की मौत की खबर मिलनी चाहिये मुझे।"

"ऐसा ही होगा...।" एक व्यक्ति जोशीले अंदाज में बोला।

और फिर जालिम सिंह के आदेश पर उनको चार ग्रुपों में बांट कर उन्हें काली सिंह के ठिकाने पर अटैक करने के लिए रवाना करके वह खुद टोयेटा की पिछली सीट पर आ बैठा।

उसके कान बमों के धमाकों की...गोलियों की आवाजों की इंतजार करने लगे।

अभी उसे इंतजार करते पांच मिनट भी नहीं बीते थे कि उसे दरवाजे के बाहर किसी की परछाईं नजर आई।

तुरंत बिजली की सी फुर्ति से उसने रिवाल्वर निकाली और उसका रुख उस तरफ कर दिया।

रात के अंधेरे में वह शीशे में से नजर आ रही आकृति को ढंग से देख नहीं पा रहा था...सो उसने शीशे को थोड़ा नीचे किया और रिवाल्वर को आकृति पर तानते हुए फुंफकारा—

"कौन है ?"

"मैं हूं...चंदगी राम चौटाला...।" बाहर से आवाज आई।

गहरी सांस छोड़ते हुए जालिम सिंह ने शरीर को ढीला छोड़ दिया और दरवाजा खोल दिया...।।

चंदगी राम चौटाला झुक कर भीतर प्रवेश कर गया और जालिम सिंह के बराबर आ बैठा।

जालिम सिंह ने थोड़ा उचक कर हाथ डैश बोर्ड की तरफ बढ़ाया और डोम लाईट जला दी।

"तुम यहां कैसे?" वह चंदगी राम चौटाला को घूरते हुए बोला।

मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला... इत्ती बड़ी जीत हासिल करने जा रहे हो थम... सो मैं भी देखन आ गया... ।"

हंस पड़ा जालिम सिंह... ।

"इस रिवाल्वर को परे करो... मन्ने तो देख के ही डर लगै से इसे।"

जालिम सिंह पुनः हंसा और रिवाल्वर जेब में रखते हुए बोला—

"जितना बड़ा दिमाग पाया है तुमने अगर उतना ही बड़ा जिगरा भी होता तो निश्चय ही तुम बहुत ही खतरनाक इंसान होते।"

"क्यों... क्या ईब नई सूं... ?"

"बिल्कुल नहीं... दिमाग के दम पर तुम कुछ कर सको तो और बात है... लेकिन जब गोली चलती है तो दिमाग के दम पर उसका रुख मोड़ा नहीं जा सकता... ।"

"क्यूं नई मोड़ा जा सकै... ।"

"तुम मोड़ सकते हो... ?"

"हां... ।"

"कैसे... ?" मुस्कुराया जालिम सिंह।

"आपने दिमाग के दम पै... ।"

"तो दिखाओ मोड़ के।"

"जी बकत आवैगा (जब वक्त आयेगा) थमने दिखा भी देऊंगा... । फिलहाल तो थम यह बताओ क्या थारे आदमी गए।"

"अब तक तो उन्होंने घेराबंदी भी कर ली होगी... एक दो मिनट और रुक जाओ... अभी पटाखों की आवाजें तुम्हारे कानों में पड़नी शुरू हो जायेगी।"

"पर थम तो यहां बैठे सो।"

"सेनापति हमेशा पीछे रहकर सेना की कमान सम्भालता है... । और वही मैं कर रहा हूं।"

फिर भी थमने आपनी हिफाजत खातर एक दो आदमी तो रखने ही चाहिये थे।"

हंसा जालिम सिंह... । उसने अपनी जेब थपथपाई और बोला... ।

"मेरी जेब में जो खिलौना है न... असल में मेरा वही-वही बाडीगार्ड है—जब तक मेरी रिवाल्वर मेरे पास है मेरा कोई बाल भी बांका नहीं

कर सकता।"

चंदगी राम चौटाला के होंठों पर कुटिल मुस्कान नाच उठी।

बड़े इत्मिनान से उसने अपनी जेब में इस तरह हाथ डाला जैसे बीड़ी का बण्डल निकाल रहा हो... और जब उसका हाथ बाहर निकला उसके हाथ में रिवाल्वर चमक रही थी।

"ईसा (ऐसा) ही एक खिलौना मेरे धोरे भी है।"

जालिम सिंह मुस्कुराया—"खिलौना रख लेने से तुम बहादुर नहीं बन सकते चौटाला... ।"

"तैने(तुमने) ईबी कहा था न कि मैं गोली का रुख किस तरियो मोड़ सकूं सूं... ।"

"हां...मुझे याद है।"

"देख ले... मैंने गोली का रुख मोड़ दिया... कहने के साथ ही उसने रिवाल्वर की नाल जालिम सिंह के माथे पर रख दी।

बुरी तरह से चौंका जालिम सिंह... ।

"यह क्या बदतमीजी है।"

"पैंला तेरे हाथ में रिवाल्वर थी...अर नाल का रुख मेरी तरफ था...ईब नाल का रुख तेरी तरफ से...ईब तो मानो हो न तुम कि दिमाग से गोली का रुख भी मोड़ा जा सकै।"

"रिवाल्वर अपनी जेब में रखो... ।"

"क्यों...डर लग रिया है क्या ?" कुटिलता से हंसा चंदगी राम चौटाला... ।

"मजाक का वक्त नहीं है यह चौटाला... ।"

"मैं मजाक नईं कर रिया सूं...ईब तो मेरी रिवाल्वर तेरे माथे ते जबी हटैगी जब तेरे माथे में सुराख हो जावेगा।"

उसकी बात सुन कर तब पहली बार जालिम सिंह का कलेजा धड़का।

"त...तुम... ।"

"हां मैं...तन्ने खतम खातर आया सूं जालिम सिंह।"

"जानते हो तुम क्या कह रहे हो ?"

"मन्ने पता सै...अर मैं जो कुछ कह रिया सूं...वह करने भी जा रिया सूं... ।"

"चौटाला... ।"

"चौटाला नईं भेड़िया बोल मन्ने... ।"

"भेड़िया...?"

"हां भेड़िया ... वही आत्मा जो पैला इंसपैक्टर अमन काम्बले में थी...ईब तेरे सामने सै।"

"त...तु...म भेड़िया... ।"

बुरी तरह से कांप उठा जालिम सिंह।

"हां...मैं भेड़िया...ईब मैं जरा ध्यान से जिंदगी जी रिया सूं...तभी तो मैंने इस जिस्म में प्रवेश कर पैंला उस छोकरी ने गायब किया...अर उसके बाद किसी दूसरी छोकरी की तरफ देख्या भी नईं... ।"

जालिम सिंह को अपने सामने साक्षात मौत के दर्शन होने लगे।

"ल...लेकिन हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है भेड़िया ?"

"कुछ नई... ।"

"त...तो फिर क्यों मार रहे हो मुझे... ?"

"मरैगा तो कालिया पठान भी... काली सिंह भी मरेगा... सब मर जायेंगे... अर थारी सारी दौलत... थारा सारा रुपिया... थारा सारा व्यापार मेरे पास आ जायेगा... फेर अण्डरवर्ल्ड का राजा सिर्फ भेड़िया होगा... ।"

जालिम सिंह का कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकराने लगा।

"देख्या मेरे सैतानी (शैतानी) दिमाग का कमाल... ।"

जालिम सिंह ने व्याकुलता से होठों पर जीभ फेरी और विण्ड स्क्रीन में से बाहर देखा।

"कोई भी नईं आयेगा... थारे सारे आदमी कुछ ही देर में लासों में बदल जायेंगे... मैंने जानबूझ कै कालिया पठान को काली सिंह कै दो आडयां (अड्डो) का अर उसके ठिकाने का पता बताया था... अर इधर मैंने काली सिंह को कह दिया था कि वह तैयार हो जाये... एक ही झटके में मैंने कालिया पठान की कितनी बड़ी ताकत घटा दी... ई होवै सै दिमाग का कमाल। ईब... जै राम जी की।

बोला चंदगी राम चौटाला और रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया।

"धांय... ।"

गोली सीधा उसके माथे में घुसी और खोपड़ी का पृष्ठ भाग फाड़ कर खिड़की का शीशा तोड़ती हुई बाहर निकल गई।

जालिम सिंह का जिस्म एक बारगी छटपटाया... फिर पीछे की

तरफ लुढ़क गया।

चंदगी राम चौटाला ने रिवाल्वर की नाल में फूंक मारी...उसे जेब में रखा और दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

"धर्म राज को मेरी सिकायत (शिकायत) जरूर करियो...।"

वह हंसा और दरवाजा बंद करके किसी हरियाणवी रागिनी के बोल मुंह से गुनगुनाता वहां से हट गया।

कुछ दूर उसकी राजदूत खड़ी थी।

वह राजदूत के करीब पहुंचा...उस पर बैठा और उसे स्टार्ट करके वहां से रवाना हो गया।

मोटर साईकिल की रफ्तार से कहीं तेज उसका दिमाग भाग रहा था...वह कल के बारे में सोच रहा था कि उसे कालिया पठान से क्या बात करनी है।

□□□
□□□

चंदगी राम चौटाला की उम्मीद से कहीं पहले ही उसके फ्लैट की काल बैल बज उठी।

उसने आंखें खोलीं और वाल क्लाक की तरफ देखा—

सुबह के साढ़े सात बज रहे थे।

रजाई में पड़े-पड़े ही उसने एक भरपूर अंगड़ाई ली और फिर रजाई को परे करके वह फोल्डिंग पलंग से नीचे उतर गया।

"कौन सै...?"

वह दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए ऊंचे तथा अलसाये स्वर में बोला।

"दरवाजा खोलो।"

"बाहर से नितांत अजनबी आवाज आई...लेकिन चंदगी राम चौटाला जानता था कि वह जो कोई भी है कालिया पठान का आदमी है।

उसने दरवाजा खोला...।

सामने तवे की रंगत को मात करता हुआ सुर्ख आंखों वाला ऊंचा लम्बा आदमी खड़ा था।

चंदगी राम चौटाला ने प्रश्न भरी आंखों से उसे देखा।

"चीफ ने तुम्हें फौरन याद किया है।" उसके मुंह से फटे बांस जैसी आवाज निकली।

"कौन चीफ...?"

"कालिया पठान साइब... ।"

"चंदगी राम चौटाला ने जानबूझ कर उसको संदेह भरी निगाहों से देखे...

"जालिम सिंह नई आया आज... ?"

वो... वो अब नहीं रहे।"

"क्या मतबल (मतलब)।" चौंकने की जबरदस्त एक्टिंग की उसने।

"काली सिंह के साथ लड़ाई में वे मारे गए।"

"ओह।"

"कोई भी नहीं बचा... ।"

"ओह... । तुम चलो मैं आ रिया सूं।"

उसने सहमति में सिर हिलाया और वापिस मुड़ गया।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर एक धूर्त मुस्कान नाच उठी... आंखों में मक्कारी के कीड़े गिजबिजाने लगे।

वह पीछे हटा... दरवाजा बंद किया और बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

आधे घण्टे बाद वह अपनी राजदूत पर बैठा कालिया पठान की कोठी की तरफ उड़ा जा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला कालिया पठान के कमरे में प्रविष्ठ हुआ तो उसने उसे ऐसी अवस्था में देखा मानो उसका कोई करीबी रिश्तेदार मर गया हो।

कालिया पठान ने निगाहें उठाकर उसकी तरफ देखा—फिर गहरी सांस छोड़ दी।

"मन्ने बेरा पाट गया सै कालिया पठान साब।" चंदगी राम चौटाला उसके सामने कुर्सी पर बैठते हुए गम्भीरता पूर्वक बोला—"घना अफसोस हुआ मन्ने... ।"

"एक भी नहीं बचा... भर्राये लहजे में बोला कालिया पठान... सभी मर गए... जालिम सिंह को भी मार डाला उस हरामजादे ने... और सभी फोकट में ही मरे... काली सिंह के एक आदमी को भी नहीं मार पाये वो... ।"

"ओह... ।"

"कैसे हुआ यह सब... ?"
"कैसे हुआ... ?"
"मैं तुमसे पूछ रहा हूं चौटाला... तुम बताओ... कैसे हुआ यह सब... ?"
हड़बड़ाया चंदगी राम चौटाला... ।
"भला मैं क्या बताऊं... ?"
"काली सिंह के एक भी आदमी का न मरना और हमारे तमाम आदमियों का मर जाना क्या यह नहीं बताता कि हमारे गैंग में एक नया भण्डारी आ गया है। उसी ने काली सिंह को खबरदार किया और वह हमारे आदमियों के स्वागत के लिए पहले से ही तैयार हो गया।"
चंदगी राम चौटाला ने इन्कार में गर्दन हिलाई।
"थम गलत सोच रहे सो (रहे हो)"
"वो कैसे... ?"
"ईबी तीन रोज पैंला ही मकबूल हुसैन की मौत हुई थी... जरूर काली सिंह के दिमाग में यह बात बैठ गई कि थम उसपे भी हमला कर सको हो... बस... उसनै अपने बचाव खातर पैंला से तैयारी कर ली अर थम उसनै असावधान जान कै उसकी तरफ बढ़ गए।"
कालिया पठान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।
"तुम ठीक कह रहे हो।"
"पर थम फिक्र न करो कालिया पठान साब... जालिम सिंह की कमी नईं होने दूंगा मैं थमने... ।"
गम्भीरता से हंसा कालिया पठान।
"छोड़ो इसे चौटाला...जालिम सिंह की जगह तुम नहीं ले पाओगे।"
"क्यों...क्यों नईं ले पाऊंगा।"
"तुमने कभी खून बहाया है।"
गम्भीर हो उठा चंदगी राम चौटाला... ईब लग (अब तक) सिरफ एक ही खून किया है मैंने... पर ईब थम देखना... खून की नदियां बहा दूंगा मैं... काली सिंह ने खत्म करने का जिम्मा थम मन्ने दे देवो फिर देखो... किस तरियो उस हरामी की लास गिराता सूं।"
कालिया पठान ने हैरानी से उसे देखा... ।
"थम यू मत सोचो कि मैं अपने पचास लाख खातर यह कै रिया सूं...उन रुपियो (रुपयों) पै तो मेरा ईब भी हक बनै सै... पर ईब मैं

वा रुपया जबी (तभी) लूंगा जीब (जब) काली सिंह को उसके कुनबे समेत ख़त्म कर देऊंगा।"

कालिया पठान ने गहरी सांस छोड़ी और बोला–

"मैं मानता हूं कि तुम दिमाग के धनी हो... फिर भी इतना बड़ा ओहदा तुम्हें देने से पहले मैं सोच विचार करूंगा।"

चदंगी राम चौटाला ने सहमति में सिर हिला दिया। और फिर बोला–

"थमने मन्ने दोस्त कहा था... अर चंदगी राम चौटाला तो दोस्ती की ख़ातर जान देने से भी पाछे न हटे... जब भी थमने मेरी जरूरत पड़ै... मन्ने याद कर लेना... दौड़ा चला आऊंगा।"

बोला कुछ नहीं कालिया पठान... बस बोतल उठाई और अपना तथा चंदगी राम चौटाला का पैग भरने लगा।

इधर चंदगी राम चौटाला उसका उतरा हुआ चेहरा देख कर मन ही मन ठहाके लगा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

काली सिंह के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे... । रात को उसे कालिया पठान की ताकत घटाने में जो सफलता मिली... उसका श्रेय वह चदंगी राम चौटाला को दे रहा था। रात की सफलता ने उसे यकीन दिला दिया कि बहुत जल्द वह कालिया पठान की कुर्सी पर बैठा नजर आयेगा।

इस वक्त वह बेताबी से चंदगी राम चौटाला का इंतजार कर रहा था। खुशी की अधिकता... तथा चंदगी राम चौटाला के लम्बे पड़ते इंतजार में वह पैग पर पैग चढ़ा रहा था।

और जब चंदगी राम चौटाला उसके पास आया तो वह लगभग आधी बोतल डकार चुका था।

चंदगी राम चौटाला को देखते ही काली सिंह उसका स्वागत करने के लिए स्वयं उठा और हल्के से लड़खड़ाते कदमों से चलता उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"बधाई हो सिंह साब... थमने एक ही बारी में कालिया पठान की आधे से भी ज्यादा ताकत कम कर दी।"

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराते हुए बोला।

काली सिंह ने उसे अपने सीने से लगा लिया और फिर उसकी

बांह को पकड़ कर उसे कुर्सी पर बिठा कर स्वयं अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

"यह सब तुम्हारे ही कारण हो पाया है चौटाला... वर्ना मैं तो यही समझ रहा था कि कालिया पठान की कुर्सी पाने के लिए मुझे अभी बहुत लम्बा संघर्ष करना पड़ेगा।"

"थमने संघर्ष करना ही पड़ता जेकर कालिया पठान मेरे ते बेईमानी न करता... जब राजा बेईमान हो जाएगा तो समझ लो उसके राज का अन्त नजदीक आ गया सै।"

"पूरे पचपन फौजी मार गिराये मेरे जवानों ने... हंस कर बोला काली सिंह।

"अर छप्पनवां थारे इस खाकसार ने मारा... ।"

"तुमने... तुमने किसे मारा... ?"

"वह जो पचपन के बराबर था।"

"क्या मतलब... ?"

"जालिम सिंह... उस हरामी को मैंने ही खत्म किया था... ।"

"ओह... ।"

"मैं जानूं था कि जब तक जालिम सिंह कालिया पठान के पास सै... कालिया पठान की ताकत न्यूं की न्यूं (ज्यों की त्यों) बनी रहेगी... अर मैं यह भी जानू था के वह थारे आदमियों के हाथा इतनी आसानी से नईं मरैगा... इस खातर यह काम करने खातर मन्ने वहां जाना पड़ा... ।"

मुस्कुरा पड़ा काली सिंह–

"तुम्हारे इसी कारनामें से जाहिर होता है कि एक बार जो बात तुम मन में ठान लेते हो उसे पूरा करके ही दम लेते हो। कालिया पठान को तबाह करने की ठान रखी है तुमने... और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम समय से पहले-पहले मुझे उसकी कुर्सी पर बिठा दोगे।"

"हंस पड़ा चंदगी राम चौटाला।

"अब क्या करने का इरादा है ?"

चंदगी राम चौटाला ने जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला और एक बीड़ी निकाल कर सुलगाई–सुट्टा लगाया और बोला–

"मुखर्जी नगर में कालिया पठान का एक अड्डा से... रात ने उसने लूट लेना थम।

"मुखर्जी नगर में कहां... ?"

"चंदगी राम चौटाला ने न केवल पता बताया... बल्कि अच्छी तरह समझाया भी... ताकि उसे ढूंढने में काली सिंह के आदमियों को कोई दिक्कत न हो।"

"और... ।"

"पैंला उस आड्डे को तो लूटो... फिर आगे क्या करना सै वह बताऊंगा।"

मुस्कुराकर बोला—चंदगी राम चौटाला और बीड़ी का सुट्टा लगाने लगा।

□□□

□□□

शाम को चंदगी राम चौटाला काली सिंह के पास से वापिस अपने फ्लैट में लौटा और अपने बिस्तर में घुस गया।

अब उसे रात होने का इंतजार था जब कि काली सिंह ने कालिया पठान के मुखर्जी नगर वाले अड्डे पर धावा बोलना था। उस अड्डे का पता उसे जालिम सिंह से लगा था... तब जब जालिम सिंह की मौत बनकर वह उसके सामने बैठा था।

कालिया पठान के बस उसी एक अड्डे का पता था उसे... उसके अलावा उसे कालिया पठान की कोठी का पता था। मगर फिर भी वह आश्वस्त था और उसे पूरा विश्वास था कि वह सुबह तक अपने मकसद में कामयाब हो जाएगा।

बशर्ते कि काली सिंह उसके बताये अड्डे पर भारी लूटपाट करे तथा बेहिसाब खून बहाये।

अगर ऐसा हुआ तो सुबह होते ही कालिया पठान का बुलावा आ जाएगा उसे।

यही कुछ सोचते हुए वह कब सोया उसे पता ही नहीं चला।

रात को ग्यारह बजे उसकी नींद खुली तो वह तुरन्त बिस्तर से उठ गया।

बाथरूम में जाकर उसने हाथ मुंह धोया... फिर फ्लैट से बाहर आकर मोटर साईकिल पर बैठा और वहां से निकल पड़ा।

कुछ दूर जा कर उसने एक होटल के सामने राजदूत रोकी होटल में प्रविष्ट हुआ और करीब एक घण्टे बाद खाना खाकर बाहर निकला।

वह वापिस अपनी राजदूत पर बैठा और वहां से चल पड़ा।

इस बार उसका रुख मुखर्जी नगर की तरफ था।

हालांकि उसे पूरा विश्वास था कि काली सिंह के आदमी कालिया पठान के अड्डों को आसानी से लूट लेंगे—फिर भी वह जरा सा भी रिस्क नहीं उठाना चाहता था... । वह अड्डे को तबाही बर्बाद हुआ अपनी आंखों से देखना चाहता था...और फिर वहां जाने का उसका एक दूसरा कारण भी था... । जिसे पूरा करने का उसको आज से बेहतर और कोई वक्त नहीं मिल सकता था।

कालिया पठान के अड्डे से काफी पहले ही उसने अपनी राजदूत फुटपाथ पर चढ़ाई और एक वृक्ष के नीचे रोक दी।

उसने राजदूत स्टैण्ड पर लगाई और फिर मोटर साईकिल की गद्दी पर बैठकर एक बीड़ी सुलगाई और काली सिंह के आदमियों की इंतजार करने लगा।

करीब आधा घण्टा इंतजार करना पड़ा उसे।

आधे घण्टे बाद उसे अपने से काफी दूर सड़क के किनारे दो गाड़ियां आगे पीछे खड़ी होती नजर आईं।

रोड लाईट के प्रकाश में उसने अगली मारुति कार को साफ पहचान लिया था। इस कार को वह काली सिंह की कोठी के ड्राईव वे पर खड़ी देख चुका था।

एक पल भी नहीं लगाया चंदगी राम चौटाला ने...वह राजदूत से नीचे उतरा...उसे स्टैंड से उतारा और एक वृक्ष के पीछे ले जाकर इस तरह खड़ी कर दी कि मोटर साईकिल बेशक नजर आ जाए...मगर उसका नम्बर राह चलते को नजर न आये।

तत्पश्चात वह स्वयं उसी वृक्ष पर तेजी से चढ़ने लगा जिसके पीछे उसने राजदूत खड़ी की थी।

कुछ ही क्षणों में वह वृक्ष के पत्तों के पीछे छुपा उधर देख रहा था जिधर कि उसने गाड़ियां रुकती देखी थीं

उसने देखा कि दोनों गाड़ियों में से स्टेनगनों से लैस कुछ आदमी बाहर निकले...फिर उनके पश्चात जंगावर बाहर आया...और वह अपने आदमियों को कुछ समझाने लगा।

करीब पांच मिनट तक वह उनको समझाता रहा...फिर सभी उसकी तरफ बढ़ने लगे।

चंदगी राम चौटाला ने एक नजर उन आदमियों पर डाली...फिर उसने जंगावर की तरफ देखा जो कि अपनी मारुति का बोनट खोलकर उस पर इस तरह झुक गया मानों उसकी कार में कोई खराबी आ गई

हो।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर जहरीली मुस्कान नाच उठी... आंखों में पैशाचिक चमक उभर आई। उसकी तरफ बढ़ते काली सिंह के आदमी एक-एक करके उसके नीचे से गुजरते आगे बढ़ते चले गए। जब आखिरी आदमी को वृक्ष से निकले पांच मिनट हो गए तो चंदगी राम चौटाला वृक्ष से नीचे उतरा और राजदूत को वृक्ष के नीचे से निकाल कर फुटपाथ से नीचे सड़क पर ले आया।

उसने राजदूत स्टार्ट की और उसकी तरफ बढ़ा दी।

जंगावर अभी भी इंजन पर झुका हुआ था।

तभी मोटर साईकिल की आवाज सुनकर उसने गर्दन ऊपर उठाई और आवाज की तरफ देखा।

ठीक तभी मोटर साईकिल उसके करीब आकर रुकी।

"अरै जंगावर साब थम यहां... गाड़ी खराब हो गई सै क्या ?"

जंगावर मुस्कुराया और उसके करीब आ खड़ा हुआ...।

"नहीं...।" वह बोला—"गाड़ी बिल्कुल ठीक है...।"

"तां फिर ईंजन क्यों खोला सै...।"

"चालू रोड है... कोई भी गश्ती गाड़ी इधर से गुजर सकती है...। कालिया पठान के अड्डे पर अटैक करने गए हैं न हमारे साथी"

"ओह।"

"मगर तुम यहां कैसे...?"

"वह भी बताऊंगा... पैंला पाछे बैठो... या फेर मने अपनी गाड़ी में बिठाओ और यहां से चलो...। यहां जेकर कोई पुलिसिया आ गया तो थम उसकी निगाहां में आ जाओगे।"

बात जंगावर को सही लगी... गोली बारी की आवाज लोगों को आकृष्ट करेगी तो जाहिर है कि कोई पुलिस को भी फोन करेगा... ऐसे में पुलिस को उसकी वहां मौजूदगी शक में डाल सकती है।

"तुम अपना गाड़ी यहीं कहीं खड़ी करो... कार में चलते हैं।" वह बोला।

चंदगी राम चौटाला ने अपनी मोटर साईकिल उस स्थान से कुछ दूर एक वृक्ष के पीछे लिटाई और सड़क पर आ गया।

तब तक जंगावर भी मारुति स्टार्ट कर उसके करीब आ गया था।

चंदगी राम चौटाला ने परली तरफ का दरवाजा खोला और मारुति में प्रवेश कर उसके बराबर वाली सीट पर बैठ गया जंगावर ने मारुति

आगे बढ़ा दी।

"किधर चलें... ?"

"कडें भी चालो (कहीं भी चलो) पर जाना इत्ती दूर के हम पंद्रह मिनट में वापिस भी आ जाएं... अर जगह ईसी (ऐसी) हो जहां पुलिस के आने की सम्भावना भी न हो।"

जंगावर ने मारुति माल रोड की तरफ मोड़ दी... । माल रोड पर आकर उसने यूनिवर्सिटी के करीब शक्ति नगर की तरफ कार को मोड़ा और एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

यूनिवर्सिटी तथा रूप नगर के बीच की सड़क पर आवागमन बहुत कम रहता है... और रात को तो वह रास्ता लगभग सुनसान हो जाता है।

"बस यहीं रोक दो... ।"

तभी बोला चंदगी राम चौटाला।

जंगावर ने मारुति रोकी और बाहर देखा... । रूप नगर के स्टाप से पहले लम्बी मोड़ पर गाड़ी रोकी थी उसने। उसने इंजन बंद किया और चंदगी राम चौटाला की तरफ गर्दन घुमाते हुए अपना सवाल दोहराया—

"तुम उधर क्या करने गए थे... ?"

"थारे पास ही गया था।"

"मेरे पास... क्यों... ?"

"थम से कुछ जानकारी चाहिये थी।"

"कैसी जानकारी... ?"

"काली सिंह के आडयां (आड्डों) की जानकारी।"

कहते हुए उसने फुर्ती से रिवाल्वर निकाली और जंगावर पर तान दी।

बुरी तरह से चौंक पड़ा जंगावर... साथ ही उसका कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"य... यह क्या है... ?" वह हड़बड़ाया सा बोला।

"इन्ने रिवाल्वर कहैं से... इसकी नाल में से एक छोटी सी गोली निकड़े से जो कि सामने वाले के भेजे में घुस जावे सै। कहे तो निकाड़ के दिखाऊं... ?"

जंगावर ने जोरों से थूक निगली... उसे समझते देर नहीं लगी कि चंदगी राम चौटाला काली सिंह के साथ ही नहीं बल्कि कालिया पठान

के साथ भी कोई गहरी चाल चल रहा है।

"कौन हो तुम... ?" उसका स्वर सपाट हो गया।

"भेड़िया... ।" चंदगी राम चौटाला भयानक मुस्कान के साथ बोला।

बुरी तरह से उछला जंगावर... साथ ही उसकी रंगत एक दम से फक्क पड़ गई।

"भ... भे... ड़िया... ।"

उसके होठों से अस्फुट स्वर निकला... । उसकी आवाज की कंपकपाहट ही बता रही थी कि वह भेड़िया के कारनामों से परिचित है।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर फैली मुस्कान गहरी हो गई

"काली सिंह को कहा था न मैंने कि मैं चौथे बाप की औला सूं... जेकर थम में जरा सी भी अकल होती तो थम फट से जान जात कि भेड़िया फिर से एक नये जिस्म में आ गया सै।"

जंगावर ने जोरों से थूक निगली।

"क... क्या चाहते हो तुम... ?"

"बताया तो... मन्ने थारे बाप काली सिंह के सारे आडयां क जानकारी चाहिये... ।"

"ल... लेकिन मैं... ।"

"मेरे पास वकत की घनी कमी सै... मैं घना इंतजार नईं क सकूं सूं... जल्दी से बता मन्ने।"

कहते हुए चंदगी राम चौटाला की आवाज बेहद क्रूर हो उठी थी

भेड़िया के नाम ने ही जंगावर के जिस्म में इस कदर दहशत भ दी थी कि वह काली सिंह के अड्डों के बारे में जितना जानता था बता चला गया।

उसके चुप होते ही चंदगी राम चौटाला के होठों पर एक क्रूर मुस्क नाच उठी।

"पैंला तो रीमा राठौर ने मन्ने ढूंढ निकाड़ा था... पर ईब कि को भी बेरा नई पाटेगा कि भेड़िया फिरसे एक जिस्म में घुस ग सै... अपना यह जीवन मैं घना लम्बा गुजारूंगा... अर राजा बन गुजारूंगा। फिलहाल तो तूने जो भी बताया... उसके लिए धन्यवाद... अ अब जै रामजी की।"

कहने के साथ ही उसने ट्रिगर दबा दिया।

जंगावर का जिस्म जोरों से उछला और वहीं सीट पर लुढ़क गया।

वह मर चुका था।

चंदगी राम चौटाला ने मुस्कुरा कर उसकी लाश को आंख मारी और फिर उसे घसीट कर अपनी जगह पर किया तथा स्वयं उसकी जगह पर बैठ गया।

उसने कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।

थोड़ा आगे जाने पर उसने गोल चौक से कार को दूसरी लेन पर मोड़ा और वापिसी के लिए रवाना हो गया।

वह वापिस मुखर्जी नगर उसी स्थान पर पहुंचा जहां पर कि जंगावर की कार पहले खड़ी थी।

कार का इंजन बंद होते ही उसने पटाखों के छूटने की आवाजें सुनी तो उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी।

"मर रये सै साले।" वह बड़बड़ाया और दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

उसने बोनट के आगे आकर बोनट को ऊपर उठाया...और फिर जंगावर वाली साईड में आकर दरवाजे को खोला तथा लाश को घसीट कर बाहर निकाल लिया।

लाश को घसीटते हुए ही वह बोनट के आगे आया और उसे खड़ा करके उसका मुंह इंजन में डाल दिया।

ईब ठीक सै... ।" वह हंसा और फिर उधर बढ़ गया जहां उसकी मोटर साईकिल खड़ी थी।

कुछ ही देर में वह हवा से बातें करता पश्चिम विहार की तरफ उड़ा जा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला के फ्लैट की काल बैल बजी तो उसके होठों पर रहस्यमयी मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

"ईब आया ऊंट पहाड़ के नीचे... ।" वह बड़बड़ाया... फिर उंचे स्वर में बोला—"कौन सै ?"

"दरवाजा खोलो... ।"

बाहर से वही आवाज आई जिसे वह कल सुबह भी सुन चुका था।

चंदगी राम चौटाला के होंठों पर नाच रही मुस्कान गहरी हो गई।

वह रजाई में से बाहर निकला... पलंग से नीचे उतरा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

सिटकनी गिरा कर उसने दरवाजा खोला।

सामने वही कल वाला काला कलूटा राक्षस खड़ा था।

"कैसे... ?"

"चीफ ने तुम्हें बुलाया है... ।"

"क्यों... ?"

"यह उन्हीं को मालूम... उन्होंने मुझे बस यही आदेश दिया है कि तुम्हें लेकर आऊं।"

"ठीक सै... ।" लम्बी सांस छोड़ी चंदगी राम चौटाला ने... तू चाल... मैं ईबी आ रिया सूं।"

"उन्होंने तुम्हें साथ लाने को कहा है।"

"रे भले मानस... ईबी तो उठा सूं मैं... जरा फ्रैस (फ्रेश) तो हो लेन दे... ।"

"मैं इंतजार करूंगा... ।"

चंदगी राम चौटाला ने कंधे उचका दिये।

"जैसी तेरी मर्जी... आ जा भीतर बैठ जा... ।"

कह कर चंदगी राम चौटाला एक तरफ हट गया।

काला राक्षस भीतर प्रवेश कर सीधा उसके फोल्डिंग पलंग पर जा बैठा जबकि चंदगी राम चौटाला बाथरूम में घुस गया।

आधे घण्टे बाद वह काले राक्षस की कार की पिछली सीट पर बैठा बीड़ी के सुट्टे लगा रहा था तथा काला राक्षस विण्ड स्क्रीन पर निगाहें जमाये स्टेयरिंग को सम्भाले हुए था।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला कालिया पठान के कमरे में प्रविष्ट हुआ तो उसकी हालत देखकर वह मन ही मन हंस पड़ा । बहुत बुरी हालत हो रही थी कालिया पठान की... । बाल बिखरे हुए थे... । उसकी आंखें बता रही थीं कि वह काफी देर से जाग रहा है। चेहरा ऐसा लग रहा था मानो वह अभी रो पड़ेगा।

कुल मिलाकर एक लुटे पिटे आदमी की सी हालत हो रही थी उसकी।

चंदगी राम चौटाला गम्भीर मुद्रा बनाये आगे बढ़कर उसके सामने

वाली कुर्सी पर बैठ गया और गम्भीरता ओढ़ते हुए बोला–

"आपने मन्ने बुलाया था कालिया पठान साब... ।"

कालिया पठान ने सुर्ख आंखों से उसे देखा और बोला... ।

"रात फिर लूट लिया हमें काली सिंह ने।"

चंदगी राम चौटाला इस तरह चौंका मानो ये खबर पहली बार सुन रहा था... । फिर गम्भीरता पूर्वक बोला–

"बुरा न माने तो एक बात बोलूं... ।"

"क्या... ?"

"अपना माल लुटवाने के थम खुद जिम्मेदार सौ।"

"क्या बकते हो... ?" भड़क उठा कालिया पठान।

"क्या जरूरत थी माल मंगवाने की... थारा फर्ज बने था कि पैंला काली सिंह को खत्म करते... फिर आपने व्यापार की तरफ ध्यान देते।"

"उसने मेरे अड्डे पर अटैक किया है।"

"क्या... ?"

एक बार फिर उछला चंदगी राम चौटाला।

"मेरे वहां मौजूद दस आदमी भी मार डाले उसने... ।"

"म... मगर काली सिंह ने थारे अड्डे का बेरा कैसे पाट्या ?"

"तुम बताओ... कैसे लगा पता ?"

"म-मैं भला के बताऊं... ।" हड़बड़ा कर बोला चंदगी राम चौटाला।

"सोचो... कैसे पता लगा उसे मेरे उस अड्डे का... ?"

चंदगी राम चौटाला ने चेहरा ऐसे बना लिया जैसे गहरी सोचों में डूब गया हो।

"साथ ही यह भी सुन लो कि अब तुम नये जालिम सिंह हो... ।"

"क... क्या कहा... ?" जैसे चंदगी राम को उसकी बात ठीक से सुनाई न दी हो।

"हां... जालिम सिंह का ओहदा मैंने तुम्हें सौंप दिया है... उस लिहाज से अब तुम्हारी जिम्मेदारी कई गुना बढ़ गई है।"

"फंसा... ।" मन ही मन हंसा चंदगी राम चौटाला।

"अब सोचो... और सोचकर हल निकालो कि ऐसा क्या किया जाए जिससे वह हरामजादा काली सिंह भी मारा जाए और मेरा तमाम लुटा हुआ माल भी मुझे वापिस मिल जाए।"

चंदगी राम चौटाला ने गम्भीर मुद्रा बनाई और बोला–

"थमने चौटाला को जो इज्जत बक्सी (बख्शी) सै... चौटाला उस इज्जत को आंच नईं आन देगा... मरता मर जाएगा... पर ईब थारा एक पीसे (पैसे) का नुकसान नईं होन देगा।"

"और जो माल लुट गया... उसे भी वापिस लाना है।"

"थम फिक्र न करो... ईसा ही होगा... पर पैंला यह सोचना होगा कि उसने थारे आड्डे का बेरा कीसे पाटया (पता कैसे लगा)।"

"तो सोचो... बातों में वक्त जाया मत करो।"

चदंगी राम चौटाला धीर गम्भीर होकर सोचने का नाटक करने लगा।

दो तीन मिनट तक सोचने का नाटक करने के उपरांत वह जोरों से चौंका तो कालिया पठान उत्सुकता से उसे देखने लगा।

"कुछ आया समझ में... ?" वह बोला।

चंदगी राम चौटाला ने आंखें फाड़कर उसे देखा और घबराये लहजे में बोला—

"यह तो घना जुल्म हो गया कालिया पठान साब... ।"

"क्या हुआ... कैसा जुल्म हो गया?"

घबराये लहजे में बोला चंदगी राम चौटाला।

"काली सिंह थारे आड्डे का बेरा जेकर उस हिसाब से चला सै जो कि मैंने सोचा सै... तो फिर समझ लो थारे पर बहुत घना बड़ा खतरा मंडरा रिया सै।"

"साफ-साफ बताओ... क्या सोचा है तुमने... ।"

"कहीं जालिम सिंह को खत्म करने तै पैंला काली सिंह ने उससे थारे सारे आडयां के बारे में तो नईं जान लिया।"

सुनकर कालिया पठान का रंग उड़ गया।

"जेकर ईसा से तो समझ लो कि काली सिंग थारे सारे आडयां ने लूट लेगा... अर उस सूरत में थारी क्या हालत होगी... इसका अंदाजा थम खुद ही लगा सको हो।"

कालिया पठान का पीला पड़ा रंग और भी पीला पड़ गया... आंखों में बेचैनी उभर आई।

चंदगी राम चौटाला की बात ऐन उसके कलेजे के बीचो बीच धंसी थी।

य... यह तो तुमने बहुत ही खतरनाक बात कह डाली... ।"

वह बोला—

"खतरनाक तो सै... पर सच्ची भी सै।"

"कालिया पठान ने जल्दी से पैग भरा और एक ही सांस में खाली कर दिया। जो सम्भावना चंदगी राम चौटाला ने प्रकट की थी वह बहुत ही अधिक विस्फोटक थी... उसके मद्दे नजर उसका शराब का सहारा लेना उचित भी था।

"फिर... क्या किया जाए... ?" वह प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखते हुए व्याकुलता से बोला।

चंदगी राम चौटाला ने एक गहरी सांस छोड़ी... जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला... उसे हाथों में रगड़ा और एक बीडी निकाल कर उसे होठों में दबा लिया।

तत्पश्चात उसने माचिस निकाल कर उसकी तीली निकाल कर मसाले पर रगड़ी... ।

"सर्र... ।" की आवाज के साथ तीली जल उठी।

उसने अपनी बीड़ी सुलगाई... सुट्टा मारा और मुंह से कसैले धुएं की फुहार छोड़ते हुए गम्भीरता ओढ़ते हुए बोला—

"हालात तो यही कै (कह) रये सै कि थम आपने सारे आडयां का माल एक ईसी जगह पै रख देवो जो थारी नजर में सबसे महफूज सै।"

"ल... लेकिन... ।"

"सारा माल एक ही जगह पै होवैगा उसकी हिफाजत ठीक ढंग से की जा सकेगी... फिर हम काली सिंग़ से आसानी से निपट भी सकेंगे... अब जीब (जब) काली सिंग खत्म हो जावेगा... तब हम अपने माल को फिर से उसी जगहों में पहुंचा देंगे... अर थारा व्यापार फेर ते पैंला की तरियों चलने लगेगा।"

कालिया पठान के होठ बंद हो गए... । उसकी चुप्पी बता रही थी कि चंदगी राम चौटाला की राय उसे जंची है।

चंदगी राम चौटाला उत्सुकता से उसे देखता उसके बोलने का इंतजार कर रहा था।

कुछ देर चुप रहने के उपरांत कालिया पठान ने लम्बी सांस छोड़ी और चंदगी राम चौटाला को देखते हुए बोला—

"तुम ठीक कह रहे हो चौटाला... मौजूदा हालात में हमें अपना सारा माल एक ही जगह पर इकट्ठा कर लेना चाहिए... ।"

"पर उससे पैंला थमने वह जगह बनानी होगी जहां माल रखा

जायेगा... क्योंकि ईब आपके सारे माल की हिफाजत करना मेरी जिम्मेवारी सै। अब मैं एक पीसा भी नुकसान बर्दास्त नहीं कर सकता।"

"उस जगह की फिक्र मत करो... वो जगह है मेरे पास।"

"कहां सै... ?"

"यह कमरा ... जिसमें तुम बैठे हो... ।"

चंदगी चौटाला ने कमरे में इधर-उधर निगाहें घुमाई... फिर पुनः कालिया पठान की तरफ देखते हुए बोला–"मन्ने तो इस कमरे में ईसी कोई चीज खास नई लागे सै... यह तो वैसा ही कमरा है जैसा मेरे फ्लैट का सै... बस फर्क यही सै कि यह बड़ा सै अर सजा हुआ सै।"

तब पहली बार कालिया पठान के होठों पर भेद भरी मुस्कान उभरी।

"जिस कमरे को तुम साधारण समझ रहे हो... वह इतनी खासियतों से भरा है कि तुम सुनोगे तो हैरानी से जबरदस्त झटके खाने शुरू कर दोगे।"

"ईसा (ऐसा) !' आश्चर्य से आंखें फैलाईं चंदगी राम चौटाला ने।

यह अलग बात थी कि वह भीतर ही भीतर ठहाके लगा रहा था... और कालिया पठान को बेवकूफ बना रहा था।

"खड़े हो जाओ।"

उसके आश्चर्य प्रकट करते ही बोला कालिया पठान।

चदंगी राम चौटाला पहले तो हड़बड़ाया... फिर खड़ा हो गया और हैरानी से उसे देखने लगा।

"थ... थम तो मन्ने कमरे की खासियत बताने जा रहे थे... फिर यह... ।"

"ओह।"

"मान लो तुम दोस्त बनकर मेरे पास आये हो और आकर इस कुर्सी पर बैठे हो जबकि तुम हो मेरे दुश्मन... ।"

चंदगी राम चौटाला ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"बातों के दौरान तुमने रिवाल्वर निकाली और मुझ पर तान दी... लेकिन तुम गोली नहीं चला पाओगे मुझ पर... ।"

"वो कीसे... ?"

"उससे पहले ही तुम मौत के मुंह में पहुंच जाओगे।"

चंदगी राम चौटाला ने कुर्सी को गौर से देखा... लेकिन उसे उसमें कोई खास बात नजर नहीं आई।

"मन्ने तो इसका कुछ भी खास नईं लागे से।"

तभी कालिया पठान ने पता नहीं क्या किया कि कुर्सी एक दम से पीछे को उलट गई... साथ ही फर्श में से एक तीखा नोक दार भाला निकला और कुर्सी की पुश्त को फाड़ता हुआ काफी ऊपर तक आ गया।

चंदगी राम चौटाला हक्का बक्का रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि कालिया पठान ने ऐसा क्या किया... ऐसा कौन सा स्विच आन किया जो यह हो गया।

अगर उस वक्त वे कुर्सी पर बैठा होता तो भाला उसकी पीठ में घुस कर छाती में से बाहर को निकल आता।

यह सोच कर ही उसकी रीढ़ की हड्डी में ठण्डी लहरें दौड़ गईं... तुरंत उसने अपने दांतों पर हाथ फेरा कि कहीं वे लम्बे तो नहीं हो रहे।

मगर दांत सामन्य थे।

चंदगी राम चौटाला की जान में जान आई। उसने किसी तरह से खुद को सम्भाला और मुस्कुरा पड़ा—

"वाकई थमने आपनी हिफाजत का घना मजबूत इंतजाम किया सै... पर जेकर दुस्मन कुर्सी पर बैठे ही नईं... वह दरवाजे में घुसते ही थम पर गोली चला देता?"

कालिया पठान के होठों पर नाच रही मुस्कान तेज हो गई।

"रिवाल्वर है तुम्हारे पास... ?"

"सै... ।"

"बाहर निकलो... ।"

"कमरे से... ?"

"हां... और फिर भीतर घुसते ही मुझ पर गोली चला दो... ।"

"यह... यह क्या कह रहे सो थम... म... मैं भला थम पे गोली चलाऊंगा... ।"

"घबराओ मत मुझे कुछ नहीं होगा।"

"पर... ।"

"जो कह रहा हूं वही करो।" सहसा ही कालिया पठान की आवाज सख्त हो उठी।

चंदगी राम चौटाला ने गहरी सांस छोड़ी और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

वह दरवाजे से बाहर निकला... वापिस मुड़ा... जेब से रिवाल्वर

निकाली और भीतर प्रवेश करते ही कालिया पठान पर फायर झोंक मारा।

आश्चर्य का तेज झटका लगा उसे।

गोली रास्ते में ही एक अदृश्य दीवार से टकरा कर नीचे गिर गई।

उसने पुनः फायर किया।

नतीजा वही जो पहले निकला था।

अभी वह इस हैरानी से नहीं उभर पाया था कि आश्चर्य का एक और झटका लगा उसे।

कालिया पठान कुर्सी समेत जमीन में धंसने लगा था...। और उसके देखते ही देखते वह पूरा का पूरा फर्श में समा गया।

कुर्सी के फर्श में समाते ही फर्श ज्यों का त्यों हो गया।

चंदगी राम चौटाला हैरान...उसका कलेजा इस वक्त जोर-जोर से धड़क रहा था। मन ही मन शुक्र मना रहा था कि उसने उसे मारने के लिए अभी तक कोई कदम नहीं उठाया था...अगर वह ऐसा करता तो कालिया पठान का तो कुछ भी नहीं बिगड़ना था... हां... वह अवश्य ही मारा जाता और एक नये जिस्म की तलाश में भटकना शुरू कर देता।

करीब पांच मिनट बाद फर्श का वह हिस्सा पुनः एक तरफ हुआ और कालिया पठान की कुर्सी समेत बाहर आ गया।

चंदगी राम चौटाला का चेहरा देख कर उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी।

"बैठो...।" वह बोला।

चंदगी राम चौटाला यन्त्रचलित सा वापिस कुर्सी पर आ बैठा।

"अभी तो यह सिर्फ शुरूआत है...दुश्मन अगर इस कमरे में घुस आये तो वह मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकता।

उल्टे उसकी अपनी लाश यहां बिछ जाएगी।

"वह कैसे...?" किसी तरह से खुद को सम्भालने की कोशिश करते हुए बोला चंदगी राम चौटाला...।

कहने के साथ ही उसकी एक-एक हरकत को गौर से देखने लगा...वह यह देखना चाहता था कि वह ऐसा क्या करता है जो जादू की तरह उसके आगे बुलेट प्रूफ शीशा आ जाता है... वह खुद जमीन में धंस जाता है। तभी कालिया पठान का दांया हाथ जो कि उसकी सिंहासन नुमा कुर्सी के हत्थे पर था की उंगली ने हत्थे की निचली साईड में हल्की सी हरकत थी।

उसी पल कमरे की चारों साइडों की दीवारों में करीब सौलह

स्टेनगनों की नाले बाहर निकल गई।

हर स्टेनगन का रुख दूसरी से भिन्न थी।

नालों के कोण इस ढंग से थे कि कमरे में दुश्मन चाहे कहीं भी क्यों न दुबका हो... वह गोली का शिकार हुए बिना नहीं रह सकता था।

हक्का बक्का रह गया चंदगी राम चौटाला। कालिया पंठान ने आपनी हिफाजत के सचमुच बचाव बंदोबस्त कर रखे थे।

"क्यों... कैसे लगी... ?" तभी हंसकर बोला कालिया पठान।

चंदगी राम चौटाला होठों पर जबरदस्ती मुस्कान लाया और बोला—

"थमने आपनी हिफाजत का तो घना बंदोबस्त कर रख्या है... पर कमरे की हिफाजत का बंदोबस्त क्या कर रख्या है थमने।"

कालिया पठान की उंगली ने पुनः हल्की सी हरकत की।

उसी पल कमरे का दरवाजा बंद होने की आवाज आई।

चंदगी राम चौटाला ने चौंक कर दरवाजे की तरफ देखा...।

दरवाजा बंद हो चुका था।

"यह दरवाजा कोई साधारण दरवाजा नहीं... ।" तभी पीछे से कालिया पठान की आवाज आई... ठोस इस्पात का बना है दरवाजा... तोड़ने वाले की उम्र बीत जाए दरवाजा तोड़ने में... मगर वह दरवाजा नहीं तोड़ पायेगा।"

"ओह।"

"मेरा ख्याल है अब तुम्हें सन्तुष्टी मिल गई होगी कि इस कमरे में आने के पश्चात मेरा बाल कोई छू भी नहीं पायेगा।"

चंदगी राम चौंटाला ने उसकी तरफ देखते हुए सिर हिलाया।

ईब तो मुझे घनी तसल्ली हो गई... वाकई थम जीनियस हो।"

अपनी तारीफ सुनकर हंसा कालिया पठान।

"ईब आज ही मैं सारा माल आडे (यहां) पहुंचा देता हूं।"

कालिया पठान ने सिर हिलाया... फिर उंगली को हल्की सी हरकत दी।

फौरन दरवाजा खुल गया।

"सुलतान... ।"

उसने बाहर की तरफ मुंह करके आवाज लगाई।

तुरंत वही काला कलूटा राक्षस एक साईड से निकल कर दरवाजे में प्रविष्ट हुआ।

"यस चीफ... ।" वह उसके करीब आकर सिर झुकाते हुए बोला।

कालिया पठान ने चंदगी राम चौटाला की तरफ इशारा किया और बोला–

"आज से बल्कि अभी से मैंने चौटाला को जालिम सिंह की जगह पर नियुक्त किया है।"

सुलतान ने चंदगी राम चौटाला की तरफ देखा तो चंदगी राम चौटाला ने दांत दिखा दिये।

"चौटाला की जुबान से निकला आदेश मेरा-मेरा आदेश माना जाएगा।" कालिया पठान आगे बोला।

"यस चीफ... ।"

"जो कुछ भी यह कहे उस पर फौरन अमल किया जाए।"

"यस चीफ... ।" सुलतान ने सिर झुकाया... ।"

कालिया पठान ने चंदगी राम चौटाला की तरफ देखा और बोला–

"काली सिंह को खत्म करने की जिम्मेदारी अब तुम्हारी है चौटाला... ।"

"मैं जानू सूं कालिया पठान साब... ।" तुरंत बोला चंदगी राम चौटाला।

"अब देखना यह है कि तुम करते क्या हो ?"

जवाब देने की बजाये चंदगी राम चौटाला ने सुलतान की तरफ देखा।

"कितने आड्डे सैं म्हारे... ?" उसने पूछा।

सुलतान ने पहले कालिया पठान को देखा... फिर चंदगी राम चौटाला को देख कर बोला–

"सत्रह... अठारवां मुखर्जी नगर वाला था जो कि रात को काली सिंह ने लूट लिया।

"किस आड्डे पै क्या माल वाल सै ?"

सुलतान ने क्या बताया

सुनकर चांदगी राम चौटाला का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

जितना माल सुलतान ने उसे बताया था... अगर अंदाजे से उसका मूल्यांकन किया जाए तो उसकी कीमत कम से कम सौ करोड़ बैठती थी।

तुरंत कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया चदंगी राम चौटाला।

आगे बढ़कर उसने कालिया पठान के पैरों को छुआ और बोला
"मन्ने आशीर्वाद दीजिये कालिया पठान साब कि मैं काली सिंग ने मार सकूं—।"

मुस्कुराया कालिया पठान और बोला—

"जाओ... कामयाब हो कर लौटो।"

मन ही मन मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला... फिक्र मत कर कालिया पठान... बड़ी जल्दी मैं तेरी कुर्सी में बैठा नजर आऊंगा। हरामी... बेवकूफ... ।"

वह सीधा हुआ... मुड़ा और सुलतान की तरफ देखा... आ जा मेरे पाछे... ।"

कहते हुए वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

पीछे-पीछे सुलतान भी दरवाजे से बाहर आ गया।

बाहर आकर चांदगी राम चौटाला ठिठका तो सुलतान भी रुक गया।

"मन्ने पैंला सारे आड्डे दिखाओ... ।"

"चलिये चौटाला साहब... ।" सुलतान बड़े अदब से बोला।

कुछ ही देर में वे दोनों एक टाटा सूमो में बैठे उड़े जा रहे थे।

❑❑❑

❑❑❑

डिफेंस कालोनी की एक बड़ी कोठी के हाल में करीब दस आदमी खड़े थे... । उनके सामने सुलतान और चंदगी राम चौटाला खड़े थे।

सभी आदमी उत्सुकता से सुलतान को देख रहे थे।

सुलतान को जानते थे वे। कोठी में प्रवेश कर जब सुलतान ने वहां के इंचार्ज मलिक को सभी आदमियों के साथ हाल कमरे में पहुंचने को कहा तो वह चौंका था। लेकिन चूंकि सुलतान कालिया पठान का करीबी आदमी था... सो उसे उसका कहना मानना पड़ा।

कुछ ही देर में कोठी के सभी मैम्बर हाल कमरे में थे।

सुलतान ने सभी पर निगाहें दौड़ाई और बोला—

"हमारे पूर्व उप बॉस जालिम सिंह की मौत की खबर तो आप लोगों को लग ही चुकी है... ।"

कोई कुछ नहीं बोला... बस उसकी तरफ देखते रहे... । बीच-बीच में वे चंदगी राम चौटाला को भी देख रहे थे।

तभी सुलतान ने चंदगी राम चौटाला की तरफ इशारा किया।

"मिस्टर चंदगी राम चौटाला।"

सभी की निगाहें चंदगी राम चौटाला पर केन्द्रित हो गईं।

"चीफ ने जालिम सिंह की जगह चौटाला साहब को नियुक्त किया है।"

सभी के चेहरों पर चौंकने वाले भाव उभरे... । चेहरे से ही गंवार उज्जड़ नजर आने वाला चौटाला जालिम सिंह की जगह लेने के बिल्कुल उपयुक्त नहीं लगा उन्हें। वे हैरान हो रहे थे कि कालिया पठान ने क्या सोच कर उस नमूने को उनका उप बॉस घोषित किया है।

"अब चौटाला साहब का हुक्म ही चीफ का हुक्म माना जाएगा।"

कोई कुछ नहीं बोला... बस उलझी नजरों से वे चौटाला को देखते रहे।

सुलतान के चुप होते ही चंदगी राम चौटाला ने जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला... । एक बीड़ी निकाल कर सुलगाई और सुट्टा लगा कर नाक से धुंए की दोनाली छोड़ दी।

"अब चौटाला साहब जो हुक्म देने जा रहे हैं... वो सुनिये... ।"

सुलतान आगे बोला।

चंदगी राम चौटाला ने बीड़ी का सुट्टा लगाया और सभी पर निगाहें दौड़ाते हुए मुंह से धुंए का बादल उगल दिया।

"साथियों... ।" वह बोला—"थम ह[illegible] गया होगा कि काली सिंग ने कालिया पठान साब को घना नुकसान पहुंचा या सै... रात भी उसने म्हारे एक आड्डे को लूट लिया... अर म्हारे दस साथी मार डाले।"

उसकी ठेठ हरियाणवी बोली किसी की समझ में आई तो किसी की नहीं... । लेकिन उसकी बातों के भाव को सभी समझ रहे थे।

"काली सिंग की बढ़ती ताकत को देख के हमनै यूं फैसला किया है कि पैंला काली सिंग से निपटा जाए... फेर अपने व्यापार पर ध्यान लगाया जाए।"

उसने बीड़ी का सुट्टा लगाया और मुंह से धुंए की फुहार छोड़ते हुए आगे बोला—

"कालिया पठान साब का हुक्म सै कि आडे (यहा) का सारा माल हैडक्वार्टर ले जाया जाए। ताकि हमने काली सिंग की तरफ से किसी और हमले का खतरा न हो। थारा इंचार्ज कौन सै... ?"

तुरंत मलिक आगे बढ़ आया।

"मैं हूं चौटाला साहब... वह बोला।

"तू सारा माल इकट्ठा करके पूरी हिफाजत से हैडक्वार्टर पहुंचायेगा।"

मलिक ने सिर हिलाया... ।

"मुंह ते बात कर... सिर मत हिला... ।" गुर्राया चदंगी राम चौटाला।

मलिक हड़बड़ा उठा... ।

"ज... जी... मैं पहुंचा दूंगा।"

"आज ही।"

"आज ही।"

तत्पश्चात चंदगी राम चौटाला ने सुलतान की तरफ देखा।

"चालो यहां से... ईब दूसरे आड्डे पै ले चाल।"

सुलतान ने तुरंत दरवाजे की तरफ रुख कर लिया।

कुछ ही देर में वे सूमों में बैठे दूसरे अड्डे की तरफ जा रहे थे।

□□□

□□□

दोपहर बाद तीन बजे चंदगी राम चौटाला सुलतान के साथ वापिस कालिया पठान की कोठी पर पहुंचा। उसके सत्रह अड्डों का दौरा कर उसने सभी को अपने रुतबे से परिचित कराने के साथ-साथ वहां का सारा माल कालिया पठान की कोठी पर पहुंचाने का आदेश दे दिया था।

वह कालिया पठान के कमरे में प्रविष्ट हुआ तो उसने एक साईड में गत्ते की तथा लकड़ी की कुछ पेटियां जुड़ी हुई देखी।

उसने कालिया पठान की तरफ देखा जो कि अपनी कुर्सी पर बैठा उसी को देख रहा था। वह आगे बढा और उस कुर्सी पर जाकर बैठ गया जो कि कालिया पठान की उंगली की हल्की सी जुम्बिश पर मौत बन सकती थी।

तीन अड्डों का माल पहुंच चुका है... ।" कालिया पठान बोल पड़ा... ।

चंदगी राम चौटाला ने पुनः उस की तरफ देखा।

"कैसा लगा हमारा साम्राज्य ... ?"

चंदगी राम चौटाला ने होठों को फैलाया और बोला—

"थमने राजा कहने वाला तो बेबकूफ ही होगा... ।"

"क्या मतलब... ?"

"थम तो सम्राट हो... ।"

कालिया पठान की गर्दन अकड़ गई। छाती चालीस पचास गज चौड़ी हो गई।

मन ही मन हंसा चंदगी राम चौटाला और बोला—

"थारा साम्राज्य देख कै तो मैं यह समझू सूं कि काली सिंग थारे आगे चूहे से ज्यादा औकात नहीं रखता होगा।"

कालिया पठान की गर्दन पुनः अकड़ी।

"फिर भी चंदगी राम चौटाला दुस्मन को कम नई मानता... उसको कमजोर नई मानता अर पूरी तैयारी के साथ उसपे हमला बोलै सै... । काली सिंग को भी मैं कमजोर नई समझूंगा... अर उसने खत्म करन खातर मैं अपनी पूरी ताकत लगा देऊंगा।"

"शाबास... ।" बोला कालिया पठान—"तुम्हारी बात सुन कर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि तुम अपने मकसद में कामयाब हो कर ही रहोगे। जो शख्स छोटे से छोटे दुश्मन को भी पूरी तैयारी के साथ खत्म करता है... वह कभी नाकाम नहीं होता।"

बोला कुछ नहीं चंदगी राम चौटाला... बस सिर झुका दिया।

"खाना खाया... ?"

चंदगी राम चौटाला ने इन्कार में सिर हिला दिया।

"सुलतान... ।" कालिया पठान ने आवाज लगाई।

तुरंत सुलतान हाजिर हुआ।

"चौटाला को जालिम सिंह वाला कमरा दिखाओ—और इसके लिए शानदार लंच का बंदोबस्त करो।"

"यस चीफ... ।"

"जाओ चौटाला ...आज से जालिम सिंह की हर वस्तु पर तुम्हारा अधिकार है।"

चंदगी राम चौटाला खड़ा हुआ और सुलतान के पीछे-पीछे चलता कमरे से बाहर निकल गया।

□□□

□□□

शाम सात बजे तक कालिया पठान के सभी अड्डों का माल वहां पहुंच गया। माल में हैरोइन तथा सोने की मात्रा ज्यादा थी हथियार तथा अन्य भारी समान भी था। लेकिन हेरोईन तथा सोने की मात्रा ज्यादा होने के कारण कमरा आधा ही भर पाया... ।

चंदगी राम चौटाला ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही सामान का अंदाजा लगाया...सुबह उसने सौ करोड़ का अंदाजा लगाया था मगर अब उसका अंदाजा डेढ़ सौ करोड़ से भी ऊपर का था।

उसने गर्दन कालिया पठान की तरफ मोड़ी।

"सारा माल तो आ गया...।" तभी कालिया पठान बोल पड़ा—अब क्या करोगे... ?"

"थम देखते रहिये कालिया पठान साब...चंदगी राम चौटाला बोला...काली सिंग की क्या हालत करता सूं मैं।"

"उसकी हालत खराब जब करोगे सो करोगे... पहले उसके ठिकाने का पता तो लगाओ।"

"आज रात ने उसके किसी ठिकाने का भी बेरा पाट जायेगा।"

"वो कैसे... ?"

"वो ईसे कि... ।"

कहते...कहते सहसा रुक गया चंदगी राम चौटाला... साथ ही उसके चेहरे पर उलझन उभर आई... । जैसे एकाएक ही कोई बात उसके जेहन में आई हो।

कालिया पठान ने उसके चेहरे को गौर से देखा... ।

"क्या बात है... ? तुम बोलते-बोलते रुक क्यों गए ?"

चंदगी राम चौटाला ने दरवाजे की तरफ गर्दन मोड़ी... फिर कुर्सी से उठा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया... ।

कालिया पठान हैरानी से उसको देख रहा था। वह उससे पूछना चाहता था... लेकिन पूछा कुछ नहीं उससे... । हां... जिज्ञासा जरूर सिर उठा रही थी उसके मन में।

चंदगी राम चौटाला दरवाजे से बाहर निकला और दाईं तरफ देखा।

करीब ही एक कुर्सी पर सुलतान बैठा था।

"तै जा यहां ते... ।" वह सुलतान को घूरते हुए बोला।

सुलतान पहले तो हड़बड़ाया... फिर कुर्सी छोड़ कर उसकी तरफ पीठ कर वहां से चला गया।

चंदगी राम चौटाला वापिस मुड़ा... दरवाजे में प्रविष्ट हुआ और कालिया पठान की तरफ बढ़ते हुए बोला... "इस कमरे में मन्ने एक कमी नजर आई सै कालिया पठान साब... पैंला मैं उस कमी को दूर करूंगा... ताकि दुस्मन कमरे के करीब भी न पहुंच पाये।

"कैसी कमी... ?" चौंका कालिया पठान।

"थम दरवाजा बन्द करो... थमने बेरा पाट जाएगा।"

कालिया पठान के चेहरे पर उलझन उभरी... । कमी की बात करके चंदगी राम चौटाला ने उसका कलेजा धड़का दिया था।

उसने उंगली को हल्की सी जुम्बिश दी।

तुरंत दरवाजा बंद हो गया।

तब तक चंदगी राम चौटाला उसके काफी करीब आ चुका था।

"अब बताओ क्या कमी नजर आई तुम्हें... ?" कालिया पठान बोला।

"मान लो काली सिंह के आदमियों ने थारे आड्डे पै हमला कर दिया...अरे थमने कमरे को यूं बंद कर दिया... ।"

"तो... ।"

"तो यह कि थम खुद भी तो कमरे में बंद हो गए। ईब थम कमरे से बाहर नहीं निकड़ सकते।"

हंस पड़ा कालिया पठान... ।

"मेरे यहां से सुरक्षित निकलने का रास्ता है चौटाला... ।"

चंदगी राम चौटाला ने हैरानी जताई—"मन्ने तो कोई रास्ता नजर नई आ रिया।" वह बोला—"रास्ता नीचे बेसमेंट में है।"

"अच्छा... ।"

"हां...इस कुर्सी पर बैठे-बैठे मैं नीचे पहुंच सकता हूं... नीचे एक कमरा है... उसी में एक गली है जो कि कोठी के पीछे बने एक मकान तक पहुंचती है... ।"

"य... यानि सुरंग... ।"

"हां... सुरंग... ।" कालिया पठान बोला—"सुरंग से होकर मैं आसानी से यहां से निकल सकता हूं।"

सहसा ही चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान नाच उठी। आंखों में मक्कारी के कीड़े उठ खड़े हुए।

पलक झपकते ही उसने रिवाल्वर निकाली और कालिया पठान पर तान दी।

"जै राम जी की... ।"

उसने नारा लगाया और ट्रिगर दबा दिया।

गोली सीधा कालिया पठान के हैरानी से खुल चुके मुंह में घुसी और हलक फाड़ती हुई कुर्सी की पुश्त में जा धंसी।

समझ भी नहीं पाया था कालिया पठान कि चंदगी राम चौटाला क्या करने जा रहा है कि वह अल्लाह को प्यारा हो गया।

चंदगी राम चौटाला के होठों से भयानक कहकहा फूट पड़ा।

"हा-हा-हा... देख्या कालिया पठान... इसे कहते हैं भेड़िया की चाल... कितनी आसानी से मैंने तेरी सारी दौलत पै कब्जा कर लिया अर तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाया।"

कुछ देर तक वह रिवाल्वर हाथ में पकड़े अट्टहास लगाता रहा... फिर उसने रिवाल्वर की नाल में फूंक मारी और आगे बढ़ कर कालिया पठान की लाश को बगल से पकड़ कर उसने कुर्सी से परे फैंक दिया तथा स्वयं कुर्सी पर बैठ गया।

"बेवकूफ था तू जो मन्ने अपने कमरे के बारे में बता दिया... वर्ना मैं तो कुर्सी पै बैठे-बैठे ही तेरे पै रिवाल्वर तान देता... अर तन्ने मारने की जगह खुद ही मर जाता।"

वह लाश को देखते हुए बोला।

और फिर उसने अपना दायां हाथ ठीक उस स्थान पर रखा जहां पर कि कालिया पठान रखता था... उसने अपनी उंगलियां हत्थे के निचली साईड में की तो उसे अपनी उंगलियों से छोटे-छोटे कील से लगते महसूस हुए...।

निश्चय ही वे कील कमरे के तमाम मैकेनिज्म के पुश थे।

चंदगी राम चौटाला ने एक कील को उंगली के पोर से हल्का सा दबाया।

तुरंत कमरे का दरवाजा खुल गया।

उसने फौरन उस कील को पुनः दबाया।

दरवाजा पुनः बंद हो गया।

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया और अगला कील दबा दिया।

उसी पल उसके सामने वाली कुर्सी पीछे पलट गई तथा पीछे से जमीन में से भाला निकलकर कुर्सी की पुश्त को फाड़ता हुआ ऊपर आ गया।

चंदगी राम चौटाला ने उस कील को पुनः दबा दिया।

कुर्सी पुनः यथा स्थान आ गई... भाला वापिस जमीन में गायब हो गया।

तत्पश्चात उसने तीसरा कील दबाया।

कुर्सी लिफ्ट की तरह नीचे धंसने लगी।

उसी के साथ ही चंदगी राम चौटाला भी नीचे जाने लगा।

कुछ ही देर में वह करीब दस बाई दस फीट के कमरे में कुर्सी

पर बैठा हुआ था।

वह कुर्सी पर बैठे-बैठ ही कमरे में इधर-उधर निगाहें घुमाने लगा।

कमरे की दाईं बाईं दीवार पर एक स्विच बोर्ड लगा था जिसमें कि छः स्विच लगे थे। जबकि वह बिजली का सिर्फ एक ही प्वाईंट था... जो कि छत में लगा हुआ था... । सौ वाट का बल्ब लगा हुआ था उस प्वाईंट में। स्विच बोर्ड के आगे एक कुर्सी रखी थी जिसका रुख दीवार की तरफ था।

बस उस कुर्सी के अलावा कमरे में और कुछ भी नहीं था। उस सुरंग का दरवाजा भी नजर नहीं आया जिसके बारे में कालिया पठान ने उससे कहा था... ।

चंदगी राम चौटाला कुर्सी से उतरा और उस स्विच बोर्ड की तरफ बढ़ गया।

स्विच बोर्ड के सामने आकर वह ठिठका... फिर कुछ पलों तक सोचता रहा... फिर उसने पहला स्विच आन कर दिया।

तुरंत प्रतिक्रिया सामने आई।

स्विच बोर्ड के ऊपर करीब डेढ़ फीट की दीवार एक तरफ हट गई तथा उसके पीछे उसे टी०वी० स्क्रीन नजर आने लगी।

उसने दूसरा स्विच आन किया।

टी०वी० स्क्रीन रोशन हो उठी... । तथा उस पर उसे ऊपर वाले कमरे का दृश्य नजर आने लगा।

कमरे के बीच कालिया पठान की लाश... वह सारा सामान जो कि कालिया पठान के तमाम अड्डों से आया था उस स्क्रीन पर नजर आ रहा था।

"पट्ठे ने घना बढ़िया बंदोबस्त कर रख्या है।" वह मुस्कुराते हुए बड़बड़ाया।

उसने तीसरा बटन दबाया... ।

टी०वी० स्क्रीन पर कमरे की दीवारों में से स्टेनगनों की नालें बाहर निकल आईं।

बिना परवाह किये उसने पांचवा बटन दबा दिया।

स्टेनगनों की नालों में से चिंगारियां निकलने लगीं

हड़बड़ा कर चंदगी राम चौटाला ने तुरंत वह बटन बंद कर दिया। उसी के साथ ही स्टेनगनों ने आग उगलनी बंद कर दी।

और फिर उसने आखिरी बटन दबाया।

तुरंत उसके बाईं तरफ घर्र-र्र की हल्की सी आवाज़ उभरी।

उसने गर्दन उधर घुमाई... ।

दीवार का एक विशेष हिस्सा एक तरफ हट रहा था।

चंदगी राम चौटाला ने बाकी के बटन बंद किये... उसी के साथ ही टी०वी० स्क्रीन गायब हो गई... । और फिर वह दीवार में पैदा हुए रिक्त स्थान की तरफ बढ़ा।

बिना किसी हिचकिचाहट के वह उसमें प्रवेश कर गया।

अभी उसने दो कदम ही आगे बढ़ाये थे कि घर्र-र्र की आवाज पुनः उभरी।

तुरंत रिवाल्वर निकाल कर पीछे मुड़ा।

दीवार अपने स्थान पर आ गई थी... साथ ही वहां रौशनी फैल गई।

एक पल को तो चंदगी राम चौटाला घबरा गया... वह यही समझा कि वह एक चूहे की भांति वहां फंस गया है। मगर शीघ्र ही उसने स्वयं को सम्भाल लिया और वापिस मुड गया।

करीब चालीस पैंतालीस फीट लम्बी सुरंग नुमा गैलरी थी वह।

रिवाल्वर हाथ में लिये वह आगे बढ़ने लगा।

गैलरी के अंत में पहुंच कर वह ठिठका।

सामने सपाट दीवारें थी। लेकिन वह घबराया नहीं... वह समझ गया था कि वहां भी दीवार को हटाने का कोई मैकेनिज्म होगा... ।"

शीघ्र ही उसकी निगाहों में वह कील उभर आया जो कि दाईं तरफ कौने में लगा हुआ था।

वह कील के करीब पहुंचा और उसने भीतर की तरफ दबाया।

पहली ही कोशिश कामयाब रही। दीवार का आधा हिस्सा बाकी के आधे हिस्से के बीच धंस गया।

सामने ऊपर को जाती सीढ़ियां नजर आने लगीं।

चंदगी राम चौटाला आगे बढ़ा और सीढ़ियां चढ़ने लगा।

कुछ ही देर में वह साधारण ढंग से सजे एक कमरे में था।

उसने कमरे में इधर-उधर देखा... फिर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

वह दरवाजा खोल कर बाहर निकला तो खुद को छोटे से बरामदे में खड़ा पाया... । सामने आंगन था तथा आंगन के अंत में उस मकान का मुख्य दरवाजा।

चंदगी राम चौटाला आगे बढ़ा और आंगन पार करके दरवाजे के पीछे आ खड़ा हुआ।

उसने कुण्डा खोल कर दरवाजा खोला और बाहर सड़क पर आ कर दायें बायें देखा। शीघ्र ही वह समझ गया कि वह कालिया पठान

Scanned by CamScanner

की कोठी के पीछे सड़क पार के मकान के बाहर खड़ा है।

कुछ देर इधर उधर देख कर वह पुनः भीतर प्रवेश कर गया। उसने कुण्डा लगाया और जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से वापिस सुरंग के अंत में आ गया।

कालिया पठान के विशेष कमरे के बेसमेंट में आने के लिए उसे सुरंग के कोने में बिल्कुल वैसी ही कील के दर्शन हुए जैसी उसने सुरंग के आखिरी सिरे पर दबाई थी।

उसने कील को दबाया।

तुरंत परिणाम सामने आया। दीवार एक तरफ को हट गई और वह बेसमेंट में प्रवेश कर गया।

स्विच बोर्ड के सामने आकर उसने आखिरी स्विच को ऑफ कर दिया।

सुरंग का रास्ता बंद हो गया।

वह वापिस कुर्सी पर आ बैठा और फिर कुर्सी की हत्थी के नीचे के उस कील को दबाया जिसे दबाकर वह नीचे आया था।

कुर्सी लिफ्ट की तरह ऊपर उठने लगी।

कुछ ही देर में वह वापिस उसी कमरे में कालिया पठान की लाश के करीब कुर्सी पर बैठा था।

वह कुर्सी से उठा... कालिया पठान की लाश के करीब आया और उसे उठाकर कुर्सी पर बिठा दिया।

तत्पश्चात वह स्वयं लाश की गोद में बैठ गया और फिर उसने कील को उंगली के पोर से दबा दिया।

कुर्सी पुनः भीतर धंसने लगी। उसके साथ ही वे दोनों भी नीचे जाने लगे।

नीचे बेसमेंट में आकर मंदगी राम चौटाला कालिया पठान की लाश को गोद से नीचे उतारा और फिर लाश को खींच कर कुर्सी से उतारा... तथा उसे घसीटते हुए कमरे के कोने में ले जाकर छोड़ दिया।

"इब तू आडे (यहीं) ही आराम कर। मैं चला...।"

वह मुस्कुरा कर बोला और फिर स्विच बोर्ड की तरफ बढ़ गया।

स्विच बोर्ड के सामने आ कर उसने सुरंग वाला बटन दबाया और फिर उसमें से होता हुआ सड़क पार के मकान में आ गया।

वह मकान से बाहर निकला और दरवाजा बंद करके कुण्डा लगा कर दाईं तरफ मुड़ा तथा आगे बढ़ने लगा। कुछ ही देर में वह उस सड़क पर था जिस पर कि कालिया पठान की कोठी थी।

बिना किसी हिचकिचाहट के वह कोठी की तरफ बढ़ा और चलता

हुआ फाटक के सामने आ गया।

फाटक पर खड़े दरबानों को उसकी हैसियत का पता चल चुका था... तो उन्होंने तुरंत उसके सम्मान में सिर झुका लिये।

शान से चलता हुआ चंदगी राम चौटाला ड्राइव वे पार कर कम्पाउंड में पहुंचा और फिर कुछ ही देर में वह हाल में खड़ा नजर आ रहा था।

"सुलतान... ।"

उसने आवाज लगाई।

आधे मिनट में ही सुलतान उसके सामने था। सख्त हैरानी के भाव थे उसके चेहरे पर।

मन ही मन मुस्कुरा पड़ा चदंगी राम चौटाला... वह समझ रहा था कि सुलतान हैरान क्यों हो रहा है। अवश्य ही वह यही सोच रहा था कि वह बाहर से कोठी में कैसे आ गया... जबकि वह तो कालिया पठान के साथ कमरे में था।

बिल्कुल यही सोच रहा था सुलतान।

चंदगी राम चौटाला ने उससे उसकी हैरानी का कारण नहीं पूछा और बोला—

"मैं काली सिंग के आड्यां का पता करने जा रिया सूं... तू पच्चीस आदमियों ने तैयार होने को कै दे।"

सुलतान ने हड़बड़ा कर सिर हिलाया।

"जीब (जब) भी मैं वापिस लौटूं... मन्ने आदमी तैयार मिलने चाहिये... ।"

"अ...आप निश्चिंत रहे चौटाला साहब... ।" तुरंत बोला सुलतान।

"कालिया पठान साहब अपने कमरे मैं सैं... मैंने उनको कमरा बंद करने को कै (कह) रखा सै।" सुलतान ने सिर हिलाया।

और फिर कुछ एक और हिदायतें देने के पश्चात चंदगी राम चौटाला दरवाजे की तरफ बढ़ गया। इस वक्त उसके होठों पर एक धूर्त मुस्कान नाच रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

"कहां थे सुबह से... ?" चंदगी राम चौटाला के कमरे में प्रवेश करते ही काली सिंह नाराजगी भरे स्वर में बोला—"जानते हो सुबह से छः बार तुम्हारे फ्लैट पर मेरे आदमी जा चुके हैं... ।"

मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला और उसके सामने आकर कुर्सी पर बैठ गया।

"थारे ही काम में लाग्या हुआ था सिंग साब... ।" वह बोला।
"कैसा काम ... ?" सीधा होकर बैठते हुए बोला काली सिंह।
"कालिया पठान के किसी और आड्डे का पता लगान गया था।"
"फिर... पता लगा किसी अड्डे का... ?"
"वह तो बताऊंगा ही... पर पैंला थम बताओ... क्या किया रात को... कित्ता एक माल मिला कालिया पठान के मुखर्जी नगर वाले आड्डे ते ?"

काली सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—
"माल तो काफी मिला हमें... लेकिन हमसे एक उस माल से कीमती चीज बिछुड़ गई।"
"कै... (क्या)?"
"जंगावर... ।"
"चंदगी राम चौटाला ने तुरंत उधर देखा जहां पर कि जंगावर खड़ा होता था।
"वो अब नहीं रहा... ।" तभी बोला काली सिंह... ।
बुरी तरह से उछल पड़ा चंदगी राम चौटाला।
"यू... यू के कह रिये सो थम (यह क्या कह रहे हैं आप)?"
"वह मर गया है।"
"ओह... ?"
"पता नहीं किस हरामज़ादे ने उसकी हत्या कर दी।"
चंदगी राम चौटाला मन ही मन हंस पड़ा... ।" वो हरामजादा तेरे सामने बैठा है।" वह मन ही मन बोला।
"इ... ईसा कीसे हो गया... जंगावर की हत्या किसने कर दी।"
"कालिया पठान के किसी कुत्ते के अतिररिक्त और कौन कर सकता है... अपनी कार में मरा हुआ पाया गया था वह... किसी ने धोखे से छिपकर उस पर गोली चलाई... और उस वक्त उसके पास भी कोई नहीं था।"
"ओह। यह तो घना जुल्म हो गया थारे साथ... ।"
गम्भीरता का आवरण ओढ़ते हुए बोला चंदगी राम चौटाला।
काली सिंह ने एक लम्बी सांस छोड़ी और बोला—
"रात को जंगावर का साथ हमसे छूट गया... लेकिन जाते-जाते भी वह हमारी झोली में तीन करोड़ का माल डाल गया... मुखर्जी नगर वाले अड्डे से हमें लगभग इतनी ही कीमत का माल मिला है।"
चंदगी राम चौटाला हिचकिचाया।
"मैं जानता हूं तुम क्या कहना चाहते हो... उसकी चिंता मत

करो तुम... दस प्रतिशत के हिसाब से तुम्हें तीस लाख मिल जाएंगे।"

"थैंक्यू... ।" चंदगी राम चौटाला ने दांत दिखाये।

"लेकिन पैसे तुम्हें कल मिलेंगे।"

"उसकी कोई बात नई... थमने कै दिया... समझ लो पीसे (पैसे) मन्ने मिल गए... मन्ने थम पै पूरा एतबार सै।"

"तुम्हारे ऐतबार को चोट नहीं पहुंचेगी।"

चंदगी राम चौटाला ने सिर हिला दिया।

"अब बताओ... क्या पता लगा कर आये हो तुम...? जंगावर की मौत से मैं इस कदर उत्तेजित हो उठा हूं कि मैंने कसम उठा ली है कि जब तक कालिया पठान के पास एक रुपया भी बचा होगा... मैं उस पर हमला करता रहूंगा। उसके आखिरी साथी को खत्म करके ही मैं चैन की सांस लूंगा।"

"राम जी थारी कसम पूरी करें।"

चंदगी राम चौटाला ने उसके लिए दुआ मांगी।

"अब बोलो... क्या पता लगा कर आये हो।"

गहरी सांस छोड़ी चंदगी राम चौटाला ने और संजीदा होते हुए बोला—

"कालिया पठान ने घनी समझदारी दिखा दी सै... ।"

"कैसी समझदारी...?"

"उसने आपना सारा माल आपने खास कमरे में रखवा दिया सै।"

"क्या...?" चौंका काली सिंह... ।

"अर अपनी कोठी को किला बना दिया सै... ।"

"ओह।" काली सिंह का चेहरा उतर गया—"फिर तो हम अब उसके किसी अड्डे को नहीं लूट सकते... ।"

"उसका तो ईब एक ही अड्डा है... उसकी कोठी... जेकर वह लुट जाए तो समझ लो उसका राम नाम सत्य हो जायेगा।"

"और उसकी कोठी को तुमने अभी-अभी कहा है कि उसने किला बना डाला है।"

"हां... कहा तो सै।"

"फिर कैसे बात बनेगी?"

"थम फिक्र न करो... मैं जल्दी ही कोई ऐसा रास्ता ढूंढ निकालूंगा जिस्से कि थम उसकी कोठी पै आसानी से कब्जा कर लो।"

"क्या ऐसा हो सकता है?"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान नाच उठी।

"मैंने थम को कालिया पठान की कुर्सी पर बिठान का वादा किया

हुआ सै... अर चंदगी राम चौटाला आपना दिया हुआ वादा पूरा करके ही चैन की सांस लेवे सै...।"

काली सिंह का चेहरा खिला उठा।

"मैं आज रात हद कल रात तक कोई ईसा रास्ता निकाड़ लूंगा... बस थम यूं समझ लो कि परसों थमने उसकी कोठी पै हमला करना सै।"

"तुम चिन्ता मत करो... मेरे आदमी पूरी तरह से तैयार मिलेंगे तुम्हें।"

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया और जेब से बीड़ी का बण्डल निकाल लिया।

□□□

□□□

रात बारह बजे चंदगी राम चौटाला कालिया पठान की कोठी पर पहुंचा तो उसे हाल कमरे से पच्चीस आदमियों के साथ सुलतान खड़ा उसका इंतजार करता नजर आया।

सभी आदमी स्टेनगनों से लैस थे।

"बड़ी देर लगा दी आपने चौटाला साहब...।" उसके आते ही सुलतान उसके सामने आते हुए बोला।

चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया... और हाल में रखी एक मात्र कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

"दुस्मन के घर में घुसन खातर रास्ता तलास करने में देर तो लग ही जावे सै।"

सुलतान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"थम सारे तैयार हो।" उसने वहां खड़े आदमियों पर निगाहें घुमाईं।

"जी हां चौटाला साहब...।" उनकी जगह सुलतान बोला... सभी तैयार हैं... बस उसके आदेश की प्रतीक्षा की जा रही है।"

"पटेल नगर में काली सिंग का एक घना बड़ा अड्डा सै... कम से कम पांच करोड़ का माल मिलेगा ओडे ते... आज रात हमने वह अड्डा लूटना सै।"

सभी के सिर एक साथ हिले।

"अर एक बात कान खोल के सुन लो—" सहसा ही चंदगी राम चौटाला का स्वर क्रूरता से भर उठा—"जालिम सिंग का मन्ने बेरा नईं था कि वह थारे से कीसे पेस आवे था... मगर मन्ने हार बर्दास्त नईं... जेकर कोई भी ओडे (वहां) ते डर के भागा तो पीछे खड़ा मैं उसके

सीने पा गोली उतार दूंगा। मन्ने हर हाल मां जीत चाहिये... ।"

उसके स्वर की क्रूरता भांप करीब खड़े सुलतान का कलेजा कांप उठा।

"अ...आप निश्चिंत रहिये चौटाला साहब...हम मरते मर जायेंगे...लेकिन पीठ नहीं दिखायेंगे।"

"साबास... ।" मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला—"मन्ने थारे से ईसी ही उम्मीद थी।"

और फिर करीब आधे घण्टे बाद कोठी में से तीन गाड़ियां बाहर निकलीं।

सबसे आगे मैटाडोर वैन थी... उसके पीछे सैलो कार जिसमें कि चंदगी राम चौटाला बैठा था तथा उसके पीछे एक और मैटाडोर वैन थी।

बाहर आते ही तीनों गाड़ियां लाईन में पटेल नगर की तरफ दौड़ने लगीं।

□□□

□□□

पटेल नगर के सी ब्लाक के चौराहे के करीब तीनों गाड़ियां आगे पीछे रुकी।

आनन फानन दोनों मैटाडोर के दरवाजे खुले और उनमें से सुलतान तथा उसके पच्चीस आदमी बाहर निकले और सैलो कार के करीब आकर खड़े हो गए।

सभी के बाहर आ जाने के पश्चात् चंदगी राम चौटाला दरवाजा खोल कर बाहर आया और सुलतान की तरफ देखते हुए उसने रोड लाईट की तरफ इशारा किया—

"इस लाईट ने बुझा दे।"

तुरन्त एक आदमी ने सड़क के किनारे से पत्थर उठाया और पोल के ऊपर दूधिया रोशनी बिखेर रही टयूब लाईट को निशाना लेकर पत्थर फैंका।

'फटाक' की आवाज के साथ टयूब लाईट छोटी-छोटी किरचों में तब्दील हो नीचे आ गिरी। उसी के साथ ही वहां अंधेरा फैल गया।

"ईब ठीक सै... ।" चंदगी राम चौटाला संतुष्टि से सिर हिलाकर बोला।

तत्पश्चात उसने सुलतान की तरफ देखा और बोला—

"पैंतीस नम्बर से उस कोठी का जिसमें काली सिंग का चरस अर अफीम का माल भरया पड़ा सै। अर वह सारा माल थमने ले के

आना सै...अर एक बात और सुन लेयो...काली सिंग का एक भी आदमी जिंदा नई रहना चाहिये...खत्म कर देना है सभी ने।"

सुलतान ने सहमति में सिर हिलाया।

और फिर तीन अलग-अलग ग्रुपों में बंट कर सभी उस कोठी की तरफ बढ़ने लगे जिसमें कि काली सिंह का माल पड़ा था।

उनके वहां से जाते ही चंदगी राम चौटाला वहां से हटा और निरूद्देश्य ही इधर-उधर घूमने लगा...।

शीघ्र ही उसके कानों में स्टेनगनों से गोलियां छूटने की आवाजें टकराने लगीं। एक भयानक मुस्कान नाच उठी उसके होठों पर...आंखों में पैशाचिक चमक उभर आई।

"शाबास भेड़िया...।" वह बड़बड़ाया—"बस थोड़ा सा सब्र और कर ले...फिर तू अण्डरवर्ल्ड का इकलौता राजा हौवेगा।

कालिया पठान तो गया... मकबूल हुसैन तो उससे पैंला ही चला गया...ईब बचा सै काली सिंग कल रात को उसी की जै राम जी की हो जायेगी...फिर तू होगा सिर्फ तू...।"

मन ही मन बड़बड़ाया।

❑❑❑

❑❑❑

सिर्फ आधा घण्टा लगा सुलतान और उसके साथियों को काली सिंह का अड्डा तबाह करने...उसके आदमियों को मारने तथा वहां से सारा माल लूट कर गाड़ियों में पहुंचाने में।

तब तक चंदगी राम चौटाला भी वापिस आ चुका था।

सो जैसे ही सभी आदमी गाड़ियों में सवार हुए...तीनों गाड़ियां वहां से तोप से छूटे गोले की तरह भाग निकलीं।

रात के तीन बजे गाड़ियां कालिया पठान की कोठी में प्रविष्ट हुई।

चंदगी राम चौटाला ने सुलतान को सारा माल एक अलग कमरे में रखने का आदेश देकर पूरी तरह से चौकस रहने को कहा और कोठी से बाहर निकल कर कुछ दूर पैदल चला फिर एक टैक्सी पकड़ी और पश्चिम विहार की तरफ रवाना हो गया।

साढ़े तीन बजे वह अपने फ्लैट में प्रविष्ट हुआ।

आनन-फानन उसने अपने कपड़े उतारे और रजाई में दुबक गया।

अभी उसे रजाई में दुबके दस मिनट ही हुए थे कि काल बैल बज उठी।

चंदगी राम चौटाला के होठों पर भयानक मुस्कान नाच उठी। ठीक वक्त पर वह फ्लैट में पहुंचा था।

कालबैल के जवाब में उसने हांक नहीं लगाई। बल्कि वैसे ही घूग्गू बन कर पड़ा रहा।

कुछ देर बाद पुनः काल बैल चिंघाड़ी।

"रे कौन सै...?"

वह ऊंचे स्वर में बोला।

"दरवाजा खोलो... !" बाहर से तीखी आवाज आई।

चंदगी राम चौटाला रजाई से बाहर निकला और आगे बढ़ कर दरवाजा खोल दिया।

सामने ठिगने कद का एक आदमी खड़ा था।

चंदगी राम चौटाला ने उसे खा जाने वाली निगाहों से देखा—

"कैसे...?" काट खाने वाले अंदाज में बोला वह।

ठिगना पहले तो हड़बड़ाया... फिर सम्भलते हुए बोला...।

"सिंह साहब ने तुम्हें बुलाया है।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर मुस्कान आकर लुप्त हो गई।

"यह भला कोई टैम सै बुलान का...?" प्रत्यक्षतः वह बोला—"ईसी क्या आफत आ पड़ी सै कि मन्ने ईबी मिलन खातर मरे जा रहे सै....।"

"कालिया पठान ने सिंह साहब के अड्डे पर हमला कर दिया है।"

"क्या...?" बुरी तरह से उछला चंदगी राम चौटाला।

"उन्होंने इसी वजह से तुम्हें फौरन याद किया है।"

"ठीक है... तू भीतर बैठ... मैं कपड़े पहन के तेरे साथ ही चलता सूं।"

ठिगना भीतर प्रवेश कर गया।

चंदगी राम चौटाला अपने कपड़ों के करीब आया और इस तरह कपड़े पहनने लगा जैसे वह बहुत जल्दी में हो और काली सिंह से मिलने को मरा जा रहा हो।

□□□

□□□

काली सिंह का चेहरा देखकर मन ही मन चंदगी राम चौटाला जोरों से हंस पड़ा।

बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे वह अभी रो पड़ेगा।

"यह-यह कैसे हो गया सिंग साब...?"

"करीब आकर अफसोस प्रकट करते हुए चंदगी राम चौटाला उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए बोला।

काली सिंह ने उसकी तरफ देखा—"तुम बताओ... कैसे हुआ यह सब... ?"

"हड़बड़ाया चंदगी राम चौटाला—"मैं भला के बता सकूं सूं... मैं तो अपने फ्लैट में सो रिया था।"

"मैं वो नहीं कह रहा... मैं यह पूछ रहा हूं कि कालिया पठान को मेरे अड्डे का पता कैसे लगा?"

"मन्ने क्या बेरा।"

काली सिंह का दिल किया कि वह अपने बाल नोचने लगे। यह तो वह ही जानता था कि किस तरह वह खुद को सम्भाले हुए था।

"थारा कौन सा अड्डा लूटा कालिया पठान ने ?" तभी पूछा चंदगी राम चौटाला ने।

"पटेल नगर वाला... पूरे पांच करोड़ की चोट लगी है मुझे... साथ में मेरे दस आदमी भी मारे गए।"

"ओह। पर थमने कैसे बेरा लग्या... ?"

"फोन आया था मेरे आदमी का... बेचारा पूरी बात भी नहीं बता पाया कि हरामजादों ने उसे गोली से उड़ा दिया... मैंने फोन पर उसकी चीख की आवाज सुनी थी।"

"फिर... ?"

"मैंने फौरन अपने कुछ आदमियों को पटेल नगर रवाना कर दिया... लेकिन वे उनके वहां पहुंचने से पहले ही सब कुछ लूट कर ले जा चुके थे।"

"यह तो भला जुल्म हो गया थारे साथ...!"

"मैं तो यह सोच-सोच कर परेशान हो रहा हूं कि कालिया पठान को मेरे उस अड्डे का पता कैसे लगा ?"

कहकर उसने चंदगी राम चौटाला की तरफ देखा—"कुछ सोचो चौटाला... ताकि वक्त रहते कुछ किया जा सके।"

चंदगी राम चौटाला गहरी सोचों में डूब जाने का नाटक करने लगा। सोचने के साथ-साथ उसने एक बीड़ी भी सुलगा ली थी।

तभी वह एकाएक उछल पड़ा।

"हे राम जी... यह क्या सोच बैठ्या मैं...।"

"क्या हुआ... ?" उसे उछलते देख चौंका काली सिंह।

चंदगी राम चौटाला ने उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाईं और बोला—

"जो कुछ मेरे दिमाग में आया सै... जेकर वह सही सै तो घना खतरनाक सै।"

"क्या आया है तुम्हारे दिमाग में ?"

चंदगी राम चौटाला ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"थमने कहा था न कि जंगावर की किसी ने हत्या कर दी है।"

"तो... ?"

"किसने की सै उसकी हत्या ... ?"

"कालिया पठान के कुत्तों के अलावा कौन कर सकता है।" मुंह बिगाड़ कर बोला काली सिंह... ।"

"वही मैं सोच रिया सूं... ।"

"तो फिर इसमें खतरनाक कहां से आ गया... ?"

"जरा गहराई से सोचिये सिंह साब... थमने बेरा पाट जायेगा कि कीसे खतरनाक हो गई यह सोच... ।"

काली सिंह सोचने लगा। लेकिन लाख सिर खपाने के बावजूद भी उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

"मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया... ।" आखिर हार कर वह बोला—"तुम बोलो... कैसे खतरनाक हो गई यह सोच... ।"

चंदगी राम चौटाला ने पुनः गहरी सांस छोड़ी... बीड़ी का सुट्टा लगाया और नाक से धुएं की दोनाली छोड़ दी।

"सिंग साब... ।" वह बोला—"थमने कहा था कि जंगावर को किसी ने कार में घुस के मारा सै।"

"वो तो साफ जाहिर होता है... कार में लाश पड़ी थी उसकी।"

"पर मन्ने तो लगे सै कि कालिया पठान के आदमी ने उससे खूब बातें करके ही उसको मारा सै।"

"क्या मतलब... ?"

"थम कह रिये सो कि थारे आड्या का बेरा कालिया पठान को नई... फिर उसने थारे पटेल नगर वाले अड्डे का बेरा कीसे पाट गया... ।"

"वही तो पूछ रहा हूं मैं।"

"जंगावर से पता लगाया उसने... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा काली सिंह... ।" त... तुम... यह कहना चाहते हो कि... ।"

"हां... मैं यह ही कैना चाहूं सूं कि कालिया पठान के आदमी ने पैला जंगावर से थारे अड्डे की जानकारी ली... फेर उसको खत्म कर डाला।"

काली सिंह के चेहरे का रंग उड़ गया... ।

"बड़ी खतरनाक बात कह रहे हो तुम... । अगर तुम्हारी सोच सही है तो फिर कालिया पठान ने उससे मेरे तमाम अड्डों की जानकारी

ली होगी।"

"जबी तो मैं कैं रिया सूं कि मैं घना खतरनाक सोच रिया सूं।"

"और तुम्हारी सोच में पूरा वजन भी है।"

"सो तो है।"

"मगर एक बात पर तुम्हारी सोचों को मानने को दिल नहीं करता... ।"

"कै... ?"

"अगर कालिया पठान के आदमी ने पूरी पूछताछ के पश्चात जंगावर को खत्म किया था तो फिर उसने अपने अड्डे को बचाने की कोशिश क्यों नहीं की जबकि उस वक्त उसके अड्डे पर हमारे आदमी गोली बारी कर रहे थे।"

"बड़े भोले हो थम सिंग साब... ।"

"वो कैसे... ?"

"थमने उसका कित्ता माल लूटया... ।तीन करोड़ का न... ?"

"हां... ।"

"अर उसने थारा पांच करोड़ का माल लूट लिया... अर कल को फिर किसी आड्डे पै धावा बोल के और लूट लेगा... परसों ने फेर लूट लेगा... जबकि जेकर वा अपने उस आड्डे को बचान की कोसिस करता तो उसके मारे जान को पूरा चांस था। जबकि उसका जिंदा रहना कालिया पठान खातर घना फायदेमन्द था... क्योंकि जेकर वा मर जाता तो उसके साथ ही थारे सारे आड्या के पते भी मर जाते... खुद को जिंदा राख (रख) कै उसने कालिया पठान से घनी वफादारी निभाई सै।"

काली सिंह के चेहरे पर फिर से बेचैनी उभर आई। उसने जोरों से थूक निगली और फंसे स्वर में बोला—

"फिर तो वह कल को फिर हम पर हमला कर सकता है।"

"जेकर मेरी बात... मेरी सच सही सै तां।"

"तुम्हारी सोच बिल्कुल सही है।" काली सिंह बोला—"बिल्कुल इसी तरह ही पता लगा है कालिया पठान को।"

"तो फिर कल ने थारे आड्डे पै फिर हमला होवेगा... ।"

इधर चंदगी राम चौटाला मन ही मन उसकी बेचैनी देखकर ठहाके लगा रहा था।

"फंसा... ।" वह मन ही मन बड़बड़ाया।

काली सिंग ने होठों पर जुबान फेरी और आंखों में व्याकुलता लिये हुए बोला—

"इस तरह तो वह मुझे तबाह बर्बाद कर डालेगा।"

"यू के कै रिये सो थम (यह क्या कह रहे हैं आप) चौटाला के होते हुए कोई थमने छू भी जाये... ईसा कीसे हो सके सै।"

"छू क्या गया... वह तो मुझे थूक लगाकर कर चला गया... और तुम छूने की बात कर रहे हो।"

"जीब मन्ने बेरा नईं था... इस तरफ मैंने सोच्या भी नईं था।"

"अब तो सोच लिया है... अब बोलो क्या करोगे तुम... ?"

"सहसा ही चंदगी राम चौटाला का चेहरा सख्त होता चला गया... उसकी आंखों में दरिंदगी भरती चली गई।

"ईब तो मामला इधर होवैगा या उधर...।"

"क्या मतलब...?"

"थम फिक्र मत करो सिंह साब... मामला इधर ही होगा... थारी तरफ... ।""

"तुम... कहना क्या चाहते हो...?"

"कालिया पठान की तरह थम भी अपना सारा माल आडे (यहां) इकट्ठा कर लेवो और इसपै सख्त पहरा बिठा दो।"

"यानि मैं भी... ।"

"हां...।"

"लेकिन... लेकिन इससे तो मुझे ही नुकसान होगा।"

"वह कैसे?"

"बेशक हमने कालिया पठान को काफी चोटें दी हैं... लेकिन फिर भी वह ताकत में हमसे ज्यादा है... अगर उसे इस बात की भनक भी लग गई कि मेरा माल एक ही जगह पर इकट्ठा हो गया है तो वह पूरी ताकत के साथ मुझ पर हमला कर देगा... फिर चाहे उसके सौ आदमी ही क्यों न मारे जायें... वह मुझे खत्म करके तथा मेरा माल लूटकर ही पीछे हटेगा।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच उठी।

"थम फिक्र ना करो सिंह साब... इससे पैला (पहले) कि वह थारे पै हमला करें थम उसपै हमला कर देना...।"

"लेकिन...?"

"मैं आज रात ही उसके उस कमरे की खासियत जान लूंगा।"

"क्या मतलब...?" चौंका काली सिंह।

चंदगी राम चौटाला ने गहरी सांस छोड़ी।

"थम से (आपसे) हाथ मिलाया सै... थमने मन्ने छाती से लगाया सै... अर चंदगी राम चौटाला एक बार जिसने आपना कै (कह) दे... । उसकी खातर जान देने से भी पाछे न हटे... उसकी खातर वह भगवान

से भी लड़ पड़े।"

"तुम... कहना क्या चाहते हो...?"

चंदगी राम चौटाला ने पुनः सांस छोड़ी।

"थारी खातर आपने असूल तोड़ने जा रिया सूं... कालिया पठान से गद्दारी करूंगा मैं... उसके उस खास कमरे की जानकारी हासिल करूंगा... ताकि थमनें उसको मारने में कोई खास दिक्कत न आवै।

काली सिंह की आंखें चमक उठी।

"तुम करोगे ऐसा...?" जैसे उसे विश्वास न हो रहा हो।

"आज ही करूंगा। थम आपना सारा माल आड़े (यहां) जमा कर लेवो—मैं दस बजे उसके धौरे जाऊंगा... ।"

काली सिंह की आंखों की चमक कई गुना बढ़ गई।

कालिया पठान की राजगद्दी उसे अपनी आंखों के सामने नाचने लगी।

अब उस बेचारे को क्या मालूम कि जिसे वह अपना समझ रहा... वह असल में एक धोखेबाज... मीर मलीफ शैतानी आत्मा है जिसने धोखा देने में धर्मराज को भी नहीं बख्शा था।

और फिर काली सिंह को खूब लम्बे बांस पर चढ़ा कर उसकी आंखों में हसीन सपने भर कर चंदगी राम चौटाला उसके पास से उठा और उसकी कोठी से बाहर आ गया।

उस वक्त अगर कोई उसकी मुस्कान देखता तो अवश्य ही वह दहल उठता।

□□□

□□□

सुबह दस बजे चंदगी राम चौटाला कालिया पठान की कोठी पर पहुंचा।

काली सिंह के पास से लौटने के उपरांत वह सीधा अपने फ्लैट में आया और लम्बी तान कर सो गया था। सुबह नौ बजे उठ कर वह फ्रैश होकर तैयारी की और अपनी राजदूत पर इधर के लिए रवाना हो गया।

कोठी की कम्पाउंड में आते ही सुल्तान ने उसका बड़े जोशो खरोश के साथ स्वागत किया।

निश्चय ही रात की विजयश्री से उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

चंदगी राम चौटाला ने उसके चेहरे पर चमक देखी तो हंस पड़ा।

"घणी खुसी हो रही सै जीत की...?" वह बोला।

"आपका नेतृत्व रहा तो हम काली सिंह को जड़ से ही मिटा डालेंगे चौटाला साहब।"

खुशी जाहिर करते हुए बोला सुलतान।

"आ-भीतर चलते हैं।"

कहते हुए चंदगी राम चौटाला ने दरवाजे की तरफ कदम बढ़ा दिये।

कुछ ही देर में वह हाल में था... हाल में वे पच्चीस आदमी भी थे जो रात को सुलतान के साथ काली सिंह का अड्डा तबाह करने गए थे।

चंदगी राम चौटाला कुर्सी पर बैठ गया।

"साथियों... ।" वह बोला—"रात की थमने काली सिंग को जो चोट पहुंचाई...उसे सुन के कालिया पठान साब ने थमने साबासी दी है।"

"लेकिन चीफ हमें तो मिले नहीं चौटाला साहब... ।"

करीब खड़ा सुलतान बोल पड़ा।

"चंदगी राम चौटाला ने गर्दन उठा कर उसे घूरा... ।

"चीफ ने तन्ने क्या कहा था ?"

वह गुर्राया।

"क...या कहा था... ?" हड़बड़ा उठा सुलतान... ।

"क्या चीफ ने यह नहीं कहा था कि मेरी जुबान से निकड़ा हुक्म उनका हुक्म माना जायेगा।"

"क...कहा था।"

"तो फेर क्यों पूछ रिया सै तै उनके बारे में ?"

पुनः हड़बड़ाया सुलतान.... ।" म...मैं तो यूं हीं... ।"

"यूं ही कुछ भी पूछन की जरूरत नई... अर वह सुन जो मैं कै रिया सूं... ।"

सुलतान ने सख्ती से होंठ भींच लिये।

चंदगी राम चौटाला ने उसकी तरफ से गर्दन फेरी और पुनः वहां खड़े आदमियों की तरफ देखते हुए बोला—

"थम लोगों की इस जीत ने देख के चीफ थारे पै बहुत खुस हुए सैं...अर उन्होंने थम सब को दो-दो लाख रुपया ईनाम देने की घोसणा(घोषणा) की है।"

सभी के चेहरे खुशी से खिल उठे।

"अर तन्ने पांच लाख रुपया देने की घोषणा की सै।"

चंदगी राम चौटाला ने सुलतान की तरफ देखा। वह नहीं चाहता

था कि सुलतान के दिल में अभी कोई संदेह उठे... इसलिए उसने जानबूझ कर उसके ईनाम की राशि बढ़ा दी।

उसकी घोषणा का भरपूर असर हुआ सुलतान पर। उसका चेहरा खुशी से दमक उठा... । पल भर पहले उसके दिल में चंदगी राम चौटाला के प्रति जो रोष था... वह खत्म हो गया।

उसका चेहरा देखकर चंदगी राम चौटाला मुस्कुराया... और पुनः गर्दन सीधी करते हुए बोला—

"अर चीफ ने थारे खातर एक और घोषणा भी की सै।"

"क्या...?" उनके करीब खड़ा सुलतान बोल पड़ा।

"थम सबने बीस-बीस लाख रुपया इनाम देने की।"

"ब...बी...स...ला...ख।"

कई अस्फुट स्वर उभरे।

"थारी खातर चालीस लाख।" उसने सुलतान की तरफ देखा।

सुलतान की आंखें फट पड़ी।

"अर यह घोसणा उन्होंने मेरे कैने (कहने) पै ही की सै—मैं काम लेन में जितना सख्त सूं... खुसी बांटने में उतना ही तेज।"

कोई कुछ नहीं बोला... सभी आतुरता भरी निगाहों से उसे देखते रहे।

"सुलतान... ।" तभी चंदगी राम चौटाला ने सुलतान की तरफ देखा—"बाहर मेरी मोटर सैकल के पाछे एक सूटकेस बंधा है... उसमां पचपन लाख पड़ा सै... सूटकेस यहां ले आ।"

सुलतान फौरन तीर की तरह बाहर निकला।

शीघ्र ही वह वापिस लौटा तो उसके दायें हाथ में एक भारी सूटकेस लटक रहा था।

वह सारा रुपया चंदगी राम चौटाला अपने फ्लैट से लेकर आया था जो कि उसे काली सिंह से मिला था।

सुलतान ने सूटकेस उसके आगे जमीन पर रख दिया।

"खोल इसे।"

सुलतान ने तुरंत सूटकेस के लाक खोले और ढक्कन उठा दिया।

पांच-पांच सौ के नोटों से भरा पड़ा था सूटकेस... ।

"सभी ने दो-दो लाख बांट दे... अर तू पांच लाख राख ले।"

देर नहीं लगाई सुलतान ने और चार-चार गड्डियां उठा कर एक-एक आदमी को देने लगा।

सभी आदमियों के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। उससे पहले कालिया पठान उन पर कभी इतना मेहरबान नहीं हुआ था।

निश्चय ही यह चंदगी राम चौटाला की जादूगरी थी—ऐसी धारणा बनी हुई थी सभी के दिमाग में।

"जब सारे नोट बंट चुके तो चंदगी राम चौटाला के कहने पर सुलतान ने सूटकेस उठा कर एक तरफ रख दिया और फिर उसकी तरफ देखते हुए बोला—

"चीफ ने बीस-बीस लाख के ईनाम की घोषणा की है।"

मुस्कुरा पड़ा चंदगी राम चौटाला।

"हां की सै... पर वह रुपया थमने जबी (तभी) मिलेगा जब थम काली सिंह को तबाह कर देवोगे। उसने खत्म कर देवोगे।"

सुलतान का चेहरा उतर गया।

"काली सिंह को खत्म करने में तो काफी वक्त लग सकता है।"

चंदगी राम चौटाला के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान नाच उठी।

"वह आज भी खत्म हो सकै सै।"

"क्या... ?" उछल पड़ा सुलतान... ।

वहां खड़े सभी लोगों के चेहरों पर भी चौंकने के भाव उमड़ आये।

"बसर्ते (बशर्ते) कि थम बहादुरी से काम लेवो... ।"

"हमारी तरफ से आप चिंता मत कीजिये... काली सिंह को खत्म करने में हम अपनी जान लगा देंगे।"

"तो फेर समझ लो कल थम सभी को बीस-बीस लाख रुपये मिल जावेंगे।"

"और मुझे चालीस लाख... ।

"हां... ।"

"क्या आपको पता चल गया है कि वह वहां है ?"

"आज सांझ ने बेरा पाट (पता लग) जायेगा... मैंने एक ईसी (ऐसी) चाल चाली है कि वह आज सांझ तक अपने सारे आड्यां (अड्डों) का माल एक ही जगह पै इकट्ठा कर लेगा।"

"हमारी तरह।"

"हां... ।" मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला—"अर जीसे ही (जैसे ही) मन्ने खबर लागेगी... मैं। थमने बता देऊंगा... ।"

"सुलतान ने सहमति में सिर हिला दिया।

चंदगी राम चौटाला ने सभी पर निगाहें फेरी... ।

"जेकर किसी को इस लड़ाई से डर लाग रिया सो तो वह पाछे हट सकै सै... मगर जेकर कोई वहां पहुंच कै पाछे हटा तो मैं अपने हाथों से उसके सीने में गोली मार दूंगा।"

"आप निश्चिंत रहिये चौटाला साहब... काली सिंह को खत्म

करके ही हम पीछे मुड़ेंगे।"

एक बोला।

चंदगी राम चौटाला के चेहरे पर इत्मिनान उभरा... जबकि भीतर ही भीतर वह हंस रहा था।

बीस-बीस लाख का दाना उसने डाला ही इसीलिए था कि कोई इन्कार न कर सके...।

कुछ देर और उन्हें समझाते रहने के उपरांत चंदगी राम चौटाला कुर्सी छोड़ कर खड़ा हो गया।

"थम लोग तैयार रहना... रात को किसी भी बकत मैं आड़े आ सकूं सूं।"

सभी ने एक साथ सिर हिला दिये।

चंदगी राम चौटाला मुड़ा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

❑❑❑

❑❑❑

"ट्रिन... ट्रिन...।"

फोन की घन्टी घनघना उठी।

काली सिंह ने हाथ में थमा स्कॉच का पैग हलक के नीचे उतारा और उसे टेबल पर रख कर रिसीवर आन कर कान से लगा लिया।

"हैलो...।"

"जै राम जी की सिंग साहब...।" दूसरी तरफ से चंदगी राम चौटाला की आवाज आई।

"कहां से बोल रहे हो चौटाला ...?"

"यहीं... इसी शहर से...।"

"मजाक मत करो... जानते हो मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं...।"

"मैं जानूं सूं...।"

"कहां तक पहुंचे।"

"दाना डाल दिया है... उम्मीद है कि रात को कबूतर दाना चुग लेगा।"

"यानि...।"

"आज ही बेरा लाग जायेगा (पता लग जायेगा) कालिया पठान से कि उसने अपने कमरे में क्या कर रख्या सै।"

"जीते रहो...।"

"थम बोलो... सारा माल ले आये...?"

"हां... मेरे सारे अड्डों का माल आ गया है।"

"सुक्र सै राम जी का... जानो सो कालिया पठान थारे एक और आड्डे पै हमला करन की सोच रिया सै।"

"मगर अब वह कुछ नहीं कर पायेगा... तुमने वक्त रहते मुझे चेता दिया... ।"

"आज रात को मैं किसी भी वक्त थारे धौरे पहुंच जाऊंगा... अर फेर कल की रात कालिया पठान की आखिरी रात बना देना थम।"

"तुम्हारे मुंह में घी शक्कर... ।"

चहकते हुए बोला काली सिंह... । इस वक्त उसका दिल बल्लियों उछल रहा था।

और फिर दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

काली सिंह ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और नया पैग तैयार करने लगा।

इस वक्त उसके चेहरे पर हजारों वाट की चमक थी... तथा आंखों में विजयी भाव थे... जैसे उसने अभी ही किला फतह कर लिया हो।

□□□

□□□

"ट्रिन... ट्रिन... ।"

फोन की घण्टी बजते ही काली सिंह ने निगाहें उठाकर वाल क्लाक की तरफ देखा।

साढ़े दस बज रहे थे।

उसने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही अंगड़ाई ली और हाथ बढ़ा कर रिसीवर उठा लिया।

"हैलो... ।"

"मैं चौटाला बोल रिया सूं... ।"

दूसरी तरफ से चंदगी राम चौटाला की उत्तेजना से भरी आवाज आयी।

"काली सिंह का कलेजा धड़क उठा।

"तुम तो यहां आने वाले थे... फिर फोन क्यों किया..." वह बोला।

"मैं थारे धौरे नई आ सकूंगा... ।"

"क्यों... ?"

"वह मैं बाद में बताऊंगा... ।"

"तो क्या अभी कुछ पता नहीं चला।"

"सब पता चाल गया सै।"

"तो फिर बताओ... ?"

"ईबी (अभी) कोई वकत (वक्त) नई बतान का ... ।"
फुसफुसाहट उभरी।

"लेकिन... ।"

"कोई आ रिया सै... थम मन्ने रात एक बजे करनाल बाई पास पै मिलना... ।"

"लेकिन बात... ।"

"और भाई क्या हाल सैं... अरे आपने हरियाणा का तो कैना ही क्या... हां ठीक सै... थारी बहू ठीक सै न... ?"

काली सिंह समझ गया कि कोई उसके करीब आ खड़ा हुआ है... इसलिये वह बात बदल गया है... ताकि आने वाले को संदेह न हो।

उसने चुपचाप रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

चंदगी राम चौटाला ने कालिया पठान के विशिष्ट कमरे की जो जानकारी हासिल कर थी... काली सिंह के लिए वही बहुत थी। अब उसे यकीन हो गया था कि वह चंदगी राम चौटाला के साथ मिलकर कालिया पठान को खत्म कर देगा।

अपनी ही सोच पर वह मुस्कुराया और पैग उठा कर होठों की तरफ बढ़ा दिया।

❑❑❑
❑❑❑

दूसरी तरफ से रिसीवर रखे जाने की आवाज सुनकर चंदगी राम चौटाला के होठों पर विषैली मुस्कान फैल गई... आंखों में भेड़िये की सी चमक नाच उठी।

"फंसा-फंसा क्या मरा... ।"

वह बड़बड़ाया और पब्लिक टेलीफोन बूथ से बाहर आ गया।

वह अपनी राजदूत पर बैठा और कालिया पठान की कोठी की तरफ रवाना हो गया।

किसी और स्थान पर पहुंचने की बात सुनकर काली सिंह को कोई संदेह न होने पाये इसलिए उसने जानबूझ कर ऐसा नाटक किया था... जैसे कालिया पठान का कोई आदमी उसके करीब आ खड़ा है... । अगर वह ऐसा न करता तो काली सिंह उससे फोन पर ही सब कुछ जानने की जिद करने लगता... और न बताने की सूरत में वह उस पर शक कर सकता था।

नाटक कामयाब रहा था उसका... ऐसा उसे पूरा यकीन था।

अब उसे अपने सारे नाटक का पटापेक्ष करना था... ।इसी खातिर

वह कालिया पठान की कोठी की तरफ जा रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

चंदगी राम चौटाला ने अपने सामने खड़े कालिया पठान के आदमियों को देखा।

सभी के चेहरों पर उत्तेजना थी। जैसे वे काली सिंह का खात्मा करने के लिए उतावले हो रहे थे।

होते भी क्यों न... ? बीस लाख का ईनाम जो मिलना था उन्हें।

मन ही मन मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला... ।

उसने अपने दाईं तरफ खड़े सुलतान की तरफ देखा।

"सभी तैयार सैं... ?" वह बोला।

"बस आपके हुक्म की इंतजार कर रहे हैं चौटाला साहब।"

तुरंत बोला सुलतान।

चंदगी राम चौटाला ने जेब से बीड़ी का बण्डल निकाला... उसे दोनों हाथों में रगड़ा और फिर एक बीड़ी निकाल कर उसे सुलगा कर सुट्टा लगाया।

"काली सिंग का अड्डा राजौरी गार्डन में सै... ।" वह मुंह से धुंआ छोड़ते हुए बोला—"मैंने सारा पता लगा लिया सै।"

सुलतान कुछ नहीं बोला... बस उसकी तरफ देखता रहा।

"सारा माल उसके आड्डे के भीतर सै... ।" चंदगी राम चौटाला आगे बोला—"अर वह खुद भी उस आड्डे में सै... । एक बात का ध्यान रखना... उसने आपने माल की हिफाजत खातर घने आदमी तैनात कर राखे सैं... इस खातर तुमने पैंला (पहले) तो चुपचाप आड्डे के चारों तरफ घेरा डालना सै... फेर उसके बाद फायरिंग करनी सै।"

सुलतान ने सिर हिला दिया।

चंदगी राम चौटाला ने अपनी घड़ी में वक्त देखा।

"इस वक्त साढ़े ग्यारह बजे सै... । साढे बारह बजे तक थम वहां पहुंच जाओगे... आधा घण्टा थमने घेरा बंदी करने में लगेगा... बेसक (बेशक) थम पौन बजे फायरिंग करन में तैयार हो जावो... लेकिन थमने एक बजे से पैंला कुछ नईं करना... ठीक एक बजे थम एक साथ चारों तरफ से फायरिंग सुरू कर देना... ।"

सुलतान ने पुनः सिर हिलाया।

"एक बजे... एक मिनट भी पैंला नईं... ।"

"फायरिंग एक बजे ही शुरू होगी।"

सुलतान बोला।

"आप भी तो हमारे साथ होंगे चौटाला साहब... ।" तभी एक व्यक्ति बोल पड़ा—"जब आप आदेश करेंगे हम उसी वक्त फायरिंग शुरू कर देंगे।"

"मैं थारे साथ नई होऊंगा।" कह कर उसने सुलतान की तरफ देखा—"इस लड़ाई की बागडोर तैं (तुम) सम्भालेगा।"

"अगर आप भी साथ होते तो हमारा हौंसला बना रहता।" सुलतान बोला।

"थम समझने की कोसिस करो—काली सिंग आपने गुप्त रास्ते से फरार हो सकै सै... अर म्हन्ने उसके रास्ते पै नाकाबंदी करनी सै... । जेकर वह इस हमला में बच गया तो वह घना खतरनाक हो जाएगा... ।"

सुलतान ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"इधर थम लोग उसके आदमियों को मार रये होवोगे...उधर मैं उसके गुप्त रास्ते पै बैठा होऊंगा जीसे ही (जैसे ही) वह वहां से निकड़ेगा...मैं उसकी गर्दन दबोच लूंगा।"

सुलतान ने पुनः सिर हिलाया।

और फिर चंदगी राम चौटाला ने उन्हें इस तरह विदा किया जैंसे घर के बड़े बुजुर्ग अपने बच्चों को युद्ध भूमि पर भेजते वक्त करते हैं।

उनके जाते ही चंदगी राम चौटाला के होंठों पर भयानक मुस्कान नाच उठी।

□□□
□□□

काली सिंह की व्याकुलता का यह हाल था कि वह चंदगी राम चौटाला से मिलने के लिए साढे बारह बजे ही कोठी से निकल गया... । जबकि रात के इस वक्त सड़कें सुनसान होने की वजह से वहां से बाई पास का रास्ता पंद्रह मिनट से ज्यादा नहीं था।

एक बजने में दस मिनट पर वह बाई पास पहुंच गया।

उसने अपनी कार सड़क के किनारे रोकी और बाहर आकर अधीरता से चंदगी राम चौटाला के वहां पहुंचने का इंतजार करने लगा।

एक-एक क्षण उसे घण्टों के समान प्रतीत हो रहा था।

राम-राम करते एक बजने से पांच मिनट पहले ही उसने चंदगी राम चौटाला को मोटर साईकल पर बैठे आते देख लिया।

चैन की मीलों लम्बी सांस छोड़ी उसने।

चंदगी राम चौटाला ने भी उसे देख लिया था सो उसने राजदूत की रफ्तार कम कर दी। और उसके करीब आ खड़ा हुआ।

"मेरे पाछे आ जाओ... ।" वह बोला और मोटर साईकिल को

करनाल रोड पर डाल दिया।

काली सिंह तुरंत कार में बैठा और उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

करीब एक किलोमीटर चलने के उपरांत मोटर साईकिल रुकी तो काली सिंह ने भी कार रोक दी।

चंदगी राम चौटाला मोटर साईकिल स्टैण्ड पर लगा कर कार के करीब आया... दरवाजा खोला और उसके करीब आ बैठा।

"कौन आ गया था...?"

तभी बोला काली सिंह...।

"कब...?"

"जब तुम मुझे फोन कर रहे थे।"

"कोई भी नई...।"

धूर्तता पूर्वक मुस्कुराया चंदगी राम चौटाला।

"क्या मतलब...?"

बुरी तरह से चौंका काली सिंह...।

चंदगी राम चौटाला ने बिजली की सी गति से जेब से रिवाल्वर निकाली और उस पर तान दी।

रिवाल्वर पर नजर पड़ते ही काली सिंह बुरी तरह से बौखला उठा।

"य... यह क्या बदतमीजी है...?"

"थारे को यहां बुलान का तरीका कीसा लगा...?"

"पलक झपकते ही काली सिंह समझ गया कि वह बहुत बड़ा धोखा खा बैठा है।

"ओह। तो तुम कालिया पठान के आदमी हो... और मुझे खत्म करने के लिए...।"

"न... मैं कालिया पठान का आदमी नई... वह बेचारा तो कल ही दुनिया से चला गया था।"

उछल पड़ा काली सिंह...।

"क... या कहा...।"

"वह मर गया सै। मैंने मारा सै उन्ने।"

"ओह।"

"उसकै उसी खास कमरे के बेसमेंट में उसकी लास पड़ी सै...।"

काली सिंह का जिस्म धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकराने लगा। मन ही मन वह खुद को कोस रहा था कि वह उस पर बेतहाशा भरोसा कर हथियार तक नहीं लाया साथ में...।

"तैं उसकै कमरे की खासियत जानने की खातर मरा जा रिया था न... वह तो मैंने कल ही जान ली थी... कहीं तेरी आत्मा भी मेरी

तरियो न भटकती रहे... इस खातर तन्ने बता देता हूं।"

और फिर चंदगी राम चौटाला उसे कालिया पठान के कमरे से सुरक्षा प्रबंधों के बारे में सब कुछ बताता चला गया... फिर अंत में बोला—

"तै फिक्र मत कर... तेरे मरने के बाद तेरा कुछ नईं बचेगा।"

"क... या मतलब... ?"

"मतबल यह कि ईब तक (अब तक) तेरे आड्डे पे मेरे आदमियों ने हमला कर दिया है... थोड़ी वार (देर) में ही तेरे सारे आदमी लांसा (लाशों) में बदल जायेंगे... अर तेरे सारा माल का अर कालिया पठान के सारे माल का मैं अकेला वारिस बन जाऊंगा।"

काली सिंह फटी-फटी आंखों से उसे देखने लगा। अण्डरवर्ल्ड की बादशाहत पाने के लिए उसने कितनी जबरदस्त चाल चली थी इसका पता उसे अब लग रहा था।

पहले उसने मकबूल हुसैन को रास्ते से हटाया... फिर कालिया पठान को और अब उसे हटाने जा रहा था।

"देख्या (देखा) इसे कहैं सै भेड़िया का दिमाग... ।"

"क्या मतलब... ?"

"के करैगा मतलब जान के... इत्ता कुछ तो बता दिया तन्ने... और क्या करेगा... फिर भी जानना चाहे सै तो सुन... भेड़िया सूं मैं... ।"

"भेड़िया... ।"

काली सिंह पहले तो बड़बड़ाया... फिर एकाएक ही बुरी तरह से उछल पड़ा।

"त... तुम... भेड़ि... या... ।"

"हां... मैं भेड़िया सूं... ईब जै राम जी की... ।"

जैसे ही उसने अपनी बात पूरी की... जिंदगी की लालसा ने काली सिंह को संघर्ष करने के लिए मजबूर कर दिया।

तुरंत उसने लात उठाई और उसके पेट में दे मारी।

काली सिंह की खुशकिस्मती कि पीछे से दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था। सो लात खा कर चंदगी राम चौटाला का जिस्म दरवाजे को धकेलते हुए बाहर जा गिरा।

आनन-फानन काली सिंह ने कार स्टार्ट की और तोप से छूटे गोले की तरह वहां से भाग निकला।

भेड़िया के नाम ने ही उसके दिलों दिमाग में इस कदर दहशत भर दी थी कि उसके दिमाग में यह ख्याल तक नहीं आया कि वह उसे कार से कुचल दे।

इधर चंदगी राम चौटाला ने अपनी तरफ से उठने में पूरी फुर्ती दिखाई—मगर तब तक कार उसकी रिवाल्वर की रेंज से काफी दूर जा चुकी थी।

घबराया नहीं वह... न ही बौखलाया... बल्कि गहरी सांस छोड़ कर रह गया।

"भाग कर जायेगा कहां... आपने आड्डे पै गया तो वहां सुलतान तन्ने गोलियों से भून डालेगा।

ईब तो तेरे बचन का बस एक ही रास्ता सै के तू दिल्ली छोड़ के भाग जा।"

बड़बड़ाते हुए वह हंसा... रिवाल्वर जेब में डाली और मोटर साईकिल की तरफ बढ़ गया।

बेशक उसके हिसाब से काली सिंह उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता था... वह पुलिस के पास भी नहीं जा सकता था... क्योंकि ऐसा करने पर उसे अपनी असलियत भी जाहिर करनी पड़ती। मगर फिर भी उसे अफसोस हो रहा था कि उसकी असलियत जान चुका काली सिंह जिंदा बच गया है।

"खैर... इसके बारे में सुबह सोचूंगा... ईब तो आराम करने को जी चाह रिया सै... सुबह तरोताजा हौके अण्डरवर्ल्ड का राजा बनूंगा।"

वह मोटर साईकिल पर बैठा—उसे स्टार्ट किया और वापिस मुड़ कर ऐक्सीलेटर घुमा दिया।

❑❑❑

❑❑❑

भेड़िया की पकड़ से निकल गया था काली सिंह... मौत के इतने करीब पहुंच कर वह बच निकला था।

उसको अभी तक विश्वास नहीं हो रहा था।

कुदरत का करिश्मा ही तो था यह। जो वह बच गया।

लेकिन उसके जेहन में यह था कि वह जाये तो कहां जाये।

वापिस अपने अड्डे पर वह जा नहीं सकता था। एक मौत से बच कर दूसरी मौत के पास जाने की सोच भी नहीं सकता था।

फिर क्या करे वह ?

कुछ समझ में नहीं आ रहा था उसके।

करीब घण्टा भर सोचते रहने के उपरांत उसने सिर को एक हल्का सा झटका दिया और कार को अगले चौराहे से बाईं तरफ मोड़ दिया।

एक अनोखा... अविश्वसनीय निर्णय लिया था उसने... जिसमें उसकी जिंदगी और मौत के पचास-पचास प्रतिशत चांस थे।

❑❑❑
❑❑❑

पूरी कामयाबी के साथ लौटा था सुलतान... । काली सिंह के अड्डे पर मौजूद उसके एक भी आदमी को जिन्दा नहीं छोड़ा था उसने... । उसका सारा माल लूट लिया था उसने।

बेशक इस जंग में उसके पांच आदमी मारे गए थे... लेकिन उसे उनकी मौत पर कोई मलाल नहीं था।

उसे क्या... उसके बच गए साथियों को भी मलाल नहीं था।

काली सिंह के अड्डे से लूटा गया सारा माल हाल में पड़ा था... तथा वह और उसके साथी खुशी के जाम चढ़ा रहे थे।

तभी सहसा ही उसकी नजरें दरवाजे की तरफ उठीं।

किसी के भीतर दाखिल होने का आभास हुआ था उसे।

बुरी तरह से उछल पड़ा वह। आंखों में हैरत और अविश्वास उभर आया।

काली सिंह प्रवेश कर रहा था हाल में... । उसके दोनों हाथ सिर पर थे... । पीछे दो गार्ड उसके जिस्म से स्टेनगनों की नालें सटाये हुए थे।

"क... काली सिंह... ।"

सुलतान के होठों से अस्फुट स्वर निकला... ।

"मैं खुद यहां आया हूं... ।" काली सिंह बोला—"[illegible] तो गार्डों से पूछ लो।"

सुलतान ने पीछे खड़े गार्डों को देखा।

"हां... ।" तुरन्त बाईं तरफ वाला गार्ड बोला—"यह कार से उतर कर हाथ ऊपर उठा कर हमारे पास आया और अपना परिचय देकर बोला कि आपसे मिलना चाहता है।"

"तलाशी लो इसकी... ।"

"ले ली है... कुछ भी नहीं निकला।

सुलतान को [illegible] हुई। उसने काली सिंह की तरफ देखा... ।

"मुझसे मिलना चाहते हो तुम... ?"

"हां... ।"

"क्यों... ?"

"सच्चाई बताने के लिए।"

"कैसी सच्चाई... ?"

"यही कि जिस जीत की खुशी पर तुम इस वक्त इतना नाच रहे हो... बहुत जल्द वह मौत में तब्दील हो सकती है।"

सुलतान की आंखें दहक उठी।

"धमकी दे रहे हो मुझे... ।"

"नहीं... सच्चाई बता रहा हूं...जिस चौटाला को तुम अपने लिये देवता समझ रहे हो...वही तुम्हारी मौत बनेगा।"

"क्या बकते हो ?"

"जानते हो चौटाला कौन है... भेड़िया है वह...एक शैतान आत्मा... ।"

"बुरी तरह से उछल पड़ा सुलतान... ।

"बकवास कर रहे हो तुम... ?"

"तुम्हारे चीफ कालिया पठान को खत्म कर डाला है उसने।"

एक तेज झटका लगा सुलतान को... भीतर तक दहल उठा वह।

"मुझे भी खत्म करने जा रहा था... मगर खुश किस्मती से मैं बच गया।

"क्या... उसने बताया है तुम्हें कि उसने चीफ को मार डाला है।"

कुछ सोचकर बोला सुलतान।

"हां...और उसकी लाश उसके कमरे के बेसमेंट में पड़ी है।"

मुस्कुरा पड़ा सुलतान।

"चीफ का सिर्फ कमरा है... बेसमेंट नहीं है उसका... इसी से लगता है कि तुम कोई चाल चल रहे हो।"

"मैं दिखा सकता हूं तुम्हें बेसमेंट... ।"

सुलतान के चेहरे पर फैली मुस्कान फौरन गायब हो गई।

"देखो सुलतान... हम आपस में लाख दुश्मन सही... । लेकिन अगर कोई शैतान आत्मा हम दोनों को खत्म करने पर तुली हो तो हमारा दोस्त बन जाना ही बेहतर होगा।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"तुम्हारा चीफ तो अब रहा नहीं... ।" मेरे आदमी भी मारे गए हैं... अगर तुम हां करो तो हम दोनों पार्टनर बनकर अण्डरवर्ल्ड पर राज कर सकते हैं।"

सुनते ही सुलतान का कलेजा धड़क उठा। इतनी बड़ी आफर मिल रही थी उसे।

लेकिन फिलहाल वह कोई ऐसी वैसी बात मुंह से नहीं निकालना चाहता था जो कि उसके खुद के लिए घातक हो... । सो वह बोला–

"मैं चीफ की लाश देखना चाहता हूं।"

"मैं दिखाने को तैयार हूं।" चैन की लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला काली सिंह।

□□□
□□□

अगली सुबह चंदगी राम चौटाला राजदूत पर कालिया पठान की कोठी में प्रविष्ट हुआ तो पहले की तरह गेट पर तैनात दोनों गार्डों ने उसे सलाम किया।

चंदगी राम चौटाला ने राजदूत कम्पाउंड के करीब ले जाकर रोकी... स्टैण्ड पर लगाई और कम्पाउंड में आ गया।

इस वक्त उसके पैर धरती पर नहीं पड़ रहे थे।

अपने शैतानी दिमाग की बदौलत उसने अरबों की दौलत हासिल कर ली थी... साथ ही अण्डरवर्ल्ड का बादशाह बन गया था।

बस अब उसे खुद को बादशाह घोषित करना रह गया था। और इसी की घोषणा करने जा रहा था वह।

कम्पाउंड का दरवाजा खोल कर वह जैसे ही हाल में प्रविष्ट हुआ... उसका कलेजा इतनी जोरों से उछला कि हलक में आ फंसा।

सामने सुलतान के साथ काली सिंह खड़ा था दोनों की आंखों में कहर भरा हुआ था।

ठीक तभी पीछे से एक साथ तीन स्टेनगनें उसके जिस्म से आ लगी।

चंदगी राम चौटाला की आंखों के आगे मौत नाच उठी।

"आओ भेड़िया... ।" तभी सुलतान गुर्राया... ।"हम तेरा ही इंतजार कर रहे थे।"

चंदगी राम चौटाला से बोलते न बना।

"वाकई बहुत जबरदस्त गेम खेली थी तूने... तू तो राजा बन ही गया था अगर काली सिंह यहां न आता... ।"

चंदगी राम चौटाला फिर भी कुछ नहीं बोला।

"तूने तो मुझे लगभग मार ही डाला था... ।" तभी काली सिंह बोला—"लेकिन देख ले... ऊपर वाले के खाते में अभी मेरी मौत नहीं लिखी थी... तभी तो तेरे सामने जिंदा खड़ा हूं।"

"अब... देखते हैं कि तू मरता है या नहीं... ।" सुलतान गुर्राया... ।

सहसा ही चंदगी राम चौटाला के होठ फैले... फिर वह हंस पड़ा... ।

इधर वह हंसा... उधर सभी के कलेजे दहल उठे।

कईयों के होठों से तो चीखें उबल पड़ीं।

चंदगी राम चौटाला के ऊपर साईडों के दोनों दांत लम्बे हो रहे

थी।

[illegible] आ गया।

[illegible]

[illegible]

“[illegible]...!”

[illegible]

“[illegible]...”

“[illegible]...!”

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] इस पते पर भेजें।

[illegible]

वार्ड नं. 12

पानीपत (हरियाणा)

[illegible]